मासिक प्रकाशन • मई '९७

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका





स्वाद व सुगन्ध में आज भी सर्वश्रेष्ठ
रत्ना छाप
ज़ाफरानी पत्ती
भारत में पहली बार
होलोग्राफिक
50 ग्रा० व 10 ग्रा० के पाउच में
PRATIBHA
ZAFRANI ZARDA
FLAVOURED CHEWING TOBACCO FLAKES
नं. 64
नं. 300
IS 2344
ISI
CM/L-1081435
आई.एस.आई. के मानदंड पर
एकदम खरा एक मात्र ज़र्दा
प्रभात ज़र्दा उत्पादन
स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

ओं के प्रकार

ोक्ताओं, किसान, सहकारी संस्थाएं, गैर-सरकारी संस्थाएं, निगमित क्षेत्र के संगठन, केन्द्र और राज्य के विभिन्न विभाग।

प्रकार

के अंतर्गत 200 पीक वाट से लेकर 2250 पीक वाट तक के फोटोवोल्टेइक क्रम-विन्यास (अरेज) ग प्रणालियाँ उपलब्ध होंगी।

योजना का क्रियान्वयन जहाँ तक हो सकेगा समूह के आधार पर किया जाएगा, ताकि देश भर में रखरखाव और प्रशिक्षण की व्यवस्था को सुगम बनाया जा सके।

इरेडा IREDA

1987-1997

सेवा में एक दशक

DECADE OF SERVICE

और प्रोत्साहन

ना के अंतर्गत निर्माताओं को पम्पों की सप्लाई के लिए सीधे-सीधे सबसीडी दी जाएगी। सबसीडी की राशि प्रति पीक वाट 125 दर से निर्धारित की जाएगी। यह राशि अधिकतम 1,50,000 रुपये होगी। भुगतान, सप्लाई और पम्प प्रणाली के संस्थापन का नक प्रमाण मिलने पर किया जाएगा।

अवमूल्यन

क्षेत्र के लिए प्रथम वर्ष में 100% अवमूल्यन की सुविधा है।

स के हल्के ऋण

यदि चाहें तो निर्माताओं, सप्लायरों, वित्तीय संस्थाओं के माध्यम से ऋण प्राप्त कर सकते हैं। ऋण की राशि पम्पिंग प्रणाली की कीमत के ीडाइज्ड भाग से अधिक नहीं होगी। यह राशि फोटोवोल्टेइक क्रम-विन्यास (अरेज) क्षमता पर निर्भर करेगी। रु. 50,000-200 से P के लिए, रु. 80,000-701 से 1400 WP के लिए तथा रु. 1,00,000-1401 से 2250 WP क्षमता के लिए निर्धारित किया गया

त ब्याज की दर और 10 वार्षिक किश्तों में भुगतान

ों के लिए ऋण के ऊपर ब्याज की दर 5 प्रतिशत वार्षिक होगी। ऋण का भुगतान, ऋण की मंजूरी के बाद के पहले वर्ष के अंत वार्षिक किश्तों में करना होगा।

इ रे डा के अ न्य का र्य क्र म

र :

- वन ऊर्जा
- र फोटोवोल्टेइक ऊर्जा
- र ताप ऊर्जा
- घु जल विद्युत ऊर्जा
- योमास-सहउत्पादन/विद्युत उत्पादन/ सिफायर्स/ ब्रिक्वेटिंग
- यो मीथेनेशन
- ुओं के गोबर/ह्यूमन एक्सक्रीटा व इट सॉइल पर आधारित बायोगैस प्लांट्स्
- च्च क्षमता वुड बर्निंग स्टोव्स्
- टरी/वैकल्पिक ईंधन पर आधारित वाहन
- क्षय ऊर्जा पर आधारित उच्च क्षमता ऊर्जा ाने तथा संरक्षण की प्रणालियाँ

संक्षिप्त ऋण प्राप्ति की शर्तें

- इरेडा का योगदान
  - क) **परियोजना वित्तियन योजना** -परियोजना मूल्य के 80% तक
  - ख) **उपकरणों का निर्माण** - परियोजना मूल्य के 75% तक
  - ग) **उपस्कर वित्तियन योजना** - योग्य उपस्कर मूल्य के 80% तक
  - घ) **विश्व बैंक के अंतर्गत सोलर फोटोवोल्टेइक परियोजना** - मूल्य के 85% तक
- ब्याज की दर (वास्तविक) - 2.5% से 19.0% प्रतिवर्ष
- ऋण स्थगन काल - 3 वर्ष तक
- ऋण लौटाने की अवधि -10 साल तक
- अनुसूचित जाति/जन जाति/महिलाएं एवं उत्तरी पूर्वी राज्यों, द्वीपों, पहाड़ी एवं रेगिस्तानी इलाकों में परियोजना लगाने पर उद्यमियों को विशेष छूट

अक्षय ऊर्जा आंदोलन में भाग लेने हेतु इरेडा आपको आमंत्रित करता है।

विस्तृत जानकारी के लिए निम्न पते पर संपर्क करें :

प्रबंध निदेशक

इरेडा IREDA

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था सीमित

(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

कोर-4ए,ईस्ट कोर्ट, प्रथम तल, भारत पर्यावास केन्द्र कॉम्पलेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110 003

फोन : 4601344, 4601366, फैक्स : 91-11-4602855, ई-मेल : gen@ireda1.globemail.com

अपारम्परिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय, भारत सरकार

शा श्व त ऊ र्जा

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

• ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

१. अनुग्रहक. आस्था, ख. कृपा, ग. दया, घ. लाभ ।

२. विग्रहक. कलह, ख. द्वंद्व, ग. युद्ध, घ. स्पर्धा ।

३. जिजीविषाक. जीवन, ख. दीर्घायु, ग. जीने की इच्छा, घ. बहुत जीने का आशीर्वाद ।

४. दुराशाक. दुर्भाग्य, ख. विश्वासहीनता, ग. निराशा, घ. ऐसी आशा जिसका पूरा होना कठिन हो ।

५. सत्कृतिक. सफलता, ख. पुरस्कार, ग. अच्छा काम, घ. सम्मान ।

६. पादाक्रांतक. पराजित, ख. रौंदा हुआ, ग. उल्टा, घ. आक्रमण ।

७. परित्रस्तक. बहुत डरा हुआ, ख. भयानक, ग. हराया हुआ, घ. अभावग्रस्त ।

८. अधीनस्थक. दास, ख. दबाया हुआ, ग. जो किसी के मातहत हो, घ. वश में ।

९. अधीरक. उतावला, ख. अशांत, ग. लड़ने के लिए बेताब, घ. जिसमें आत्म-विश्वास न हो ।

१०. पांडित्यक. ब्राह्मणत्त्व, ख. विद्वता, ग. गहन अध्ययन, घ. विशेषज्ञता ।

११. परिदाहक. भस्म, ख. ज्वाला, ग. आग की लपट, घ. अत्यधिक मानसिक दुःख ।

१२. मंतव्यक. मन, ख. मत, ग. मस्तिष्क, घ. मानसिक दशा ।

१३. अधेड़क. बुड्ढा, ख. बीमार, ग. ढलती उम्र का, घ. दीर्घायु ।

उत्तर

१. ख. कृपा, प्रसाद । बड़ों का **अनुग्रह** सदैव प्राप्त करना चाहिए । (अनु+ग्रह)

२. क. कलह, फूट पैदा करना । समाज में **विग्रह** करनेवाले **दंडनीय** होने चाहिए । (वि+ग्रह)

३. ग. जीने की इच्छा । मनुष्य में **जिजीविषा** बलवती होती है । (व्युत्.-जि+जीव्+इष्)

४. घ. ऐसी आशा जिसका पूरा होना कठिन हो । बिना कठोर परिश्रम के सफलता पाना **दुराशा** मात्र है । (दुर्+आशा)

५. ग. अच्छा काम । जीवन में **सत्कृति** का फल अच्छा होता है । (सत्+कृति)

६. ख. रौंदा हुआ । पराजित देश प्रायः **पादाक्रांत** कर दिया जाता है । पाद (व्युत्.-पद्) +आक्रांत (व्युत्.-आ+क्रम्)

७. क. बहुत डरा हुआ । उस क्षेत्र के लोग उग्रवादियों से **परित्रस्त** हैं । परि+त्रस्त (व्युत्.-त्रस्)

८. ग. जो किसी के मातहत हो । **अधीनस्थ** कर्मचारियों को अधिकारी का आदेश मानना पड़ता है । (अधीन+स्थ)

९. क. उतावला, धैर्यरहित । किसी संकट के

अवसर पर मनुष्य को **अधीर** नहीं होना चाहिए ।

१०. ख. विद्वता । दर्शनशास्त्र में उसका **पांडित्य** असीम है । (पंडित)

११. घ. अत्यधिक मानसिक दुःख । विश्वासघात से उसे **परिदाह** हुआ है ।

१२. ख. मत, विचार । आपका **मंतव्य** स्पष्ट है ।

१३. ग. ढलती उम्र का । **अधेड़** व्यक्ति की कार्य करने की शक्ति प्रायः कम हो जाती है ।

पारिभाषिक शब्द

Abandonment	परित्याग
Ballot Paper	मतपत्र
Body guard	अंगरक्षक
Cabinet	मंत्रिमंडल
Durability	स्थायित्व
Accelerator	त्वरक

ज्ञान-गंगा

उपकृति रेव खलानां दोषस्य गरीयसो भवति हेतुः ।
अनुकूलाचरणेन हि कुप्यंति व्याधयोऽत्यर्थम् ।।

(नीतिद्विर्षाष्टिका १०५)

—दुष्ट व्यक्तियों का उपकार करना भी बहुत बड़े दोष का कारण बन जाता है, व्याधि के अनुकूल आचरण करने से व्याधियां और कुपित हो जाती हैं ।

एकोऽपि गरीयांदोषः समग्रमपि गुणग्रामं दूषयति ।

(बालरामायण १/३५)

—एक बड़ा दोष भी समस्त गुणों को दूषित कर देता है ।

अलसः सर्वकर्मणामनधिकारी ।

(नीतिवाक्यामृत १०/१४४)

—आलसी व्यक्ति सब कार्यों के लिए अयोग्य होता है ।

ऐश्वर्यमदमत्तो हि सर्वोऽहमिति मन्यते ।

(बाल्मीकि रामायण ५/६४/१८)

—प्रायः सब लोग ऐश्वर्य के मद से उन्मत्त अहंकारवश अपने को ही सर्वोपरि मानने लगते हैं ।

अरुच्यमपि रोगध्नं निसर्गादिव भेषजम् ।

(शिशुपालवध १९/८९)

—अरुचिकर औषध स्वभावतः रोग-विनाशक होता है ।

न निश्चितार्थोद्विरंति धीराः ।

(नीतिशतक ८१)

—धीर-पुरुष कार्य करने का संकल्प करने के पश्चात अडिग रहते हैं ।

अहो सा तादृशी गुणानां प्रकृतिः ।
या विपक्षहस्तपतितापि सुखयति ।

(अनर्घराघवम् ४/१०)

—गुण का ऐसा स्वभाव होता है, जो विपक्ष के हाथ में भी सुख ही देता है ।

प्रस्तुति : —महर्षि कुमार पांडेय

प्रतिक्रियाएं



पुरस्कृत पत्र

इसे समाधियों का देश मत बनाइए

आप क्षुब्ध हैं कि महाकवि निराला का स्मारक नहीं बना ! (आखिर कब तक ? मार्च, १९९७) महाकवि निराला का ही क्यों ? अन्य कवियों का क्यों नहीं ? अन्य साहित्यकारों, रचनाकारों, कलाकारों का क्यों नहीं ? केवल हिंदी के रचनाकारों का ही क्यों ? उर्दू, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, मराठी, बंगला, पंजाबी, गुजराती आदि अन्य भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्यकारों का क्यों नहीं ? सरकार किस-किस का स्मारक बनवाये ? बनवाये ही नहीं फिर उसकी देखभाल का जिम्मा भी ले ? शायद कुछ ज्यादा ही उम्मीद लगा लेते हैं हम सरकार से । न जाने क्यों हर छोटी-बड़ी बात के लिए सरकार का मुंह जोहने की हमारी प्रवृत्ति ही बन गयी है । हम यह क्यों भूल जाते हैं कि जरा-सी भी किसी वर्ग-विशेष, भाषा-विशेष, क्षेत्र-विशेष के लिए सरकार कुछ खास करने का सोचे भी तो तुरंत उसकी धर्मनिरपेक्ष छवि पर प्रश्नचिह्न लगने लगता है ।

स्व. मुंशी प्रेमचंद का हो या अन्य, जो स्मारक बने भी हैं, उनकी भी तो आज दुर्दशा ही हो रही है । स्मारक बनाना और फिर उसे भगवान भरोसे छोड़ देना यह तो उस महान व्यक्ति का निरादर करने-जैसी ही बात है ।

न जाने हम देश को समाधियों और स्मारकों का देश ही बना देने पर क्यों तुले हैं ? एक का बनाइए तो दूसरे के प्रशंसक या परिवारजन दूसरे का बनवाएंगे ही । दिवंगत प्रधानमंत्रियों की समाधियों के लिए स्थल के चुनाव को लेकर क्या-क्या तमाशे नहीं हुए ? क्या किसी महान साहित्यकार का सम्मान केवल उसका स्मारक बनाकर ही हो सकता है ? यदि ऐसा ही है तो साहित्यकारों के संघ अपने बलबूते पर यह आयोजन करने का बीड़ा क्यों नहीं उठाते ? केवल बयान देकर, विज्ञप्ति जारी करके अर्थात अंगुली कटाकर शहीदों में नाम लिखाना तो बहुत ही आसान है । आशा है मेरी बात को अन्यथा नहीं लेंगे ।

—ओम प्रकाश बजाज

इंद्राणी अपार्टमेंट्स २१९१-एफ., मदन महल, जबलपुर (म.प्र.)-४८२००१

प्रोत्साहन पुरस्कार

स्त्री : संसार का श्रेष्ठ रत्न

'अनन्य' विशेषण तो नहीं लगा सकता, पर इतना तो कह ही सकता हूं कि मैं वर्षों से 'कादम्बिनी' का एक सच्चा प्रेमी हूं और हर मास में उसके बहुमुखी 'कांतासम्मित उपदेशों' से प्रेरित-प्रभावित और मुग्ध होता रहा हूं । उसके ध्येयवाक्य "आकल्पं कवि

नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु' ने मुझे ऐसा सम्मोहित किया है कि साहित्य चर्चाओं में इसका बहुलता से प्रयोग करता हूं । वस्तुतः इस सूत्रवाक्य के लघु वातायन से ही पूरा साहित्य दर्शन झांकता है ।

आप अपनी दुलारी, सुकुमारी 'कादम्बिनी' के योग्य अभिभावक हैं, तभी तो आज जब हिंदी की लगभग तमाम पत्रिकाएं विज्ञापन-संस्कृति और फैशनपरस्ती की शिकार हो चुकी हैं, आप स्व. महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादकीय आदर्श का संवहन बड़ी निर्भीकता और कुशलता से कर रहे हैं । हां, मुझे हार्दिक प्रसन्नता होती है कि आपकी 'कादम्बिनी' में विज्ञापनों की संख्या नगण्यप्रायः होती है और इस रूप में आप जहां पाठकों के प्रति निज दायित्व का निर्वाह कर रहे हैं, वहीं नारीत्व की उज्ज्वल गरिमा को भी बट्टा लगने से बचा लेते हैं । इस पर मुझे गर्व है । याद आ रहा है, किसी पृच्छक की शंका का समाधान करते हुए आपने लिखा था कि "स्त्री संसार का श्रेष्ठ रत्न है, इसलिए 'कादम्बिनी' के मुख पृष्ठ पर सदैव नारी की ही तसवीर दी जाती है । आपका यह तर्क पूरी तरह मेरे गले उतरा है और आपकी इस सदाशयता के लिए बधाई ।

अंत में यही आशा है कि पत्रिका के मुखपृष्ठ पर 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' भाव से संवलित भारतीय ललनाओं के मोहक-मर्यादापूर्ण और प्रेरक चित्र अंकित करने का आपका कार्य निर्बाध गति से जारी रहेगा, जिससे 'दिनकर' की ये पंक्तियां मनःप्रांतर में अनुगुंजित होती रहें—

"दृष्टि तुमने फेरी जिस ओर गयी खिल
कमल-पंक्ति अम्लान हिंस्र मानव के फर से त्रस्त
शिथिल गिर गये धनुष और बाण ।"

आप भारतीय कामिनियों के मंगलमय-सुरभित स्वरूप के सतत प्रस्तोता बने रहें, इसी कामना के साथ—

आपका शुभचिंतक
—रवीन्द्र कुमार पाठक
ग्राम- पाठक विगहा,पत्रालय- पड़रावां,
जनपद-औरंगाबाद (बिहार)

समस्याएं : नकली और असली

"इफतार की पार्टी न हुई याराना का जलसा या इश्क मिजाजी का मौसम हो गया । हिंदुस्तान में होली और दीवाली के भी पर्व होते हैं । आखिर पार्टियों के दौर तब क्यों नहीं चलते ?" आपका यह चुभता हुआ सवाल देश के नेतृत्व को बेनकाब कर देता है । देश में सांप्रदायिकता को बोने का यही तो तरीका रहा है । जब एक वर्ग की तरफ झुकाव अधिक होता है तो स्वाभाविक है कि कुछ लोग विपरीत वर्ग की ओर झुकने लगें और फिर यही खेल, या कहिए मौका-परस्ती, राष्ट्रीय नारा बन जाता है । देश के नेतृत्व ने कभी वास्तविक समस्याओं और मुद्दों को जानने का प्रयत्न नहीं किया । झूठी और नकली समस्याओं को जन्म देते रहे, उनके सुलझने न सुलझने से कोई अंतर नहीं पड़ता । हिंदू-मुसलिम, मंदिर-मसजिद, सवर्ण-अवर्ण, अगुआ-दलित-जैसी समस्याएं नेतृत्व द्वारा पैदा की गयी हैं, वरना देश में समस्याएं तो अन्य बहुत-सी हैं, लेकिन नेतृत्व ने कभी अपनी प्राथमिकताएं निर्धारित नहीं कीं, जिनके बारे में सोचना हर पार्टी का काम होना चाहिए था । सैद्धांतिक मतभेदों के बावजूद बुनियादी जरूरतों को पूरा करना तो हर पार्टी का उत्तरदायित्व होना चाहिए था । देश के बहुमुखी विकास के लिए कुछ मुद्दे तो निर्धारित किये

डॉ. एस.डी.एन. तिवारी नहीं रहे !

डॉ. एस. डी. एन. तिवारी हमारे नियमित और सुपरिचित लेखक रहे हैं । मध्य प्रदेश में 'कंजरवेटिव-इन-चीफ फॉर फारेस्ट' के पद से अवकाश ग्रहण कर भोपाल में रहते हुए अपना समय लेखन में ही व्यतीत करते रहे । उनकी रचनाएं हमारे पाठक पसंद करते रहे हैं । अचानक १३ अप्रैल, १९९७ की रात्रि को उनका निधन हो गया । जंगल-साहित्य पर लिखने वाले एक अच्छे लेखक हमारे बीच से चले गए । कादम्बिनी परिवार की ओर से हमारी विनम्र श्रद्धांजलि ।

— संपादक

जाने चाहिए थे । उदाहरणार्थ— शिक्षा का क्षेत्र, बिजली का संकट, पानी की किल्लत, प्रदूषण और पर्यावरण, महंगी होती स्वास्थ्य सेवाएं, अन्न उत्पादन और संतति उत्पादन का तालमेल, संचार और परिवहन । शिक्षा अभी भी एकदम उपेक्षित है, बिजली की समस्या दिनोदिन मुंह बाए जा रही है, अन्न, एक तरफ निर्यात होता, दूसरी ओर आयात, तीसरी ओर गोदामों में सड़ जाता है । एक ओर नेता जानवरों का चारा खा जाते हैं, दूसरी ओर वही नेता कंबल बांटकर अपनी छवि सुधारने में लग जाते हैं । कानून की अदालत में पकड़े जाते हैं तो जनता की अदालत में जाने की धमकी देते हैं ।

दावतों से ज्यादा जरूरी था प्रतिभा पलायन रोकना और प्रतिभाओं का सम्मान । पाश्चात्य देशों की समृद्धि में लगभग चालीस प्रतिशत भारतीय प्रतिभाओं का योगदान है । इसी अपराधपूर्ण उपेक्षा से भारतीय औषधियों का पेटेंट अमरीका ने करा लिया । न्यायालयों में क्यों देर होती है, कार्यावधि और नियुक्तियां

ढ़ायी क्यों नहीं गयीं ? सरकार ने इस ओर ा किया ?

—स्वामी आनंद ध्रुव
सुदर्शन भवन, इलाहाबाद

कौन याद करेगा ?

'आखिर कब तक' में निरालाजी के बारे में ा । यह पढ़कर दुःख हुआ कि जिस कवि ने ी साहित्य को छायावाद से लेकर प्रयोगवाद चरम उत्कर्ष तक अपनी अनवरत साधना से चाया, जिसने गीतिक से सांध्यकाकली और नी से चाबुक तक का साहित्य संग्रह समाज अर्पित किया । उनकी स्मृति के एक छोटे-से रक को हमारा समाज कूड़ों से सुशोभित ना है !

जबकि शेक्सपीयर की याद में रेजों ने उनके जन्मस्थान स्ट्रैटफोर्ड को दर्शनीय स्थल बनाकर सजा दिया है ।

—रेणुका श्रीवार
जमशेदपुर

वैविध्यपूर्ण विशेषांक

'कादम्बिनी' का मार्च '९७ का अंक अंधकार के विरुद्ध प्रकाश का, अज्ञान के विरुद्ध ज्ञान का, मानव की अमानवीयता के विरुद्ध मानवीयता का संदेश तो देता ही है, साथ ही साथ व्यक्ति को रोगों से मुक्ति दिलाकर एवं निरोगी बनाकर कर्म-पथ की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित भी करता है ।

'कालचिंतन' का यह वाक्य कि 'अंधेरे से निकलने का रास्ता वे अंधेरे में खोजते हैं'— भारतीय संदर्भ में प्रासंगिक है ।

—संध्या
रतलाम (म.प्र.)-४५७००१

मासिक प्रकाशन

कादम्बिनी

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

● वर्ष ३७
● अंक ७
● मई, १९९७

लेख एवं निबंध

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

अर्द्धवार्षिक : ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये; द्विवार्षिक : २२५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान : अर्द्धवार्षिक; १८५ रु. (अमरीकी डॉलर-७, पौंड-४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर-१३.५०, पौंड-७.५०); अन्य सभी देशों के लिए : अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड-६), वार्षिक : ५३५ रु. (२०.५० डॉलर, पौंड-११.५०)
शुल्क भेजने का पता : प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-१
आवरण (चित्र) : अश्वनी चोपड़ा ।

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कहानियां एवं व्यंग्य

कविताएं

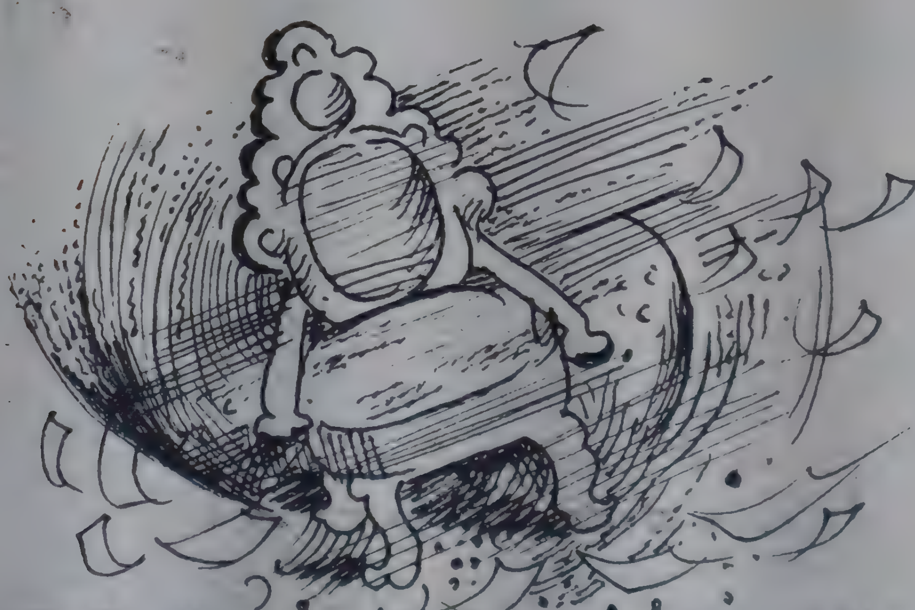
स्थायी स्तंभ

संपादकीय परिवार

मुख्य उप-संपादक : भगवती प्रसाद डोभाल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, सुरेश नीरव
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, धनंजय सिंह, अरुण कुमार जैमिनि, सुजीत वाजपेयी
प्रूफ रीडर : प्रदीप कुमार
कला विभाग प्रमुख : सुकुमार चटर्जी
चित्रकार : भुपेन मंडल
संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

काल चिंतन

कुरसी



—कुरसी का इतिहास बार बार दोहराया जा रहा है ।
—कुरसी का अर्थ है सत्ता ।
—सत्ता क्रूर और निर्मम होती है । वह अपने आस-पास के घेरों को काटती चलती है । यदि वह उन्हें न काटे तो वे सत्ता को काट देंगे ।
—चाणक्य ने नंदवंश का विनाश सहज ही नहीं कर दिया था । वह भय से आक्रांत था ।
—इतिहास की समूची काल-सूची स्वर्णमंडित कुरसियों की लोलुप आकांक्षा

से भरी पड़ी है ।
—अपने भाई कौरवों की लाशों पर पांडवों ने विजय-पर्व मनाया था ।
—इतिहास के स्वर्ण-युग के नियंता सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपने अग्रज रामगुप्त के प्राण लेकर उसकी नववधू ध्रुवदेवी का अपहरण किया था ।
—सम्राट अशोक ने अपने भाइयों को मौत के घाट उतारा था ।
—शिशुनाग ने उज्जैन के प्रद्योत वंश को धराशायी किया ।
—बुद्ध और महावीर के युग में अजातशत्रु ने अपने पिता बिंबसार को बंदी बनाकर स्वयं अपना राजतिलक किया था ।
—अनिरुद्ध, मुंड, नागदासक पितृहंता थे ।
—मुगलवंश की संपूर्ण इतिहास-यात्रा कुरसियों को खाली करने और खाली कुरसियों पर नयी सल्तनत के झंडे गाड़ने का क्रम रही है—शाहजहां और औरंगजेब ने अपने भाइयों को एक-एक कर मौत के घाट उतारा है और क्रूर औरंगजेब ने अपने कलाप्रेमी पिता शाहजहां को बंदी बनाकर एक-एक बूंद पानी के लिए तरसाया है ।
—मर्यादा पुरुषोत्तम और भारतीय सामाजिक चेतना के प्रतीक राम के समय भी संभवतः यह परंपरा अज्ञात नहीं थी । विवश और भस्मासुर की तरह अरक्षित समझने वाले सम्राट दशरथ ने स्वयं राम को सलाह दी थी—वन जाने की अपेक्षा वे सत्ता छीनकर दशरथ को कैद कर लें—बाल्मीकि इसके प्रमाण हैं :

उवाच राजा संप्रेक्ष्य वनवासाय राघवम्
अहं राघव कैकेया वरदानेन मोहितः
अयोध्यायां त्वमेवाद्य भव राजा निगृह्य माम् ।
(वा. रामायण—२, ३४, २५, २६)

—यह दूसरी बात है कि राम ने यह घृणित कार्य नहीं स्वीकारा और उन्होंने वन जाकर जीवन की करुणा को भाग्य की स्वर-लहरियों में ढालकर संगीत का सुख लिया और वे विश्व जन-चेतना के प्रतीक बने !
—लेकिन राम बनने की सामर्थ्य कितनों में है ?

●

—कुरसी की आत्मा भय से आक्रांत है ।
—इसीलिए सेवक स्वामी बन जाते हैं और द्वार-रक्षक प्रतिहार-शासक बनते हैं ।
—कुरसी का जादू स्वर्ण-प्रासादों के खंडहरों में भूतों के नर्तन का इतिहास रहा

—विश्वास है उन्हें आरोपित अवयव की गांठ से जड़ निकलेगी और गुलाब का नया फूल खिलेगा ।
—नहीं जानते वे कि पर्यावरण के विपरीत चीखते हुए उनके स्वर 'शौचालय' में बदल गये हैं ।
—अनभिज्ञ होना, अनजान होना और देखते हुए भी अनदेखा करना, आत्महनन का प्रबल शत्रु है ।

□

—कुरसियों का इतिहास मैं दोहराता रहा हूं । व्यतीत समय की शिलाओं में इस इतिहास ने इतिहास के महान ग्रंथ लिख दिये हैं । तब मैं कहां ? कौन ?
—स्वीकारना चाहिए क्या तब भी पराजय ?
—नहीं !
—सत्ता के गलियारों ने पराजय के प्रतीक देखे हैं तो... ?
—तो ? पराजित होने दें हम उन्हें ।
—पराजित होंगे वे जितनी बार हम विजयी होंगे उतनी ही बार ?
—मनुष्य-शक्ति की पहचान नहीं की किसी ने । बस, कह दिया भीड़, भेड़ है, और शांत हो गये वें, निश्चिंत !
—बताना होगा भीड़, भेड़ नहीं है । भीड़ से उभरने वाले स्वर उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितने संस्कार-मय सभ्यताओं से उभरते हैं ।
—भेड़ों की आवाज को पहचानने का भ्रम जब भेड़ें करने लगती हैं तो उनके लिए शेष रहता है 'वध-गृह' । बस, और कुछ नहीं ।
—आश्वस्त हों हम सब किरकिट से लेकर गिल्ली डंडा तक खेलों से : न्याय न मिले असंभव है ।
—किसी का खरीदा हुआ नहीं है बाजार, न शहर और न धरती का टुकड़ा, वह हमेशा सहचर रहा है समवेत निवासियों का ।
—मेरा अंतिम संदेश तब : 'सहचरो ! पहचानो हर चेहरे को, हर पड़ोसी को, हर स्थिति को और समय की हर ध्वनि को : समर्थ तो तुम हो, कायर हैं वे सब जो शिष्टाचार की सीमित परिभाषा भी नहीं जानते ।
—फिर भय क्यों ?

□

—कुरसी का इतिहास जो भी हो मनुष्यता का इतिहास उससे ऊपर है । अपनी आत्म चेतना की पहचान ही समष्टि का अंतिम स्वर है ।

आखिर कब तक?

हवाई किले बनाइए और घर से भागिए

कुछ समय पहले मैंने चार्ल्स डिकिंस के संबंध में पढ़ा था कि अचानक उनकी कोई अप्रकाशित रचना किसी प्रकाशक को मिल गयी । वह रचना क्या होगी, यह मैं नहीं जानता लेकिन चार्ल्स डिकिंस का नाम 'डेविड कॉपर फील्ड' के साथ बहुत गहराई से जुड़ा है । वह आज के संदर्भ में भी बहुत ताजा और सार्थक उपन्यास है । पाठक अपनी मरजी के कई चरित्र उसमें ढूंढ़ लेते हैं । मैं आज तक 'उरिया हीप' को नहीं भूला । उरिया हीप चार्ल्स डिकिंस के दिमाग का एक ऐसा चरित्र है जो भूत बनकर आज भी घूम रहा है । एक खास बात मुझे पसंद आयी । उसने चार्वाक का सिद्धांत जरूर पढ़ा होगा । चार्वाक ने जो संस्कृत में लिखा है, उसका हिंदीकरण इस प्रकार है :

जब तक जीवे सुख से जीवे
ऋण लेकर घी को पीवे ।

भस्म होगी, नहीं मिलेगी यह देह
पुनर्जन्म है यह ।

उरिया हीप महोदय अक्षरशः इसका पालन करते हैं । मुंशीगिरी का काम करने के बाद जब वह लौटता है, तो अपने बिस्तर पर पड़े हुए हमारे यहां की पंचवर्षीय योजनाओं की तरह न जाने कितनी योजनाएं बनाता है । कभी सोचता है इस खिड़की को तोड़ दूंगा, कभी सोचता है हवा के लिए स्काई लाइड बना दूंगा और कई बार तो पूरा-का-पूरा घर नया बनाने की बात सोचता है । सोचते-सोचते वह सो जाता है । सूरज की किरणें निकलने को होती हैं कि कॉल बेल बजती है । कॉल बेल बजते ही उरिया हीप महोदय घर के पीछे के चोर दरवाजे से बाहर भाग जाता है । आधी रात के बाद लौटता है और फिर वही हवाई किले । दरअसल, उरिया हीप आकंठ कर्ज से डूबा था । कर्जदारों के वह हाथ नहीं लगता था । वे सोचते थे कम-से-कम मुंह अंधेरे सवेरे तो वह अपने घर पर मिलेगा ही, लेकिन मियां उरिया हीप से जीतना कर्जदारों के बस का नहीं था ।

कोई भी लेखक तभी महान बनता है जब उसका चरित्र सनातन सत्य बना रहता है । चार्ल्स डिकिंस नहीं रहे लेकिन उरिया हीप कम-से-कम हिंदुस्तान में बड़े मजे में पल रहे हैं । इन उरिया हीपों की जमात व्यापार से लेकर राजनीति तक फैली है । आप आसपास ही देखिए आपको आज भी चिरजीवी उरिया हीप मिल जाएगा । मैं नहीं चाहता कि उनका नाम लिखकर अपनी गरदन कटवाऊं । अब आप में उरिया हीप को पकड़ने का सामर्थ्य नहीं है तो अपना सिर पीटिए और अपनी बुद्धि पर तरस खाइए कि

यहां के अखबार पता भी देते हैं तो आप पकड़ नहीं पाते और अदालत में जाते हैं तो भी अपराध सिद्ध नहीं कर पाते ।

कौन लड़की है, कौन महिला

शिकागो का एक दिलचस्प समाचार है । यह समाचार सत्रह हजार लड़कियों के शारीरिक परीक्षण के बाद डॉक्टरों की एक टीम ने घोषित किया है । हमारे देश में यह मान्यता रही है कि एक लड़की का संधिकाल सोलह वर्ष से आरंभ होता है, लेकिन यह धारणा एकदम मिथ्या सिद्ध हुई है । ताजा निष्कर्ष यह है कि अमरीका में लड़कियां आठ वर्ष से ही महिला बनने की स्थिति में पहुंच जाती हैं । इतनी छोटी आयु में उनका पूरा शारीरिक विकास हो जाता है और उनके 'पीरियड' के दिन भी शुरू हो जाते हैं । समाचारपत्र में छपी रिसर्च के अनुसार सत्रह हजार लड़कियों में से एक हजार छह सौ लड़कियां 'ब्लैक रेस' की हैं और बाकी 'व्हाइट रेस' की हैं । गहरे शोध के बाद पता चला है कि फीमेल हारमोन का इतने तेजी से विकास होने का कारण प्रसाधन के साधन हैं । नार्थ करोलिना विश्वविद्यालय के डॉक्टर हरमन गिलंस का कहना है कि जब पौष्टिक भोजन की यहां कमी थी तब स्थितियां यह नहीं थीं । पौष्टिक भोजन का पर्याप्त मात्रा में मिलना और सौंदर्य प्रसाधन में उपयोग में लाये जानेवाले रासायनिक द्रव्य हारमोंस को तीव्र गति से बढ़ा रहे हैं और उसके कारण लड़कियों की यौन इच्छा में वृद्धि हुई है । इस शोध का उल्लेख मैं इसलिए कर रहा हूं कि हमारे देश में भी रासायनिक सौंदर्य प्रसाधनों में बेतहाशा वृद्धि हो रही है,इसलिए समय रहते हमें सजग हो जाना चाहिए । ऐसा नहीं हुआ तो जनसंख्या को रोकने के सारे कार्यक्रम खतरे में पड़ जाएंगे ।

साहित्य सरोवर गोंदिया में

गोंदिया महाराष्ट्र में भंडारा जिले की तहसील है, लेकिन भंडारा से वह शहर बड़ा है । वहां की कई संस्थाओं ने मिलकर मेरे लिए एक साहित्यिक आयोजन रखा था । इसमें मुख्य प्रेरणा थी कादम्बिनी क्लब के संयोजक श्री रमेश चंद्र दुबे की । वह 'भंडारा शहर' साप्ताहिक पत्रिका के प्रकाशक-संपादक हैं, लेकिन उन्हें पूरे शहर के साहित्यकारों का सहयोग मिला । शारदा वाचनालय भवन में अच्छी-खासी प्रबुद्ध साहित्य प्रेमियों की भीड़ थी । उनमें संस्था के ट्रस्ट बोर्ड के अध्यक्ष ब्रज मोहन बजाज, कृष्ण लाल बग्गा, रमेश चंद गुप्ता और ऐसे अनेक उत्साही व्यक्ति उपस्थित थे । मैंने देखा कि बहुत बड़ा भवन है । दो मंजिले भवन में दो बड़े-बड़े हॉल हैं और एक अच्छा खासा पुस्तकालय है । यह सब बिना किसी सरकारी अवदान के बनाया गया है । मुझे प्रसन्नता हुई कि कादम्बिनी क्लब के साथ शारदा वाचनालय और दो-तीन

संस्थाओं ने एक जगह एकत्रित होकर गोंदिया-जैसे छोटे शहर में एक अच्छा सांस्कृतिक केंद्र बना लिया है । ऐसे साहित्यिक-सांस्कृतिक केंद्र हर शहरों में हों तो राजनीति की कालिख से आसानी से बचा जा सकता है ।

सिवनी के लिए समर्पित 'मधुर'

डॉ. रामनारायण सिंह 'मधुर' के आग्रह से मुझे सिवनी जाना पड़ा । अवसर था— 'गंगा से बैनगंगा तक' के लेखक मधुरजी का सार्वजनिक सम्मान । मधुरजी बनारस के हैं,लेकिन सिवनी के कॉलेज के हिंदी विभाग में काम करते हुए हाल ही सेवानिवृत्त हुए हैं । बनारस में गंगा नदी है और सिवनी में बैनगंगा । मधुरजी अत्यंत विनम्र और सहज व्यक्ति हैं । मैं जब नागपुर विमान तल पर उतरा तो दो मित्रों ने मेरा स्वागत किया । मैंने कहा, 'मधुरजी तो बहुत व्यस्त होंगे ।' हाथ जोड़कर उन्होंने जवाब दिया, 'जी, मैं ही मधुर हूं ।' ऐसे मधुर आदमी से मिलकर सचमुच मुझे प्रसन्नता हुई । सम्मान उनका होना है और वहीं पहुंच गये अतिथि को सादर अपने शहर में लाने के लिए । मेरे साथ स्वामी प्रज्ञानंद भी थे ।

मधुरजी 'आंचलिक साहित्यकार परिषद' से बहुत समय से जुड़े हुए हैं । मजे की बात तो यह है कि सम्मान उनका होना था,लेकिन दर्जनों पुष्पहार मुझे और प्रज्ञानंदजी को भी पहनाये गये । मधुरजी के नाम बचे शेष कुछ फूलों के फैले हुए पुष्पहार । एक बार कानपुर के मित्रों ने सौ किलो गुलाब के फूलों की माला पहनाकर मेरा स्वागत किया था । मधुरजी को कुल मिलाकर शायद सौ फूल भी नसीब नहीं हुए, लेकिन खुशी इस बात की है कि पूरे शहर ने और आसपास से आये कई शहरों के साहित्यकारों ने मधुरजी का पूरे मन से सम्मान किया । एक लेखक को और क्या चाहिए ? धन-संपत्ति तो दूर की चीज, ऐसा सम्मान मिल जाए तो उससे बड़ी उपलब्धि क्या हो सकती है ?

शहर भी कितने बदल जाते हैं ?

वर्षों बाद मुझे नागपुर जाने का मौका मिला । सब कुछ इतना बदल गया है कि अब न मैं मोहन नगर का अपना मकान ढूंढ़ सका और न वे साथी मिले जो कभी साथ पढ़ते थे या अखबार में काम करते थे । मोर हिंदी भवन किसी समय में नाटक करवाता था या फिर भाषण मालाएं । अब वहां व्यापारिक प्रतिष्ठानों के साइन बोर्ड चमकते हैं । मुझे पता लगा है कि वहां का बहुत बड़ा सभागार भी साहित्यकारों के लिए नहीं है । उसे भी किराये पर दे दिया गया है । एक जमाने में जिस कमरे में प्रयाग दत्त शुक्ल रहा करते थे, वह भी व्यवसाय का केंद्र बन गया है । मोर हिंदी भवन डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और जवाहर लाल नेहरू के स्पर्श से साहित्य का जीवंत केंद्र था । नागपुर का दुर्भाग्य यह है

कि पुनर्गठन के बाद वह अकेला शहर है जो राजधानी नहीं रहा। इसके साथ साहित्य के संस्कार भी चले गये। इसी दर्द के कारण मैं उस शहर में ठहरा नहीं और शहर का एक पूरा चक्कर लगाकर गोंदिया और सिवनी चला गया।

भगवान कृष्ण के साथ खिलवाड़ क्यों ?

विदेशी जूतों की एक कंपनी के खिलाफ कुछ मुसलिम संगठनों ने जेहाद छेड़ने की धमकी दी है। उनका कहना है कि जूतों के पिछले हिस्सों में जो अग्नि शिखाओं— जैसे रेखांकन हैं वे अल्लाह का नाम प्रतीत होते हैं। विदेशी कंपनियों के लिए दूसरों के धर्मों के प्रतीकों के साथ खिलवाड़ करना कोई नयी बात नहीं है। पहले भी एक अमरीकी कलाकार ने अपने रेकॉर्ड के जैकेट पर कृष्ण के विराट स्वरूप का चित्र छापा था। इस परिवर्तन के साथ कि उसमें कृष्ण के चेहरे की जगह कलाकार का चेहरा चिपका दिया गया था। अब अमरीका के रॉक ग्रुप के ऐरो स्मिथ ने सोनी ग्रुप कंपनी (कोलंबिया रेकॉर्ड) के साथ मिलकर एक सी.डी. रेकॉर्ड बाजार में बेचने के लिए तैयार किया है। नाम है— 'नाइन लाइव्स'। इसके जैकेट पर कृष्ण के चित्र को विकृत करके छापा गया है। कृष्ण कालिया नाग को नाथते हुए दिखाये गये हैं। सोनी और कोलंबिया के चित्रकारों ने इस चित्र में कृष्ण के मुंह की जगह बिल्ली का चेहरा बनाया है। यही नहीं औरतों की चोली पहनाकर उन्हें नारी रूप भी दे दिया है। उनकी यह हिमाकत कई भारतीयों को नाराज कर रही है। एक समाचार है कि अमरीकन हिंदू एंटी डिफमेशन कोलिएशन ने चेतावनी दी है कि यदि सोनी समूह इस सी.डी. की बिक्री को नहीं रोकता और जैकेट को पूरी तरह नहीं बदलता तो विश्वभर के हिंदू उनके ऑफिसों पर धरना देंगे। उनके उत्पादन नहीं खरीदेंगे और उन्हें अदालत में भी खींचेंगे। यूं यह बात अमरीका की है और अमरीका के हिंदू इस लड़ाई को छेड़ रहे हैं, लेकिन भारत में रहनेवाले न केवल हिंदुओं बल्कि अन्य धर्मावलंबियों को भी इसके खिलाफ आवाज उठानी होगी। एक बार 'टाइम' मैगजीन ने मुहम्मद साहब का काल्पनिक चित्र छापा था तो सारे संसार के मुसलिम देशों ने उसका कड़ा विरोध किया था। यही नहीं भारत में 'टाइम' के उस अंक पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। तुलसीदास ने ठीक ही कहा है—भय बिनु होय न प्रीति। अपने उत्पादनों के प्रचार के लिए किसी भी सीमा तक जानेवाली और लोगों की भावनाओं के साथ खेलनेवाली कंपनियों को ऐसा सबक सिखाना जरूरी है कि वह फिर ऐसी हिमाकत नहीं कर सकें। हिंदू धर्म की उदारता के साथ खिलवाड़ नहीं किया जाना चाहिए।

—राजेन्द्र अवस्थी

आस्था के आयाम

यज्ञ और युद्ध

पानीपत की तीसरी लड़ाई समाप्त हो चुकी थी । पूना के सिंहासन पर माधवराव पेशवा आसीन थे ।। राजकाज संभालने के बजाय पूजा-पाठ और यज्ञ-हवन अनुष्ठानों में ही अपने *कर्त्तव्य* की इतिश्री समझता था ।

मराठों की यह उत्साहहीनता प्रधान न्यायाधीश रामशास्त्री को खल गयी । माधवराव की दिग्भ्रांति देखकर तो जैसे वे भय से कांप उठे, ''क्या शिवाजी और बाजीराव के सपने अधूरे ही रह जाएंगे ?''

इन्हीं चिंताओं में डूबते-उतराते रामशास्त्री ाधवराव से भेंट करने दरबार में गये, किंतु ाधवराव तो यज्ञानुष्ठान में ऐसा लीन था कि ामशास्त्री से मिलने का अवकाश वह नहीं िकाल सका । मराठा-साम्राज्य के प्रधान ्यायाधीश आघात से तिलमिला उठे, ''जिस ्जा को प्रजा के दुःख-दर्द सुनने की, यहां तक क राज्य के प्रधान न्यायाधीश तक से मिलने ी फुरसत नहीं, वह मराठों के गौरव का कैसे द्धार करेगा ?''

तीन दिन तक लगातार हाजिरी बजाने के ाद जब रामशास्त्री की पेशवा से भेंट हुई, तब ़फाई देते हुए माधवराव ने कहा, ''शास्त्रीजी, मैं लाचार था, अनुष्ठान में बाधा पड़ती । मैं उठकर आ नहीं सका । धर्म का निर्वाह हमारा परम *कर्त्तव्य* है ।''

रामशास्त्री को मानो एक साथ ही हजार बिच्छुओं ने काट लिया, ''महाराज, फिर यह न्यायासन भी आप ही संभालिए । आखिर, मुझे भी तो अपनी आत्मा का कल्याण करना है । यह मेरा त्यागपत्र लीजिए । मैं काशी जा रहा हूं, मुक्ति की साधना करने ।''

शास्त्रीजी के घाव पर जैसे माधवराव ने नमक छिड़क दिया, क्रोध में उबलते हुए बोले, ''जो राजा सेर भर घी होम कर प्रजापालन की जिम्मेदारी से बरी होना चाहता है, उसका कैसे विश्वास किया जाए ?''

माधवराव ने भी तर्क दिया, ''किंतु शास्त्रीजी, हम ब्राह्मणों का धर्म ही तो मूल स्तंभ है, धर्म को छोड़ देंगे तो हमारा क्या होगा ?''

रामशास्त्री आपे से बाहर हो गये, ''तो माधवराव फिर कर्मकांडी ब्राह्मण है, मराठा-साम्राज्य का कर्णधार नहीं । चलिए कल ही हम दोनों संन्यास ले लेते हैं । यज्ञ और युद्ध की खिचड़ी एक साथ नहीं पक सकती । या तो योगी बनिए या योद्धा । छत्रपति के स्वप्न को पूरा करने की जिम्मेदारी सिर पर ढोनेवाले का जप-तप में निष्क्रिय हो जाना अक्षम्य अपराध है ।''

रामशास्त्री के इन वचन-बाणों ने माधवराव के भीतर मानो *कर्त्तव्यनिष्ठा* और स्फूर्ति के स्रोत प्रस्फुटित कर दिये । पूना में रणभेरियां बजने लगीं । माधवराव के नेतृत्व में फिर वीर मराठे देशोद्धार के लिए निकल पड़े ।

प्रस्तुति : रतनलाल जोशी

भ्रष्टाचार

सत्ता के पास बांटने लायक बहुत कुछ होता है ?

भ्रष्टाचार शायद सभ्यता के हर दौर में रहा है । महाभारत काल में भी भ्रष्टाचार था और चाणक्य के युग में भी, लेकिन मौजूदा दौर जैसा महाभ्रष्टाचार संभवतः पहले कभी नहीं रहा होगा ? प्रस्तुत है भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार को उजागर करता यह रोचक लेख, जिसे प्रस्तुत कर रहे हैं ज्ञानेन्द्र — सं

भ्रष्टाचार शायद सभ्यता के हर दौर में रहा है । महाभारत काल में भी भ्रष्टाचार था और चाणक्य के युग में भी, लेकिन मौजूदा दौर-जैसा महाभ्रष्टाचार संभवतः पहले कभी नहीं रहा होगा ।

यह जरूर संभव है कि पहले के समय में भी लोग अपने दौर के भ्रष्टाचार से इतने ही पीड़ित रहे हों, जितने हम आज हैं । भ्रष्टाचार के इतिहास के लिहाज से हमारी आंखों के सामने ही कई युग तेजी से बदल गये हैं । छिट-पुट घटनाओं के दौर से सुविधा शुल्क और चाय-मिठाई की रकम मांगने के दौर के बाद अब हम मेगा-करप्शन या महाभ्रष्टाचार के युग में जी रहे हैं । सूरज मंडल की स्वीकारोक्ति ने इस महाभ्रष्टाचार के दो आयाम उजागर किये हैं । (१) सत्ता के पास बांटने लायक बहुत-कुछ होता है और (२) कानून या संसद तक की पवित्रता कागजी है ।

तीसरा आयाम जो थोड़ा छिपा हुआ है, वह यह कि भ्रष्ट कारगुजारियों का भय शून्य है । दरअसल, इन्हीं तीन बातों के स्थापित हो जाने से भ्रष्टाचार का युग बदल गया है । इसके श्रेय का पहला अध्याय अब्दुल रहमान अंतुले के नाम जाता है । अंतुले दोषी थे या नहीं, इसपर

टिप्पणी किये बिना भी इतना कहा जा सकता है कि अंतुले कांड और उसकी परिणति ने यह सिद्ध कर दिया था कि बैरिस्टरी प्रतिभा का प्रतिष्ठान कानूनी ईंट ढेलों से ध्वस्त नहीं हो सकता, यह भी कि कानूनों में बीसियों छेद हैं ।

आपको बस उनकी जानकारी होनी चाहिए, यह कि जब तक आप पर आरोप लगानेवालों में राम जेठमलानी और राम नाईक जितना दमखम न हो, आप आसानी से बच निकल सकते हैं । अंतुले प्रकरण के हश्र ने निस्संदेह कई लोगों का मनोबल ऊंचा कर दिया होगा ।

वी. पी. सिंह की राह पर चिदम्बरम

भ्रष्टाचार के इतिहास की यह पहली करवट थी । इसके बाद आठ दस वर्ष यही स्थिति पनपती पलती रही । हालात में सबसे व्यापक मोड़ १९९१ से आया । यह मानना बेहद सरल है, लेकिन बारीकी से देखा जाए तो मौजूदा महाभ्रष्टाचार का दौर १९८९ में जन्मा था और यह भी कहा जा सकता है कि ऐतिहासिक दृष्टि से अगर कोई एक व्यक्ति आज के दौर के महाभ्रष्टाचार के लिए जिम्मेदार है तो वह कोई और नहीं— वी. पी. सिंह है । जो परिपाटी वी. पी. सिंह ने डाली, आज चिदम्बरम उसी पर



चल रहे हैं । इन दोनों में जबर्दस्त साम्य भी है ।

एक रेखाचित्र बनाकर इस स्थिति को समझें । वी. पी.-चिदम्बरम कांग्रेस के नेता थे । वी. पी. सिंह ने कांग्रेस छोड़ दी और प्रधानमंत्री हुए । चिदम्बरम ने कांग्रेस छोड़कर टी. एम. सी. बनायी । टी. एम. सी. उस संयुक्त मोर्चा में शामिल हुई जिसके कर्णधार वी. पी. सिंह थे । चिदम्बरम संयुक्त मोर्चा सरकार में वित्तमंत्री बने ।

भ्रष्टाचार का पहला मुद्दा— बोफोर्स

आशय किसी पैरोडी या तुकबंदी का नहीं है । न ही आशय यह है कि कांग्रेस छोड़नेवाले, एकबारगी ही सही, कुरसी पर बैठने में सफल रहे हैं । आशय चिदम्बरम के बजट के एक अंश की मीमांसा का है और इसके लिए इसे स्पष्ट करना जरूरी है । बजट का यह अंश आज के दौर की सर्वमान्य हो चुकी और सबसे बड़ी व्याधि— भ्रष्टाचार से संबंधित है । भ्रष्टाचार की कई परिभाषाएं दी गयी हैं, लेकिन अवैधानिक, अघोषित, अज्ञात या असार्वजनिक स्रोत से प्राप्त आय इसका बेहद स्पष्ट और सरल सबूत है । चिदम्बरम ने इस काली आय को आसानी से सफेद करने का तरीका सुझाया है । भ्रष्टाचार की व्यापकता को सरकारी तौर पर स्वीकार करने का यह सबूत है कि भारत के वित्तमंत्री अपने घाटे की पूर्ति के लिए इस रकम पर नजर गड़ाते हैं । यह रकम बड़ी भी हो सकती है इसका सबसे पहला सार्वजनिक संकेत बोफोर्स कांड से मिला था । वी. पी. सिंह बोफोर्स मुद्दे को लेकर प्रधानमंत्री की कुरसी तक पहुंचे थे । वी. पी. सिंह ने उस समय जनता से जो स्पष्ट वायदे किये थे, उनमें इस कांड की दलाली की रकम वापस देश को दिलाना शामिल था । उन्होंने यहां तक कहा था कि इतनी रकम से ६४ युद्धक टैंक खरीदे जा सकते थे अथवा ६४ गांवों का कायाकल्प किया जा सकता था । आज के दौर के परम और विराट घोटालों की तुलना में बोफोर्स कांड कुछ पसंगा भी नहीं ठहरता है और इसी बात से यह मानने से स्पष्ट आधार बनता है कि (१) बोफोर्स कांड के पहले तक भारी स्तर के भ्रष्टाचार कांड गौण थे, क्योंकि वे सार्वजनिक और चुनावी मुद्दा बनाने लायक भी नहीं माने गये । बोफोर्स कांड के समय (१९८९ में) जनता अपने ६४ करोड़ वसूलने के लिए सरकार बदल देती थी । हर लिहाज से मौजूदा भारी भ्रष्टाचार श्रृंखला का पहला कांड बोफोर्स को माना जा सकता है । बोफोर्स कांड के बाद वी. पी. सिंह प्रधानमंत्री पद पर आरूढ़ हुए । वी. पी. सिंह पर आज तक एक रुपये की हेराफेरी का आरोप नहीं लगा है, अर्थात भ्रष्टाचार की कानूनी परिभाषा पर वी. पी. सिंह बेदाग हैं ।

महाभ्रष्टाचार की शुरुआत दरअसल यहीं से होती है । बोफोर्स नाम पर सत्ता में आनेवाले वी. पी. सिंह की सरकार ने इस घोटाले की जांच के लिए कुछ विशेष नहीं किया (या नहीं कर सकी या नहीं होने दिया, जो भी हो) । इससे दो संकेत बहुत गहरे गये । पहला संकेत यह गया कि बड़े भ्रष्टाचार पर भी, सत्ता बदलने की स्थिति में भी, किसी का कुछ नहीं बिगड़ता । इसका एक कारण यह भी था कि वी. पी. सरकार के पतन की घटना ने बोफोर्स दलालों को परोक्ष ढंग से राजनीतिक रूप से दोषमुक्त कर दिया था । दूसरा यह पूरा घटनाक्रम जनता

ाथ सरासर धोखाधड़ी थी कि उसे भ्रष्टाचार
ाम पर मतदान के लिए ठगा गया था ।
यह संकेत भी गया या जाना चाहिए,
ता को बेवकूफ बनाकर चलते बना जा
ा है ।

भ्रष्टाचार का अक्षम्य अपराध

ी. पी. सिंह ने और जो किया हो या उनके
और जो परिस्थितियां रही हों, सिर्फ
र्स, एच. डी. डब्लयू. वेस्टलैंड पर
ाई किये बिना वापस सत्ताच्युत होकर वी.
िंह ने भ्रष्टाचार के इतिहास का सबसे
म्य अपराध किया है । उन्होंने चलते-चलते
डल कार्ड खेला, उसने सत्ता से राजनीतिक
संधान (एक और भ्रष्टाचार) की परिपाटी
ला दी । वी. पी. सिंह और चिदम्बरम की
स्पष्ट समानता में यह तथ्य भी जुड़ता है
स तरह वी. पी. सिंह स्वयं बेदाग थे, पर
कीचड़ को गुलाल का दरजा दे दिया था,
रह पी. चिदम्बरम खुद बेदाग बने रहे हैं,
तो उन्होंने भ्रष्टाचारियों को बख्शने में
ी की है और न बैंक घोटाले को दबाने में
किया है । बजट में भी उन्होंने जो टैक्स
और जो टैक्स बांटे वे सब पूरी तरह उस
पिछड़ा वर्ग' के लिए थे, जो चिदम्बरम
ना मंडल मसीहा मानता है । चूंकि वे
न्हें बाकी लोग और कानून 'भ्रष्ट' कहता
इसी चिदम्बरम वोट बैंक के प्रभावशाली
ाईदार पिछड़े' हैं, लिहाजा चिदम्बरम ने
भी भला कर देने का प्रयास किया है ।
र्फ यह है कि चिदम्बरम के ओ. बी.
दर बिग करए) उनके लिए जुलूस नहीं
सकते ।

सरकार को चुनौती

वी. पी. सिंह हों या मनमोहन सिंह, इन दोनों महानुभावों की अपनी-अपनी साफ कमीजें इस भ्रष्टाचार इतिहास का एक और आयाम है । पूरी व्यवस्था, पूरी प्रक्रिया भ्रष्ट है, लेकिन इस समूची व्यवस्था को चुनौती देने का एकमात्र तरीका सिर्फ सरकार को चुनौती देना है ।

बोफोर्स कांड के पहले तक भारी स्तर के भ्रष्टाचार कांड गौण थे, क्योंकि वे सार्वजनिक और चुनावी मुद्दा बनाने लायक भी नहीं माने गये । बोफोर्स कांड के समय (१९८९ में) जनता अपने ६४ करोड़ वसूलने के लिए सरकार बदल देती थी । हर लिहाज से मौजूदा भारी भ्रष्टाचार श्रृंखला का पहला कांड बोफोर्स को माना जा सकता है ।

प्रक्रिया यही है । सरकार को सफल चुनौती देना सिर्फ राजनीतिक परिस्थितियों के अनुकूल होने पर संभव है । सत्ता की अगली कतार में बैठे लोगों की बेदाग छवि इस चुनौती को और कठिन व दुरुह बना देती है । सरकार को दी जा सकनेवाली चुनौती के कठिन होने का स्पष्ट अर्थ है, चल रही व्यवस्था को पुष्ट करना ।

गौर से देखा जाए तो यह स्वच्छ छवि-भ्रष्टाचार के राजनीतिक पहरेदार का काम करती है । वी. पी. सिंह मंडल आयोग की सिफारिशों

का राजनीतिक लाभ उस स्थिति में शायद बिलकुल न ले पाते, अगर उसके पहले ही उनकी छवि बोफोर्स कांड पर लीपा-पोती करनेवाले की हो जाती । राजनीति में यह बिलकुल सहज है । फिर इन स्वच्छ छविमान व्यक्तित्वों की नाक के नीचे हो रहा भ्रष्टाचार कानून लागू करनेवाली एजेंसियों की इच्छा शक्ति शून्य कर देता है । इन लोगों की ही मौजूदगी के कारण सरकार को भी भ्रष्टाचार का 'दोषी' नहीं कहा जाने दिया जाता है । सो अंतुले ने कानून को, वी. पी. सिंह ने तंत्र को और मनमोहन-चिदम्बरम ने इसके मनोबल को धत्ता दिखा दिया ।

अंतुले-अनतुले रह गये

अब जैसा कि स्पष्ट दिख रहा है, मौजूदा कानून, मौजूदा तंत्र और मौजूदा इच्छा शक्ति साधारण भ्रष्टाचार से भी नहीं निपट सकती । अब किसी बिंदु को भ्रष्टाचार की गंगोत्री की संज्ञा देना भी उचित नहीं रह गया है । अब तो भ्रष्टाचार या तो आकाश है या वायुमंडल या समुद्र । हर हाल में उसका उद्‌गम निर्धारित करना असंभव हो चुका है । दरअसल, किसी छोर से कोई ठोस कार्रवाई न हो सकना महाभ्रष्टाचार की पहली शर्त है, जिसे हमारी मौजूदा व्यवस्था पूरा कर रही है । ऐसे में भ्रष्टाचार नेटवर्क मौजूदा व्यवस्था और उसके छिद्रों पर इस तरह आश्रित हो गया है कि अब उन छिद्रों को बनाये रखना भ्रष्टाचार नेटवर्क की स्वाभाविक आवश्यकता है । लोकायुक्त, लोकपाल संस्थाओं पर लगते अड़ंगे, इसका उदाहरण है । इस प्रक्रिया में सबसे बड़ी भूमिका विधान मंडलों की रहती है । इसीलिए भ्रष्टाचार नेटवर्क सदैव किसी न किसी ढंग से जनता से जुड़ा रहता है । रैली-रैला, हिमाचल की क्षेत्रीय पार्टी से लेकर विवेकाधीन कोष तक सारी घटनाएं जनता को ढाल बनाने के उदाहरण हैं । इसी प्रकार अब भ्रष्टाचार के 'लोकतांत्रीकरण' के दौर में कोई भी स्तर पर शिखर का आश्रित नहीं रह गया है और हर पायदान अपने को सुरक्षित-संरक्षित रखने के उपाय जुटाने में स्वावलंबी हो चुका है । यह उपाय कानूनी से लेकर बाहुबल और आध्यात्म तक कुछ भी हो सकते हैं । इस गुण के विकास में वी. पी. सिंह के बराबर का योगदान अंतुले प्रकरण से गये संकेतों का भी है । अंतुले प्रकरण गंगोत्री से स्वतंत्र हो चुकी धारा के बाल-बाल बच निकलने का इतिहास है ।

शेषन का देर से उदय

अंतुले, वी. पी. सिंह और नरसिंह राव के अलावा कुछ घटनाओं ने भी मौजूदा दौर को आकार दिया है । मसलन, शेषन का बहुत देर से उदय होना, इस दौर का और राजनीतिक अनिश्चितता के दौर का एक साथ आना, जिसमें भय ही समाप्त कर दिया । इसी प्रकार व्यवस्था के बाकी अंगों का भी साथ-साथ निष्क्रिय होना, कमिटेड ब्यूरोक्रेसी का विस्तार होना, बाजारीकरण प्रक्रिया की छाया मीडिया तक पहुंचना और साथ-साथ आर्थिक उदारीकरण का शोर तेज होने से मौजूदा महाभ्रष्टाचार दौर को बड़ी सुगमता हुई है । यह तय है कि ब्रिटिश राज और समाजवादी राज की तरह यह दौर भी जाएगा जरूर, लेकिन इसकी विदाई की प्रक्रिया भी क्रांतिक होगी ।

— ९-जी., पॉकेट-ए-३,
मयूर विहार, फेज-३, दिल्ली-९६

अच्छा लगता है

जबसे मिला तुझसे मेरा मन
अच्छा लगता है
हर दर्शन से तेरा दर्शन
अच्छा लगता है

जिसका खाता, उसे सिखाता
राम-राम कहना
मुझको तो पिंजरे का हिरामन
अच्छा लगता है

हर धागे पर छाप है
मेरे दूध के दांतों की
फटा-पुराना मां का दामन
अच्छा लगता है

मुझसे पहले उन तालों की
तू सुध ले जिनकी
झांकना तेरा दरपन-दरपन
अच्छा लगता है

बार-बार बिजलियां नजर की
कर देती स्वाहा
फिर भी इन जुल्फों का सावन
अच्छा लगता है

छोड़ पराया घर परदेसी
आ जा फागुन में
देख कि कितना अपना आंगन
अच्छा लगता है

पूरा नाम न ले पाये तो
'नाथ' कह दिया कर
तेरे मुंह से यह अपनापन
अच्छा लगता है

—बुद्धिनाथ मिश्र

४१, सेंट्रल रोड, यादवपुर, कलकत्ता-७०००३२



बिखराव

बिखरते-बिखरते
सब कुछ बिखर गया है
जो बिखरा नहीं है
वह भी बिखरा जा रहा है

बिखरे हुए को समेटना
बहुत मुश्किल होता है
शिथिल पड़ गयी है अस्ति
अंतहीन बिखराव से
गलती मोमबत्ती की तरह
बैठती जा रही है
पल-पल नीचे

बहुत क्षीण हो चुकी है अस्ति
कमजोर हो चुकी है
जो शक्ति अवशेष है
वह तिल-तिल विघटित हो
बढ़ रही है
समाप्ति की ओर
अंधकार की ओर
महामौन की ओर

—मनोहर बंद्योपाध्याय

२०३, सेक्टर ३७
फरीदाबाद-१२१००३

आज भी कश्मीर वही है

शरणार्थी का अंजाम मौत है

● बीना बुदकी

कश्मीर में चुनाव हुए और दावे किये गये कि स्थिति अब पहले जैसी नहीं है । हजारों शरणार्थी अब भी अपने घरों से दूर हैं । क्या वास्तव में कश्मीर के हालात बदल गये, क्या वास्तव में अमन-चैन कायम हो गया है ? इस सारी स्थिति का खाका खींचा है लेखिका ने, जो कई वर्षों बाद कश्मीर गयी थीं । कश्मीर से लौटने के बाद वहां की असल तस्वीर प्रस्तुत करनेवाला यह लेख पाठकों को जरूर [illegible] —सं.

कश्मीर घाटी को मैंने भी सभी लोगों की तरह छोड़ा, अपने ही वतन में शरणार्थी बनकर पहले जम्मू फिर दिल्ली आ गयी थी । लॉकर में रखे सोने की चाहत एक बार फिर कश्मीर की ओर ले गयी । वापस कश्मीर जाने पर सभी लोग मोहब्बत से मिले, गले मिलके रोये और मैं वापस आ गयी । फिर दिन बदला, साल बदल गये, अगर कुछ नहीं बदला तो शरणार्थी का लगा कलंक । आखिर क्यों ? इस कलंक का दोषी कौन ?

बूढ़े बाप के कंधे पर जवान बेटे की लाश

पिछले छह सालों की जिंदगी भी कैसी जिंदगी रही, यह कहने-सुनने की नहीं, बल्कि एहसास करने की जरूरत है । पिछले छह सालों का दर्द उस बूढ़े बाप के दिल से पूछो, जिसने अपने बूढ़े कंधों पर जवान बेटे की लाश को श्मशान के हवाले किया । उस जवान बेटे का कसूर था वतन के प्रति वफादारी, सीमा पर चौकसी करते आतंकवाद की गोली का निशाना बन गया । दर्द की चुभन उस विधवा की मांग से पूछो जिसने पति को सिर्फ एक माह देखा और तेज रफतार की बसों से सामंजस्य न होने के कारण शहीद हो गया । दर्द की कड़ुवाहट उस मां के दिल से पूछो जिसकी जवान बेटी आतंकवाद के बलात्कार के फलस्वरूप मानसिकता के कगार पर खड़ी है ।

अपनी जम्मू भूमि से बिछड़े हम चावल की दानों की तरह बिखर गये और अब छह साल बाद एकाएक लोग वापस जाने की तारीख पूछते हैं, वापस जाने का सुनहरा ख्वाब दिखाते हैं । यह मजाक कब तक होगा, क्या हमारा वजूद नहीं है ? या हम किसी के नहीं, आखिर क्यों ?

जनवरी १९९० में एक सिलसिला शुरू आ— 'जरूरी असबाब लेकर भागो' पर हां तक भागो, अनजान शहरों में बेतहाशा ोग भाग रहे थे। कुछ अपनों के आंगन में, छ सरकार से मिले टेंटों में तो कुछ अनजान हों में भटक रहे थे। जिसे जहां जगह मिली सने सिर छुपा लिया। साथ चल रही जवान टी की इज्जत बचाना था। सब कुछ छोड़कर ाये कश्मीरी हिंदू भिखारी बनकर सड़क पर ा गये।

श्मीर—कभी घर में ताला नहीं होता था

भागते हुए हर व्यक्ति के दिल में प्रश्न उठता ा, क्या वह यही कश्मीर है जहां हिंदू-मुसलिम ार-मोहब्बत से रहते थे। किसी दरवाजे पर ला नहीं होता था, हिंदू, मुसलिम के त्यौहारों अपना अपनापन ढूंढ़ते और मुसलिम, दुओं के त्यौहारों में। जिस कश्मीर घाटी की बह मंदिर की घंटियों व मसजिद की अजानों शुरू होती थी, उसी घाटी में पत्थरों की साात से मंदिर की घंटियां और मसजिद की नारें क्षत-विक्षत हो गयी हैं। जहां कल तक ोवर कमल के फूलों से सजे रहते थे और उन लों की महक से घाटी महकती रहती थी, ज उस सरोवर का पानी रक्त-रंजित ही नहीं गया है, बल्कि उसमें सफेद गुलाबी कमल फूल की जगह हिंदू-मुसलिम लाशों के फूल रहे हैं। उस महकती खुशबू की जगह फिजा सी भयानक बदबू फैल गयी है कि सांस ा मुश्किल हो रहा है।

ार के पेड़ मुर्दे में भी जान भर देते थे, ार के पत्ते अपनी जलती तपिश से जाड़ों का सास नहीं होने देते थे, वे विशाल चिनार राकेट लांचर की भेंट चढ़ चुके हैं, अब चिनार के पेड़ भी जल रहे हैं। आखिर क्यों ? कौन है वह, जो नाजों से पली दुल्हन को बेवा बनाने की कोशिश कर रहा है।

हिंदू-मुसलिम कब अलग थे !

वक्त सिर्फ कलेंडरों में नहीं बदल रहा था, बल्कि वक्त एक नये इतिहास की रचना कर रहा था। १९९१ आ गया, कश्मीर के मुसलिम

कश्मीर घाटी को मैंने भी सभी लोगों की तरह छोड़ा, अपने ही वतन में शरणार्थी बनकर पहले जम्मू फिर दिल्ली आ गयी थी। लॉकर में रखे सोने की चाहत एक बार फिर कश्मीर की ओर ले गयी। वापस कश्मीर जाने पर सभी लोग मोहब्बत से मिले, गले मिलके रोये और मैं वापस आ गयी। फिर दिन बदला, साल बदल गये, अगर कुछ नहीं बदला तो शरणार्थी का लगा कलंक। आखिर क्यों ?

जम्मू से दिल्ली आकर अपने हिंदू भाइयों से मिलते रहते। इकट्ठे खाते-पीते। कई मुसलिम अपने जान की बाजी लगाकर कुछ सामान भी ला देते। कश्मीर से हिंदू पड़ोसी मुसलिम भाई के तीज त्यौहारों पर वहां से अखरोट, कांगड़ी तथा मछली भर-भरकर लाते। यही नहीं, डल झील की कमलककड़ी भी लाते।

बोता था,पर अब कश्मीर घाटी में भी उसने छात्रों को यह साहित्य सुलभ कराकर आतंकवाद को बढ़ावा देने में कोई कसर नहीं छोड़ी । यह सब सरकारी अधिकारियों की नाक के नीचे हो रहा था, फिर भी, सरकार मौन थी, आखिर क्यों ?

कश्मीर वैसा ही है

१९९५ में चुनावों का चमत्कारी दृश्य शुरू हुआ । कभी ऐसा लगता कि कैसा मजाक है, क्योंकि हमारे टूटे दिलों से खेला जा रहा है ?

लेकिन बेवफाई के इतने तरकश लग चुके थे कि सच-झूठ पहचानने की ताकत ही खत्म हो रही थी । इसी वर्ष चार विदेशी पर्यटक भी गिरफ़्तार कर लिये गये । अलफरान आतंकवादियों ने अपहरण का जिम्मा भी लिया। काश, उन पर्यटकों से कोई पूछे कि घाटी वीरान हो चुकी थी, जल के राख हो गयी थी, वे वहां क्या करने गये थे ? अपना दिल जलाने या हमारी बरबादी पर हंसने ?

एक साल फिर बीत गया और १९९६ आ गया । चुनावों का जोर-शोर से प्रचार हुआ डॉ. फारुख अब्दुल्ला फिर से सुर्खियों में आने लगे । कई बड़े लोगों के साथ कश्मीर में अखबारों में भी छपते, पर ये वही डॉ. फारुक अब्दुल्ला थे, जो १९९० में जब कश्मीर में गोलियों की बरसात हो रही थी, वह क्लब में गोल्फ खेल रहे थे । जब पूरे कश्मीर में बम विस्फोटों से काली घटा छा गयी थी तो परिवार सहित विदेश के एक बड़े महानगर में चले गये । वापस आने के दो ही कारण नजर आते हैं, अपने वतन की शहंशाही याद आने लगी होगी या फिर खून ने जोश मारा होगा । फिलहाल वापस आ गये ।

फारुक साहब का बचपना खत्म हो गया है

लेकिन अब डॉ. फारुक वैसे नहीं थे । कभी लगता कि उनका बचपना अब खत्म हो गया है, कहीं लगता कहीं फिर धोखा तो नहीं देंगे ?

बहरहाल, कुछ हासिल करने के लिए कुछ खोना तो पड़ता है । होल सेल में लोगों को हवाई जहाज की सैर कराकर चुनाव के दौरान कश्मीर ले गये । सरकार ने काफी खर्चा उठाया, लेकिन चुनाव डाकखाने के डिब्बों के सहारे हो गये । डाकखाने की गाड़ियां दिल्ली, जम्मू में लाल डिब्बों को बटोरकर अपनी वफादारी दिखा रही थी, पर हासिल क्या हुआ ? कश्मीरी हिंदू आज भी शरणार्थी हैं, हमें वापस ले जानेवाला मसीहा डॉ. फारुक अब्दुल्ला क्या सो गया ? क्या वे वादें, वे बातें सब बेकार थीं ? आखिर, कब हमें वतन वापस जाना है ? मुख्यमंत्री बनने के बाद डॉ. फारुक अब्दुल्ला ने भी वादे किये हैं, देखिये कब तक पूरे होते हैं ?

लेकिन, वह चेहरा जो यहां अपनापन देता है, बहुत से वादे करता है, कश्मीर जाने पर हर तरह का मान भी देता है, गले लगकर रोता भी है और वापस बुलाने का वादा भी करता है, लेकिन एकाएक कश्मीर पहुंचकर भीड़ में वह चेहरा बदल जाता है, उसकी बोली बदल जाती है, आखिर क्यों ? इस आखिर क्यों का जबाब घाटी से बाहर रहता हर शरणार्थी उस चेहरे से पूछना चाहता है, आखिर कौन-सी वह ताकत है जो उस वादे को तोड़ देती है, आखिर कौन है वह जो उस चेहरे को बदल देता है ?

—५/२ पोस्टल स्टाफ कॉलेज, गाजियाबाद

चोरी करते हैं : नहीं मानते भ्रष्ट हैं

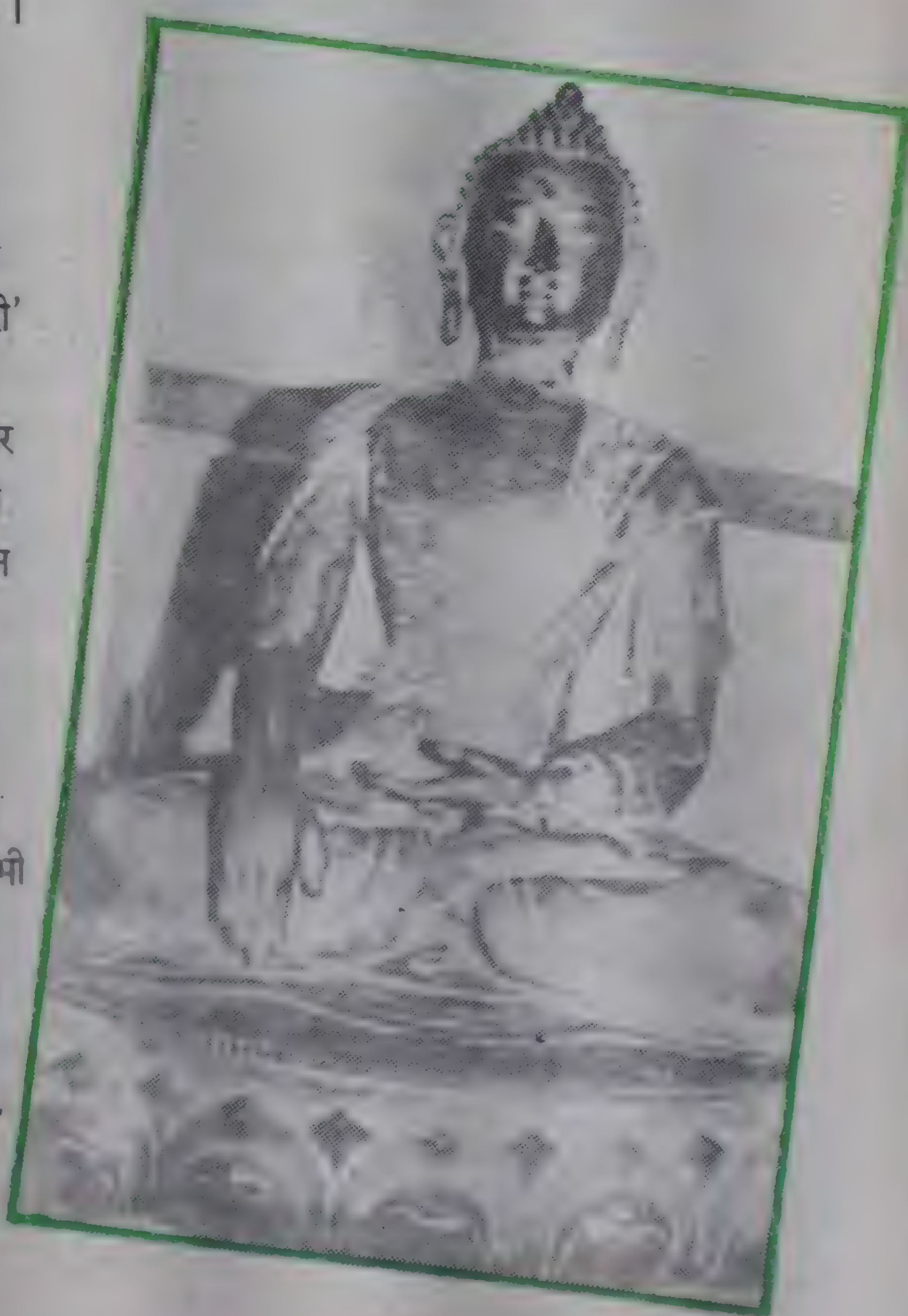
• डॉ. सुरभि घोष

कला जगत में 'सदबी' नाम आदर और प्रतिष्ठा का सूचक है। भारतीय चित्रकार 'सदबी' द्वारा अपने चित्रों की नीलामी किये जाने में गौरव का अनुभव करते हैं। उनकी कामना होती है कि 'सदबी' द्वारा उनके चित्रों की नीलामी की जाए। इसका कारण भी है। 'सदबे' द्वारा किसी चित्रकार के चित्र की नीलामी का अर्थ है, रातोंरात उसके चित्रों की कल्पनातीत कीमत बढ़ जाना। 'सदबे' केवल चित्रों की नीलामी ही नहीं करते, प्राचीन कला वस्तुओं की खरीदी-बिक्री में भी वे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 'सदबे' द्वारा नीलाम की गयी वस्तुओं की एकाएक प्रतिष्ठा बढ़ जाती है। वे कला केअद्‌भुत पारखी माने जाते हैं।

तस्करी का माल : खुली बिक्री

हाल ही में एक ब्रिटिश पत्रकार पीटर वाटसन की वर्षों की खोज और खतरे उठाकर लिखी गयी पुस्तक 'सदबीज : इन साइड स्टोरी' ने इस अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नीलामकर्ता कंपनी की प्रतिष्ठा लगभग धूल-धूसरित ही कर दी है। वाटसन ने प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि यह नीलामकर्ता संगठन चोरी और तस्करी से लायी गयी प्राचीन कला-वस्तुओं को नीलामी में बेचता है। यह अवैध है।

५३ वर्षीय पीटर वाटसन पश्चिमी लंदन के ...र्लासिया नामक इलाके में रहते हैं। वे स्वयं भी कलाकृतियों के संग्रह के शौकीन हैं। कला जगत के बाजार में होनेवाली हेराफेरी की ओर ध्यान सन् १९८५ में आकर्षित हुआ, जब



नेपाल में पांच फुट लंबी बुद्ध की कांस्य प्रतिमा

ब्रिटिश संग्रहालय के यूनानी-रोमन प्राचीन कलाकृति विभाग के ब्रियान कुक ने उनका ध्यान सदबे की विक्रय सूची में उल्लिखित एपूलियन पात्रों की ओर आकर्षित कराया। विक्रय सूची में इन प्राचीन पात्रों का होना आश्चर्यजनक था, पर कुक ने यह राय जाहिर की कि हो सकता है, वे वैध तरीके से इटली से लाये गये हों, लेकिन वाटसन को लगा कि यह एक अच्छी 'खबर' हो सकती है और वे खोज में जुट गये। उन्होंने सदबे के जेम्स हाज्स नामक एक अधिकारी से संपर्क किया। बाद में हाज्स ने ही उन्हें सदबी की आंतरिक गतिविधियों की, जिनमें हेराफेरी भी शामिल थी, खबर दी। हाज्स ने सदबे की नौकरी छोड़ दी थी, पर वह अपने साथ एक सूटकेस में सदबे के गलत कार्यों को सिद्ध करनेवाले दस्तावेज भी ले गया था। बाद में उसने ये सारे कागजात सदबे को सौंप दिये। फिर तो छह वर्षों तक वाटसन अपने कुछ सहयोगियों के साथ छद्मवेश में कला वस्तुओं की तस्करी और चोरी तथा उन्हें बेचने-खरीदनेवालों का पता लगाते रहे।

पता लगाइए कहां है ?

दरअसल वाटसन ने सन् १९८१ में ही कला वस्तुओं की चोरी को लेकर एक पुस्तक लिखने का विचार किया था। हुआ यह था कि वे इटली में चोरी गयी कलात्मक वस्तुओं का पता लगाने और वापस लाने के विभाग के प्रमुख रोडोल्फो सिविइरो का साक्षात्कार ले रहे थे। बातों-बातों में रोडोल्फो ने उनसे कहा था कि 'मेरे जैसे लोगों का साक्षात्कार लेने की बजाय तुम्हें चोरी गयी कलात्मक वस्तुओं का पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए' और रोडोल्फो ने उन्हें बताया कि सिसली के पालेरमो के ओरटरी चर्च से कारावागियो की चित्रकृति 'नेटिविटी' सन् १९६९ से लापता है।'

वाटसन के लिए यह सब चुनौतीपूर्ण लगा और कलात्मक वस्तुओं का एक व्यापारी बनकर वे इटली के कला वस्तुओं के तस्करों के एक गिरोह से संपर्क करने में सफल हो गये। इस गिरोह का सरगना कलात्मक वस्तुओं का एक विक्रेता था। वह इटली के दूरदराज क्षेत्रों में चर्चों के पादरियों से संपर्क करता और उन्हें सुझाव देता कि बहुत अल्प मूल्य पर वह उनके चर्चों में टंगी प्राचीन कलाकृतियों की 'पुनर्स्थापना' करवा सकता है। पादरी झांसे में आ जाते और कलाकृतियां उसे दे देते। जब वे कलाकृतियां वापस की जाती तो असली न होकर मात्र अनुकृतियां होतीं। सन् १९८३ में वाटसन ने इसी विषय पर 'द् कारावागियो कांस्प्रेसी' शीर्षक से एक पुस्तक भी लिखी। हालांकि वे 'नेटिविटी' का पता नहीं लगा पाये, पर अन्य छह बदले गये मूल चित्रों को अपने पुराने स्थानों तक पहुंचाने में सफल हो गये। अपनी खोज के सिलसिले में वाटसन और उनके सहयोगियों ने छद्मवेश में अनेक देशों का दौरा किया। वे भारत भी आये थे।

अवैध बिक्री : सरकारी तंत्र

भारत में प्राचीन कलात्मक वस्तुओं की चोरी और उनकी अवैध बिक्री कई दशक पुरानी है। भारत में पुरातात्त्विक सर्वेक्षण विभाग ने लगभग पांच हजार स्मारकों को संरक्षित घोषित किया है। इनमें से अधिकांश जंगलों में, पर्वतों में और दूर-दराज के क्षेत्रों में हैं। प्रायः हर राज्य में

ऐसे सैकड़ों स्मारक हैं, पर इनमें बहुत कम प्रतिशत स्मारक वास्तविकता में संरक्षित हैं। अर्थात उनकी सुरक्षा के पर्याप्त उपाय किये गये हैं।

डेढ़ दशक पूर्व एक अमरीकी पत्रकार अलेक्ज़ेंड्रा जॉर्ज प्राचीन कलात्मक वस्तुओं की तस्करी पर पर्दाफाश करने भारत आयी थी। अलेक्ज़ेंड्रा भी वेश बदलकर ऐसे अनेक तस्करों से संपर्क करने में सफल हुई थी। वे पुरातत्त्व विभाग के अनेक अधिकारियों से भी मिली थी। बाद में अलेक्ज़ेंड्रा ने एक लेख में अपने अनुभव लिखे थे।

अलेक्ज़ेंड्रा को एक सेवानिवृत्त पुरातत्त्व अधिकारी ने बताया कि 'दूरदराज क्षेत्रों में बने हजारों मंदिर चोरों के काम को और आसान बना देते हैं।' अकेले मध्यप्रदेश में ऐसे एक हजार असंरक्षित स्मारक हैं। दक्षिण भारत में देवास्वम बोर्ड जैसे बोर्डों के कारण प्राचीन स्मारकों और मूर्तियों की देखभाल भली-भांति हो जाती है।

स्मारक के संरक्षण का सवाल नहीं

अलेक्ज़ेंड्रा जॉर्ज के अनुसार, "कोई स्मारक संरक्षित है या असंरक्षित, इससे फर्क नहीं पड़ता। मुझे कुतुबमीनार के पास एक एंपोरियम के मैनेजर ने मुसलिम-पूर्व अवधि के पाषाण-पैनल को बेचने की कोशिश की थी। यह पैनल कुतुबमीनार के पास स्थित कुव्वैत उल इसलाम मसजिद में उपलब्ध था।" मैनेजर को शिकायत थी कि एंपोरियम का मालिक उसे प्राचीन कलात्मक वस्तुओं की बिक्री में कोई कमीशन नहीं देता, इसलिए वह मालिक को बिना बताये यह सौदा करा सकता है। उसने कहा कि १०,००० रुपयों में वह तीन दिनों के भीतर वह पैनल अपनी जगह से हटवा देगा। उसने बताया कि इन दस हजार रुपयों में से उसे काफी कुछ वहां सुरक्षा के लिए तैनात लोगों को रिश्वत देने में खर्च करना पड़ेगा।

अलेक्ज़ेंड्रा लिखती हैं, 'उसने मुझे मसजिद की बाहरी दीवार से अन्य स्थान दिखाये, जहां से इसी तरह पैनल निकाले गये थे। उसने बताया कि एक फ्रांसीसी ने उसे एक सूटकेस भर धन देने का प्रस्ताव किया था ताकि मैं मुसलिम पूर्व अवधि के कुछ और पैनल निकाल लाऊं, पर वह मालिक का दोस्त था और उसे इस सौदे के बारे में बता देता, मैंने सौदा नहीं किया।'

प्राचीन कलात्मक वस्तुओं के तस्कर व्यापारी संग्रहालयों तक को नहीं बख्शते। लाल किले के संग्रहालय से एक मुगल बेगम के घाघरा और चोली की चोरी की लोगों को याद होगी।

पुस्तकों के पृष्ठ भी बिकते हैं

प्राचीन कलात्मक वस्तुओं के एक व्यापारी ने अलेक्ज़ेंड्रा से अपने मन की व्यथा इन शब्दों में व्यक्त की, "कई व्यापारी अमूल्य चित्रित पांडुलिपियों को फाड़कर एक बार में एक पृष्ठ बेचते हैं। पश्चिम को प्राचीन कलात्मक वस्तुओं के अवैध निर्यात का एक अर्थ यह भी है कि वे सदा-सदा के लिए भारत से चली जाती हैं, क्योंकि उनका कोई रेकॉर्ड नहीं होता।"

अलेक्जेंड्रा का स्वयं का भी यही अनुभव रहा। उनके अनुसार, ''कनॉट प्लेस के एक व्यापारी ने मुझे पांच लाख रुपयों में सोलहवीं शती की एक चित्रित पांडुलिपि देने का प्रस्ताव रखा। मुझे हिचकिचाता देखकर उसने कहा कि वह पुस्तक फाड़ देगा और प्रति पृष्ठ आठ हजार रुपये की दर पर पृथक-पृथक पृष्ठ बेच सकेगा।

पत्रकार भी पीछे नहीं

अपनी खोज के दौरान अलेक्जेंड्रा को भी पीटर वाटसन की तरह छद्म वेश, छद्म नाम धारण करना पड़ा। अपनी भारत-यात्रा के दौरान नयी दिल्ली की एक पार्टी में अलेक्जेंड्रा



खोजी पत्रकार : पीटर वाटसन

अपनी खोजी पत्रकारिता की चर्चा कर रही थीं और बता रही थीं कि वे प्राचीन कलाकृतियों के तस्करों पर एक 'स्टोरी' करने जा रही हैं। वहां उपस्थित शर्मा नामक एक सज्जन ने उसे ऐसे लोगों से मिलाने का वायदा किया, बस शर्त यही थी कि वह स्वयं को पत्रकार नहीं वरन एक कलात्मक वस्तुओं की संग्राहक एक अमरीकी पर्यटक बताएगी। अलेक्जेंड्रा ने यही किया और शर्मा ने उसे ऐसे लोगों से मिलवाया था।

भारत में सौ वर्ष से पुरानी वस्तुओं की बिक्री पर प्रतिबंध है। उनके निर्यात पर भी कानूनी रोक है। अलेक्जेंड्रा लिखती है, 'मुझे बताया गया कि इन दोनों नियमों की अवहेलना की जा सकती है। मैंने देखा कि निर्यात संबंधी नियमों से आसानी से बचा जा सकता है। प्रभावशाली व्यापारियों के नौकरशाहों के हर स्तर पर संपर्क हैं जो निर्यात के लिए आवश्यक प्रमाण-पत्र आदि उपलब्ध करा देते हैं। कस्टम वालों से भी संपर्क बना रहता है जिन्हें निर्यात की वस्तु का बिना जांच-पड़ताल किये जाने देने के लिए पैसा दिया जाता है। कोई बड़ी खरीद होती है तो खरीददार इन कर्मचारियों की 'देखभाल' के लिए अलग से पैसा देता है, हालांकि चतुर व्यापारी इसमें से भी आधी रकम दबा जाता है।

रिश्वत है तो क्या मुश्किल

नेपाल के उन्नीसवीं सदी की कांस्य मूर्तियों के 'सौदे' के वक्त व्यापारी ने अलेक्जेंड्रा से कहा कि वह बीस हजार रुपये में मुंबई से पश्चिम के लिए उन्हें आसानी से निकलवा देगा। जो अधिकारी यह प्रमाण-पत्र देगा कि ये वस्तुएं सौ वर्ष पुरानी नहीं हैं, उसे पैसा देना होगा और मुंबई पोर्ट के कुछ कस्टमवालों को भी रिश्वत देनी पड़ेगी ताकि वे 'क्रेट' को खोलकर न देखें।

''यह भी महत्त्वपूर्ण है कि ऐसे व्यापारियों को पुलिस की रंचमात्र परवाह नहीं है। एक व्यापारी ने बताया कि अधिकांश चोरियों की रिपोर्ट ही दर्ज नहीं होती और जिनकी रिपोर्ट भी होती है, वे अनसुलझे मामलों के रूप में दर्ज कर दी जाती हैं।

सरकारी संग्रहालयों से भी चोरी

प्राचीन कलात्मक वस्तुओं के तस्कर व्यापारी संग्रहालयों तक को नहीं बख्शते। लाल किले

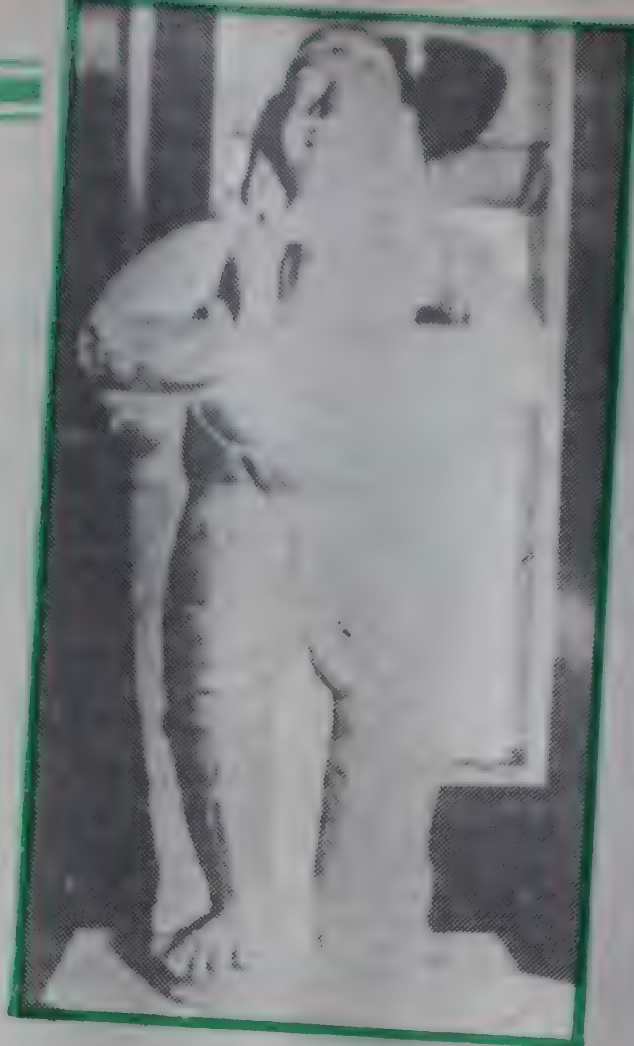
के संग्रहालय से एक मुगल बेगम के घाघरा और चोली की चोरी की लोगों को याद होगी। इसी तरह पटना संग्रहालय से भी अनेक मूल्यवान प्राचीन वस्तुएं गायब हो गयीं।

लेकिन प्राचीन कलात्मक वस्तुओं की चोरी और तस्करी में लोगों को अपने कार्यों पर शर्म नहीं। पीटर वाटसन के शब्दों में—

"मुझे जिस बात पर आश्चर्य होता है, वह यह है कि कला बाजार के भ्रष्ट लोग स्वयं को भ्रष्ट नहीं समझते, वे यह सोचते ही नहीं कि वे जो कुछ कर रहे हैं, वह गलत है। इसमें लाभ का उद्देश्य काफी कुछ है, पर ऐसे लोगों में आत्म-संतोष भी बहुत है। वे सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से इतने नामी-गिरामी हैं कि वे देख ही नहीं पाते कि उनका व्यापार कितना गलत है।"

भारत से प्राचीन कलात्मक वस्तुओं की चोरी अभी भी जारी है। अकेले सरकार ही कुछ कर पाएगी, यह तो सोचना या अपेक्षा करना गलत होगा। जिस तरह पर्यावरण और प्रदूषण के प्रति आज जनचेतना उत्पन्न हुई, उसी तरह प्राचीन कलात्मक वस्तुओं की रक्षा के लिए व्यापक प्रचार और जन-चेतना जरूरी है ताकि दूरदराज में बसे लोग भी तस्करों से सतर्क हो जाएं। अन्यथा 'पादशाहनामा' की तरह हमारी अनेक दुर्लभ कलात्मक वस्तुएं भारत में प्रदर्शनार्थ लायी जाएंगी। भावी पीढ़ी के लिए प्राचीन कलात्मक वस्तुओं की समृद्ध विरासत का अक्षुण्ण रखना भी आज की पीढ़ी का एक दायित्व है।

सदबी के सन्१९८८ के विक्रय सूची पत्र में आठवीं या नवीं शती की एक भारतीय प्रतिमा



दक्षिण भारत से चुरायी गयी मूर्ति

का उल्लेख था। यह अजामुखवाली एक योगिनी की मूर्ति थी जिसे उत्तर प्रदेश के लेखारी गांव से चुराया गया था। वहां से वह मुंबई होते हुए पश्चिम में ले जायी गयी। सन् १९९५ में उड़ीसा की उदयगिरि गुफाओं से बुद्ध की नवीं-दसवीं शताब्दी की एक प्रतिमा का सिर काटकर चुरा लिया गया था।

सन् १९९४ में कूचबिहार के मदन मोहन मंदिर से अष्टधातु की तीन सौ वर्ष पुरानी दो प्रतिमाएं चुरा ली गयी थीं। इस पर जबरदस्त आंदोलन भी हुआ था और हिंसक भीड़ ने पुलिस और कर्मचारियों पर हमला भी किया था।

सन् १९९२ में इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय विमान तल पर कस्टम अधिकारियों ने दो प्राचीन पाषाण स्तंभ तथा एक जैन तीर्थंकर की प्रतिमा जब्त की थी। ये ईसा पूर्व प्रथम शती की थीं और उनकी कीमत एक करोड़ रुपये आंकी गयी थी।

प्रेरक प्रसंग

इलाहाबाद हाईकोर्ट : विनोदी प्रसंग

● मुकुंदलाल मुंशी

वाराणसी की सीमा

जुए से संबद्ध एक अपील की सुनवाई जस्टिस लुई स्टुअर्ट के सामने हो रही थी। रिवीजन अपील का विवादारूपक प्रश्न था कि बनारस की अदालत को मुकदमा सुनने का अधिकार है या नहीं ? प्रतिवादी का कहना था कि जुआ नाव पर हो रहा था जो गंगा की बीच धारा से हटकर चल रही थी। जस्टिस लुई स्टुअर्ट ने यह जानने के लिए कि बनारस का अधिकार क्षेत्र गंगा के उस किनारे तक है या बीच धारा तक, गजट मंगवाया। गजट के अनुसार अधिकार क्षेत्र बीच धारा तक ही था। गजट देखकर लौटाते हुए जज साहब ने प्रतिवादी वकील से यह पता लगाने के लिए कहा कि सीमा निर्धारण किस अफसर द्वारा किया गया था। प्रतिवादी वकील जज की ओर एकटक देखते रहे। एकाएक जज स्टुअर्ट को जैसे याद आ गया हो, बोले, "हां याद आया। यह मूर्खतापूर्ण निर्णय उस समय के बनारस के ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने किया था और वह मजिस्ट्रेट मैं था।"

कानून जेब में

वाल्टर कालविन, बार-एट-लॉ बहुत लंबे और चार्ल्स रास नाटे कद के व्यक्ति थे। एक दिन बार लायब्रेरी में वाल्टर ने मजाक किया, "चार्ल्स ! मेरी इच्छा होती है कि तुम्हें मैं अपनी जेब में रख लूं।"

हाजिर जवाब चार्ल्स ने पलटकर उत्तर दिया, "तो फिर कानून का ज्ञान आपके सिर के बदले जेब में ज्यादा होगा।"

सर वाल्टर आगे कुछ न कह सके।

अतिरिक्त पहिया

एक बार तेज बहादुर सप्रू राजगद्दी के वारिस के मामले में बहस कर रहे थे। मुकदमा दो राजाओं के बीच था। बहस के दौरान श्री सप्रू ने 'बांदी' शब्द का उपयोग

किया । दोनों जज अंगरेज थे इसलिए बांदी का अर्थ नहीं समझ सके । एक जज ने पूछा, "सर तेज, यहां 'बांदी' क्या चीज होती है ?"

सर तेज ने मुसकराते हुए कहा, "माई लार्ड ! राजाओं के विवाहित जीवन रूपी मोटरकार की यह 'स्टेपनी व्हील' यानी अतिरिक्त पहिया है ।"

भेजा नदारद

एक बहस के दौरान स्वर्गीय विश्वेश्वर नाथ को जस्टिस ए.जी.पी. पुलन, आई.ए.एस. बहुत परेशान कर रहे थे । जज ने व्यंग्य किया, "मिस्टर विश्वेश्वर नाथ, आपकी दलीलें एक कान से घुसकर दूसरे कान से बिना प्रभाव डाले निकल जाती हैं ।"

श्री विश्वेश्वर नाथ ने कहा, "हुजूर, ऐसा मालूम पड़ता है कि दोनों कानों के बीच दलीलों को ग्रहण करनेवाली वस्तु नदारद है ।"

दीवानी

हिंदुस्तान में 'सिविल कोर्ट' को 'दीवानी अदालत' कहते हैं । 'दीवानी' का अर्थ 'पागल स्त्री' भी होता है । सुप्रसिद्ध उर्दू शायर अकबर इलाहाबादी उस समय 'सिविल जज' (सदरे आला) थे । उनके सामने एक मुकदमे की सुनवाई हो रही थी और प्रतिवादी के वकील ने नाटकीय ढंग से कहा, "हुजूर, मुझे इनसाफ चाहिए, इनसाफ ।"

जज अकबर इलाहाबादी ने कुछ यूं जवाब दिया—

मुझसे इनसाफ तलब, कैसी बियाबानी है ।
जिस अदालत का मैं हाकिम हूं, वह दीवानी है ।।

सलाह-मश्विरा

इलाहाबाद के एक अंगरेज आई.सी.एस. अफसर अपने पालतू कुत्ते से बहुत प्यार करते थे और रोज अपने साथ अदालत में ले आते और पास की कुरसी पर बैठाते थे । एक बार डॉक्टर काटजू उसी कमिश्नर के सामने बहस कर रहे थे । बहस के दौरान कमिश्नर साहब अपने कुत्ते को सहलाने एवं पुचकारने लगे । यह देखकर डॉक्टर काटजू ने बहस रोक दी, पर कमिश्नर साहब ने कहा, "मिस्टर काटजू ! आप बहस जारी रखें ।"

डॉक्टर काटजू ने कहा, "हुजूर, मुझे बहस रोकनी पड़ी । मैंने सोचा कि शायद हुजूर कुछ सलाह-मश्विरा कर रहे हैं ।"

—ए-२, श्रीनाथ कॉम्प्लेक्स हाई टेनशन लाइन रोड, सुभानपुरा, बड़ौदा

हरियाणवी बोली में अक्खड़पन क्यों ?

● डॉ. सुरेंद्र कुमार कटारिया

कहा जाता है कि सेहत से आदमी के खान-पान का, व्यवहार से कुल का और बोली से उसके देश (क्षेत्र) का पता चल जाता है। भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विभिन्नताओं से परिपूर्ण भारत देश में कुछ दूरी पर ही पानी और बोली दोनों बदल जाते हैं। प्रत्येक क्षेत्र की बोली वहां के सामाजिक, राजनीतिक, इतिहास, पर्यावरण तथा विदेशी व्यापार से अत्यधिक प्रभावित होती है। किसी बोली (डायलैक्ट) में प्रयुक्त होने वाले कुछ विशिष्ट शब्द तथा उनके उच्चारण का तरीका ही वहां के लोगों की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बन जाते हैं। दिल्ली के आसपास का क्षेत्र अपनी लट्ठमार बोली के लिए ख्याति प्राप्त (कुख्यात ?) है।

दिल्ली, संपूर्ण हरियाणा, मेरठ क्षेत्र (उत्तर प्रदेश) तथा गंगानगर, झुनझुनूं, अलवर (राजस्थान) क्षेत्रों में कई प्रकार की बोलियां बोली जाती हैं, लेकिन जोर देकर अकड़ के साथ बोलने की प्रथा इन सभी बोलियों में है। हरियाणवी बोली में जब यह कहा जाता है, "अरे के हाल सैं ?" तो दूसरों की तो बात छोड़िए, स्वयं हरियाणवी जानने वालों को यह पता नहीं चल पाता कि इस कथन में प्रेम है, नाराजगी है या व्यंग्य ? इसी तरह हरियाणा रोडवेज का कंडक्टर जब सवारी से कहता है, "पड़ ले तला नै।" तो पता ही नहीं चलता कि सलाह दे रहा है या धिक्कार रहा है। इस क्षेत्र की बोली के संपर्क में प्रथम बार आने वाला व्यक्ति यकायक ऐसा अनुभव करता है-जैसे यहां सभी व्यक्ति असभ्य, घमंडी, शिष्टाचार रहित तथा अक्खड़ हों। वस्तुतः हरियाणवी बोली पेट के जोर से बोली जाती है जिसमें प्रत्येक शब्द पर अतिरिक्त जोर दिया जाता है-जैसे भोजन को भोज्जन, रोटी को रोट्टी, आजा को आज्जा पुकारा जाता है। साथ ही धीरे बोलने तथा शाब्दिक नम्रता की यहां कोई परंपरा नहीं है। दिल्ली के आसपास के क्षेत्र की बोलियां इतनी लट्ठमार कैसे हो गयीं ? इस विषय पर कोई शोध (प्रामाणिक) कार्य तो नहीं हुआ है। हां, ऐतिहासिक कारणों को आधार मानते हुए एक विश्लेषण यहां प्रस्तुत है।

ऐतिहासिक ग्रंथों में ह्वेनसांग की पुस्तक 'सि-यू-की' (पश्चिम दुनिया का वृतांत) में यह वर्णन मिलता है कि तत्कालीन राजा हर्षवर्धन की राजधानी कन्नौज, दिल्ली के आसपास थी। बरसों तक ह्वेनसांग भारत के जनजीवन से परिचित होकर लिखता है—'यहां के लोग सीधे-सरल हैं, किंतु उन्हें जरा-जरा-सी बातों पर तथा बहुत जल्दी गुस्सा आता है।' ह्वेनसांग का यह कथन बाबर की पुस्तक 'तुजुके बाबरी' में भी सिद्ध होता है। इतिहास की ओर झांकें तो हम पाते हैं कि बाबर तो सिंध, पानीपत, खानवा क्षेत्र से दूर कहीं भारत में गया भी नहीं था। अतः उसका यह कथन संभवतः उत्तरी-पश्चिमी भारत के लोगों के बारे में ही था। इसी तरह ह्वेनसांग भी अधिकतर नालंदा और कन्नौज में ही रहा था। इस तरह स्पष्ट है कि हरियाण्वी बोली का लहजा सदियों पूर्व से ही अक्खड़ रहा है। दरअसल भारत की भौगोलिक दशा इस तरह है कि पश्चिमी भारत सदैव से आक्रांताओं के जुल्मों का शिकार रहा है। हजारों वर्षों तक युद्धों से निरंतर सामना करते रहने के कारण ही हरियाणा, उत्तरी राजस्थान, दिल्ली तथा मेरठ क्षेत्र की बोली में लट्ठमार पन का समावेश हुआ है।

निरंतर आक्रमण होते रहे

उपलब्ध ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार पंजाब तथा सिंध क्षेत्र (वर्तमान पाकिस्तान) में सिंधु घाटी सभ्यता पल्लवित हुई। पाकिस्तान के लरकाना जिले में मिले अवशेषों के आधार पर हड़प्पा संस्कृति का पता चला जिसका विस्तार रोपड़ पीलीबंगा (गंगानगर), आहर (उदयपुर), लोथल (गुजरात तथा रंगपुर) तक था। इसी सभ्यता से पश्चिम की ओर मेसोपोटामिया, दजला-फरात, फारस, मिस्र तथा यूनान की समृद्ध सभ्यताएं अवस्थित थीं। विश्व स्तरीय व्यापार सिंधु घाटी से लेकर यूनान, फारस तथा मिस्र तक पैदल एवं समुद्री रास्तों से होता था। भारत के मसाले, रूई तथा आभूषण पश्चिमी दुनिया के लोगों को आकर्षित करते थे। अभी इतिहासकार एकमत नहीं हैं कि आर्य कहां से आये तथा हड़प्पा (सिंधु) सभ्यता कैसे नष्ट हुई, लेकिन इतना स्पष्ट है कि वह समृद्ध संस्कृति लुटेरों से निरंतर युद्धरत रही। वैदिक तथा महाकाव्य (रामायण एवं महाभारत) ग्रंथों के आधार पर भी यह स्पष्ट होता है कि सप्त सिंधु प्रदेश (सरस्वती, सतलुज, व्यास, रावी, झेलम, सिंधु तथा चिनाव नदियां) धन-धान्य से भरपूर था। इसी क्षेत्र में महाभारत का युद्ध (कुरुक्षेत्र) लड़ा गया। कालांतर में मेसीडोनिया (यूनान) के महत्त्वाकांक्षी राजा सिकंदर (अलैक्जेंडर) भारत की कीर्ति सुनकर विश्व विजय का सपना लिये भारत तक आया। भारत के तत्कालीन प्रवेश द्वार कैकय प्रदेश (झेलम एवं चिनाव) के राजा पोरस से सिकंदर का संघर्ष हुआ। तक्षशिला के राजा आंभी की सहायता से सिकंदर को विजय अवश्य मिली, किंतु वह शीघ्र ही यूनान लौट गया। इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि सिकंदर को यहां के मालवों, क्षुद्रावों तथा आग्रेय लोगों से प्रतिरोध का सामना करना पड़ा तथा अनेक घावों से घायल होकर वह बीमार पड़ गया। इसके पश्चात पुष्यमित्र के शासनकाल में मिनांदर ने, दूसरी सदी में शकों ने, फिर कुषाणों ने, ईरान से आये पल्लवों ने तथा गुप्तकाल में हूणों ने पश्चिमी दिशा से निरंतर भारत पर आक्रमण किये।

साम्राज्य स्थापना का रक्तपात

सातवीं सदी में राजपूतों के उदय तथा इसके उपरांत मुसलिम शासकों द्वारा हुए आक्रमणों से हरियाणा, उत्तरी राजस्थान, पंजाब का क्षेत्र रक्तरंजित होता रहा । दिल्ली (इंद्रप्रस्थ) तथा आगरा को लक्ष्य बनाए हुए विदेशी आक्रांता आसपास के क्षेत्रों में तबाही मचाते हुए प्रवेश करते थे । मुहम्मद-बिन-कासिम, महमूद गजनवी, मोहम्मद गौरी, बाबर, नादिरशाह, तैमूर लंग, चंगेज खान इत्यादि तुर्क, ईरानी तथा मुगल शासकों ने भारतीय राजाओं से संघर्ष किया । पानीपत के तीन प्रसिद्ध युद्ध इसी भूमि पर लड़े गये । दरअसल भारत के दिल्ली, रोहतक, भिवानी, सिरसा, गंगानगर तथा पाकिस्तान के बहावलनगर, मुलतान से होकर इराक (फारस), ईरान, मिस्त्र को सीधा रास्ता था । दिल्ली के आसपास के इस क्षेत्र में बड़े पर्वत या दुर्गम जंगल भी न थे । सपाट तथा उपजाऊ मैदानी भूमि हर तरह से आक्रमणकारियों की सहायक बनती थी । दक्षिण तथा पूर्वी भारत की ओर जाने के लिए भी यही जगह (रास्ता) उपयुक्त था । दक्षिण की ओर जाने के लिए विंध्याचल तथा सतपुड़ा की पहाड़ियों और पठारी क्षेत्र राह में बाधक थे । अतः दक्षिण भारत में साम्राज्य के प्रसार के प्रयास हुए न कि साम्राज्य की स्थापना जैसा रक्तपात ।

कोई भी व्यक्ति दूसरी भाषा (अपनी मातृभाषा को छोड़कर) को बोलता है तो वह स्वाभाविक रूप से जोर देकर बोलता है । जोर देकर बोलने की यह प्रवृत्ति यहां के निवासी हों या विदेशी आक्रमणकारी दोनों के लिए बाध्यता थी क्योंकि नित्य नयी संस्कृतियां बोलियां तथा सभ्यता यहां आती गयी ।

शहद कैसे टपके ?

विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा की जाने वाली लूटपाट, हिंसा तथा भारतीय राजाओं के साथ उनके युद्धों से यहां के निवासी नित्य परेशान रहने लगे । लहलहाती फसल विशाल सेना द्वारा कुचल दी जाती, सुंदर कन्याएं वासना की शिकार होती, हथियार के बल पर उनको यातनाएं दी जातीं, हट्टे-कट्टे नौजवानों को सेना में सम्मिलित होने को बाध्य किया जाता । इस प्रकार के माहौल में बढ़ रही हरियाण्वी संस्कृति अक्खड़पन धारण करती गयी तो इसमें आश्चर्य कैसा ?

पांचवीं, छठी शताब्दी में जैन एवं बौद्ध धर्म का प्रसार होने लगा । अहिंसा, प्रेम, त्याग तथा सत्य पर आधारित इन धर्मों का प्रचार श्रीलंका, जावा, सुमात्रा तथा बाली तक हो गया, किंतु पश्चिमी भारत में इनकी जड़ें व्याप्त न हो सकी । युद्धों से सामना करती यह भूमि केवल खून से

सींची गयी और इससे आक्रोश तथा घृणा की पुश्तैनी फसल ही पैदा हुई। यहां के निवासी देवी-देवताओं से चमत्कार की आशा करते-करते निराश हुए और अंततः जीवन का कटु यथार्थ ही जीने का संबल बना। इसीलिए कृषि तथा प्रकृति से जुड़े त्यौहारों का ही महत्त्व यहां विद्यमान है। यह त्यौहार जीवन के यथार्थ से जुड़े हुए हैं।

कलाओं का विकास शून्य

चित्रकला, संगीत कला तथा मूर्तिकला जैसी परंपरागत दरबारी कलाओं के विकास के लिए राजाओं का प्रश्रय आवश्यक शर्त रही है। इस क्षेत्र में इस प्रकार की ललित कलाओं का विकास भी शून्य रहा क्योंकि जीवन का अधिकांश समय तो सुरक्षा तथा रोटी की चिंता में ही व्यतीत होता था। ऐसे में किसके पास फुरसत थी कि वह कला और संस्कृति की ओर भी सोचे। हरियाणा तथा राजस्थान के राठ (बहरोड़, तिजारा, मुंडावर) क्षेत्र के लोकगीत तथा लोकसंगीत पूर्णतया यथार्थ आधारित हैं। यहां भक्ति संगीत के बजाय प्रकृति, खेत-खलिहान तथा रिश्तों के यथार्थ का वर्णन किया जाता है। शूरवीरता के रूप में आल्हा-ऊदल सदियों से गाया-सुनाया जाता है। हरियाण्वी रागनियों में तो आज भी धार्मिक पुट अत्यंत न्यून है। रागनी गाते-बजाते समय भी आंतों को खींचकर-चीखकर आक्रामक मुद्रा अपनायी जाती है।

नृशास्त्री (एंथ्रोपोलोजिस्ट) मानते हैं कि दिल्ली के आसपास के क्षेत्र के निवासियों में आर्य, कुषाण, शक, पल्लव, राजपूत, तुर्क तथा मंगोल से लेकर यूनानी तक बहुत-सी प्रजातियों का मिश्रण है। सदियों तक दूसरे से संपर्क में आते रहने से वास्तविक संस्कृति तो विलुप्त हो गयी तथा मिश्रित संस्कृति का जन्म हुआ। इस क्षेत्र के जैसे लंबे-तगड़े जवान समस्त भारत में आज कहीं नहीं मिलते। कारण स्पष्ट है यहां डार्विन के सिद्धांत के अनुसार वही जीवित रह सका जो संघर्ष के योग्य था। यह भी हो सकता है कि विदेशी प्रजातियों के रक्त मिश्रण से एक श्रेष्ठ प्रजाति विकसित हुई हो। इस क्षेत्र में बोली जाने वाली बोलियों के शब्दों की ओर ध्यान करें तो हम पाते हैं कि इनमें उड़िया या बांग्ला की तरह संस्कृत शब्दों की भरमार नहीं है, जबकि अरबी, तुरकी, यूनानी तथा फारसी शब्द तथा उनके अपभ्रंश पर्याप्त हैं। घालमेल के साथ बनी इस खिचड़ीनुमा भाषा में अक्खड़पन क्यों आया ? यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब वह दूसरी भाषा को सीखता है, तब उस विदेशी भाषा को पढ़ने, समझने में उसे ज्यादा समय नहीं लगता, किंतु उसके वास्तविक लहजे को पकड़ने समझने में आयु बीत जाती है। कोई भी व्यक्ति दूसरी भाषा (अपनी मातृभाषा को छोड़कर) को बोलता है तो वह स्वाभाविक रूप से जोर देकर बोलता है। जोर देकर बोलने की यह प्रवृत्ति यहां के निवासी हों या विदेशी आक्रमणकारी दोनों के लिए बाध्यता थी क्योंकि नित्य नयी संस्कृतियां बोलियां तथा सभ्यता यहां आती गयी और हम स्वीकारते गये। इस तरह सामरिक, सांस्कृतिक, प्रजातीय तथा भाषायी कारणों से यहां की बोली में लट्ठमारपन समाहित हुआ।

—सारण भवन,
कृषि उपज मंडी के पीछे
सीकर-३३२००१ (राज.)

क्रोध- आपकी उन्नति का पहला शत्रु

● एम.एस. यादव

क्रोध मनुष्य की मानसिक दुर्बलता का द्योतक है । इसके प्रभाव में व्यक्ति विवेक-शून्य होकर उचित-अनुचित का भेदभाव भूल जाता है और वह यह नहीं जानता कि क्या कर रहा या क्या करा रहा है । इससे न केवल व्यक्ति की कार्यक्षमता का ह्रास होता है वरन् उसका पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन भी इसके दुष्प्रभाव से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता । आज के परिवेश में क्रोध रहित जीवन तो असंभव है । हम सभी लोग न्यूनाधिक मात्रा में क्रोध के शिकार होते रहते हैं, फिर भी सतत प्रयास के द्वारा इस मनोविकार पर व्यक्ति नियंत्रण प्राप्त कर अपने स्वास्थ्य एवं कार्यक्षमता की रक्षा कर सकता है । निरंतर प्रगति पथ पर आगे बढ़ते हुए अंतर्निहित क्षमता का पूरा विकास कर सकता है ।

विषम परिस्थिति में नियंत्रण

किसी भी व्यक्ति की कार्यकुशलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह विषम परिस्थिति में अपना मानसिक संतुलन कैसे बनाये रखता है ? हम सब लोग यह बात अच्छी प्रकार से जानते हैं कि जिस परिवेश में हम रहते हैं और जहां काम करते हैं वहां जो कुछ घटित होता है उसके प्रभाव से हम अपने को अलग नहीं रख सकते । प्रायः यह देखने में आता है कि किसी खास परिस्थिति में कुछ लोग दूसरों की अपेक्षा अधिक उत्तेजित हो जाते हैं और अपना संतुलन खो बैठते हैं । इसी प्रकार, कुछ लोग, अपने उग्र स्वभाव से पहचाने जाते हैं क्योंकि बात-बात पर क्रोध करना उनके दैनिक जीवन का अंग हो जाता है, **'क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा, रुष्टा-तुष्टा क्षणे क्षणे'** ऐसे लोग हमेशा इस कहावत को चरितार्थ करते हैं । फलतः इस स्थिति का दुष्प्रभाव न केवल उनकी कार्यक्षमता पर पड़ता है, बल्कि जिस समूह में वे काम करते हैं वहां भी उनका योगदान पूर्ण क्षमता तक नहीं हो पाता । इसके अतिरिक्त ऐसे लोगों का व्यक्तिगत जीवन भी अशांत रहता है । ऐसे लोग उच्च रक्तचाप, तनाव आदि व्याधियों से त्रस्त पाये जाते हैं । अपने को ये समाज से अलग एवं कटे हुए पाते हैं और प्रतिभा संपन्न होते हुए भी सफलता की दौड़ में अकसर पीछे रह जाते हैं ।

मनुष्य के स्वयं के विकास में उसका सकारात्मक तथा संतुलित दृष्टिकोण बहुत सहायक होता है । जैसा हम जानते हैं कि नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रवृत्तियों का स्रोत

मनुष्य का मन होता है । एक विवेकी मनुष्य नकारात्मक प्रवृत्तियों को दबाकर सकारात्मक प्रवृत्तियों के आगे बढ़ने का सहारा बनता है, क्योंकि उसे प्रगति के पथ पर अग्रसर होने में सकारात्मक प्रवृत्तियां प्रेरणा प्रदान करती हैं ।

हमारे प्राचीन ऋषि, मुनि, चिंतक एवं विचारकों ने क्रोध के दुष्परिणाम की भयावहता को ध्यान में रखते हुए कहा है :

धर्म यशश्च रूप च गुणा ज्ञानंच वैभवम् ।
सर्वनाशयति क्रोधो नास्ति क्रोध समो रिपुः ॥

धर्म, यश, गुण, ज्ञान एवं ऐश्वर्य सबको क्रोध विनष्ट कर देता है । क्रोध जैसा अन्य कोई शत्रु नहीं । गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को निर्लिप्त भाव से कर्त्तव्य -पालन का उपदेश देते हुए इस बात पर विशेष बल देते हैं कि हमें हर परिस्थिति में अपना संतुलन बनाये रखना चाहिए जिससे हमारी कार्यक्षमता अक्षुण्ण बनी रहे और अपने काम को हम सर्वोच्च स्तर की कुशलता के साथ निष्पादित कर सकें । इस संदर्भ में मन की एकग्रता का विशेष उल्लेख किया गया, क्योंकि इसके अभाव में हमारी कार्यक्षमता चरम स्थिति तक नहीं पहुंच सकती ।

गीता में कार्यकुशलता की चरम स्थिति को योग की संज्ञा दी गयी है । **'योगः कर्मस् कौशलम्'** यहां योग का अर्थ मन की चंचल प्रवृत्तियों को नियंत्रित कर स्वभाव की स्थिति में कर्त्तव्य-पालन से है । ऐसी स्थिति में कर्मफल, सफलता या असफलता का कोई महत्व नहीं होता, वरन् निर्लिप्त भाव से अपनी क्षमतानुरूप कार्य निष्पादन ही मूल मंत्र होता है ।

योगस्थ कुरु कर्माणि
संगम त्यकत्वा धनंजय
सिदयसिध्दयोंःसमोभूत्वा
समत्वं योग उच्यते

एक दूसरे स्थान पर कहा गया है—

स्वे स्वे कर्माणि अभिरतः
संसिद्रि लभते नरः

तात्पर्य यह है कि यदि व्यक्ति अपना कार्य लगन और सच्ची निष्ठा के साथ करें तो वह उसमें सर्वोच्च स्तर की निपुणता प्राप्त कर सकता है जो कर्त्तव्यनिष्ठ मनुष्य का परम लक्ष्य होता है और यह स्थिति उसके लिए संतोषदायक होती है । लेकिन मन को नियंत्रित करना एवं समभाव की स्थिति को प्राप्त करना असाध्य नहीं तो दुष्कर अवश्य है । इसमें सबसे बड़ी बाधा उत्तेजक स्वभाव है जो मनुष्य को क्रोधी बनाता है । इस पर जब तक विजय न पायी जाए व्यक्ति समभाव की स्थिति में नहीं पहुंच सकता । क्रोध के प्रभाव का वर्णन गीता में इस प्रकार है—

क्रोधाद्भवति सम्मोहः
सम्मोहात्स्मृति बिभ्रमः

प्रारंभ से ही हमें जीवन के प्रति यथार्थवादी, संतुलित एवं सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए । साथ-ही-साथ भावना पर विवेक का अंकुश होना आवश्यक है । इस प्रकार व्यक्ति समभाव की स्थिति बनाये रख सकता है ।

स्मृति भ्रंशाद बुद्धिनाशः
बुद्धिनाशात्प्रणश्यति

क्रोध से मूढ़भाव उत्पन्न होता है, मूढ़भाव से स्मरण शक्ति भ्रमित होती है । स्मरण शक्ति भ्रमित होने से बुद्धि अर्थात विवेक शक्ति का क्षय होता है और बुद्धि के नष्ट होने से मनुष्य अपनी स्थिति से नीचे गिर जाता है ।

मन का नियंत्रण

क्रोध पर विजय मन के नियंत्रण से संभव है । लेकिन क्रोध क्यों आता है, इसके मूल कारणों पर विचार आवश्यक है अगर आप विचार करें तो पायेंगे :

—अपरिपक्व एवं उग्र स्वभाव के लोग प्रायः छोटी-छोटी बातों पर संतुलन खो बैठते हैं ।

—जिन लोगों में अहम् की भावना जितनी तीव्र होगी उसी प्रकार वे क्रोध के शिकार होंगे, क्योंकि जाने-अनजाने भी अहम् को थोड़ी-सी ठेस लगने पर वे आगबबूला हो उठते हैं ।

—आदमी जितना ही अधिक महत्त्वाकांक्षी होगा, असफल होने पर उतना ही अधिक वह हतोत्साहित होता है और आक्रोश की भावना से पीड़ित होता है । ऐसी स्थिति में क्रोधाग्नि कभी भी भड़क उठती है ।

—किसी वस्तु को प्रप्त करने की इच्छा जितनी प्रबल होगी उसके न मिलने पर व्यक्तिप्रायः उसी तीव्रता से आक्रोध विषाद, द्वेष, क्रोध आदि मनोविकारों से ग्रस्त हो जाता है ।

आप क्रोधी स्वभाव के हैं या नहीं या छोटी-छोटी बातों पर भी आप शीघ्र उद्विग्न हो उठते हैं और अपना संतुलन बनाये रखने में असमर्थ हो जाते हैं । अपने आप को इस कसौटी पर खरा उतारने के लिए दैनक जीवन में घटित होनेवाली कुछ बातों का नीचे उदाहरण स्वरूप उल्लेख किया जा रहा है :

—घर में किसी बात को लेकर अपने प्रियजनों के साथ वाद-विवाद होने पर क्या आप जोर से चिल्लाकर बात करने लग जाते हैं और मानसिक रूप से अपने को अशांत, बेचैन एवं उत्तेजित अवस्था में पाते हैं ?

—अपने छोटे बच्चे को आप पढ़ाने बैठते हैं । जब कई बार सिखाने पर भी बच्चा आपकी अपेक्षा के अनुरूप वह सब कुछ नहीं कर पा रहा है या शीघ्रतापूर्वक नहीं सीख पा रहा है, तब क्या आप गरम होकर उसे डांटने-डपटने और कोसने लग जाते हैं ?

—आप अपने बरामदे में बैठे हैं । सामने मैदान में बच्चे क्रिकेट खेल रहे हैं । अचानक तेजी से एक गेंद आपकी खिड़की के शीशे चकनाचूर कर देती है, क्या आप तुरंत आक्रोश एवं बौखलाहट के शिकार हो जाते हैं और बच्चों तथा मां-बाप को कोसते हुए उन्हें सबक सिखाने की भावना से अपने को ग्रस्त पाते हैं ?

—आप कार्यालय के प्रमुख हैं, अपने कक्ष में काम में तल्लीन हैं । उसी समय कर्मचारी संघ का प्रतिनिधि आकर जोर-जोर से चिल्लाकर बात करने लग जाता है, क्या आप भी उतनी ही ऊंची आवाज में प्रतिरोध करने लगते हैं या ऐसी स्थिति में संयम से काम लेते हैं और बिना किसी आवेश के उसकी बात शांतिपूर्वक सुनकर समस्या के समाधान की बात सोचते हैं और अपना संतुलन बनाये रखते हैं ?

प्रतिकूल परिस्थिति में संयम

ऊपर कही गयी बातों के परिप्रेक्ष्य में आप

स्वयं निर्णय कर सकते हैं कि आप किस सीमा तक प्रतिकूल परिस्थितियों में आत्म-संयम बनाए रखने में सक्षम हैं। किसी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए व्यक्ति में साहस, आत्मविश्वास, लगन, धैर्य एवं कर्त्तव्यनिष्ठ का होना परमावश्यक है लेकिन सर्वोपरि गुण है विकट परिस्थितियों में आत्म-संयम एवं मानसिक संतुलन बनाए रखना, सतत् अभ्यास से यह संभव है। प्रारंभ से ही हमें जीवन के प्रति यथार्थवादी, संतुलित एवं सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। साथ-ही-साथ भावना पर विवेक का अंकुश होना आवश्यक है। इस प्रकार व्यक्ति समभाव की स्थिति में अपने को बनाये रख सकता है और उसकी कार्यक्षमता उच्चकोटि की बनी रह सकती है।

—जीवन में आनेवाली समस्याओं का समाधान ढूंढ़ते समय इस बात को अच्छी तरह अंगीकार करना चाहिए कि जीवन सुख-दुःख, जीवन-मरण, हर्ष-विषाद, उतार-चढ़ाव, सफलता-विफलता आदि द्वंद्वों के तानों-बानों से बुना है। हर व्यक्ति को न्यूनाधिक रूप में इनका भागीदार होना ही पड़ता है। अतः निर्लिप्त भाव से इन्हें स्वीकार करने की कला सीखें और सफलता में अतिरेक और विफलता में विषाद के भाव से अपने को मुक्त रखें।

—यह भी देखने में आता है कि जो कुछ अपने पास है उसे सुरक्षित रखने और उसमें संतोष करने के बजाए जो नहीं है या उपलब्ध नहीं है उसके बारे में चिंता कर लोग काल्पनिक अभाव की व्यथा से अपना जीवन दयनीय बनाते हैं।

—जिस परिवेश में हम रहते हैं वह हमारी अपेक्षा के अनुरूप हो, यह संभव नहीं। इसी प्रकार हर व्यक्ति हमारे विचार से सहमत हो या हमारी हर बात माने, यह भी व्यावहारिक और संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में उलझनमुक्त जीवन के लिए यह आवश्यक है कि हम दूसरों से असहमत होते हुए भी उनके विचारों का सम्मान करना सीखें। ईर्ष्या, डाह, द्वेष आदि मनोविकारों से ऊपर उठकर दूसरों की अच्छी बातों को आत्मसात करने में संकोच का अनुभव न करें। इस प्रकार की जीवन पद्धति अंगीकार करने से एकसाथ मिलकर काम करने की भावना को बढ़ावा मिलता है जो किसी भी लक्ष्य प्राप्ति के लिए परम आवश्यक है।

अंततः मैं यह कहना चाहूंगा कि तनावमुक्त एवं सहज जीवन के लिए क्रोध एवं उत्तेजना पर नियंत्रण की आवश्यकता है जो सतत् प्रयास से संभव है। जीवन के प्रति सकारात्मक एवं संतुलित दृष्टिकोण अपनाते हुए स्व-प्रेरित होकर सच्ची लगन, समभाव एवं दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें तो गंतव्य तक पहुंचने में आप अवश्य सफल होंगे और जिस टीम के आप सदस्य या नायक हैं उसके द्वारा कार्य सिद्धि में अपना अधिकतम योगदान दे सकते हैं तथा आंतरिक संतुष्टि की अनुभूति के साथ परिवार, संगठन, समाज एवं देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए शांतिमय जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

—प्रबंध निदेशक
बैंक ऑव नेपाल,
काठमांडू (नेपाल)


हर राह प
LML
STYLE • POWER • PERFORMANCE
In partnership with
PIAGGIO
WORLD'S MOST FUEL EFFICIENT
80 KMPL
60 कि.मी./लीटर
सामान्य ड्राइविंग में
START
इलेक्ट्रिक स्टार्ट
वाला मॉडल भी
उपलब्ध.
हाइ-टेक जगमगाता
इन्स्ट्रूमेंट पैनल
इलेक्ट्रिक क्लॉक के साथ.
MOST POWERFUL HALOGEN LIGHT
Beep! Beep!
उपलब्ध
SUPREMO
LMLWORLD
विशेष रूप से एल एम एल वर्ल्ड
शोरूम्स पर उपलब्ध.


शहंशाह
SUPREMO
हमेशा से आपको बेजोड़ शान, शक्ति और कार्यकुशलता देने वाले एल एम एल लिमिटेड अब पेश करते हैं एक शाही सवारी. नया सुप्रीमो. भारत का सबसे ज़्यादा शानदार, शक्तिशाली, तेज़; और विश्व का सबसे ज़्यादा पैट्रोल-किफ़ायती 150 सी सी, 2-स्ट्रोक स्कूटर. ऐसी ख़ासियत जो इसे बनाए, हर राह पर शहंशाह.
FROM
LML
ULKA 20858 HIN



"आज़ादी का मतलब सिर्फ राजनीतिक गुलामी से छुटकारा ही नहीं है।
देश की सम्पत्ति का समान बंटवारा, जात-पात के बंधनों और
सामाजिक ऊंच-नीच से मुक्ति तथा साम्प्रदायिकता व धर्मांधता को जड़ से उखाड़
फेंकना ही सच्ची आज़ादी होगी"।

-नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

महान देशभक्त को जन्मशती के अवसर पर
देश की श्रद्धांजलि



चांद डूब जाएगा

जब क्षितिज पर उगता है चांद
आ बैठती हो तुम
मेरी पलकों के किनारों पर

चांद झिलमिलाता है आसमान में
और तुम झिलमिलाती हो मेरी आंखों में

चांदनी में जगमगाता है संसार
और तुम्हारी रोशनी में
मैं, मेरा अस्तित्व

चांद की मुसकुराहट से खिल उठते हैं तारे
और तुम्हारी मुसकान से मेरे स्वप्न

सुबह होगी
चांद डूब जाएगा क्षितिज के किनारों पर
मगर तुम्हें नहीं डूबने देगी मेरी स्मृति

जब तक मैं जीवित हूं
तुम झिलमिलाती रहोगी
मेरी पलकों के किनारों पर

—विनोद शर्मा

—१९५-डी, एम. आई. जी.
राजौरी गार्डन. नयी दिल्ली-११००२७



इस तरह

सुख की एक झलक मिलती
तो
दु:ख के क्षण इस तरह न खलते
सुनने में लगता झूठ कहा
सच उसका जिसने दर्द सहा
उस दुखियारे की कौन सुने
जो इन दर्दों के बीच रहा
जीवन छलनी में छनता
तो
मन के छल इस तरह न छलते । सुख की
सब को मिलता है समय यहां
उससे मिलने को हृदय कहां
ऐसी विपरीत परिस्थिति है
है वहीं अनय है विनय जहां
अपनी परख अगर मिलती
तो
हाथों को इस तरह न मलते । सुख की...
मैं न सही, होते तुम्हीं सुखी
देख तुम्हें होता यों न दुखी
अपनी ही आग जला सागर
कहने को होता नीर-मुखी
तुलसी-सा सांचा ढलता
तो
सांचों में इस तरह न ढलते
सुख की एक झलक मिलती

—मधुर शास्त्री

५८१ १-ए/ सै.-२
कालीबाड़ी मार्ग
गोल मार्केट, नयी दिल्ली

स्वास्थ्य

शय्यामूत्र

● कविराज वेणी प्रसाद शास्त्री

कुछ रोग प्राणघातक तो नहीं हैं, परंतु परेशान करने में पीछे नहीं हैं। प्रत्यक्षतः शरीर पर कुछ बुरा प्रभाव तो नजर नहीं आता परंतु गहराई से देखने पर बहुत अनिष्टकारी प्रभाव जरूर रहता है। शय्यामूत्र रोग भी एक ऐसा ही कष्ट है, जिसे चिकित्सा विज्ञान रोग नहीं मानता। परंतु परेशानी बहुत बड़ी है। इसका भावी जीवन पर पड़नेवाला दुष्प्रभाव भी बहुत ही दुःखदायक है जो प्रत्यक्ष नहीं दिखता।

मूत्रत्याग एक परेशानी

नवजात शिशु में मूत्रत्याग (कटिरज्जु परावर्तित क्रिया द्वारा संपन्न होता है। जब मसाना मूत्र से भर जाता है, तब मसाने की मांसपेशियों में स्वतःआकुंचन हो जाता है और मूत्र मूत्रमार्ग से निकलकर बाहर आ जाता है और मसाना रिक्त हो जाता है।

छोटे बच्चों में यह क्रिया स्वाभाविक है, अनैच्छिक है, स्वतः संपन्न होती है। दिन-रात, सोते-जागते, जब भी मसाना आवश्यकता अनुभव करता है, मूत्रत्याग कर समस्या का स्थानीय रूप से समाधान कर लेता है। बच्चे का इस काम से कुछ लेना-देना नहीं होता।

जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता जाता है, शारीरिक और मानसिक शक्तियां बढ़ती हैं। मस्तिष्क केंद्र का विकास होता है तो बच्चे को मसाने के भरने की सूचनाएं प्राप्त होने लगती हैं। बच्चा मूत्रत्याग के विषय में स्वयं निर्णय करना प्रारंभ कर देता है।

सर्वप्रथम वह दिन के समय मूत्रत्याग के विषय में सावधान होने लगता है। उसकी आयु बढ़ने के साथ-साथ रात्रि में मूत्रत्याग के विषय में भी सावधानी प्रयोग करने लग जाता है। धीरे-धीरे बढंती उमर के साथ-साथ बच्चा मूत्रत्याग के औचित्य और अनौचित्य से परिचित होने लग जाता है और एक दिन वह इस पर अधिकार प्राप्त कर लेता है।

शय्यामूत्र रोग नहीं है। यह तो एक लक्षण मात्र है। यह परेशानी विश्व-व्यापी है। देश, जाति, रूप, रंग, आर्थिक-सामाजिक स्थिति इसके लिए कुछ भी अपवाद नहीं है। विश्वभर के चिकित्सा वैज्ञानिक इस विषय में पर्याप्त मात्रा में चिंतित हैं। बच्चा, माता-पिता और डॉक्टर— तीनों इस परेशानी से भारी दुःखी हैं।

कुछ बच्चे शैशवकाल से ही मूत्र पर नियंत्रण नहीं कर पाते और बड़ी आयु तक अनजाने में बिस्तर गीला करते रहते हैं। यह एक वर्ग है। दूसरे वर्ग के बच्चे कुछ समय तक मूत्र नियंत्रण प्राप्त करके बाद में शय्यामूत्र का शिकार हो जाते हैं। इन दो वर्गों के अलावा एक तीसरा वर्ग उन स्वस्थ बच्चों का है जो नियत समय (आयु में) पर नियंत्रण प्राप्त कर लेते हैं। बिस्तर गीला करना जिनके लिए कभी समस्या ही नहीं रही।

इस कष्ट के लिए बच्चे को दोषी मानकर माता-पिता बच्चे को समझाते हैं, मित्र-बंधुओं

के सामने अपमानित करते हैं। कटु शब्दों में डांट-डपट करते हैं। शारीरिक दंड भी देते हैं। असहाय, मासूम, भोला-भाला निरपराध बच्चा दोनों ओर से दंड भुगतता है। एक तो रोग का दंड, दूसरा माता-पिता द्वारा दी गयी सजा। दंड भी उस अपराध के लिए जो अपराध उसने किया ही नहीं है।

दंड से रोग तीव्र

जितना समझाया जाता है अथवा दंड दिया जाता है, रोग उतना ही अधिक बढ़ जाता है। फिर बच्चे को जिद्दी समझकर दंड की मात्रा और बढ़ा दी जाती है। कितनी विडंबना है, अभिभावकों के अज्ञान का दंड निरपराध मासूम बच्चे को भोगना पड़ता है। ज्यादातर बच्चों को तो बिस्तर गीला करने का पता ही नहीं चलता। वह संपूर्ण रात्रि गीले में ही सोकर बिता देते हैं।

शय्यामूत्र में वंश परंपरा का भी पर्याप्त योगदान रहता है। जो माता-पिता, दोनों अथवा एक अपने बाल्यकाल में शय्यामूत्री रहे हैं उनकी संतान में प्रायः शय्यामूत्र होता ही है। लिंग भेद से शय्यामूत्र के अनुपात में कुछ अंतर देखने में आता है। लड़कियों की अपेक्षा लड़कों में शय्यामूत्र कुछ अधिक रहता है।

कुछ माता-पिता तो बच्चे को स्वच्छ रहने की ट्रेनिंग ही नहीं देते, जिसके फलस्वरूप बच्चा देर तक बिस्तर गीला करता रहता है। कुछ माता-पिता दोनों कामगार होने के कारण बच्चे की ओर ध्यान ही नहीं दे पाते और बच्चा उपेक्षा का शिकार होकर मूत्रत्याग बड़ी उमर तक करता रहता है। क्रोधी माता-पिता के बच्चे प्रायः शय्यामूत्र के रोगी रहते हैं। कुछ माता-पिता संवेदनशील न होने के कारण बच्चों की भावनाओं से खिलवाड़ करते रहते हैं। अपनी प्रसन्नता के लिए छोटी-छोटी बात के लिए बच्चों को रुलाते रहते हैं। इससे भी बच्चे शय्यामूत्री हो जाते हैं।

नियंत्रण नहीं कर पाते

स्कूल के डर से, सहयोगी छात्रों के डर से अथवा किसी कारण से बच्चे के मन और मस्तिष्क की गहराइयों में भय की भावना घर कर लेती है जो जीवनपर्यंत बनी रहती है। वह भी शय्यामूत्र का कारण बन जाती है। कुपोषण के कारण भी मूत्र नियंत्रण नहीं हो पाता। गहरी नींद के कारण भी मसाने के भर जाने से संकेत मस्तिष्क तक नहीं पहुंच पाते तब भी मूत्र नियंत्रण नहीं हो पाता।

सर्वप्रथम वह दिन के समय मूत्रत्याग के विषय में सावधान होने लगता है। उसकी आयु बढ़ने के साथ-साथ रात्रि में मूत्रत्याग के विषय में भी सावधानी प्रयोग करने लग जाता है। एक दिन वह इस पर अधिकार प्राप्त कर लेता है।

अत्यंत चतुर, बुद्धिमान, कलाप्रिय, संवेदनशील, बच्चों के मन में भय की भावना शीघ्र घर कर लेती है, फिर वह शय्यामूत्र का कारण बन जाती है। बहुत-से बच्चे अत्यंत कल्पनाशील होते हैं। वह स्वप्न में अपने आप को बाथरूम में मूत्रत्याग करते देखते हैं। अतः निश्चिंत होकर पूरा जोर लगाकर मूत्रत्याग कर देते हैं, परंतु वह होते बिस्तर में ही हैं। लंबी बीमारी के बाद भी बहुत-से बच्चे शय्यामूत्र की लपेट में फंस जाते हैं। शय्यामूत्र के रोगी बच्चे प्रायः पढ़ने-लिखने में सर्वाग्रणी देखे गये हैं।

कई बच्चे बहुत गहरी नींद में सोते हैं। मसाने द्वारा भेजे गये मूत्र संकेत मूत्र नियंत्रण केंद्र तक पहुंच ही नहीं पाते और बिस्तर गीला होता रहता है।

कुछ रोग भी शय्यामूत्र में कारण बन जाते हैं। नजला-जुकाम के कारण नासावरोध, एडिनायडस, टांसल्स, श्वास रोग, सूत्र कृमि, शिषृनाग्र प्रदाह, गुदविदार, फायमोसिस, कब्ज के कारण मल की गांठ बन जाना, योनि प्रदाह, मसाना अथवा मूत्रनलिका की विकृति, कई प्रकार के वृक्क रोग, गरिष्ट भोजन, पेट में गैस, मधुमेह, आलस्य, सोते समय तेज मीठेवाला कढ़ा दूध पीना, सोते समय तरल पदार्थों का सेवन करना आदि कारणों से भी शय्यामूत्र हो सकता है।

चिकित्सा

शय्यामूत्र से आतंकित होने की आवश्यकता नहीं है। परंतु, उपेक्षा भी अत्यंत हानिकर हो सकती है। शायद आपको पता नहीं है कि सात वर्ष की आयु में बच्चे के भावी स्वास्थ्य की आधारशिला रखी जाती है। अतः इस आयु में बच्चे का विशेष ध्यान करना परमावश्यक होता है। नींव बार-बार नहीं रखी जाती। कमजोर नींव पर बना हुआ सुंदर भवन बहुत मजबूत नहीं हो सकता। इसलिए शय्यामूत्र के रोगी की तुरंत प्रभावी चिकित्सा करवानी अत्यंत आवश्यक है।

यदि शय्यामूत्र उपरोक्त किसी रोग के कारण हुआ हो तो उस रोग की चिकित्सा करवाकर कारण निवारण करना आवश्यक है।

भूलकर भी शय्यामूत्र के लिए बच्चे की प्रताड़ना, समझाना, शर्मशार करना आदि साधनों का आश्रय न लें, क्योंकि शय्यामूत्र में बच्चे का तनिक भी अपना योगदान नहीं है।

माता-पिता का सहयोग

यदि माता-पिता ईमानदारी से सहयोग करें तो बच्चा शीघ्र स्वास्थ्यलाभ प्राप्त कर सकता है। बच्चा तो स्वयं कष्ट में है। उसे प्रताड़ित कर उसके कष्ट में और अधिक वृद्धि करने की भूल न करें। यदि आप त्वरित लाभ चाहते हैं तो बच्चे को प्रोत्साहित करें। कम-से-कम उसे प्रताड़ित करना तो तुरंत बंद कर दें। बेहतर तो यह रहेगा कि आप शय्यामूत्र के विषय में देखरेख करना ही बंद कर दें। आज बच्चे ने बिस्तर गीला किया है कि नहीं, इस बात को ही देखना भुला दें। शय्यामूत्र की चिकित्सा का यह परमावश्यक सूत्र है। चिकित्सा की सफलता इसी एक बात पर निर्भर करती है।

• सोने से दो घंटे पहले तरल पदार्थों का प्रयोग बंद कर दें। ग्रीष्म ऋतु में पानी की प्यास अधिक होती है तो इस नियम में अपवाद भी जरूरी हो जाता है। अतः जरूरत के मुताबिक थोड़ा पानी पिलाया भी जा सकता है। शीतलपेय नितांत हानिप्रद रहते हैं। सोने से पूर्व

त्याग का स्वभाव बनाना अत्यंत लाभप्रद । रात्रि में ११ बजे तथा २ बजे के बाद बच्चे जगाकर मूत्रत्याग के लिए प्रेरित करें । त्याग जागृतावस्था में करवाना ही लाभप्रद । कई बच्चे भय के कारण एकाकी बाथरूम ने से घबराते रहते हैं । माता-पिता को भाविक रूप से उनके साथ जाना चाहिए । द में बाथरूम का प्रयोग पूर्ण लाभदायक नहीं ता । अतः बच्चे को पहले पूर्ण रूप से द्रामुक्त हो लेने दें । निद्रामुक्त होने पर ही ाब करवाने का लाभ रहता है । अन्यथा छ लाभ नहीं रहता । बच्चे को जगाने के लिए ठोर व्यवहार हानिकर रहता है । भूलकर भी धीर होकर कटु शब्दों का प्रयोग न करें । वैसे सब मिठाइयां हानिकर हैं, परंतु चॉकलेट, फी और गोलियां आदि मिठाइयां तो बहुत ही निकर रहती हैं । मिर्च-मसाले, ट-पकौड़ियां, फास्ट फूड भी हानिकर है ।

शय्यामूत्र की चिकित्सा में बड़े-बड़े डॉक्टर साधन उपयोगी बताते हैं । मैं उन दोनों धनों का प्रबल विरोध करता हूं । उनसे लाभ अपेक्षा हानि अधिक है । या यों कहना धिक उपयुक्त रहेगा कि उन दोनों उपायों की हानि-ही-हानि है । उनका कहना है कि बलपूर्वक मूत्र को देर तक रोके रहने से मसाने की मूत्र को रोके रखने की क्षमता बढ़ जाती है । यह बात एकदम अव्यावहारिक एवं हानिप्रद है । इससे और अनेक उपद्रव खड़े हो जाते हैं । दूसरे, वह कुछ समय के लिए सामान्य से नशे की दवाइयों के प्रयोग की राय देते हैं । इससे भी स्थाई लाभ नहीं मिलता । जब तक नशा रहता है तब तक कुछ शांति रहती है और उसके बाद रोग पुनः उपस्थित हो जाता है ।

प्राकृतिक जड़ी-बूटियों पर आधारित आयुर्वेदिक चिकित्सा इसके लिए अत्यंत लाभदायक तथा नितांत हानिरहित है । तिल, अजवायन, शतावर, बिंबीफल, विदारिकंद, आमला, बादाम, चारो मगज का प्रयोग बहुत ही लाभदायक है । शय्यामूत्र के रोगी बच्चे के मसाने का पूर्ण विकास न होने के कारण अथवा मसानो की असहष्णुता के कारण बच्चे बड़ी आयु तक मूत्रत्याग पर संयम नहीं कर पाते ।

हमारी आविष्कृत औषधियां मसाने को पुष्ट करके और मस्तिष्क का विकास करके रोग से सदा-सदा के लिए छुटकारा दिला देती हैं ।

—शास्त्री अस्पताल, कर्ताराम स्ट्रीट,
लुधियाना-१४१००८

मेथी

हरी मेथी, कैल्शियम, सल्फर, क्लोरीन, विटामिन-ए तथा सी से और इसके बीज फासफोरस और पोटेशियम से समृद्ध होते हैं । शरीर में खून की कमी, गठिया तथा मधुमेह की बीमारी में एक छोटा चम्मच मेथी के बीजों का चूर्ण लेने से इन बीमारियों को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है । मेथी के बीजों का 'दलिया' के रूप में प्रयोग स्तनपान करानेवाली स्त्रियों को अवश्य करना चाहिए क्योंकि यह स्तनों का दूध बढ़ाने में सहायक होता है ।

उनकी बात का मतलब अचानक मेरी समझ में नहीं आया। आखिर वे कहना क्या चाहते थे!

वर्षों से प्रचार कार्य से जुड़ा हूं। हर तरह के लोगों से संपर्क रहता है। हर तरह से सेवा करनी पड़ती है। पर ऐसा कभी नहीं हुआ कि 'शबाब' का भी इंतजाम करना पड़े।

उन्होंने ऐसा ही कुछ कहा था— 'शबाब' की व्यवस्था करनी है। मैं अचानक चौंक गया। वे प्रभावी मंत्री थे और मैं महज प्रचार विभाग का नौकर। कोई उत्तर देते नहीं बना।

कहानी

उस रात

● देवेन्द्र उपाध्याय

—"सर, मैं पिछले तीस साल से यहां हूं। आज तक ऐसा कुछ नहीं किया। मुझे कुछ पता नहीं इन सबके बारे में।"

कहने को तो मैं कह गया। मन-ही-मन डर भी रहा था कि इतना प्रभावशाली मंत्री हैं, कहीं मेरे ना कहने पर निलंबित न कर दे। बरसों की साख, इज्जत और रुतबा— एक ही मिनट में सब कुछ चला जाएगा। कुछ करूं भी तो कैसे ? इस तरह का दायरा कभी नहीं रहा।

मैं असमंजस में पड़ा रहा। वे बोले, "घबराओ नहीं। तुम्हें कुछ नहीं होगा।"

सुनकर जैसे जान में जान आयी।

वे फिर बोले, "यह बातें सिर्फ तुम्हारे और मेरे बीच हो रही हैं। मैं तुम्हें एक फोन नंबर देता हूं। तुम्हें फोन करना है। उसके बाद किसी प्राइवेट गाड़ी में जाकर उसे चुपचाप लाना है, रात दस बजे मेरे उस ठिकाने पर पहुंचाकर चले जाना। सुबह पांच बजे फिर वहीं पहुंचाना है।"

जाड़ों की उस शाम मैं पसीने से नहा गया। मेरे मुंह से आवाज नहीं निकली। किसी तरह घिघियाते स्वर में— यस सर, यस सर—



कहता रह गया ।

उन्होंने अपनी डायरी से कोई फोन नंबर दिया और मैंने एक कागज में उसे उतार लिया । इसके साथ ही एक मोटा-सा बंडल मेरी तरफ बढ़ा दिया । वह नोटों का बंडल था ।

—"दस हजार रुपये हैं । इसमें काम चल



जाएगा । वहां जाओगे, दे आना ।"

टेलीफोन नंबर और नोटों का बंडल लेकर मैं अपने दफतर आ गया । सभी कर्मचारियों से जाने के लिए कह दिया । एक चौकीदार ही वहां रह गया ।

सबके जाने के बाद साहब के दिशा-निर्देश पर फोन किया । उधर से एक भारी-सी जनाना आवाज सुनायी दी । कोड में बात की—"आज के लिए कुछ सामान चाहिए !"

—"ठीक है मिल जाएगा । सामान महंगा है दस हजार लगेगा ।"

मैंने जवाब दिया, "तैयार हूं ।"

उसके बताये गये पते पर पहुंचा । आलीशान कॉलोनी में आलीशान कोठी । दफतर की गाड़ी नहीं ले गया । अपने से ही डर लग रहा था । रास्ते से एक प्राइवेट टैक्सी ले ली थी । कोठी के गेट पर दरबान खड़ा था । उसे बताया, "मैडम से मिलना है । अभी थोड़ी देर पहले बात हुई है ।"

उसने भीतर इंटरकॉम से बात की तब जाकर गेट खोला । टैक्सी भीतर पोर्च में जाकर खड़ी कर दी । पोर्च के पास ही एक अधेड़ सूट पहने खड़े थे । वे भीतर ड्राइंग रूम में ले गये ।

—"हां तो लाये हैं दस हजार ?"

—"जी ।"

इसके साथ ही नोटों का बंडल उन्हें सौंप दिया ।

—"ठीक है । आप ले जाइए । कल सुबह छह बजे तक वापस पहुंचा दीजिए ।"

यह कहते हुए वे अंदर गये । थोड़ी देर में एक खूबसूरत युवती के साथ वे लौट आये । युवती का नाम भी नहीं बताया । न मेरा नाम

पूछने की हिम्मत ही हुई ।

मैं उठ खड़ा हुआ । वह युवती भी मेरे साथ ही थी । मैं ड्राइवर के साथ अगली सीट पर बैठ गया । युवती पीछे की सीट पर बैठ गयी ।

कुछ देर बाद हम ठिकाने पर पहुंच गये । टैक्सी को मैंने रोके रखा । भीतर पहुंचा । साहब एकांतवास कर रहे थे । सामने भरा हुआ गिलास और बोतल । साथ में कई प्लेटें ।

मुझे देखते ही बोले, ''आ गये । ठीक है भीतर पहुंचा दो । सुबह पांच बजे आ जाना ।''

वापस लौटकर टैक्सी तक पहुंचा और उस युवती को अपने साथ भीतर छोड़ आया ।

> ***सबके जाने के बाद साहब के दिशा-निर्देश पर फोन किया । उधर से एक भारी-सी जनाना आवाज़ सुनायी दी । कोड में बात की— ''आज के लिए कुछ सामान चाहिए !''***

टैक्सी से अपने घर पहुंचा । टैक्सी ड्राइवर को सुबह चार बजे फिर बुला लिया । रात के बारह बज रहे थे । सारी भागदौड़ में घर बताने की याद ही नहीं रही । सब चिंता में डूबे थे । उसके बाद ही सबने खाना खाया ।

पत्नी से सुबह पौने चार बजे जगाने को कह दिया । मेरी आंखों में नींद नहीं थी । गोपनीयता के नाते पत्नी को भी कुछ नहीं बता सकता था ।

पत्नी ने पूछा, ''देर कैसे हो गयी । बता तो देते । सबकी जान सूख रही थी ।''

मेरे पास उसकी बातों का कोई उत्तर नहीं था । टालते हुए कहा, ''दफतर से कहीं चला गया था । वक्त नहीं मिला । सुबह जल्दी जाना है । फिर आकर दफतर के लिए तैयार होऊंगा । कई मंत्री आये हैं । उन्हें हवाई अड्डे छोड़ना है ।''

रह-रहकर मेरी आंखों के सामने उसी युवती का चेहरा आ रहा था । साथ में भारी-भरकम थुलथुल मंत्री का चेहरा भी गडमड हो रहा था ।

सुबह पौने चार बजे अलार्म बज गया । एकदम फुरती से उठा और झटपट तैयार हो गया । चाय पीकर उसी टैक्सी में ठिकाने पर पहुंच गया । टैक्सी की आवाज सुनकर वह युवती बाहर निकल आयी ।

टैक्सी अब वापस उसके ठिकाने की तरफ जा रही थी । उससे कुछ पूछने की इच्छा हुई लेकिन क्या पूछूं— यही समझ में नहीं आ रहा था ।

''आपको कोई कष्ट तो नहीं हुआ ?''— न जाने कैसे मेरे मुंह से निकला ।

—''धंधे में कष्ट कैसा ?''

उसने धीमी आवाज में कहा । लगा जैसे किसी ने डंक मार दिया हो । पलटकर पीछे देखा— उसका चेहरा पूरी तरह भावशून्य था । मेरे पास शब्द चुक गये थे ।

एक सफर पूरा हो चुका था । कोठी के पास टैक्सी रुकते ही युवती डगमगाते कदमों से भीतर चली गयी ।

अब जब मुझे रिटायर हुए भी दो साल से ज्यादा हो गये हैं । कभी-कभार यह घटना याद आती है तो विचलित हो उठता हूं । शायद मेरी तरह वह भी नौकरी बजा रही थी ।

—सी-७/१८ ए, लारेंस रोड
दिल्ली-११००३५

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

दिल डूबने लगता है

न्द्र गोयल, शास्त्रीनगर (रांची) :
० वर्षीय बी.ए. का छात्र हूं । समस्या अपने ति क्रोधी बड़े भाई से भयभीत होने की है । ड़े भाई से एक अजीब डर से गुजर रहा हूं । ाई की आहट मात्र से दिल डूबने लगता है । न करता है कहीं भाग जाऊं । कभी लगता है ; अंदर-ही-अंदर आक्रोश पल रहा है और ट कर बाहर निकलेगा । बच्चे मुझे अच्छे गते हैं, पर घरवालों को बिलकुल नहीं । घर बाहर जाने पर सबसे मिलता-जुलता हूं, किन घर आने पर वही स्थिति उत्पन्न हो जाती ।

-आपकी समस्या जब आप पंद्रह वर्ष के , तब आरंभ हुई । वास्तव में आपको चपन व किशोर अवस्था से गुजर कर ब वयस्क हो जाना चाहिए परंतु आप हुत ही संवेदनशील तथा भय के तावरण में बड़े हुए । इस कारण पकी समस्या उत्पन्न हुई । वास्तव में ब आपकी समस्या एक वयस्क की म्मेदार भूमिका निभाने की है जो इस य में सामने आयी है । दोस्तों से लें-जुलें । घर से भागने की बजाए, जितना हो सके अपने बड़े भाई तथा माता-पिता के सामने आयें । उनसे वार्तालाप करें, तब ही आपके मन में जो अकारण इतना भय है, वह जा पाएगा । आप देखेंगे कि वास्तविक रूप में वे लोग इतने भयानक नहीं, जितने कि आप अपनी कल्पना व उनसे अपने को दूर रखने से मन में उत्पन्न कर देते हैं ।

बिजली जैसी गिरी

श्याम बाबू, सोनभद्र :
एक बार १९९०-९२ में मैं अपने कॉलेज में क्लास समाप्त होने पर न जाने किस प्रेरणा के वशीभूत होकर यह सोचता हुआ आ रहा था कि वास्तव में पिछला जन्म होता है और मैं उस जन्म में क्या था ? इतना अधिक आत्ममंथन किया— जैसे ही उस दिशा में मेरी सोच समाप्त हई, वैसे मुझे लगा कि मेरे मस्तिष्क के दाहिने हिस्से में जैसे बिजली गिर पड़ी हो । पूरे शरीर को विद्युतीय झटका लगा और मैं सड़क पर गिर पड़ा । तत्पश्चात मेरी सोच अनियंत्रित हुई और मुझे पागल घोषित कर मानसिक अस्पताल में रखा गया । उस समय मुझे अनुभव हुआ कि वास्तव में मैं मिस्र देश के राजघराने से संबंध रखता हूं; जिसकी हत्या उसके ही सहयोगी ने खंजर मारकर कर दी थी । बाद में चिकित्सा करने पर ठीक तो हो गया, परंतु आज भी कभी-कभी अजीब स्थिति उत्पन्न हो जाती है । कभी लगता है कि मैं पृथ्वी के साथ किसी उपग्रह-सा शून्य में लटका चक्कर लगा रहा हूं । मैं तब कुछ क्षणों के लिए जड़-सा हो जाता हूं, फिर कभी-कभी ऐसा भी अनुभव होता है कि सामने घटनाक्रम जो घटित हो रहा है, बहुत तेज रफ़्तार से चल रहा है ।

कुछ क्षणों के पश्चात सही होने पर सर-दर्द बना रहता है । कृपया रोग का निदान बताएं ।

—आपकी चिट्ठी में लिखावट के क्रम से पता चलता है कि आप पागल नहीं हैं । हां, आपको अवश्य ही कुछ ऐसे अनुभव हुए हैं जो असामान्य हैं । उनके बारे में ऐसा सोचा जा सकता है कि आप किसी मानसिक रोग से पीड़ित हैं । वास्तव में हमारे विचार से आपकी पूर्ण जांच व मस्तिष्क का परीक्षण नहीं किया गया । हमारे मस्तिष्क में कुछ ऐसे स्थान हैं जिनमें विकृति आने पर भी ऐसे अनुभव संभव हैं । इनकी चिकित्सा दवाओं से संभव है । यदि आपको इन परीक्षणों की व्यवस्था जहां आप रहते हैं, वहां न मिल सके तो आप हमें व्यक्तिगत रूप से आकर मिलें, ताकि आपकी सही जांच व चिकित्सा कर सकें ।

पागलपन के लक्षण

मीरा, मुजफ्फरपुर :

मेरा वैवाहिक जीवन पांच वर्ष रहा । पति असामान्य मस्तिष्क के थे । प्यार क्रूरता के साथ करते थे । रांची में चिकित्सा चली, पर दवा नहीं खाते थे जिससे २० वर्ष की अवस्था में ही मैं विधवा हो गयी । एक बेटा और एक बेटी के पालने-पोसने में ही अपने को समर्पित कर दिया । बेटा १५-१६ वर्ष का होते ही उसमें असामान्य हरकतें उभरने लगीं । इच्छाओं की पूर्ति में विलंब अथवा 'मना' करना बरदाश्त नहीं कर सकता । गुस्से में बोलते समय मुंह में झाग आ जाता है । घोर जाड़े में भी पसीने से तर-बतर हो जाना तथा कमीज फाड़ देना आदि लक्षण मुझे घोर चिंता में डाल देते हैं । इससे

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।

—संपादक

पिता की समानताएं इसमें पाकर मुझे घृणा होने लगती है । बेटी भी गुस्सेवाली है । उसकी शादी हो चुकी है, लेकिन डरती हूं कि कुछ अनहोनी न हो जाए । इस सबको लेकर हरदम तनाव में अकेली भयावह रहती हूं । किसी से मिलती-जुलती भी नहीं हूं । भविष्य की शंका बनी रहती है । कृपया उचित सलाह दें ।

—आपके बेटे की समस्या जरूरी नहीं कि मानसिक रोग द्वारा उत्पन्न है । बिगड़े हुए बच्चे जिनको बहुत लाड़-प्यार मिला हो, वह भी इच्छाओं की पूर्ति में विलंब या मना करना बरदाश्त नहीं कर पाते, तथा गुस्से में अपना संतुलन खो जाते हैं । यह जानने के लिए कि यह केवल एक बिगड़े हुए बच्चे के लक्षण हैं अथवा मानसिक रोग का आरंभ, उसकी जांच होना आवश्यक है ताकि समय पर ही स्थिति पर नियंत्रण पा सकें । वास्तव में आप अपने अतीत को लेकर इतनी भयभीत हो गयी हैं कि लगता है उसकी परछाई आपके भविष्य पर हावी हो गयी है । आप स्वयं ही एक ऐसी तनावपूर्ण मनोस्थिति में हैं जिससे बाहर निकलना आवश्यक है । हमारे विचार में आप तुरंत ही अपनी शंकाओं का समाधान एक मनोचिकित्सक से जो आपकी समस्याओं को भी अच्छी तरह

झ सके करवाएं । यदि वहां पर
को तसल्ली न हो तो आप किसी और
े संस्थान में संपर्क करें अथवा हमें
कगत रूप से मिल सकते हैं ।

आत्मविश्वास की कमी

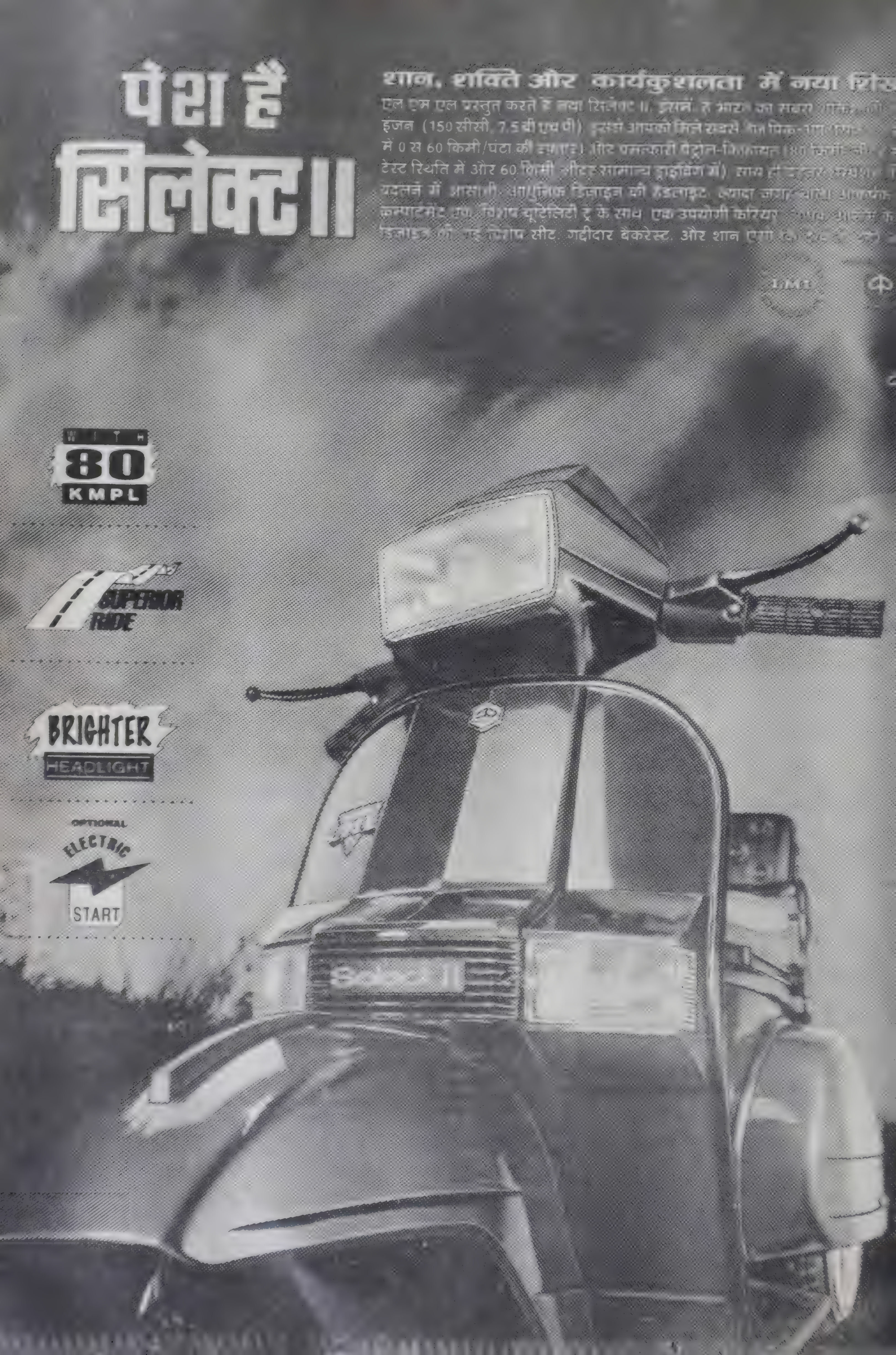
सिंह, उदयपुर :
रह वर्षीय १२वीं कक्षा का अध्ययनरत
हूं । गत दो माह से सर में तेज दर्द होने के
-साथ आत्महत्या के बुरे विचार आने
। इससे मैं बहुत उदास व जीवन से निराश
लगा । सर-दर्द तो कुछ दिन में ही ठीक हो
परंतु मनोस्थिति वैसी ही बनी रही । अब
समय एक भयानक तनाव व डर मन को घेरे
है । लगता है आगे अगर ऐसा फिर हुआ
रदाश्त नहीं कर पाऊंगा । खुशी की बात
पर प्रसन्नता नहीं होती । हर चीज की
ा करने लगता हूं । मन में आत्मविश्वास
है । चार वर्ष पूर्व एक डरावनी फिल्म
कर डर समा गया । इसके पश्चात यह
या आ गयी । कृपया राय दें ।

**आप वास्तव में अवसाद की मनोस्थिति
जर रहे हैं, जिसमें सर-दर्द,
भावना, आत्मविश्वास की कमी व
मुश्किल से कटना, तनाव, डर आदि
उसी के लक्षण हैं । हो सकता है
ार में अवसाद रहा हो । इस संदर्भ में
आपको यह बताना चाहते हैं कि
ा उपचार संभव है । आप
प्रतिशत स्वस्थ हो जाएंगे । आपको
ात की तुलना केवल इसी प्रसंग को
नहीं करनी चाहिए । आपको अपने
उज्जवल व आशाओंभरा भविष्य
देखकर बढ़ना चाहिए । ऐसा संभव है कि
आपके मन पर पढ़ाई का तनाव भी हावी
है, क्योंकि आप १२वीं कक्षा में हैं ।
आजकल अवसाद को मुक्त करनेवाली
आधुनिक दवाएं उपलब्ध हैं जिन्हें लेने पर
व्यक्ति आदी नहीं होता और ना ही उनका
शरीर पर दुष्प्रभाव पड़ता है ।**

नियंत्रण कैसे.!

क.ख.ग., बस्ती :
मेरी शादी मई-जून में होनेवाली है । परिवार
नियोजन का मन पहले से बना लिया । कृपया
कोई दवा बताएं जो महीने में या प्रतिदिन ले
सकूं, जिससे परिवार नियोजन भी हो जाए व
शारीरिक हानि भी न हो । व्यक्तिगत तौर पर मैं
२५ वर्षीय एक स्वाभिमानी व जिम्मेदार पुरुष
हूं । हम तीन भाई हैं ।

**यह तो बहुत अच्छा है कि आप शादी से
पहले ही परिवार नियोजन की बात सोच
रहे हैं जो एक जिम्मेदार पुरुष होने का
परिचायक है, परंतु एम.ए. का छात्र होते
हुए भी आपकी जानकारी इस क्षेत्र में
सीमित है । ऐसी दवा केवल स्त्रियों के
लिए ही उपलब्ध है जिन्हें रोज खाने से वे
गर्भधारण से बच सकती हैं । इसकी सही
सलाह आपको किसी भी परिवार
नियोजन केंद्र से मिल सकती है । आप
अपनी पत्नी को दवा पर रखने के बजाए
स्वयं भी निरोध का प्रयोग कर सकते हैं ।
बेहतर यह रहेगा कि आप पत्नी को भी
अपने विश्वास में लेकर कोई कदम
उठाएं । इसमें आप किसी कुशल
चिकित्सक द्वारा परामर्श ले सकते हैं ।**



पेश है
सिलेक्ट II
शान, शक्ति और कार्यकुशलता में नया
WITH 80 KMPL
SUPERIOR RIDE
BRIGHTER HEADLIGHT
OPTIONAL ELECTRIC START
LML
Select II

कांवर

श्रवण कुमार से स्मृतियां जुड़ी हैं

● रणछोड़ त्रिपाठी

कांवर हिंदू संस्कृति के लोगों के लिए एक जाना पहचाना नाम है। पौराणिक काल में पितृ-भक्त श्रवण कुमार ने कांवर के दोनों पलड़ों में बैठाकर अपने अंधे माता-पिता को तीर्थाटन करवाया था। पुराने जमाने में जब पेयजल की आधुनिक व्यवस्था नहीं थी, तब कांवर से ही लोग पानी लाते थे। आज भी सावन में गंगा-जमुना आदि पवित्र नदियों से हजारों कांवरिये कांवर में पवित्र जल भरकर कंधे पर रखकर पैदल अपने गांव तक जाते हैं। यह कांवरें रंगबिरंगी तथा सजी-धजी होती हैं।

चित्तौड़गढ़ जिले में चित्तौड़गढ़-कोटा राजमार्ग पर चित्तौड़ से मात्र २४ कि.मी. दूर है छोटा-सा गांव 'बस्सी' —जहां बनती हैं लकड़ी की यह अनोखी कांवर। कांवर यों तो ऊपर से देखने में लकड़ी का एक मामूली-सा मंदिर दिखायी देता है, परंतु इस मंदिर के दोनों ओर के पटों की जब परत-दर-परत खुलती हैं, तब कांवर का असली रूप नजर आता है।

दो सौ वर्ष पुराना

बस्सी में लकड़ी की कांवर बनाने का कार्य आज कल का नहीं, वरन् दो सौ वर्षों से भी अधिक समय से चला आ रहा है। यह कांवर यहां के सुथार (बढ़ई) जाति के लोग बनाते हैं। वर्तमान में २०-२२ परिवार इस पारंपरिक कार्य से जुड़े हुए हैं। यह लोग कांवर के अतिरिक्त लकड़ी के खिलौने हाथी, घोड़े, ऊंट, शेर, गाय आदि जानवर और पौराणिक देवी-देवता, ईसर-गणगौर तथा जलझूलनी एकादशी पर मंदिरों से निकाले जाने वाले बेवाण (पालकियां) भी बड़े ही कलात्मक ढंग से बनाते ह। खिलौने बनाने के बाद इनमें यही लोग रंग भी भरते हैं।

कांवर बनाने वाले यहां के निवासी सूरजमल व बोतलाल ने बताया कि वह यह कार्य गत १५-२० वर्षों से कर रहे हैं। कांवर व अन्य खिलौने या बेवाण बनाने में मुख्यतया नीम, सालर, सागवान आदि की लकड़ी काम में लेते हैं। कांवर में परंपरागत चित्रशैली में पौराणिक गाथाओं का बड़ी ही बारीकी से चित्रण किया जाता है। कांवर के दोनों पटों की परतों व अंदर-बाहर मुख्य रूप से राम व कृष्ण लीलाओं का सुंदर चित्रण होता है। कांवर के ऊपरी हिस्से में मेवाड़ का चिह्न होता है। कांवर के ऊपरी

दरवाजे को खोलने के बाद दायीं और बायीं ओर परत-दर-परत ३-४ परतें खुलती हैं, जो लोहे के छोटे-छोटे कब्जों से जुड़ी होती हैं। इसके बाद अंदर फिर एक दरवाजा होता है, जिसमें राम, लक्ष्मण, सीता या राधा-कृष्ण की लकड़ी की मूर्तियां लगी रहती हैं। इस रंगबिरंगी कांवर के दोनों पल्लों पर राम व कृष्ण जन्म से लेकर उनके पूरे जीवनकाल का वर्णन चित्रों के माध्यम से दो-तीन कतारों में सुंदर ढंग से किया जाता है।

कांवर पर मौसम का रंग

कांवर पर चित्रांकन प्राकृतिक ढंग से तैयार किये गये चटकीले रंगों से होता है। आजकल रुपये तक तथा बड़ी कांवर २५० से ५०० रुपये तक बिकती हैं जबकि बेवाण ६०० से १००० रुपये तक व सागवान का बनाने पर ३ से ४ हजार रुपये मिलते हैं। उसने कहा कि यहां से कांवर भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, जोधपुर, जयपुर व दिल्ली तक के लोग आकर ले जाते हैं। वहां के एंपोरियम से देशी-विदेशी पर्यटक इन्हें ४-५ गुणा दाम पर खरीदते हैं। ज्यादा संख्या में कांवर व बेवाण हम ऑर्डर मिलने पर ही बनाते हैं। इस कार्य से जुड़े लोगों का मानना है कि इस जमाने में हमें जो इस कला की कीमत मिलती है, उससे हमारे परिवार का भी अच्छी तरह से पालन पोषण नहीं हो पाता है।

चित्तौड़गढ़ जिले में चित्तौड़गढ़-कोटा राजमार्ग पर चित्तौड़ से मात्र २४ कि.मी. दूर है छोटा सा गांव 'बस्सी' —जहां बनती हैं लकड़ी की यह अनोखी कांवर। कांवर यों तो ऊपर से देखने में लकड़ी का एक मामूली-सा मंदिर दिखायी देता है।

कई लोग प्राकृतिक रंगों की जगह बाजार में उपलब्ध रासायनिक रंगों व आयल पेंट का भी प्रयोग करते हैं। एक कांवर बनाने में ३ से ४ दिन लग जाते हैं, जबकि एक बेवाण बनाने में १० से १२ दिन लग जाते हैं। जुलाई-अगस्त माह में जल झूलनी एकादशी आने से यहां बेवाण बनाने का कार्य अधिक होता है। सर्दी के मौसम में यहां कांवर ज्यादा बनायी जाती है।

सत्यनारायण ने बताया कि इन चित्रों पर इतनी मेहनत करने पर भी उन्हें इनकी कीमत कम मिलती है। छोटी कांवर ६० से १०० अनेक लोग धीरे-धीरे इस पारंपरिक कार्य को छोड़कर दूसरे कार्यों से अपना जीवनयापन करने लगे हैं।

कांवर पर बने चित्रों का वाचन करने की भी परंपरा है। इसके भोपें द्वारा दक्षिणा (भेंट) लेकर कांवर की पूजा करने के बाद इस पर अंकित चित्रों का पद्य शैली में वर्णन किया जाता है। आजकल कांवर वाचन करनेवाले भोपे कम ही देखने को मिलते हैं। कांवर चित्रण शैली तथा 'पड़' चित्रण शैली में बहुत अधिक समानता है। पड़ जहां कपड़े पर बनायी जाती



बेवाण (पालकी) पर रंग भरते हुए कलाकार

है, वहीं कावड़ लकड़ी पर बनती हैं। इसमें भी पड़ की ही तरह चित्रकथा होती है, वह श्रृंखलाबद्ध तरीके से चित्रित की जाती है।

बस्सी में प्रमुख रूप से कावड़ बनानेवालों में बोतलाल, मदनलाल, सत्यनारायण, मोहनलाल, सूरजमल आदि हैं। इनके लड़के तथा परिवार की महिलाएं भी इस कार्य में इनको पूरा सहयोग देती हैं। आज आवश्यकता है इस कला को पोषण देने की तथा ऊपर उठाने की, वरना वह दिन दूर नहीं जब यह प्राचीन लोककला लुप्त हो जाएगी।

—३५० बी.आर.के. नगर, भीलवाड़ा (राज.)



बस्सी के प्रसिद्ध बेवाण (पालकी)

सभी चित्र : रणछोड़ त्रिपाठी

विंध्य पर्वत मालाओं एवं सुरम्य सरोवरों की नैसर्गिक सुषमा से परिपूर्ण महोबा जनपद का एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर है । त्रेता और द्वापर युग में इसके नाम



प्रसिद्ध श्री मनिया देव मंदिर



चंद्रिका देवी की विशाल प्रतिमा

सभी चित्र : डॉ. विभा सिंह



शिव की तांडव नृत्यरत दस मुखी मूर्ति

केकयपुर व रतनपुर आदि कहे गये हैं । यह भी कहा जाता है कि चित्रकूट के वनवास काल के दौरान भगवान श्रीराम ने माता जानकी, भ्राता लक्ष्मणजी के साथ आकर इस नगरी को अपने चरण कमलों से पवित्र किया था । इसके चिह्नावशेष गोरखागिरी पर्वत स्थित सीता रसोई गुफा व रामकुंड में आज भी उपलब्ध हैं ।

चेद, मौर्य, शुंग एवं गुप्तकाल तथा प्रतिहारों के बाद महोबा का उत्थान-पतन चंदेल राजपूतों से संबद्ध रहा है । चंदेल वंश के संस्थापक नान्नुक देव अथवा चंद्रवर्मन ने प्रतिहार शासकों पर विजय प्राप्त कर महोबा को लगभग ८३१ ईस्वी में अपनी राजधानी बनाया और शक्तिपूजा की प्रतीक श्री बड़ी चंद्रिकाजी की महिषासुरमर्दिनी रूप में १८ भुजी प्रतिमा की स्थापना की । नान्नुक ने धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप अपनी राजधानी की सीमा-सुरक्षा हेतु चारों दिशाओं में सर्वरक्षिणी देवी चौमुंडा की मूर्तियों की भी स्थापना करायी । इनमें उत्तरी दिशा की चौमुंडा मूर्ति चौसठ भुजी होने के कारण सारे भारत में विशिष्ट है । परमाल रासो के अनुसार महोबा लगभग ४०० वर्षों तक चंदेलों द्वारा स्थापित जैजाक भुक्ति प्रदेश जिसे वर्तमान में बुंदेलखंड कहते हैं, की राजधानी था । समीप स्थित कालिंजर दुर्ग उनका सैनिक केंद्र तथा खजुराहो उनकी बैठक या धार्मिक केंद्र के रूप में विकसित हुए ।

राजधानी रहे होने के कारण महोबा चंदेलों के राजकाल में निर्मित अनेक दर्शनीय स्मारकों व सरोवरों के लिए प्रसिद्ध है । हालांकि,

बुंदेलखंड की वीरभूमि-महोबा

● डॉ. विभा सिंह

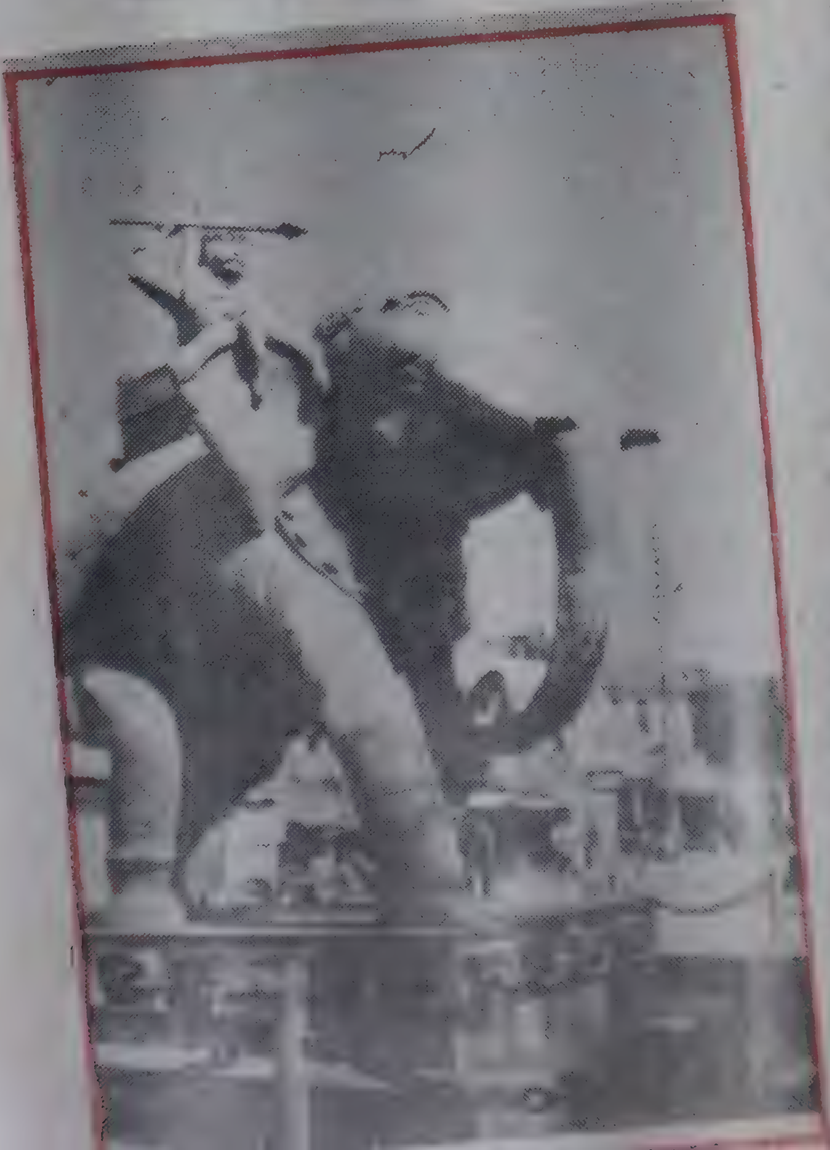
विंध्य पर्वत मालाओं एवं सुरम्य सरोवरों की नैसर्गिक सुषमा से परिपूर्ण महोबा हमीरपुर जनपद का एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर है । त्रेता और द्वापर युग में इसके नाम केकयपुर व रतनपुर आदि कहे गये हैं । यह भी कहा जाता है कि चित्रकूट के वनवास काल के दौरान भगवान श्रीराम ने माता जानकी, भ्राता लक्ष्मणजी के साथ आकर इस नगरी को अपने चरण कमलों से पवित्र किया था । इसके चिह्नावशेष गोरखागिरी पर्वत स्थित सीता रसोई गुफा व रामकुंड में आज भी उपलब्ध हैं ।

महोबा की यशकीर्ति का सर्वाधिक प्रचार अंतिम प्रमुख चंदेल शासक परमाल के राज्यकवि जगनिक द्वारा रचित लोक-काव्य 'आल्हा खंड' से हुआ। आल्हा खंड में वर्णित यहां के रणबांकुरे वीर आल्हा-उदल की ओजस्वी शौर्य-गाथाएं हिंदी भाषी क्षेत्रों में विशेषतया वर्षा ऋतु में गांव-गांव में गायीं जाती हैं। बुंदेलखंड में रामचरित मानस ग्रंथ के बाद 'आल्हा खंड' ही ग्रामीण क्षेत्र में सर्वाधिक पढ़ा जानेवाला ग्रंथ है। अपनी सहज, सुगम, ओजपूर्ण भाषा, कल्पना व मिथकयुक्त वर्णन के कारण 'आल्हा खंड' चंदबरदाई रचित पृथ्वीराज रासो से कहीं अधिक लोकप्रिय है।

जन्म आल्हा-उदल का

बुंदेलखंड में उस समय चंदेलवंश का राज्य था कालिंजर के चंदेल राजा परिमार्दिदेव की

महोबा के शेर आल्हा



विजय पताका फहरा रही थी। उन्होंने बावन युद्ध किये थे। उसकी सेवा में जस्सराज और बच्छराज दो भाई उच्च सैनिक पदों पर आसीन थे। इसका विवाह कालिंजर दुर्ग के पूर्व आधुनिक बांदा और सतना जिले की सीमा-भूमि पर (दिया उभरी ग्राम) घने जंगल में प्राप्त दो बलिष्ठ अहीर युवतियों से हुआ था। इन निम्न जातिय युवतियों से उत्पन्न होनेवाली संतानें वनाफर क्षत्रिय के नाम से पुकारी गयींऔर उन्हें अन्य ठाकुरों ने निम्न कोटि का ठहराया।

सेनापति जस्सराज के दो पुत्र आल्हा और उदल हुए और बच्छराज के दो पुत्र मलखान और सुलखे। जस्सराज की पत्नी का नाम देवलदे था। आल्हा-ऊदल के बचपन में ही एक युद्ध में इनके पिता जस्सराज का वध कर दिया गया था। युवा होते ही आल्हा और ऊदल अपनी वनाफर जाति के वीर यौद्धा के रूप में सामने आये। राजा परमार्दिदेव की रानी मल्हना ने देवी का अनुष्ठान कर आल्हा-ऊदल के वीर होने की कामना की थी। कहते हैं कि उन्हें देवी का वरदहस्त प्राप्त था।

राजा परिमार्दिदेव की पत्नी मल्हना माहिल की बहन थी। माहिल मंत्री और कूटनीति के पंडित थे और वे ही राज्य का कार्यभार संहालते थे। महाराज परमाल ने दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान को परास्त कर अपने पुत्र ब्रह्मजीत के साथ उसकी पुत्री बेला का विवाह कराया था। माहिल आल्हा-उदल से द्वेष करता था। यहां तक कि वह जस्सराज का भी दुश्मन था। उसे राजा परमाल से भी ईर्ष्या थी। माहिल ने राजा परिमार्दिदेव को अकेले में

ल्हा-ऊदल के विरुद्ध भड़काया और उन्हें
निष्कासन का दंड दिलवा दिया था ।
ल्हा-उदल राजा का यह आदेश सुनकर
यंत दुखी हुए और अपनी माता देवलदे
त कन्नौज चले गये थे । कन्नौज का राजा
चंद आल्हा-ऊदल के शौर्य से पूर्व परिचित
। अतएव उसने उन्हें अपने दरबार में
म्मान स्थान दिया । माहिल ने फिर षडयंत्र
और पृथ्वीराज चौहान को पत्र लिखकर
साया कि यह सुअवसर है जबकि वह
परमाल से अपना बदला ले सकता है
महोबा पर चढ़ाई करके परमाल चंदेल की
चंद्रावामी से भी अपने पुत्र का विवाह
ा सकता है । परमाल के पुत्र ब्रह्मजीत को
षड्यंत्र का पता चला तो उसने राजा को
या । माहिल का भरे राज-दरबार में
मान हुआ । इस पर माहिल ने पृथ्वीराज
न को फिर पत्र लिखा और सारी
ीतिपूर्ण भेदों की सूचना दे दी । पृथ्वीराज
न ने महोबा पर उस समय आक्रमण कर
जबकि कीर्तिसागर पर भुजरियों का
व मनाया जा रहा था ।

मुकाबला चौहान से

जा परमाल की सेना शक्तिशाली होते हुए
ल्हा-ऊदल के अभाव में कमजोर पड़
ा, तो मल्हना ने आल्हा-ऊदल की मां
दे को महोबा की स्थिति का एक
जनक पत्र भेजा । पत्र पढ़कर देवलदे का
लित हो उठा । उसने तुरंत अपने
त्रों — आल्हा-उदल को मातृभूमि की
के लिए महोबा जाने के लिए कहा ।
ा-ऊदल राजा जयचंद्र से आज्ञा लेकर



महोबा की शान ऊदल

महोबा पहुंचे और योगियों के वेश में कीर्तिसागर के पास एक उद्यान में डेरा डाला । पृथ्वीराज चौहान और परमाल के पुत्र समाजीत की सेना में भयंकर लड़ाई हुई, जिसमें समाजीत मारा गया । इसके बाद ब्रह्मजीत मैदान में आया । उसे भी पृथ्वीराज ने अपने दस हजार हाथियों के घेरे में ले लिया गया । चंदेल सेना में हलचल मच गयी । तभी अचानक रणभूमि में आल्हा-ऊदल तथा उनके साथी जयचंद्र के पुत्र लाखन रणभूमि में योगी वेश में प्रगट हुए । वे जमकर लड़े और ब्रह्मजीत को मुक्ति दिला दी । तत्पश्चात् पृथ्वीराज चौहान और आल्हा-ऊदल में घमासान युद्ध हुआ । आल्हा की रणकुशलता के सामने चौहान के शब्दभेदी बाण भी काम न आये । तभी चौहान ने अपने हाथी को आल्हा पर छोड़ दिया और शब्दभेदी बाणों की वर्षा कर दी, लेकिन वे सब आल्हा का कुछ न बिगाड़ सके, क्योंकि, आल्हा को तो देवी मां का वरदान प्राप्त था । इस घमासान युद्ध में

पृथ्वीराज चौहान आहत हुआ और उसे पराजय स्वीकारनी पड़ी ।

सन् १०६० में राजा कीर्तिवर्मन द्वारा ग्रेनाइट शिलाओं से निर्मित तटबंधों से युक्त यह कीर्तिसागर आल्हा-ऊदल के पराक्रम और पृथ्वीराज चौहान की पराजय का ऐतिहासिक साक्षी है । यहां प्रति वर्ष इस दिवस पर विजय-स्मृति के रूप में कजली मेला आयोजित किया जाता है ।

आल्हा-ऊदल अलौकिक, असाधारण वीर थे । उन्होंने अपने जीवनकाल में लगभग तीस लड़ाइयां लड़ीं । पथरीगढ़, सभलद्वीप, सम्भल, सिर से शंकरगढ़ उड़न विहार आदि के युद्ध—सभी में उनकी विजय हुई थी ।

महोबा में आज

प्रथम चंदेल राजा चंद्रवर्मन द्वारा प्रतिष्ठापित बड़ी चंद्रिका देवी की प्रतिमा अद्‌भुत है । यह सिद्धपीठ है । महोबा में पहाड़ी गुफा में चौबीस जैन तीर्थंकरों की उत्कीर्ण मूर्तियां भी हैं । शिलालेखों के अनुसार इन्हें सन् ११४९ में उत्कीर्ण किया गया था । बारहवीं शताब्दी में यह जैन अतिशय क्षेत्र था ।

चंदेल शासक मदनवर्मन द्वारा निर्मित मदनसागर सरोवर के बीच में त्रिभुजाकार शैली का, ग्रेनाइट शिव मंदिर भी उल्लेखनीय है । इसे खखरामठ भी कहते हैं । आज यह ध्वस्तावस्था में है । इस मदनसागर के उत्तरी तट बांध की पहाड़ी पर दुर्ग एवं महल के भग्नावशेष हैं । इसी की पृष्ठभूमि पर आल्हा-ऊदल के सम्मानित पूज्य देव मनिया का थान है । चंदेलों की कुलदेवी मनिया देवी का स्थान खजुराहो के आगे केन नदी के तट पर मनियागढ़ में है ।

मदनसागर सरोवर तट पर किला मिस्सार के दक्षिण में विख्यात मुसलिम संत पीर मुबारिक शाह की दरगाह है । वह तेरहवीं सदी में अरब देश से यहां आये थे । राजा कीरतसिंह ने उनके आध्यात्मिक ज्ञान से प्रभावित होकर उन्हें पांच सौ एकड़ से भी अधिक कृषि भूमि माफी बतौर दी थी ।

मदन सरोवर के पश्चिम में गौरवागिरि के उत्तर में एक समूची ग्रेनाइट शिला पर ग्यारहवीं शताब्दी में निर्मित भगवान शिव की महाकाल मुद्रा में तांडव नृत्यरत दस भुजी प्रतिमा विशेष उल्लेखनीय है ।

यद्यपि, बुंदेलखंड में बौद्ध धर्म के साक्ष्य बहुत कम हैं, फिर भी सन् १९१२ में आल्हा अखाड़ा नामक टीले की खुदाई में बलुआ पत्थर पर उत्कीर्ण सिंहनाद लोकेश्वर पद्‌मपाणि व तारादेवी की अपूर्व सुंदर प्रतिमाएं मिली हैं, जो अब राज्य पुरातात्विक संग्रहालय, लखनऊ व झांसी में संरक्षित हैं ।

महोबा नगर के दक्षिण-पश्चिमी छोर पर करीब तीन किलोमीटर दूर रहलिया गांव में पांचवें चंदेल शासक राहिलदेव वर्मन ने ८९० ईस्वी में सूर्य मंदिर का निर्माण कराया था । ग्रेनाइट शिलाओं से निर्मित यह मंदिर आज ध्वस्त अवस्था में है ।

महोबा नगर आज अपने सुस्वाद देशी व दिसावरी प्रजाति के पानों के लिए भी देश-विदेश में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है ।

—मदान पुस्तक भंडार,
राष्ट्रीय कन्या इंटर कॉलेज के सामने,
झांसी-२८४००१

शाश्वत-प्रणय विकृत संस्कारों पर विजय का आख्यान बनता है। शक्तिशाली प्रश्रय पाकर व्यक्ति का अहंकारी बनना स्वाभाविक है और अहंकार से अनाचार का विकास स्वतः संभव है। स्नेह का बंधन समस्त संकल्प-विकल्पों से परे दो संस्कृतियों, परंपराओं को सहज बंधन में बांध देता है। ऐसे ही अमर-प्रणय का शाश्वत प्रत्याख्यान है— उषा-अनिरुद्ध का प्रणय और विवाह। समस्त बंधनों पर विजय पाकर युग-युग तक प्रणय रंगों के सूक्ष्म भेद और छायातप की कथाएं दुहराता सुर और असुर संवादों का आख्यान, जाति, धर्म और समस्त बंधनों से परे।

स्वप्न-प्रणय

● डॉ. सुधा पांडेय

[वै]शाख-शुक्ल द्वादशी की तिथि थी। सदैव की भांति उषा ने विष्णु की पूजा संपन्न [की]। रात्रि काफी गहरी उतर चुकी थी। सारे [का]र्यों से निवृत्त हो, उषा थककर अपने शयन [क]क्ष में जाते ही प्रगाढ़ निद्रा में निमग्न हो [ग]यी।

'अपार तेजस्वी देवरूप धारी, प्रिय आओ। [अन]न्त कामनाओं की माला गूंथे मैं कब से [तुम्ह]ारी प्रतीक्षा में बैठी हूं', स्वप्न में उस तेजस्वी [पुरुष] को अपने समीप पाकर उषा आनंद विह्वल [हो] उठी।

'मैं भी तुम्हारे इस अपार रूप से विचलित [हो] उठा हूं। ओ प्रिये! मेरा प्रणय स्वीकार [करो]' प्रणय-लीला के आनंद सागर में डूबते-उतराते वे दोनों कितनी ही देर सुध-बुध खोये रहे। समय का भान ही नहीं रहा उन्हें।

'अरे, आप कहां चले गये, आपके बिना मैं कैसे जीवित रह सकूंगी, प्रियतम! इतना स्नेह देकर तुम कहां छिप गये हो? क्यों छलनामय खेल खेल रहे हो मेरे साथ। शैय्या पर बिखरे अंगराग के क्षुद्र कण मेरा उपहास कर रहे हैं। अस्त-व्यस्त वस्त्रों की ललित भाषा से सखियां गोपन संकेत कर रही हैं। आओ न प्रिय! तुम कहां जा छिपे हो।'

स्वप्न टूट गया था। उषा के प्रलाप को सुन दासियां और सखियां वहां दौड़ी आयीं और कारण पूछा।

''अभी-अभी स्वप्न में कोई राजपुरुष आया

था । देवरूपधारी उस सुदर्शन पुरुष ने मुझे अपनी प्रेयसी बनाया है और मेरे साथ अभिसार किया है । अब मैं उसके बिना जीवित नहीं रह सकूंगी । वह स्वप्न नहीं था । सब कुछ सच था । उसे पाकर ही रहूंगी ।'' उषा का प्रलाप बंद ही नहीं हो रहा था ।

''कैसा पागलपन ले बैठी हो सखी । स्वप्न कभी सच होते हैं'', सखियों ने उसे समझाने का बहुत प्रयत्न किया, पर वह तो जिद कर बैठी थी कि, 'यदि मैं उसे न पा सकी तो मैं आत्मघात कर लूंगी ! ... मेरा जीना उसके बिना व्यर्थ है ।'

''हम उसे कैसे ढूंढ़ें ? कहीं असुरराज बाणासुर तक यह बात जा पहुंची, तो हम में से कोई जीवित नहीं बचेगा । पुत्री का कष्ट उनसे नहीं देखा जाएगा ... ।''

प्रिय के विरह में उषा की स्थिति विकल थी । शृंगार बिखर गया था । वेशभूषा मलिन हो गयी थी । एकांत में पड़ी आहें भरती, वह सखियों को भी पीड़ा दे रही थी । चित्रलेखा बोली ''तुम ऐसे कब तक पीड़ा सहती रहोगी ? जिस पुरुष के विषय में तुम इतना प्रलाप कर रही हो, उसका तुमने परिचय भी तो नहीं पूछा ? कैसे ढूंढ़ें उसे ?''

''अब उससे पुनः मेरा मिलन हो, ऐसा कुछ उपाय करो'', उषा ने चित्रलेखा से याचना की ।

चित्रलेखा के बार-बार पूछने पर उषा ने स्वप्न का पूरा वृत्तांत कह सुनाया ।

''हे प्रिये ! तुमने जिस पुरुष को स्वप्न में देखा, अभिसार किया, उसे तो जानना भी दुष्कर है । ढूंढ़कर लाना या उसके बारे में कुछ पता कर पाना तो और भी कठिन होगा । तथापि, तुम मेरी प्रिय सखी हो । तुम्हारा उपकार मैं अवश्य करूंगी, अभी तुम इस समाचार को गुप्त रखो और सात-आठ दिन तक मेरी प्रतीक्षा करो ।''

उषा को सांत्वना देकर चित्रलेखा तत्काल अपने घर पर लौट गयी । मंत्र विद्या के सहारे वह उस पुरुष को ढूंढ़ने लगी, जो उसकी प्रिय सखी के साथ छल करके लौट गया था । चित्रलेखा ने एक और युक्ति सोची । वह एक कुशल चित्रकार तो थी ही, उसने कई चित्र बनाये— नाग, देवता, यक्ष, गंधर्व, राजा-महाराजाओं आदि के । इन सभी चित्रों को लेकर चित्रलेखा दौड़ी गयी उषा के पास में ।

''प्रिय सखी ! मैंने इतने चित्र बनाये हैं, जरा देखो तो, इनमें से कोई तुम्हारा प्रिय तो नहीं है ?''

गंधर्व, नाग, देवता और दैत्यों के चित्रों को देख डाला उषा ने । ... केवल मनुष्यों के चित्र बचे थे । उन चित्रों को रुक-रुककर ध्यानपूर्वक देख रही थी उषा । वृष्णिवंशी यादवों के चित्रों के सामने आते ही निर्निमेष देखती रह गयी उषा ।

बलराम और श्रीकृष्ण के चित्रों को देखते ही वह सहज लज्जा से झुक गयी । श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के चित्र को वह आंख भर देख भी न सकी । सलज्जभाव से दृष्टि हटा ली थी वहां से । इसी चित्र के बाद चित्र था प्रद्युम्नतनय अनिरुद्ध का । उस चित्र को देखते ही उषा स्वयं को रोक न पायी । सारी लज्जा भावनाओं को छोड़ एकदम चिल्ला उठी, ''यही है, यही है मेरा प्रिय ! तुम मुझे इससे शीघ्र मिलवाने का उपाय करो ।''

''धैर्य रखो सखी ! तुम्हारी कामना पूर्ण

होगी। तुमने सच्चे मन से उसका वरण किया है। तुम्हारा-उसका मिलन अवश्य होगा'' चित्रलेखा ने धीरज बंधाते हुए कहा।

चांदनी के असंख्य स्रोत उमड़ पड़े उषा के मन में। मलिन कांतिवाले मुखमंडल पर आभा की नयी लहर दौड़ गयी।

''अरी पगली!'' देवों ने प्रसन्न होकर ही श्रीकृष्ण पौत्र अनिरुद्ध को तेरे लिए पति रूप में प्रस्तुत किया है। तेरे भाग्य से देवकन्याएं भी स्पृद्धा करेंगी। यदि तू अनिरुद्ध पत्नी बन गयी तो सर्वसौभाग्यशालिनी बन जाएगी, फिर तो मुझे भी भुला देगी। स्वप्न में केवल एक रात्रि जिसका साहचर्य पाकर तू इतनी व्याकुल हो उठी है, उसे जीवन में पाकर तो तू पंख लगाकर उड़ेगी। पर, मैं उसे लाने के लिए वहां तक पहुंचूं कैसे?'' चित्रलेखा ने चिंता व्यक्त की।

''जैसे भी हो! मुझे अपने प्रिय से मिलना ही है'', उषा चीख पड़ी थी।

''अरी मूर्ख! क्या मुझे ज्ञात नहीं है कि श्रीकृष्ण द्वारा सुरक्षित द्वारकापुरी में प्रवेश कर पाना कितना कठिन है। देवगण भी वहां सरलता से प्रवेश नहीं कर सकते। फिर, हमारी क्या शक्ति है?''

''क्या तू यह भी भूल गयी कि तू योगिनी है। अपने योगबल से तू भी असाध्य को साध्य बना सकती है। अपनी सखी के लिए इतना तो कर'', उषा ने मार्ग सुझाया।

''ठीक है! तू इस रहस्य को गुप्त रखना, किसी भी तरह से मैं तेरे प्रिय को अवश्य लेकर आऊंगी। तब तक तू अपने प्रिय के वियोग के लिए कुछ क्षण और सह और प्रतीक्षा कर।''

चित्रलेखा योगिनी बन द्वारकापुरी में जा पहुंची और अपने योगबल से अनिरुद्ध को उठा ले आयी। और पलक झपकते ही अपनी उषा के पास जा पहुंची।

अनिरुद्ध को सामने पाकर उषा आनंद विभोर हो उठी। अनिरुद्ध भी प्रियतमा को सामने पाकर विस्मित था। स्वप्न की बात तो वह भूल चुका था, पर उस आश्चर्यभरे मिलन नें फिर से सब कुछ स्मरण दिला दिया था।

चित्रलेखा के कौशल से अनिरुद्ध अंतःपुर में निश्चिंतभाव से उषा के साथ प्रणय-लीला में खो गया।



उषा को स्वर्ग के सभी सुख मिल गये थे मानो। प्रिय का सान्निध्य पाकर वह गर्विणी नायिका की भांति इठलाने लगी थी। रूप-सौंदर्य से गर्विता उषा को पाने के लिए अनेक असुर-युवक लालायित थे। अब तो प्रियतम अनिरुद्ध का प्रतिक्षण साथ था—कामनाएं सचमुच पंख लगाकर उड़ने लगी थीं।

लुक-छिपकर चलनेवाली प्रणय-लीला की बातें कब तक छुपी रह सकती थीं? किसी ईर्ष्यालु असुर युवक ने अंतःपुर के रक्षकों द्वारा

बाणासुर तक सूचना पहुंचा ही दी कि 'राजकुमारी आजकल लुक-छिपकर प्रणय-केलि में मग्न है । वह भी किसी और के साथ नहीं, बल्कि श्रीकृष्ण पौत्र अनिरुद्ध रह रहा है उसके साथ ।

"मेरे ही अंतःपुर में आकर, मेरी पुत्री को वशीभूत करके रखे— ऐसा साहस कैसे हुआ उसका ?" कहते हुए बाणासुर के नेत्रों से चिंगारियां निकलने लगीं । फिर उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि तत्काल अनिरुद्ध को मार दिया जाए ।

बाणासुर की सेना ने अनिरुद्ध को जा घेरा तो सर्वदमन अनिरुद्ध ने उसकी पूरी सेना को एक ही लौहमय दंड से क्षणभर में काट डाला ।

अपने सैनिकों की मृत्यु का समाचार सुन बाणासुर बौखला उठा और युद्ध के लिए चल पड़ा । भयावह आशंका से सभी कांप उठे । बाणासुर काफी देर तक युद्ध करता रहा किंतु, उसे पराजित न कर सका । परास्त होकर निराश हो बैठा ।

"महाराज ! आप्र ही ऐसे निराश हो बैठेंगे, तो हमारा क्या होगा ? जैसे भी हो आप कल पुनः युद्ध प्रारंभ करें," मंत्रियों ने उकसाया बाणासुर को ।

एक बार फिर उसने सारी शक्ति बटोरकर पुनः अनिरुद्ध से युद्ध प्रारंभ कर दिया । इस बार मायामय युद्ध किया और अंततः अनिरुद्ध को नागपाश में बांध लिया ।

अंतःपुर में हाहाकार मच गया । बाणासुर ने अनिरुद्ध को बांध लिया है— यह समाचार द्वारका तक भी जा पहुंचा । पहले तो पूरी वर्षा ऋतु भर यदुवंशियों को एक ही चिंता रही कि संभवतः पारिजात-हरण की घटना से चिढ़कर.



बदला लेने की भावना से, योगविद्या में निपुण योगिनी चित्रलेखा अनिरुद्ध का अपहरण कर ले गयी है ।

अब दैत्यराज बाणासुर ने उसे नागपाश में बांध लिया, इस समाचार को सुनते ही द्वारका में खलबली मच गयी । रुक्मणी सहित सभी स्त्रियां विलाप करने लगीं और शीघ्र ही अनिरुद्ध को वापस लाने के लिए श्रीकृष्ण से याचना करने लगीं । उन सभी को श्रीकृष्ण ने अभय-दान दिया तथा शीघ्र ही अनिरुद्ध को लौटाने की योजना बनायी ।

बाणासुर ने कहा, "अपने किये का फल मिल चुका है इस अवांछनीय व्यक्ति को । अब यहीं इसके जीवन का अंत होगा और इसके वृत्तांत से सीख लेकर आगे भी कोई अन्य व्यक्ति यहां प्रवेश करने का साहस नहीं कर सकेगा ।"



प्रसन्नता में भरे बाणासुर ने मनोविनोद उत्सव आयोजन का आदेश दिया था । सभी रागरंग में डूबकर सुधबुध खो बैठे थे ।

उधर श्रीकृष्ण ने बलराम और प्रद्युम्न सहित तीव्रगामी गरुड़ पर आरूढ़ होकर द्वारका से प्रस्थान किया । यथाशीघ्र वे बाणासुर की राजधानी आ पहुंचे । भगवान शिव के प्रथम गणों से युद्ध करते-करते श्रीकृष्ण सहित वे सब भीतरी कक्षों तक पहुंच गये थे । शिव के वरदान स्वरूप बाणासुर की रक्षा के लिए तरह-तरह की मायावी स्त्रियां युद्धस्थल में आ पहुंचती थीं । उन सभी को काटते हुए श्रीकृष्ण आगे बढ़ते जा रहे थे । लीलामय भी लीला के माध्यम से भयंकर युद्ध करने लगे ।

बाणासुर के साथ समूची दैत्य सेना सहित भगवान शिव और कार्तिकेय भी युद्ध कर रहे थे । श्रीकृष्ण और भगवान शिव के बीच घोर संग्राम हुआ । शस्त्र-अस्त्रों के किरण जाल के ताप से सारे लोक विक्षुब्ध हो उठे थे । प्रलय—जैसा दृश्य उपस्थित हो गया था ।

घमासान संघर्ष के बीच मुसकराते लीलामय श्रीकृष्ण शांत सहज थे । मानो कुछ हुआ ही न हो । ऐसे ही क्रम में श्रीकृष्ण ने अचूक जृम्भकास्त्र छोड़ा । उस अस्त्र के छोड़ते ही भगवान शिव प्रमादवश जमुहाई लेने लगे । वे निद्रालीन होकर अलसा गये । वे वहीं रथ के एक ओर सिर रखकर निद्रालीन हो गये, ऐसा देखकर दैत्य सेना में खलबली मच गयी । श्रीकृष्ण के दृष्टिपात मात्र और प्रद्युम्न के अमोघ अस्त्रों से पीड़ित स्वामी कार्तिकेय भी पीठ दिखा गये थे, प्रथमगण भी इधर-उधर जान बचाकर भागे ।

उसी समय उन्मत्त बाणासुर रथ पर सवार होकर बलराम के सामने आ गया । वीरतापूर्वक बलभद्र ने बाण वर्षा कर बाणासुर की बची-खुची सेना को भी छिन्न-भिन्न कर दिया । अवसर पाते ही श्रीकृष्ण भी उन्हें बाण से बींधते जा रहे थे । आगे बढ़ते-बढ़ते एक क्षण बाणासुर और श्रीकृष्ण आमने-सामने हो गये ।

भगवान शिव के प्रथम गणों से युद्ध करते-करते श्रीकृष्ण अंदर प्रवेश कर गए । शिव के वरदान स्वरूप बाणासुर की रक्षा के लिए तरह-तरह की मायावी स्त्रियां आ पहुंची । उन सभी को काटते हुए श्रीकृष्ण आगे बढ़ते रहे । लीलामय भी लीला के माध्यम से भयंकर युद्ध करने लगे....

श्रीकृष्ण और बाणासुर के मध्य घनघोर युद्ध हुआ । बाणासुर भी कम न था । श्रीकृष्ण के अस्त्रों को नष्ट करने के लिए एक से एक अचूक अस्त्रों से वार करता जा रहा था । श्रीकृष्ण को कोई उपाय न सूझा, तो उन्होंने उसका प्राणांत करना ही उचित समझा । उन्होंने सुदर्शन चक्र उठा लिया । आकाश में जैसे सहस्रों सूर्य चमक उठे हों, सुदर्शन चक्र की द्युति से सभी की आंखें चकाचौंध हो गयी थीं । चक्र छोड़ने को उद्यत श्रीकृष्ण के सामने दैत्यों की मंत्रविद्ध कुलदेवी नग्न रूप धारण करके उपस्थित हो गयी । श्रीकृष्ण उसका मायावी रूप पहचान गये । अतः उसकी ओर से नेत्र बंद करके बाणासुर की ओर लक्षित करते हुए, उसके भुजा समूह को काट डालने के लिए सुदर्शन चक्र छोड़ ही दिया । असुरों के अस्त्र समूह को काटते हुए बाणासुर की सारी भुजाएं कट गयीं । भीषण-त्राहि-त्राहि मच गयी असुर सेना में ।

शिव को निश्चय हो गया कि श्रीकृष्ण बाणासुर का वध करके ही विराम लेंगे अब । तभी शिव ने श्रीकृष्ण को रोकते हुए कहा, "हे चक्रपाणि ! मैंने बाणासुर को अभयदान दिया है । मेरे वरदान को आप नष्ट न होने दें । मेरे वरदान के कारण ही यह अत्यंत अहंकारी हो गया था । अतः मैं ही इसके लिए क्षमा मांगता हूं, अनुचित वृत्तिवाले व्यक्ति को प्रश्रय देने पर अनाचार बढ़ना स्वाभाविक है किंतु, मेरे वरदान के महत्त्व को कम न होने दें, इसे क्षमा ही कर दें ।"

"यदि आपने इसे वर दिया है, तो यह जीवित रहेगा । आपके वचनों की रक्षा करने के लिए मैं इस चक्र को अब रोक देता हूं । आपका वचन मेरा ही वचन है । अब मैं इसे मारूंगा नहीं किंतु, यह भक्तिभाव से ही जीवन व्यतीत करें, यह अहंकार त्यागकर सहज वृत्तिवान बनकर रहे ।"

ऐसा ही होगा प्रभु ! बाणासुर भी श्रीकृष्ण के चरणों में झुक गया ।

"मैं पहले ही प्रह्लाद के वंश को अभयदान दे चुका हूं, बाणासुर ! तुम भी उसी कुल के हो, अतः तुम्हें मारूंगा नहीं किंतु, भविष्य में तुम्हारी

चार भुजाएं ही रहेंगी ताकि, तुम अधिक अत्याचारी न बन सको । तुम्हारा गर्व नष्ट करना आवश्यक था । चलो, तुम्हें क्षमा किया ..." श्रीकृष्ण मुसकराते खड़े थे !

"मेरे पौत्र अनिरुद्ध को तुमने कहां बांध कर रखा है । शीघ्र ही मुझे उससे मिलवाओ ।" बलराम और प्रद्युम्न भी अब तक समीप आ चुके थे ।

"प्रभु और अधिक न लज्जित करें, मेरी पुत्री उषा ने उसका मन ही मन वरण कर लिया है । अपने उद्धत स्वभाव के कारण मैं इस बात को सह न सका था और अपने ही हाथों अपने जामातृ को बंदी बना लिया, छिक्कार है मुझे ।" बाणासुर पश्चात्ताप से भरा क्षमा-याचना कर रहा था ।

"उठो अपनी पुत्री उषा और अनिरुद्ध को मेरे साथ विदा करने की तैयारियां करो ।"

अवसाद का वातावरण उल्लास में बदल चुका था । आदरपूर्वक कृष्ण को अनिरुद्ध के पास ले जाया गया । अनिरुद्ध के नागपाश अपने आप ही कट गये थे । हर्षपूर्वक सभी गले मिले !

बाणासुर ने उषा-अनिरुद्ध का विवाहोत्सव धूमधाम से संपन्न किया । यक्ष, गंधर्व, देव सभी उस विवाह कौतुक को देखने आये । स्वप्न-प्रणय साकार हुआ । उषा अनिरुद्ध सहित श्रीकृष्ण द्वारिकापुरी लौटे । धरती और स्वर्ग में सर्वत्र उषा-अनिरुद्ध के मिलन का आनंद व्याप्त था । अमर-प्रणय विजित हुआ और वे प्रेमी-युगल चिरकाल तक सुखपूर्वक रहे ।

—प्राचार्य,
एम.के.पी. पो.ग्रे. कॉलेज,
देहरादून

इनके भी बयां जुदा-जुदा

खत लिखेंगे गरचे मतलब कुछ न हो
हम तो आशिक हैं तुम्हारे नाम के

—गालिब

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जमां हमारा

—इकबाल

खुदा जाने यह दुनिया जलवागाहे नाज है किसकी
हजारों उठ गये लेकिन वही रौनक है मजलिस की

—असीर

मुद्दत से तेरी याद भी आयी न हमें
और हम भूल गये हों तुझे ऐसा भी नहीं

—फिराक

भरे मकां का भी अपना नशा है क्या जाने
शराबखाने में रातें गुजारनेवाला

—वसीम बरेलवी

खोलेगा जो किताब वही जान जाएगा
तुमने वर्क को मोड़के अच्छा नहीं किया

—इशरत किरतपुरी

हाथों से यार पेट की पट्टी न छू अभी
शायद चांद आज नहीं कल दिखायी दे

—जमील हापुड़ी

ऐसा यहां था कौन जिसे अपना कह सकूं
सबको सलाम दूर से करना पड़ा मुझे

—नूरजहां सरवत

जब से हमारे आप निगहबान हो गये
जीने के सभी रास्ते आसान हो गये

—प्रफुल्ल चंद्र पाठक

जब पुलिसवाले ही चोरों की मदद फरमाएंगे
चोर जमुना से किसी दिन पुल उठा ले जाएंगे

—सागर खयामी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

आइए चलें जंगल की ओर

कत्थग्रीवी अपूंछी

(लिटिल ग्रीब)

बिना पूंछ का पंछी, जो तालाबों, झीलों को सारे भारत में आबाद करता है, आमतौर पर पनडुब्बी, पनतिरी या डुबडुबी नाम से जाना जाता है । यह छोटा-मोटा सा पंछी २३ सेंटीमीटर लंबा होता है । इसका ऊपर का रंग कत्थई तथा नीचे का सफेद होता है किंतु पूरी ग्रीवा कत्थई होती है, जो इसकी पहचान बनती है । भारत में पक्षियों के केवल दो परिवार हैं, जिनकी पूंछ नहीं के बराबर होती है तथा इन दोनों परिवारों के सदस्य डुबकी लगाने में तथा पानी के भीतर तैरने में बहुत कुशल होते हैं । शायद, इसीलिए कत्थग्रीवी अपूंछी उड़ना पसंद नहीं करती ।



जामुनी शकरखोरा

(पर्पल सनबर्ड)

चमकदार जामुनी रंग की दस सेंटीमीटर छोटी-सी चिड़िया । बसंत ऋतु में मानो एक फूल से दूसरे फूल पर जाकर अपने घुंघरू के समान मधुर खनकते स्वरों से सबको वसंतोत्सव का निमंत्रण देती है । कुछ लंबे किरीटवाले पुष्पों जैसे 'लौरैंथस' का सफल परागण करनेवाले पक्षियों में यह प्रमुख है । पराग तथा मकरंद के अतिरिक्त डांस, धुन, गुबरैले, छोटी मक्खियां इत्यादि कीट भी इसके प्रिय आहार हैं । चिंधियों, कपास, मकड़जाल आदि से इनका बाहर से कचड़े-सा दिखनेवाला घोंसला ये अंदर से बहुत आरामदेह बनाते हैं । यह जाति सारे भारत को अपना अनोखा सौंदर्य प्रदान करती है । मादा एक वर्ष में अंडों की दो खेप देती है । नीड़ निर्माण तथा अंडे सेने का काम केवल मादा करती है ; नीड़ की सफाई तथा शावकों का पोषण दोनों नर मादा मिलकर करते हैं । मादा का रंग सादा कत्थई भूरा होता है और प्रजनन ऋतु के अतिरिक्त नर का भी यही रंग होता है ।





रसौत
(दारु हल्दी)

रसौत की झाड़ी कंटीली होती है । शाखाएं पीताभ भूरी-सी होती हैं । कई कांटे और कई पत्ते एक ही गांठ से निकलते हैं । पत्तों का रंग ऊपर हरा और नीचे पीताभ हरा होता है । इसके फूल छोटे-छोटे होते हैं, जो लंबे गुच्छों में लगते हैं ।

इसके फल रसदार, अंडाकार प्रगाढ़ नीले या बैंगनी रंग के गुच्छों में होते हैं । हिमालय तथा नीलगिरि पर्वत पर दो-तीन हजार मीटर की ऊंचाई पर ये पौधे होते हैं । औषधि के लिए पौधे की नीचेवाली शाखाओं और जड़ों के टुकड़े तथा जड़ों की छाल को पानी में तब तक उबाला जाता है, जब तक कि वह रस अर्ध ठोस न हो जाएं । यह रसौत फोड़ों तथा जख्मों का उपचार करता है । रसौत ज्वरनाशक, मृदुरोचक तथा पौष्टिक है । यह पाचन-क्रिया तथा हैजे और तीव्र अतिसार में भी लाभ पहुंचाता है । श्वास एवं हृदय गति को मंद करता है ।



जरुल
(द क्वींस फ्लॉवर)

ऐसे वृक्ष कम होते हैं, जो आपको बना बनाया गुलदस्ता भेंटकर सकें, किंतु जरूल उन ऊंचे (१०-२० मीटर) सशक्त वृक्षों में से एक है, जो गाढ़ेलाल तथा बैंजनी रंग के पुष्प गुच्छ देता है । इसकी पत्तियां लंबी (लगभग १५ सेंटीमीटर) तथा ६ सेंटीमीटर चौड़ी नौकाकार होती हैं । फल २-३ सेंटीमीटर के गोलाकार होते हैं । इसकी लकड़ी पानी में सड़ती नहीं, इसलिए सागौन के बाद सर्वाधिक कीमती मानी जाती है । यह वृक्ष बेलगाम से दक्षिण के भारत को अपने पुष्प गुच्छ भेंट करता है—मई से सितम्बर तक । पतझड़ी वृक्ष के पत्ते झरने के पहले ललामी लिए पीले होकर उसे आर्कषक बना देते हैं । पत्ते फरवरी-मार्च में धीरे धीरे झरते हैं और मई में पुष्पों को लेकर आते हैं । बैंजनी पुष्प गुच्छ लगभग ३० सेंटीमीटर लंबा तथा २ से १० सेंटीमीटर चौड़ा होता है ।

— विभ्रम्

आज का युग अंतरिक्ष युग है, जिसका सूत्रपात १२ अप्रैल, १९६१ को उसी दिन हुआ, जिस दिन रूसी यूरी गगारिन ने अंतरिक्ष में कदम रखे। तब से आज तक के चौंतीस साल के लंबे दौर में अंतरिक्ष में अनेक रेकॉर्डों का सृजन हुआ है। आनेवाला कल और भी रेकॉर्डों का सृजन करेगा क्योंकि, अंतरिक्ष में मानव की अनेक आशाएं छिपी हैं

अंतरिक्ष प्रवास के आश्चर्यजनक रेकॉर्ड

● कालीशंकर

आज का युग अंतरिक्ष युग है, जिसका सूत्रपात १२ अप्रैल, १९६१ को उसी दिन हुआ जिस दिन रूसी यूरी गगारिन ने अंतरिक्ष में कदम रखे और १ मिनट ४८ सेकिंड तक वहां रहा। तब से आज तक के चौंतीस साल के लंबे दौर में अनेक रेकॉर्डों का सृजन हुआ है। सन् १९९५ के अंत तक ८३ रूसी, २२४ अमरीकी, ८ जरमन, ५ फ्रांसीसी, ४ कनाडा के, ३ जापान के, २ बलोरिया के तथा भारत के साथ १७ अन्य देशों के एक-एक अंतरिक्ष यात्री समय-समय पर अंतरिक्ष में जा चुके हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर ३४७ अंतरिक्ष यात्रियों ने अंतरिक्ष में जाकर वहां कुल १६३६४ दिन गुजारे हैं।

रूस के केवल ८३ यात्री अंतरिक्ष में गये जिनका कुल अंतरिक्ष प्रवास ११६४१ दिन था, जबकि २२४ अमरीकी अंतरिक्ष यात्रियों का कुल प्रवास ४१९० दिन रहा। इसका मुख्य कारण यह रहा है कि प्रारंभ से ही रूस ने अंतरिक्ष में कई अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित कर रखे थे जिनमें वे काफी समय तक रह सके। आज भी रूस का अंतरिक्ष स्टेशन मीर पृथ्वी का चक्कर लगा रहा है, जिसे २० फरवरी, १९८६ को अंतरिक्ष में स्थापित किया गया था। इसमें

रूसी और गैर रूसी ७३ अंतरिक्ष यात्री जा चुके हैं ।

महिलाएं अंतरिक्ष में

अंतरिक्ष में अब तक ३० महिलाएं जा चुकी हैं जो कुल मिलाकर ६८६ दिन का प्रवास वहां कर चुकी हैं । इन में ३ रूस की और, २४ अमरीका की तथा एक-एक जापान, कनाडा और ब्रिटेन की हैं । रूस की वैलेंतीना तेरेस्कोवा सबसे पहली महिला थीं, अमरीका की सैली राइड और ब्रिटेन की हेलेन शर्मन । अमरीकी महिलाओं का अंतरिक्ष प्रवास ४६४ दिन का रहा, जबकि रूसी महिलाओं का १९० दिन का ।

व्यक्तिगत रेकॉर्ड

अंतरिक्ष में जिस यात्री ने सबसे अधिक समय बिताया, वह रूस का वैलेरी पोलियाकोव था, उसने दो बार की यात्रा में कुल ६७८ दिन गुजारे थे । एक समय में लगातार अंतरिक्ष में रहने का रेकॉर्ड ३२६ दिन का है, जिसे रूस के ही यूरी रोमैनको ने बनाया । अमरीकियों में सबसे अधिक समय ११५ दिन गुजारनेवाला नार्मन थैगर्ड है ।

महिलाओं में सबसे अधिक समय अंतरिक्ष में बितानेवाली अमरीका की शैनन ल्युसिड है । उसके बाद रूस की कोंडाकोवा का नंबर आता है जो १६९ दिन अंतरिक्ष में रही ।

कई यात्री कई-कई बार अंतरिक्ष में गये हैं । तीन यात्री छह-छह बार अंतरिक्ष में गये हैं । ये हैं —रूस के स्ट्रेकलोव, अमरीका के जान यंग और डॉ. मूसाग्रेव ।

अंतरिक्ष में जानेवाले थर्मन टिटोव सबसे कम २५ वर्ष की उम्र के हैं तो अमरीका के डा.



प्रथम अंतरिक्ष यात्री : एलन बी. शेपार्ड

फ्रैंकलिन सबसे अधिक उम्र ६१ वर्ष के ।

अमरीका ने अब तक पांच स्पेस शटलों का प्रयोग किया है —चैलेंजर, डिस्कवरी, अटलांटीस, कोलंबिया और एंड्यौर । इनमें से चैलेंजर दुर्घटनाग्रस्त हो चुका है । डॉ. फ्रैंकलिन इन सभी पांचों अंतरिक्ष यानों से यात्रा कर चुके हैं ।

मीर और स्पेस शटल

अमरीका कई देशों के साथ मिलकर अंतरिक्ष में एक अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन 'अल्फा' लगाने जा रहा है । अमरीका के स्पेस शटल चार बार अंतरिक्ष में रूसी अंतरिक्ष स्टेशन मीर से जुड़ चुके हैं । इनके परस्पर जुड़ने



सबसे बड़ी उम्र के अंतरिक्ष यात्री : डॉ. फैंकलिन स्टोरी मुसग्रेव

का उद्देश्य अल्फा की स्थापना के लिए अनुभव प्राप्त करना है ।

तुलनात्मक रेकॉर्ड

कुछ अंतरिक्ष रेकॉर्डों की तुलना मानव-घंटे (मैन आवर्स) के आधार पर की जा सकती है । इसके अनुसार रूस ने अंतरिक्ष में २६९ हजार मानव-घंटे खर्च किये हैं, तो अमरीका ने दस हजार मानव-घंटे ।

अमरीका के पास इस समय चार स्पेस शटल हैं । प्रारंभ में स्पेस शटल का एक [illegible] मिशन सात-आठ दिन का हुआ करता था । अब यह १६ दिन, २१ घंटे, ४७ मिनट, ४५ सेकिंड तक का कर चुका है । कोलंबिया स्पेस शटल अंतरिक्ष प्रवास के दौरान सत्तर लाख मील की दूरी तय कर चुका है ।

अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य 'अंतरिक्ष विचरण' करना होता है । इस दौरान उन्हें स्पेस-सूट पहनकर मुक्त अंतरिक्ष में बाहर निकलकर तरह-तरह के कार्य करने होते हैं —जैसे अंतरिक्ष यानों, अंतरिक्ष स्टेशनों की मरम्मत तथा अंतरिक्ष स्टेशनों का निर्माण आदि । अंतरिक्ष में अब तक का सबसे बड़ा मरम्मत का कार्य हबल स्पेस टेलीस्कोप की मरम्मत का था ।

अंतरिक्ष अन्वेषण में अनेक दुर्घटनाएं भी हुई हैं ।

पहली दुर्घटना में चार रूसी यात्रियों की मृत्यु हो गयी । स्पेस शटल चैलेंजर की दुर्घटना तो सबसे बड़ी दुर्घटना थी । इसमें सवार सारे सभी सातों यात्री मारे गये । अपोलो अंतरिक्ष यान की जांच-पड़ताल के समय भी तीन अमरीकी यात्रियों की मृत्यु हो गयी ।

१४ मई, १९७३ को अंतरिक्ष में स्थापित अमरीकी यान स्काईलैब पहली अंतरिक्ष प्रयोगशाला थी । सैल्युट-१ विश्व का पहला अंतरिक्ष स्टेशन था, जो १९ अप्रैल, १९७१ को स्थापित किया गया । अमरीकी स्पेस शटल विश्व का पहला पुनः प्रयोज्यीय अंतरिक्ष यान है । रूसी अंतरिक्ष स्टेशन 'मीर' विश्व का पहला स्थायी अंतरिक्ष स्टेशन है जो आज भी अंतरिक्ष में मौजूद है ।

अंतरिक्ष अन्वेषण का इतिहास अनेक रेकॉर्डों से भरा हुआ है तथा आनेवाला समय अन्य अनेक रेकॉर्डों को जन्म देता रहेगा क्योंकि अंतरिक्ष में मानव की अनेक आशाएं छिपी हुई हैं ।

—८०९, टैगोर रोड होस्टल,
मिंटो रोड, नयी दिल्ली-११०००२

खइके पान बनारस वाला

● धीरज कृष्ण गुप्ता

कि सी भी विषय अथवा वस्तु के गुण, स्वभाव, प्रकृति का परिचय व उसमें निहित बातें उस वस्तु के नाम अथवा शीर्षक से भली-भांति स्पष्ट होना ही शीर्षक की सार्थकता है। बनारस ! अर्थात रस से परिपूर्ण नगरी। बनारस शब्द से इस शहर की प्रकृति भली-भांति स्पष्ट हो जाती है। बनारस सदैव ही रसिकों की नगरी के रूप में विख्यात रहा है। यहां के लोग किसी भी चीज के सौंदर्य एवं कला पक्ष को सर्वोपरि मानते हैं। गंगा की अविरल धारा एवं भोले बाबा के छतर तले पले बनारसी लोग गंगा की ही तरह स्वच्छंद एवं भोले बाबा की ही तरह रंग-तरंग में मस्त रहनेवाले हैं।

बनारस का प्राचीनकाल से ही प्रत्येक क्षेत्र में, चाहे वह कला हो, संगीत हो, नृत्य हो, सौंदर्य हो, अध्ययन हो या उद्योग हो—एक उच्च स्थान रहा है। बनारसी लोग अपने मस्तीभरे अंदाज व कौशल के लिए जगप्रसिद्ध हैं। यहां के निवासी शाम होते ही ठंढ़ाई छान, मुंह में पान जमाकर अपने बनारसीपन का परिचय देते हैं।

वस्तुतः बनारस का प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर महादेव को समाये हुए हैं। अधिकतर काशीवासी संध्याकाल में बाबा विश्वनाथ का दर्शन कर कृतार्थ हो उठते हैं। संध्याकाल में मंदिर से निकलते लोगों के ललाट पर लगा टीका, चंदन अथवा भभूत से, इनकी शोभा देखते ही बनती है। मंदिर के घंटे की कर्णप्रिय आवाज व्यक्ति को शांति प्रदान करती है। एक हाथ में कमंडल तथा दूसरे में फूल व माला लिए काशीवासी अलग ही जान पड़ता है। हर पग पर मंदिर तथा विभिन्न देवी-देवताओं

बनारस सदैव ही रसिकों की नगरी के रूप में विख्यात रहा है। यहां के लोग किसी भी चीज के सौंदर्य एवं कला पक्ष को सर्वोपरि मानते हैं। गंगा की अविरल धारा एवं बाबा भोलेनाथ के छतर तले पले बनारसी लोग गंगा की तरह स्वच्छंद व भोले बाबा की तरह रंग-तरंग में मस्त रहनेवाले हैं।

की मूर्तियों से यहां के निवासियों की सच्ची भक्ति परिलक्षित होती है। बनारस के अधिकतर लोग मुख्यतः दो उद्योग—प्रथम बनारसी वस्त्र उद्योग तथा दूसरे लकड़ी के खिलौने के कारोबार में लगे हुए हैं। बनारस की बनारसी साड़ी सारे विश्व में ख्यातिप्राप्त है। जहां कहीं भी साड़ियों का प्रश्न आता है, वहां बनारसी साड़ियों का

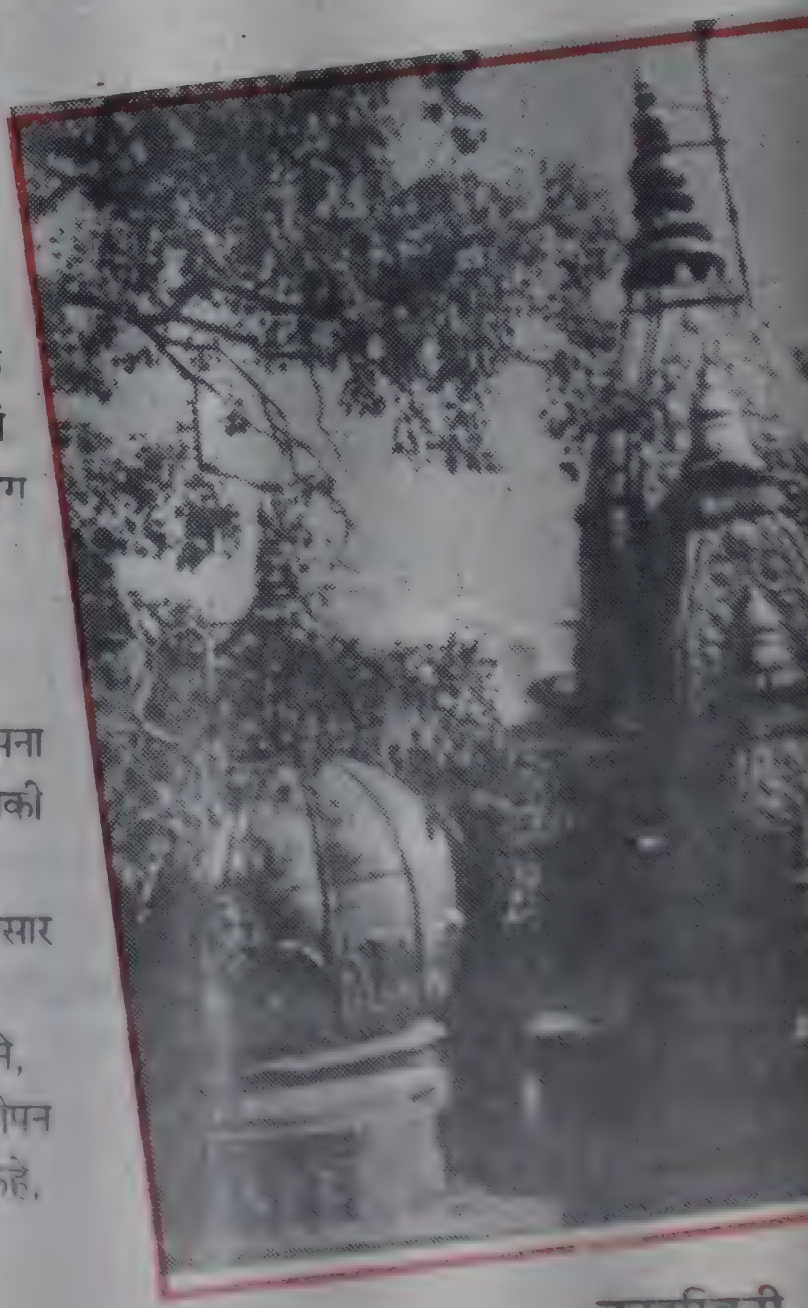
जिक्र आये बिना नहीं रहता । यहां के जुलाहे अपनी इस विशिष्ट बुनाई कला में सिद्धहस्त हैं । विभिन्न प्रकार के तानों-बानों से बुनी हुई यह रेशमी साड़ियां प्रत्येक नारी को अत्यंत प्रिय हैं । विभिन्न प्रकार के डिजाइनों को विभिन्न कारीगरों द्वारा तरह-तरह के वस्त्रों पर उकेरा जाता है । स्वर्ण तथा चांदीयुक्त जरी की साड़ियां महंगाई के कारण आज भले ही लुप्त प्रायः हो गयी हैं । फिर भी वर्तमान में बनारस के कारीगर नित्य नयी-नयी क्वालिटियों की, फैशन के अनुसार साड़ियों का निर्माण कर रहे हैं और बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा का अर्जन कर रहे हैं ।

बनारसी वस्त्र-उद्योग के अलावा बनारस में लकड़ी के खिलौने भी बड़ी मात्रा में बनाये जाते हैं । विभिन्न प्रकार की लकड़ियों से विभिन्न डिजाइनों को बनाकर, उसमें रंगाई की जाती है । बनारस में यह उद्योग काफी विकसित रहा है । परंतु वर्तमान में यह उद्योग महंगाई की मार और प्लास्टिक के बढ़ते चलन से ग्रसित है । इस कला में प्रवीण कलाकार धीरे-धीरे इस धंधे को त्याग रहे हैं । बनारस की आमदनी एवं पर्यटकों का आकर्षण बढ़ाने में लकड़ी के खिलौने अत्यंत सहायक सिद्ध हुए हैं ।

यहां के लोग बाबा विश्वनाथ को ही अपना संकटहरण तथा पोषक मानते हैं क्योंकि उनकी मान्यता बनारस के प्रहरी के रूप में है । स्वर्णमंडप युक्त बाबा विश्वनाथ का मंदिर संसार भर में विख्यात एवं श्रद्धा का केंद्र है ।

बनारस की इतनी विशेषताओं को देखने, सुनने, पहचानने के बाद वर्तमान में बनारसीपन का ह्रास हो चुका है । आज बनारसी कहकहे, बनारसी महफिलें, बनारसी बोली, बनारसी रस्म-रिवाज आदि में वो उत्साह नहीं रह गया, जो अनेक किस्सों, कहानियों, उपन्यासों, साहित्यों में पाया जाता है । बनारस की अनेक रस्म-रिवाजें वर्तमान भागदौड़ के जीवन व महंगाई की बोझ के तले दब चुका है । ठेठ बनारसी बोली भी पाश्चात्य बोलियों के बढ़ते प्रभाव से लुप्त होती-सी प्रतीत हो रही हैं ।

बनारस क घटते बनारसीपन तथा बढ़ते पाश्चात्य प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ते हैं । अनेकों लेख, कहानी-किस्से, उपन्यासों आदि को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि विश्व में शायद ही उतनी बातें किसी अन्य नगरी के बारे





नाथ मंदिर का स्वर्ण-शिखर गर्भगृह में शिवार्चना

लखी गयी हों, जितनी की बनारस के बारे
विश्व में सबसे प्राचीन मानी जानेवाली
ी नगरी का वर्णन अनेक पुराणों, महाकाव्यों
लता है । सभी प्राचीन ऋषि, मुनि, साधक
र बनारस की सभ्य एवं सुशील संस्कृति से
त प्रभावित रहे । बनारस की श्रेष्ठता के बारे
न्दपुराण में एक खंड रखा गया है, जिसका
ही काशी खंड है । उसमें कहा गया है—

ूर्तिरियं काशी क्षेममूर्तिर्भवान् भव
ूर्तिस्त्रिपथगा नान्यत्क्षेमत्रयं क्वचित्

—६४, ३१

अर्थात् हे भव । यह काशी साक्षात् कल्याण की मूर्ति है, और आप भी कल्याणस्वरूप ही हैं । फिर यहां कल्याणमयी गंगा भी बह रही है । ये सब तीनों ही क्षेमकर्ता अन्यत्र कहां हैं ?

इस से प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में काशी का लोगों के दिलो-दिमाग में कितना उच्च स्थान था । काशी नगरी सदैव ही स्वर्णिम नगरी रही है । हम सभी काशीवासियों का यह उत्तरदायित्व है कि इस निराले नगर बनारस को बिना रस होने से बचायें ।

—सी. के. २८/१३ ज्ञानवापी
चौक, वाराणसी-२२१००१



पान लबों की शान

● डॉ. आशा मोहन

भारतीय संस्कृति में पान का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है । हर मांगलिक अवसर पर पान शुभ प्रतीक के रूप में प्रयुक्त होता है । पूजा-अर्चना, विवाह-लग्न, जन्म— जैसे अवसरों से लेकर महफिलों तक में पान का बीड़ा सबसे पहले प्रस्तुत होता है । साहित्यकारों का तो विशेष प्रिय है यह स्वादिष्ट पत्ता । धारणा यह है कि पान खाने के बाद एकाग्रता बनती है । जो हो, दो प्रेमियों के दिलों की धड़कन का यह प्रतीक, लबों की शान है ।

पान लबों की शान ही नहीं, अपितु आयुर्वेद एवं यूनानी चिकित्सा में एक प्रभावकारी औषध के रूप में भी अपनाया गया है । मुंह में छाले होने पर, अदमनीय खांसी होने पर, चर्मरोगों में पान बहुत लाभकारी माना गया है । गायक मुलैठी और लवंग-इलायची-युक्त पान प्रायः खाते रहते हैं इससे उनका गला खुलता है । माना जाता है कि सुर भी मीठा रहता है । भोजन के उपरांत पान का सेवन बहुत लाभप्रद माना गया है । ऐसा करने से पाचन-शक्ति बढ़ती है, पाचन-क्रिया ठीक रहती है और मुंह का स्वाद भी ठीक बना रहता है ।

पान हमारे यहां राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, बंगाल, गुजरात, उड़ीसा इत्यादि कई प्रदेशों में होता है ।

पान की कई प्रजातियां हैं । इनमें बंगला,

कतिया, बनारसी, मघई, महाबिया, लंका, सी, मालवी, जगन्नाथी, कपूरकांत, सवार, चंदन, अमरबेल, कांकेर इत्यादि ख हैं।

बहुउपयोगी और संस्कृति के साथ जुड़े इस लिक पत्ते का सफर इसकी बेल से लेकर तक पहुंचने तक देखें, तो ज्ञात होगा कि की खेती कितनी कष्टसाध्य है।

सहज नहीं है पान की खेती

पान की खेती सहज नहीं है। पान को नम लगाकर उगाया जाता है। कलम-रोपने बाद इसे अरंड, करंजे, तिल्ली, दही, छाछ, न आदि की खाद दी जाती है। इसकी चाई केवल एक विशेष मटके को कंधे पर कर उसे धीरे-धीरे उलटकर ही की जा कती है। ऐसा करना बहुत ही कष्टपूर्ण तथा साध्य होता है। पान की खेती से जुड़े सानों या श्रमिकों के कंधों पर इसीलिए प्रायः तक बन जाते हैं। पान की खेती को वाड़ी में ही किया जा सकता है। इसकी ों को बांस की खपच्चियों या लकड़ियों के रे ऊपर चढ़ाया जाता है। इस खेती के लिए शीतोष्ण जलवायु एवं सामान्य वर्षा हए। अतः पनवाड़ी के चारों ओर तथा ऊपर व घास की टटिया लगाकर उसे घास और यों से ढक दिया जाता है।

अपनी पनवाड़ी के प्रति किसानों की आस्था ष रूप से देखने को मिलती है। वे वाड़ी के प्रवेश-द्वार के पास ही नागबेल की मूर्ति रखते हैं, ताकि उनकी पनवाड़ी ात रहे। वे जूते पहनकर पनवाड़ी में प्रवेश करते। रक्षाबंधन पर पनवाड़ी तथा पान



की बेलों को राखी बांधी जाती है। इतनी आस्था के बावजूद कई बार पान की बेलों को पाला मार जाता है। कीड़ा लग जाता है। पान सड़ भी जाते हैं।

...तीय पान आज शान के साथ सबके ल... ...रचा हुआ है। इसका जादू होंठों ही नह... ...र पर भी चढ़ कर बोल रहा है। तभी तो विदेशों में भारतीय पान की मांग दिनोंदिन बढ़ रही है। इसके बावजूद पान की खेती को प्रोत्साहन कम मिल रहा है। किसान आर्थिक तंगी के शिकार हैं। सिंचाई की समुचित सुविधाएं उन्हें नहीं मिल पा रहीं। पान मसाले लाख कोशिश कर लें, पान की शान में कमी नहीं ला सकते।

—पो. बॉक्स-२०, श्रीनगर
गढ़वाल २४६१७४

वह एक फकीर था, किंतु भिक्षा मांगनेवाला नहीं, वरन् बांटनेवाला, धनी और निर्धनों को समान रूप से निरंतर बांटनेवाला। प्रत्यक्ष रूप से तो उसके पास लुटाने को कुछ भी नहीं था, किंतु परोक्ष रूप से याचकों को उससे कुछ न कुछ प्राप्त होता ही था, अन्यथा कलियर की मसजिद के निकट वे उसके पास क्यों आते ?

भैरवी की गणना इन याचकों में नहीं की जा सकती थी। उसके लिए याचना करने के लिए था ही क्या ? धन-दौलत, गृहस्थी की सुख-शांति—सभी की तो वह स्वामिनी थी और यही वस्तुएं तो मांगी जाती हैं।

कलियर की मसजिद के एक कोने में यह फकी पड़ा रहता था और लोग सदैव उसे घेरे रहते। यही कोना उसका दीवान-ए-खास था और दीवान-ए-आम भी। दुःखियों और याचकों का सदैव तांता लगा रहता। प्रथम साक्षात्कार में ही उस फकीर के स्नेह-सिक्त वाक्य, 'सब खैरियत तो है बेटी ?' ने भैरवी को मुग्ध कर दिया था। कितना बुजुर्गों जैसा वात्सल्य है इस फकीर की बोली में, भैरवी यह विचारे बिना न रह पायी। "'हां बाबा', कहकर वह वहीं बिछी चटाई पर बैठ गयी। उसके पास प्रायः मुसलमान ही अधिक आया करते थे, इसलिए वह कई

कहानी

बेताज बादशाह

• दामिनी उनियाल

भैरवी के पति का लकड़ी का बहुत बड़ा व्यापार था और इसी संबंध में वह सपरिवार ज्वालापुर आ बसे थे। यहीं आकर उसने कलियर व उसकी मजारों का नाम सुना था। यहां मन्नत मांगने और चादर चढ़ाने लोग देश-विदेश से आते थे।

भैरवी का ऐसे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण का कारण अंधविश्वास नहीं, वरन् बौद्धिक जिज्ञासा थी। यदि इनमें कुछ अलौकिक-शक्ति होती है, तो वह स्वयं इसकी अनुभूति करना चाहती थी।

ऐसे फकीर के दर्शन आज वह प्रथम बार ही कर रही थी। फटे-पुराने गद्दे-चादर पर कौतूहलभरे कटाक्षों का निशाना भी बनी हुई थी। उसने पाया कि दीन-दुःखी अपनी-अपनी फरियादें लिए आते ही जा रहे थे और झोली फैला उस फकीर से दुआ की भीख मांगते जा रहे थे। भैरवी को वह पूरा औघड़दानी प्रतीत हुआ, जो लोगों को महल-अट्टारियां दे, लेकिन स्वयं 'मसान' में वास करे। फक्खड़-फकीर होते हुए भी वह कलियर का बेताज बादशाह था।

कुछ समय में ही भैरवी ने पाया कि लखनवी भाषा में यह 'डेढ़ पसली' का दिखनेवाला वृद्ध शख्सियत में पूरा विशालकाय वट वृक्ष-जैसा था, जिसकी शीतल

या में असंख्य जीव शरण लेते हैं । सिर पर नकी टोपी, आंखों पर मोटा चश्मा, सफेद ढ़ी और पोपला-सा मुख किंतु, बोली बहुत ष्ट और खरी । उसकी आयु के बारे में कोई छ ठीक से नहीं जानता । किसी का कथन ता सौ, तो किसी का होता सवा सौ । ग्रीष्म तु होती तो कोई महाभागी उसे पंखा झल रहा ना । शीतकाल में उसके निकट किसी पात्र में यले दहकते होते ।

भैरवी को इस फकीर का व्यक्तित्व अति कर्षक लगा । चमत्कार प्रदर्शन से दूर वह बके लिए अपनी दुआएं लुटाता । कहां था का कभी न खतम होनेवाला ार ? क्या यह फकीर अपने सत्कर्मों के यों को इनके बीच लुटाता था ? लोगों को की दुआएं लगतीं और फिर वे प्रसन्नचित्त हो के कदमों में न जाने क्या-क्या चढ़ा जाते ? से भी वह अन्य लोगों का भला ही वता । निकट ही एक पाठशाला खुलवा दी थी । प्रतिदिन लंगर होता, जहां दीन-दुःखी भोजन पाते । अपने लिए तो उसे चाहिए ही क्या था ? अब तो भैरवी के माह में एक-दो चक्कर कलियर के अवश्य लग जाते । फकीर का उससे हमेशा प्रथम प्रश्न यही होता, 'बेटी सब खैरियत तो है' ? मात्र इस प्रश्न से ही वह भैरवी को अपने स्नेह-सागर में आकंठ डुबो देता । पितृ-गृह आयी बेटी अपने बड़े-बूढ़ों से आत्मीयता की जो मिठास पाती है, वही मिठास वह इस प्रश्न में पाती । उसकी बुद्धि इस तर्क को भी अस्वीकार न कर पाती कि कदाचित् वह इस प्रश्न द्वारा उसका संकोच दूर करना चाहता था । वह भी तो अपने अंतःकरण में छिपी किसी इच्छापूर्ति की मांग कर सकती थी । किंतु उसका भी हठ था कि मैं याचक नहीं बनूंगी । वह केवल उस फकीर के गहन विचारों के ही श्रवण की पिपासु थी । इस फकीर के पोपले मुख से निकले शब्द मुक्ता लुटाते प्रतीत होते थे ।



कहने को तो आये दिन ऐसे उपदेश सुनने को मिलते हैं, किंतु इस फकीर के कहने का अंदाज ही कुछ और होता । यह लफ्ज़ सीधे उसके हृदय को छू जाते । उस फकीर को भी अच्छा लगता कि यह स्त्री औरों से अलग, कुछ मांगने नहीं, वरन् सुनने आती है ।

पति और बच्चे भैरवी पर व्यंग्य प्रहार करने से न चूकते—'मां ने अब वह फकीर पकड़ा है । उस पर अब 'रिसर्च' हो रही है ।'

वह भी कब चूकनेवाली थी, कहती—'हां, फिल्मों का, ताश का नशा नहीं, इस फकीर की नसीहतों का ही नशा समझ लो ।'

एक दिन सहसा उस फकीर के मरणासन्न होने के समाचार ने भैरवी को कंपा दिया था । कारण ईद में भी महीनेभर का रोजा रखना था । कार निकालकर पहुंच गयी थी भैरवी उसके पास । रास्तेभर रह-रह कर उसके नेत्र सजल हो उठते थे । 'क्या तुम सच में चले जाओगे ?' वह मन ही मन अपने फकीर से प्रश्न कर रही थी । पहुंची तो उसे अपनी कोठरी में निष्पंद-सा पड़ा पाया । सदा की भांति नत-मस्तक हुई किंतु, उसे वह चिर-परिचित वाक्य आज सुनने को नहीं मिला । केवल कंकाल-सा एक हाथ धीमे से उठा और उसके सिर पर जा पड़ा । हाल पूछने पर ज्ञात हुआ कि खाना-पीना सब बंद कर दिया था । किसी की नहीं चलती थी उसके हठ के आगे । उसके जीर्ण-क्षीण शरीर में रखा ही क्या था, जो माह भर के रोजे की मार सहन कर पाता । भक्तगणों ने पहुंचा दिया उसे दिल्ली के बेहतरीन चिकित्सालयों में । अरब देशों में बसे करोड़पतियों से लेकर दिल्ली के मंत्रीगण भी उस फकीर के आगे-पीछे लग गये थे । किंतु चेतना लौटते ही उसकी एक ही रट थी कि 'ले चलो मुझे वापस कलियर ।' तय यही हुआ कि उसे उसकी धरती से न बिलगाया जाए । चिकित्सक ही वहां बुलाये जाने लगे ।

इस बार मिलते ही भैरवी ने अपने फकीर से उसका प्रिय प्रश्न उधार ले लिया था । 'बाबा, आपकी तबियत अब कैसी है ?' उसनें धीमे से पूछा ।

'अब तो ठीक है बेटी । अजमेर शरीफ गया था, वहां से लौटकर बहुत बीमार पड़ गया । फिर मुझे दिल्ली ले गये । मैंने तो कहा कि मुझे अपने कलियर में ही मरने दो ।' फकीर ने अपना वाक्य पूरा भी न किया था कि भैरवी बीच में ही सिहर उठी । 'बाबा आप ऐसा क्यों कहते हैं ?' वह टोककर बोली ।

एक विवाहिता के लिए उसके माता-पिता वृद्ध और असहाय होते हुए भी,क्या महत्त्व रखते हैं, यह उसका हृदय ही जानता है । 'मुझे अपनी वही श्मशान प्यारी है । कहां ले आये मुझे इस महाश्मशान में, मैं उनसे कहता था,' वह बोला । भैरवी को श्मशान शब्द सुन कुछ हंसी आयी । कलियर में मजारों की अधिकता के कारण इन संस्कृत शब्दों के प्रयोग का प्रयास देखते ही बनता था । उस फकीर के मुख से उर्दू-हिंदी सब भैरवी को बहुत मीठी प्रतीत होती । निकट ही बैठे लोग कुछ बड़े-बड़े लोगों के नाम गिनाने लगे— जो इस बीमारी के दौरान बाबा के आगे-पीछे लगे हुए थे किंतु स्वयं वह फकीर किसी बड़े का नाम न लेता । मानो उसके लिए तो सब समान थे ।

उठते समय अनायास ही भैरवी के मुख से निकल पड़ा था, "बाबा, मेरे लायक कोई सेवा

हो तो बताइए ।"

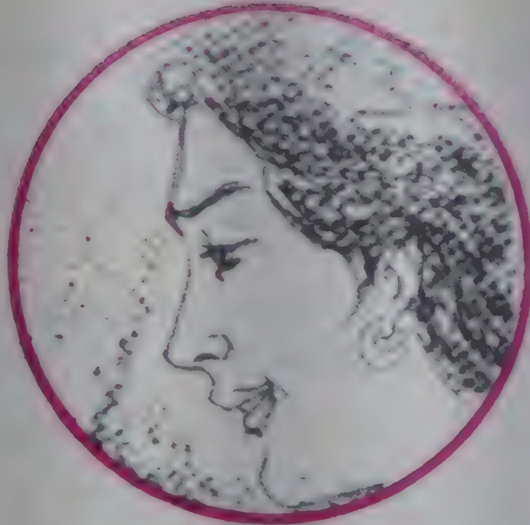
"बस, बेटी इसी तरह आती रहा करो ।", कहते हए दुआ का हाथ उसके सिर पर रख दिया ।

कभी अपनी व्यस्तता के कारण वह माह-दो माह नहीं जा पाती, तो उस फकीर के प्रश्न में एक अन्य कड़ी जुड़ जाती, 'बेटी बहुत रोज बाद आयी, सब खैरियत तो है ?' और भैरवी फकीर के वात्सल्य में डूब जाती । प्रत्येक तरुणी का पितृगृह भी तो इसी आकुलता से अपनी बिटिया की प्रतीक्षा करता है । वह घर से लायी झोली कंधे से उतारकर, फकीर के समक्ष नतमस्तक हो जाती । 'बाबा आपके लंगर के लिए कुछ घर की सब्जियां लायी हूं ।' वह धीमे से कहती । फकीर बाल कौतुकवश झोली खोल देखता और प्रसन्न हो जाता । भैरवी भी उसकी खुशी को खूब समझती थी । कैसी भी तुच्छ भेंट हो, एक बेटी की लायी भेंट को क्या पितृगृह कभी अस्वीकार कर सकता था ।

* * *

विधाता को भी किसी की सुख-शांति अधिक देर तक नहीं भाती है । उसके जीवन में भी बवंडर उठ ही आया । मां के पत्र के एक समाचार ने उसे बुरी तरह झकझोर दिया । सारे दिन अपने कक्ष में पड़ी रोती रही । ग्लानि और क्रोध से झुलसती रही ; बचपन की सहेली सुरभि का अतीत उसे तड़पाता रहा । कितने अरमान से सुरभि का विवाह एक डॉक्टर से किया गया था । वर्ष बीते और वह तीन पुत्रों की मां बनी ।

किंतु समय ने पलटा खाया और काल के क्रूर चक्र ने उसके पति के विवेक को हर



लिया । वह अपनी कमलिनी को त्याग कीचड़ का कीट बन गया । उसने एक कुटिल, कुरूपा नर्स से संबंध बना लिये ।

सुरभि इस भयंकर वेदना का हाहाकार करने जाती भी कहां ? हालांकि, परिवार के सदस्यों का यही मत था कि उसे अब पति से पृथक हो, कानून की शरण में जाना चाहिए किंतु उस चतुर डॉक्टर ने नहले पर दहला फेका । पत्नी को धमकाया कि यदि तुमने कानूनी कार्यवाही की और मेरी नौकरी छूट गयी, तो रही-सही आर्थिक सहायता भी तुम्हें नहीं मिल पाएगी ।

लोक-लाज एवं बच्चों को ध्यान में रख कर सुरभि ने मौन का विषपान ही उचित समझा । यूं ही वर्ष बीतते गये और अपनी एकमात्र कन्या के दुःख ने उसके माता-पिता को मौत के घाट उतार दिया । जीवन में छत्रछाया देनेवाला वृक्ष भी सूख गया था । सुरभि का मानसिक बल टूटता ही चला गया और एक दिन वह पक्षाघात की मार से सदा-सदा के लिए खाट पर गिर गयी । अब तो उसके पति को खुली छूट मिल गयी । पहले जो छिपकर होता था, वह अब सुरभि के सामने ही होने लगा । हां, इतना अच्छा हुआ कि उसके बेटे पहले ही पढ़ने के लिए इस नरक को छोड़ गये थे ।

भैरवी ने पढ़कर तत्काल ही उस पत्र की चिंदी-चिंदी कर दी थी । अगर वह डॉक्टर उसके सामने होता, तो कदाचित उसकी भी यही गति करती ।

वह स्वयं को भी क्षमा नहीं कर पा रही थी कि वह अपनी ही घर-गृहस्थी में कितनी खोयी रही कि उसने कभी सुरभि की खोज-खबर नहीं ली । उसने चाहा कि वह सुरभि के बारे में फकीर से कुछ मांगे, जबकि कुछ भी मांगने में उसका स्वाभिमान और हठ आड़े आ रहा था । फिर भी उसने फकीर की शरण ली । उसे सब कुछ खुलकर बताया लेकिन तभी मां के पत्र ने तो सुरभि की महानिद्रा में लीन होने का समाचार दिया है ।

एक भयंकर सत्य रह-रह कर उसे कोंच रहा था । उस फकीर के कहे इन शब्दों को वह आज अपनी हंसी में नहीं उड़ा पा रही थी कि 'मुझे अपनी वही श्मशान प्यारी है, कहां ले आये मुझे इस महाश्मशान में ।' भैरवी का सिर चकरा रहा था । यह महाश्मशान ही तो थी । चिता तो एक बार जलती है, किंतु, चिंता तो बार-बार भूनती है । हम अपने अभद्र और कुकर्मों से जीवन को महाश्मशान ही तो बना देते हैं ।

कलियर के उस रहस्यमयी फकीर को आज भैरवी कुछ और गहराई से समझ पा रही थी कि, 'मुझे कलियर में ही मरने दो । कहां ले आये मुझे इस महाश्मशान में ।'

* * *

समय बीता और प्रकृति ने अपना न्याय करने की ठानी ।

तीन वर्ष के अंतराल में बहुत कुछ पलट गया ।

आज एक वीभत्स दृश्य ने भैरवी को कंपा दिया । समाज-सेविका की हैसियत से वह आज शहर के एक बड़े चिकित्सालय में गयी थी । सहसा उसकी दृष्टि एक ऐसे रोगी पर पड़ी, जिसकी दशा दयनीय थी । शरीर कंकाल मात्र था । त्वचा फोड़े-फुंसियों से पटी पड़ी थी, जो सड़ांध छोड़ रहे थे । वह एक छोटे-से कक्ष में अकेला पड़ा था । गड्ढे में धंसी आंखों में कदाचित इधर-उधर देखने की भी शक्ति न रह गयी थी । सूखे मुख से निकलते शब्द जल मांग रहे थे ।

भैरवी कुछ ठिठकी, फिर अनायास ही उस कक्ष की ओर जाने को बाध्य हो गयी । रोगियों के साथ कैसा निर्ममता का व्यवहार किया जाता है, उसने विचारा । अंदर जाकर पाया कि वहां न तो जल था, और न जल के लिए कोई पात्र ।

किंतु दूसरे ही क्षण उसे पैरों तले की धरती खिसकती मालूम हुई । उसके नेत्र भूल नहीं कर रहे थे कि रोगी कुछ परिचित-सा जान पड़ता है । परंतु अपने नेत्रों पर विश्वास करने का उसे साहस नहीं हुआ ।

वह नर्स को बुलाने बाहर आ खड़ी हुई, किंतु कोई भी न दिखा । सहसा उसकी दृष्टि कक्ष के ऊपर टंगे बोर्ड पर पड़ी, जिस पर लिखा था—'एड्स सैल ।'

मौत के क्रूर पंजों ने जिसका गला जकड़ा हुआ था, वह रोगी सुरभि का अभागा पति ही था । तीन-तीन पुत्रों के पिता को मृत्योपरांत तो क्या, जीते-जी आज कोई पानी देनेवाला नहीं था । प्रकृति निर्ममता से अपना न्याय सुना रही थी ।

—द्वारा-ब्रिगेडियर हरि उनियाल
बी.ई.जी. सैंटर, रुड़की-२४७६६७

चिकल्दा की वह रोमांचक शाम

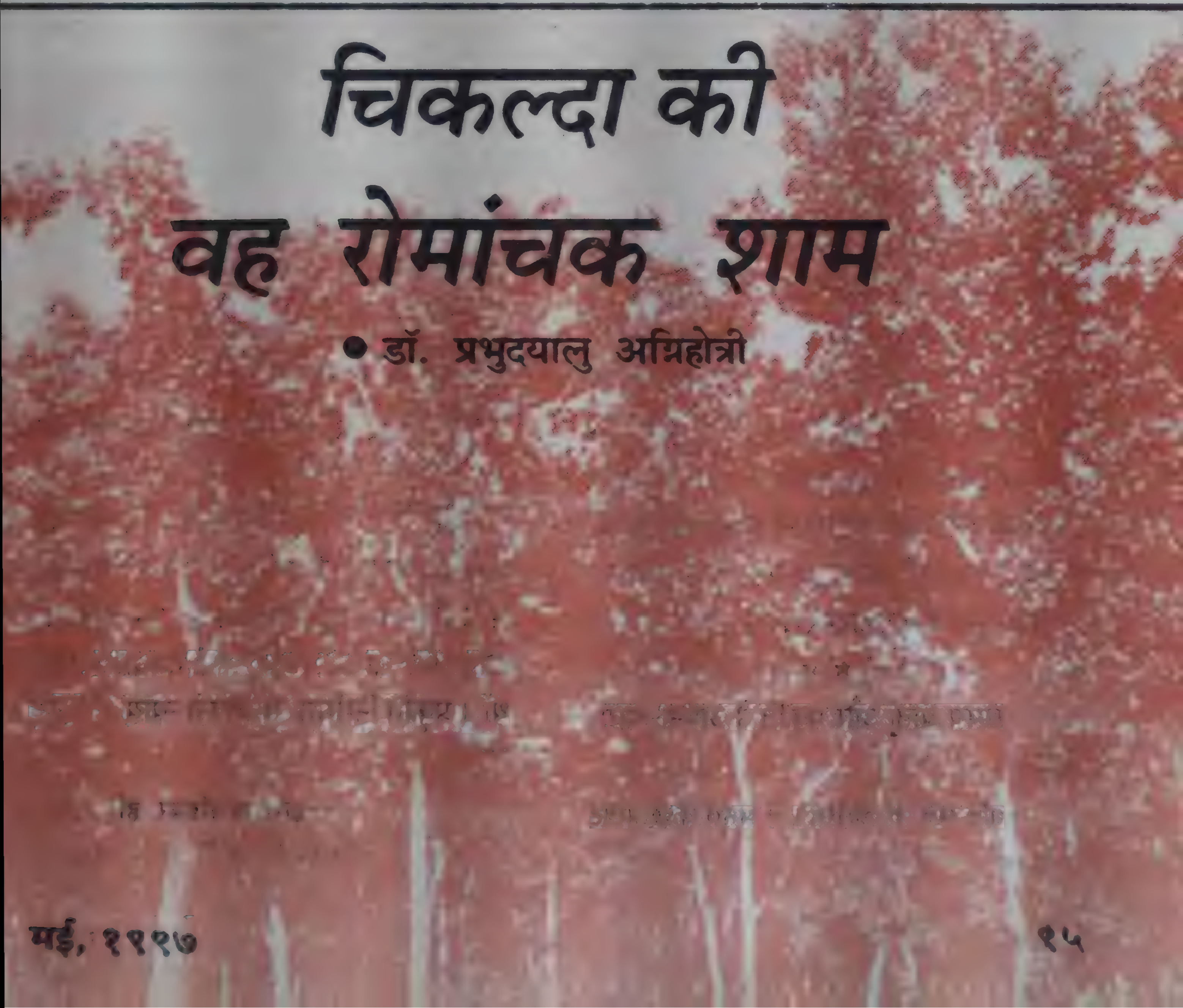
• डॉ. प्रभुदयालु अग्निहोत्री

चिकल्दा विदर्भ के अमरावती जिले में छोटा-सा पर्वतीय स्थल है । अंगरेजों ने इसे ग्रीष्मकालीन विश्रामस्थल के रूप में विकसित किया था । हम लोग गरमियों की छुट्टियों में प्रायः वहां चले जाते थे । चिकल्दा में शेर थे । कभी-कभी आते-जाते कोई शेर सड़क के किनारे से हमारी कार के पास से निकल जाता था, किंतु रात को कार की तेज रोशनी से उसकी आंखें चौंधिया जाती थीं । फिर भी जब तक वह दूर न निकल जाता, हमारी सांस बंद ही रहती । कोई हिलता-डुलता तक नहीं था ।

कभी-कभी कोई सूचना देता कि आज शेर भैंस के बच्चे या गाय को उठा ले गया है, तो सब चौकन्ने हो जाते । शेर एक जगह न टिककर दूर-दूर तक फैली अरण्यानी में घूमता रहता था और कभी-कभार ही इधर आ जाता था, फिर भी भय तो व्याप्त रहता ही था ।

बंगलों के चारों ओर बांस के बाड़े बनाये गये थे । बरामदे भी बांसों से घेर दिये गये थे । रातभर बाहर रोशनी की जाती थी । कोई डेढ़ मील दूर एक ऊंचे समतल स्थान पर वन विभाग के तीन-चार हाथी बंधे रहते थे, जिनके गले में बंधे घंटों और पास में जलती लालटेनों से स्थान और दिशा का बोध होता था ।

शाम को चार बजे से ही अंधेरा छा जाता और घूमने निकले हुए व्यक्ति को यदि, वह नया



हो तो, अपना आवास ढूंढ़ने में कठिनाई होती थी। मेरे सामने तो यह समस्या प्रतिदिन उपस्थित होती। रास्तों और चेहरों को भूल जाने की बीमारी मुझे बचपन से ही है। हालांकि, बहुत कुरूप या विशेष सुंदर आकृति मन में गड़ जाने के कारण याद भी रह जाती है, किंतु मार्गों के मामले में तो मैं सदा ही कष्ट उठाता आया हूं।

चिकल्दा में केवल एक पार्क था टहलने-घूमने के लिए। किंतु उसमें भारतीयों का प्रवेश निषिद्ध था। केवल अंगरेज ही वहां जा सकते थे। घूमना पर्वतों पर अनिवार्य होता है। सो मैं प्रायः हाथियों के पास जलती लालटेन को प्रकाश-स्तंभ बनाकर पास-पड़ोस के जंगलों में निकल जाता था। घूमने के लिए केवल एक सड़क थी—राजमार्ग। बाकी जंगलों तक पहुंचने के लिए छोटे-मोटे रास्ते थे। एक बार सड़क बिछुड़ी कि फिर दिनभर जंगल में भटकते रहिए। आदमी के दर्शन दिन में तो इक्का-दुक्का हो भी सकते थे, किंतु सांझ पड़ते ही सन्नाटा। कभी-कभी दूर कहीं से किसी कुत्ते के भूंकने की आवाज अवश्य आ जाती थी।

एक दिन घूमते-घामते मैं दूर निकल गया। पर्वतीय स्थलों और वनों में मुझे अपना होश नहीं रहता। लगता है, कोई मेरी अंगुली पकड़े ममता के साथ मुझे आगे, और आगे खींचता लिये जा रहा है। ऊंचे-ऊंचे घने शाल के पेड़, पत्थरों को चीरकर वनस्पतियों के रूप में उभरता दुर्दम्य जीवन, कृष्णमुखी-रक्तवर्णी गुंजाओं से लदे छोटे-छोटे पेड़ ; झरबेरी और मकोय की झाड़ियां, विशालकाय जंगली आम और जामुन के झुरमुट ; दोपहर की पैनी धारवाली उष्ण किरणों को बड़े-बड़े मोटे गोल घने हरे पत्तों में बंदी कर लेनेवाले विशाल और उनके बीच से छनकर आता हुआ सूर्य का वरदान ; पवनडोर के सहारे हिलती-झूलती डालियों की लय पर नीचे हरी घास में फिसलते, गिरते, दौड़ते धूप के छौने और ऊपर ऊंची शाखाओं पर लड़ते-झगड़ते, रूठते-मनाते, प्रणय व्यापार में आत्मलीन तथा कभी मंद, कभी मध्यम और कभी तीव्र स्वरावली में विविध रागों का सृजन करते नाना जातीय वन्यपक्षी— इन सबके बीच मैं काल और देश की सीमाएं भूल जाता। ऐसे में मन की जो दशा होती, उसे शब्दों में बांधना शक्य नहीं है। संतों ने इस भावावस्था का संकेत 'गूंगे का गुड़' कह कर दिया है।

बात एक दिन की

एक दिन ऐसे ही कहीं निकला, तो सांझ हो आयी। देर न हो जाए, इस भय से सीधा मार्ग ढूंढ़ने लगा। चिकल्दा की दो गिरि-श्रेणियों को दो- ढाई सौ फीट गहरी एक घाटी बांटती है। इस घाटी यानी खड्ड में चौबीसों घंटे रात रहती है। ग्रामीण लोगों ने इस पार से उस पार जाने के लिए कहीं-कहीं पगडंडी बना ली हैं। फिर भी खड्ड में एक तरफ से उतरकर दूसरी तरफ से फिर ऊपर चढ़ना जीवट का काम है। दिन में थोड़ा प्रकाश रहने पर वे लंबा चक्कर बचाने के लिए खड्ड से होकर निकल जाते हैं। लेकिन शाम या रात में बिलकुल नहीं, मुझे भी लगा कि सड़क तक पहुंचने में घंटाभर लग जाएगा और फिर इतना ही वापस आवास तक पहुंचने में। एक जगह ऊपर से नीचे की ओर जाती हुई हलकी-सी पगडंडी नजर आयी, तो मैं कहीं बैठकर और कही पहाड़ी का सहारा लेकर धीरे-धीरे नीचे उतर गया। नीचे खाई तीन-चार

> ***चौरासी वर्षीय वयोवृद्ध डॉ. प्रभुदयालु अग्निहोत्री वैदिक साहित्य और प्राचीन भारतीय संस्कृति के मूर्धन्य विद्वान है । वैदिक साहित्य, भाषा-विज्ञान, पुरातत्व एवं धर्म-दर्शन विषय में आपकी गहरी पैठ है । प्राचीन भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त आप हिंदी के उच्चकोटि के कवि और समीक्षक हैं । हिंदी की प्रायः सभी विधाओं में अपने प्रचुर परिमाण में मौलिक साहित्य सृजा है ।***
>
> ***जबलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति रहे डॉ. अग्निहोत्री अनेकानेक पुरस्कारों व सम्मानों सहित राष्ट्रपति से सम्मान प्राप्त कर चुके हैं ।***

फीट चौड़ी रही होगी । गनीमत थी कि गरमी का मौसम होने से उसमें पानी नहीं था, किंतु ऊपर जो अगुवाती रात का धुंधलका था । वह नीचे जाकर घने अंधकार में बदल गया था । घुप अंधेरा । हाथ से हाथ न सूझे । अब कहां जाऊं ? दायें हाथ बढ़ूं कि बांयें, यह अंदाज भी न रहा । पता नहीं, पांव तले सांप हो कि अजगर या कोई और । वैसे सांपों और अजगरों की तो यह भूमि ही है । भेड़िये तो दिन में भी दिख जाते हैं और शेर दादा कहीं घूमते मिल गये, शिकार की तलाश में, तो उनकी यात्रा अवश्य सफल हो जाएगी ।

मन में अजीब उलझन थी, पर भय नहीं था । क्योंकि, युवावस्था आत्मविश्वास का काल होता है । मैं आंख मूंदकर दाहिनी ओर चलता गया । पर कितना चलूं ? यह गर्त तो बीसियों मील तक फैला है । बैठूं भी तो कहां ? हाथियों के घंटे सुनायी दे जाएं तो भी कुछ अंदाज लगे । प्रकाश तो इतने गहरे गर्त से, जिसके दोनों ओर दो-दो सौ फीट ऊंची पहाड़ी दीवारें खड़ी हैं, दिखेगा नहीं । लगने लगा, आज जीवन का अंत आ गया है । यहां कभी किसी को मेरे मरने का पता भी नहीं लगेगा । शायद, मरने के बाद भी आत्मा यहीं मंडराये ।

मैं चलता गया-चलता गया । एकाएक मनुष्य के बोलने की आवाज कानों में पड़ी । अब खाई से बाहर निकलना चाहिए । अवश्य ही यहां चढ़ाव सरल होगा । मैंने ऊपर का रास्ता टटोलना प्रारंभ किया । गिरते-पड़ते, नन्हें पौधों की डालों का सहारा लेकर, कहीं पत्थर पकड़कर, कहीं घिसटकर, कहीं बैठे-बैठे सरककर आखिर, घंटेभर में [illegible] पार कर लिया ।

यह एक संयोग था कि जिस जगह पर मैं किनारे लगा, वहां दो-तीन झोपड़ियां थीं । उन्हीं से मानव-स्वर कान में पड़ा था । मैंने उनमें से एक व्यक्ति से पता-ठिकाना मालूम किया । मैं कोई चार मील भटक गया था । थोड़ा लालच देने पर वह व्यक्ति साथ हो लिया । घंटे-डेढ़ घंटे उलटी दिशा में लौटने के बाद हाथियों का थान दृष्टिगोचर हुआ । मेरे पांव हाथीपांव हो रहे थे । उठने को तैयार नहीं । फिर जैसे-तैसे ऊबड़-खाबड़ रास्ते में झकोले खाते ग्यारह बजे रात को मेरे पैरों ने अपने बंगले का द्वार पाया ।

वहां सब लोग मुझे दूर-दूर तक ढूंढ़कर निराश हो चुके थे । [illegible] और मैं सबसे लिपटकर मिला । ऐसा मिलन-सुख भी जीवन में बार-बार नसीब नहीं होता । पर मेरे मूर्खताभरे साहस पर सब अवाक् थे ।

मैं आज भी चिकल्दा की रोमांचक शाम को भूल नहीं पाता ।

—ई २/७३ महावीर नगर
भोपाल-४६२०१६

विधि-विधान

सौतेले भाई की मांग

जी.विश्वकर्मा, धमतरी : हम सगे तीन भाई थे (एक भाई हाल ही में दिवंगत हुए हैं) हमारे दो सौतेले भाई भी हैं । हमारी बूढ़ी दादी ने अपनी जमीन की वसीयत हमारी नाबालिग अवस्था में ही कर दी थी । हमारे पिता ने दो शादियां की थीं । अब हम सभी बालिग हो चुके हैं । लेकिन, जो सबसे बड़ा भाई (सौतेला) है, वह हमारी दादी की वसीयत को मानने से इनकार करते हुए इसी में अपना हिस्सा होने की मांग करता है । क्या इसमें सभी भाइयों की सहमति आवश्यक है ?

संपत्ति के स्वामी को यह अधिकार है कि वह अपनी संपत्ति किसी भी व्यक्ति को दे या अपने स्वर्गवास के बाद देने के लिए वसीयत कर दे । [illegible] जिसके पक्ष में वसीयत की गयी है, वह व्यक्ति वसीयत में वर्णित संपत्ति का अधिकारी माना जाएगा । इसके लिए यह आवश्यक है कि वसीयत नियमानुसार लिखी हुई हो । वसीयत करने के लिए संपत्ति के स्वामी को किसी भी व्यक्ति की अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं होती ।

शर्मा का पुत्र परसाई

संजय परसाई, रतलाम : मेरे पिता सरकारी कर्मचारी हैं और मैं एक प्राइवेट संस्थान में काम करता हूं । मेरे पिता अपने नाम के साथ जाति-सूचक नाम शर्मा लगाते हैं, वैसे वह परसाई हैं । मेरे नाम में आरंभ से ही परसाई लगा हुआ है, तो क्या इससे भविष्य में मुझे कोई परेशानी हो सकती है ?

आपकी परेशानी निराधार है । पिता द्वारा एक ही जाति का एक उपनाम लिखना तथा पुत्र द्वारा दूसरा उपनाम लिखना कोई नयी बात नहीं है । यह आवश्यक नहीं है कि पुत्र भी वही उपनाम लिखे, जो पिता लिख रहे हों । इन उपनामों की वजह से आपको भविष्य में कोई परेशानी नहीं आएगी, आप निश्चिंत रहें ।

लड़की का हिस्सा

एम.रानी, जमालपुर : हम चार भाई-बहनों में मैं सबसे बड़ी हूं । एक बहन की शादी पर पिताजी ने खूब दान-दहेज दिया, जबकि मेरी शादी में कुछ नहीं दिया । बड़ी होने के नाते पंद्रह साल तक मैंने मां-बाप की अनेक प्रकार से आर्थिक सहायता की, फिर भी उनका कहना है कि मैं उन्हें प्यार नहीं करती । इसलिए मुझे थोड़ी-सी ही जमीन देंगे । अब मुझे लगने लगा है कि वे मुझे कुछ भी नहीं देंगे । क्या मां-बाप की संपत्ति में कानूनन मेरा हिस्सा नहीं है ?

हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम के अंतर्गत पुत्र व पुत्रियों को पिता की संपत्ति में समानाधिकार प्राप्त हैं । पिता की संपत्ति में लड़की का अधिकार कानून

वीकार करता है ।

किसी लड़के या लड़की के विवाह पर ख़र्च कम हो सकता है और दूसरे के विवाह पर अधिक । इसलिए विवाह पर हुए खर्च से उत्तराधिकार का अधिकार प्रभावित नहीं होता ।

कैसे मिलेगा वेतनमान

बृजमोहन जुयाल, देहरादून : मैं जल संस्थान में पप अटैंडेंट पद पर कार्यरत हूं । मेरी नियुक्ति के समय आई.टी.आई. की योग्यता निर्धारित नहीं थी । लगभग दो वर्ष पहले विभाग द्वारा ९५० रुपये का वेतनमान इस पद पर (मुझ सहित) सभी नियमित कर्मचारियों को दिया गया था, जो लगभग छह माह पश्चात रिकवरी सहित बंद कर दिया । दो माह पूर्व विभाग ने इसी पद पर ७७५ रु. के स्थान पर ८२५ रु. का वेतनमान देना शुरू कर दिया, लेकिन ८२५ रु. के वेतनमान को पाने के लिए मानदंड आई.टी.आई. (योग्यता) रख दिया । मुझे यह वेतनमान किस प्रकार मिल सकता है ?

पद का सृजन करते समय उस पद के लिए भरती नियम बनाये जाते हैं । इनमें पद के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता भी रखी जाती है । किसी व्यक्ति की नियुक्ति के समय जो भी योग्यता किसी पद विशेष के लिए निर्धारित की गयी हो, उसीके आधार पर चयन किया जाता है । पद के लिए निर्धारित योग्यता में परिवर्तन का प्रभाव परिवर्तन से पूर्व हुई नियुक्तियों पर नहीं होना चाहिए । निर्धारित वेतनमान को भी पूर्व नियुक्त व्यक्तियों के लिए कम नहीं किया जा सकता । उचित यह रहेगा कि आप विभाग के आदेश को इलाहाबाद उच्च न्यायालय में चुनौती दें । समादेश याचिका द्वारा न्यायालय से विभाग को पूर्व निर्धारित वेतनमान देने का आदेश देने की प्रार्थना भी की जा सकती है ।

जिंदगी बरबाद है

विकास, दिल्ली : मेरी शादी घरवालों ने उस समय कर दी थी, जब मैं बहुत छोटा था । इस समय मेरी उम्र बाइस साल की है और पत्नी मुझसे काफी बड़ी, तीस साल की है । वह बदसूरत और नासमझ है । मैं अब अपनी मरजी से दूसरी शादी करना चाहता हूं । इस पर

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ— रामप्रकाश गुप्त

उसके मां-बाप कानूनी कार्यवाही की धमकी देते हैं । मेरी जिंदगी तो बरबाद हो गयी है । बताइए, मैं क्या करूं ?

आप अब ऐसा क्यों मानने लगे हैं कि आपकी जिंदगी बरबाद हो गयी है जबकि आप इतने समय से अपनी पत्नी के साथ रह रहे हैं । पत्नी की आयु पति से अधिक होना कोई ऐसा कारण नहीं है कि जिसके आधार पर विवाह को अवैध ठहराया जा सके । पत्नी के नासमझ होने से आपका क्या आशय है, यह स्पष्ट नहीं है । बदसूरती के आधार पर भी संबंध-विच्छेद की अनुमति कानून नहीं देता । एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह नहीं किया जा सकता ।

पत्नी के मां-बाप कानूनी कार्यवाही की धमकी ठीक ही देते हैं । यदि आप दूसरा विवाह कर भी लेते हैं, तो आपकी पहली पत्नी आपके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही कर सकती है और आपको सजा हो सकती है ।

दीवानी प्रक्रिया संहिता

केदारनाथ, पटना : गत वर्ष दूरदर्शन के कानूनी सलाह कार्यक्रम में दीवानी मामलों में प्रतिवादी के विरुद्ध न्यायालय द्वारा डिग्री जारी किये जाने पर डिग्री लागू करने के बारे में एक कानून की चर्चा की गयी थी । शायद, उसे डिग्री इंप्लीमेंटेशन एक्ट कहा गया था । किसी विशेष स्थिति में डिग्री कैसे कार्यान्वित की जाएगी तथा कब यह लागू नहीं होगी ?

प्रतिवादी को किस स्थिति में कितने समय के लिए जेल भेजा जा सकता है, इस बात की चर्चा की गयी थी । मैंने जब कुछ वकीलों से इस बारे में पूछा तो मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उन्हें ऐसे किसी कानून के बारे में जानकारी नहीं है । कृपया, बताएं कि क्या वास्तव में ऐसा कोई कानून है । और यदि है तो उसे किस नाम से जाना जाता है तथा उस कानून की पुस्तक कहां मिल सकेगी ?

दीवानी प्रक्रिया संहिता में न्यायालय द्वारा दी गयी डिग्री को लागू करवाने की प्रक्रिया भी दी गयी है । डिग्री को लागू करवाने के लिए संहिता के आदेश २१ के अंतर्गत कार्यवाही की जा सकती है । दीवानी प्रक्रिया संहिता किसी भी कानून की पुस्तकों के विक्रेता के पास से प्राप्त की जा सकती है ।

दादाजी की जमीन

अशोक कुमार, बगहा : दादाजी ने अपने नाम से एक जमीन खरीदी थी । लेकिन उस जमीन को उनके छोटे भाई ने अपने नाम दाखिल-खारिज करा लिया । दादाजी के तीन भाई थे, उन्होंने अपने पिताजी के सामने फेमिली एग्रीमेंट द्वारा पांच लोगों को गवाह बनाकर आपस में बंटवारा कर लिया था । लेकिन बंटवारे का जो कागज मेरे दादाजी को मिला था, उसमें उस जमीन का कोई जिक्र नहीं है । दादाजी को गवाह बनवाया गया था । पहले पत्रे के मजमून पर दादाजी के दस्तखत हैं । बाकी पत्रों पर पंच लोग गवाह हैं तथा उनके पिताजी के दस्तखत हैं, क्या मैं उस जमीन पर चुनौती दे सकता हूं ?

पारिवारिक समझौता केवल उस संपत्ति के बारे में ही मान्य है, जिसका उल्लेख समझौते में किया गया है । पंच फैसले द्वारा या आपसी समझौते द्वारा जिस संपत्ति का बंटवारा हुआ, वह लिख दी गयी ।

इस समझौते पर गवाह के रूप में या पक्षकार के रूप में हस्ताक्षर करने से समझौते में वर्णित संपत्ति के अलावा अन्य संपत्ति प्रभावित नहीं होती ।

दादाजी के भाई द्वारा दादाजी की संपत्ति को अपने नाम करा लेने को चुनौती दी जा सकती है । पुत्र या पौत्र के होते हुए किसी व्यक्ति की संपत्ति का अधिकारी उस व्यक्ति का भाई नहीं हो सकता । •

मुखौटा

● डॉ. भगवती शरण मिश्र



कल समाचार-पत्रों में पढ़ा तो क्षोभ हुआ । कई लोग सी.बी.आई. की जांच के चक्रव्यूह में फंस अपनी ईमानदारी और निष्ठा के कृत्रिम आवरण को उतार फेंकने पर विवश हो गये थे । बड़े-बड़े आई.ए.एस. अधिकारियों का स्वयं आरोपित अभिजात्य बात-की-बात में वाष्प बनकर वायु में तिरोहित हो गया था । ये सब-के-सब सहसा असामान्य से सामान्य हो आये थे —निरीह । सी.बी.आई. के महज डी.एस.पी. अथवा इंसपेक्टर स्तर के अधिकारियों के समक्ष वरीयतम आई.ए.एस. अधिकारियों की अगाध विद्या-बुद्धि, अपार सूझबूझ एवं अकाट्य तर्क की अतिप्रचारित प्रतिभा, क्षण-मात्र में धूल-धूसरित हो गयी थी —भू-लुंठित । वे थानेदार की साधारण 'सेल' के बंदी-सा बिलबिलाकर सब कुछ उगल पड़े थे । अपनी करतूतों के साथ अपने राजनीतिक आकाओं के काले कारनामों को भी । उनके दबाव और अनुचित पैरवियों को भी जिन्हें इन लोभग्रस्त, कर्तव्यच्युत, अधिकारियों ने दो कदम आगे बढ़कर ही लपका था । किसी को मुख्य-सचिव बनना था, तो किसी को मुख्य-सचिव के पद पर तीन-तीन सेवा-विस्तार पाकर भी किसी बूढ़े अपंग बैल की तरह जमे रहना था । किसी को डी.जी.पी. बनना था तो किसी को विजिलैंस और सी.आई.डी. में

मुख्यालय के बड़े पदों पर आठ-आठ, दस-दस वर्षों तक बने रहना था। ऐसी हालत में अपने राजनीतिक संरक्षकों के इशारों पर मदारी के हाथ पड़े बंदर की तरह उन्हें नाचना ही था। पर अंगुलियां दोनों की घी में थीं। राजनेता करोड़ों का वारा-न्यारा कर रहे थे, तो प्रशासक और पुलिस-वर्ग लाखों में खेल रहे थे। हवाई-यात्राएं कर रहे थे, पांच सितारा होटलों की सुविधाएं भोग रहे थे। ऐसे में पशु-महाघोटाले की संचिकाओं में या तो गोल-मटोल और अर्थहीन टिप्पणियां टांकी जा रही थीं या अतिसंवेदनशील संचिकाएं धूल चाट रही थीं अथवा कहिए कि धूल इन्हें चाट रही थी।

उच्च न्यायालय के कोड़े पर कोड़े खा सी.बी.आई. का अड़ियल टट्टू अब सरपट दौड़ने लगा था और उसके खुरों तले बड़ी-बड़ी हस्तियां रौंदी जा रही थीं।

राज्य के सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी की गरदन जो उसकी तथाकथित ईमानदारी और दक्षता तथा अनुभव-जनित ज्ञान के कारण सदा उसके प्रकोष्ठ के परदे में लगे डंडे की तरह तनी रहती थी, आज सहसा कच्चे बांस की कमजोर टहनी की तरह झुक गयी थी। उसके मुख पर सदा मढ़ा एक भयावह आतंक जो उसके अधीनस्थ अधिकारियों को उसकी आंखों में आंखें भी नहीं डालने देता था, आज किसी सांप के सूखे केंचुल-सा गिर गया था और उसका बेनूर और मजबूर चेहरा सचिवालय के घंटाघर में ही लगी, विक्टोरिया-काल की घड़ी की पेंडुलम की तरह ही लटक आया था।

सुना तीन घंटों की कड़ी पूछताछ में वह इतना टूट गया था कि बाहर खड़े समाचार-प्रतिनिधियों और कैमरा टीमों को वह अपना हुलिया दिखाने को कतई तैयार नहीं था। इसके सदा तने रहनेवाले कंधे रुई के बोरे की तरह झूलकर लटक गये थे और सदा लंबाकार रहनेवाली उसकी गर्वीली गरदन को—जैसे सी.बी.आई. की बिल्ली ने मरोड़ दिया था। अपने तीन-तीन सेवा विस्तारों के लिए उसने अपने जमीर और आत्मसम्मान का सौदा बेहिचक कर लिया था और उसके एवज में उसे क्या कुछ खोना पड़ा था इसका भी खुलासा उसने जांच-दल के घाघों के सामने कर दिया था। अब उसके आका उसकी बेवफाई को कोसें तो कोसें अंततः था तो वह साधारण मांस-मज्जा का ही बना। मुख्य अधिकारी होने से उसका मन-मस्तिष्क इस्पाती तो नहीं बन गया था कि वह नहीं टूटे।

सी.बी.आई. की पूछताछ के पश्चात फोटोग्राफरों और अन्य 'मीडिया परसनों' से तू डाल-डाल तो मैं पात-पात का खेल खेलनेवाले इस अधिकारी ने अपनी भागदौड़ में बाइस वर्ष के किसी रंगरूट अधिकारी को भी मात दे दी और पिछले रास्ते की तंग सीढ़ियों से उतरता हुआ वह औंधे मुंह भी गिर पड़ा। ठेहनु में मोच आ गयी पर वह उठकर पुनः भागा और भाग-भागकर गिरा।

यही हालत इस सर्वोच्च प्रशासनिक कुरसी पर गत चार वर्षों से ललचायी दृष्टि लगाये एक अन्य वरीय अधिकारी की भी थी। डाल का पका आम कभी भी इसकी झोली में टपकाया जा सकता था। इस लालच पर इससे हद दरजे की गैरकानूनी हरकतें करा सरकारी तिजोरी में

झाड़ू फिरवायी गयी । यह बात अलग थी कि वह एक कुशल झाड़ू-कश निकला और खजाने के अधिकांश हीरे-मोती अपने आकाओं और उनके दलालों की तरफ करने के साथ कुछ कीमती पत्थरों को अपनी तिजोरी की ओर भी बुहार ले गया और उसकी बदकिस्मती यह कि वह उनकी चमकाहट को झेल पाने में समर्थ नहीं हो सका और उनके बल पर अपनी हथेलियां पीट लीं और अपने गृह राज्य में फार्म हाउस खड़े कर लिये । कह ले इसको कोई चोरी और सीनाजोरी पर उसे कहां पता था कि बड़े-बड़े घोटाले रूपी जिन्नों को बोतलों की

> ***मैं अखबार को आगे नहीं पढ़ सका था । घोर अवसाद से ग्रसित हो मैं सिर पकड़कर बैठ गया । मेरी आस्था चाय के प्याले की तरह चूर-चूर हो गयी थी । अपनी लंबी नौकरी के दौरान किसी मनुष्य को समझने में मुझे इतनी बड़ी असफलता नहीं मिली थी ।***

काग के नीचे कैद करनेवाले उसके अधीनस्थों और आकाओं दोनों को धत्ता बता यह जानवर-पालन घोटाले का जिन्न बोतल की कैद को एक झटके में तोड़ सबके सामने खड़ा हो जाएगा —भूधराकार, भयानक ।

खैर मुझे इस सबका कोई मलाल नहीं था ।

मुझे मलाल था तो अपने विश्वास के टूटने का । अपनी आस्था के खंडित होने का ।

वह भी एक आई.ए.एस. अधिकारी था । उन दिनों मैं एक विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र पढ़ा रहा था तो वह मेरा एक प्रिय छात्र था । मेधावी और लगनशील । विनम्र हद दरजे का । उससे मुझे बहुत आशाएं थीं ।

मैं उसके बारे में कुछ और जानता-देखता इसके पूर्व ही मैं स्वयं सरकारी नौकरी में आ गया ।

एक दिन मैं दौरे पर जिला-मुख्यालय से बाहर गया था । सर्किट हाउस के अपने कमरे के किवाड़ों को अंदर से उढ़काकर आराम कर रहा था कि ऑडर्ली ने दरवाजे पर थाप दी और किवाड़ों को धीरे से धक्का देकर अंदर आ गया ।

"बोलो ।" मैंने उसकी तरफ प्रश्न-भरी आंखें उठायीं ।

"बाहर एक साहब खड़े हैं । कहा है अगर आप इजाजत दें तो वह आपके दर्शन करना चाहेंगे ।"

"कुछ नाम बताया ?"

ऑडर्ली ने उसका 'विजिटिंग कार्ड' रख दिया । नाम पढ़कर आश्चर्य हुआ । विश्वविद्यालय का वही मेरा प्रिय छात्र प्रतिभाशाली और विनयी । मुझे गर्व हुआ । वह मेरी आशा के अनुकूल ढला । वह स्वयं भी एक आई.ए.एस. अधिकारी बन गया था । अभी पास के ही एक अनुमंडल में एस.डी.ओ. लगा था ।

मैं तत्काल अपने पलंग पर उठ बैठा और मैंने उसे अंदर बुलवा लिया ।

"सर । आपके दर्शन करने आ गया । आप मेरे गुरु... ।" कहकर वह मेरे चरणों की ओर बढ़ने को हुआ ।

"नहीं, नहीं इसकी आवश्यकता नहीं... ।" मैंने उसके हाथों को थाम लिया । उसे सामने की कुरसी पर बैठने को बोला ।

"नहीं सर । आपके सामने... ।" वह जब तक रहा खड़ा ही रहा ।

"कहो, कैसा चल रहा है ? मुझे तुम्हारी सफलता पर नाज है ।" मैं उसकी ओर स्नेहपूर्ण दृष्टि डालते हुए बोला ।

"सब आपका आशीर्वाद है । आप ही की प्रेरणा का फल है यह सब ।" वह विनम्र भाव से बोला ।

"सरकारी सेवा, वह भी देश की इस सर्वोच्च सेवा में बहुत फूंक-फूंककर पैर रखना पड़ता है । मुझे तुमसे... ।"

"निश्चिंत रहें सर ।" उसने मुझे बीच ही में टोका, "मैं आप ही के नक्शे क़दम पर चलने को कटिबद्ध हूं ।"

"क्या मतलब ?" मैंने कुछ आश्चर्य से पूछा ।

"आपकी ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा की बात हवाओं पर चढ़ फैलती रही है । आप जहां जिस पद पर रहे एक प्रतिमान गढ़ा । सब कुछ सुन-सुनकर गौरवान्वित और आह्लादित भी होता रहा हूं । अपने गुरु की बढ़ती प्रतिष्ठा पर किस शिष्य का सिर गर्व से उन्नत नहीं होगा ? आश्वस्त रहें आपका यह छात्र आपके नाम को आंच नहीं आने देगा ।"

"मुझे तुमसे यही अपेक्षा है" मैं आश्वस्त होते हुए बोला, "इस नौकरी में पद-प्रतिष्ठा है तो प्रलोभन की भी कमी नहीं । भटकानेवाले बहुत मिलेंगे और पतन की राह बहुत फिसलनभरी होती है । एक बार फिसले तो संभलना बहुत मुश्किल होता है ।"

"मैंने हराम के पैसे को हाथ नहीं लगाने की कसम खा रखी है । आपको मुझसे कभी कोई शिकायत नहीं होगी ।"

"ठीक है । अपने दायित्वों का पूरी ईमानदारी और लगन से निर्वाह करते चलो । इस राह में कुछ कष्ट अवश्य है पर अंततः यह तुम्हें शोहरत की चोटी पर पहुंचाकर रहेगी । जाओ ईश्वर तुम्हें सही राह पर चलने की ताकत दे ।"

वह मेरे नहीं-नहीं करने पर भी मेरे पैरों का स्पर्श कर बैठा और यह कहते हुए बाहर हो गया, "आपके आराम में बाधा दी, इसके लिए क्षमा करेंगे । मैं आपकी बातों को गांठ बांधकर रखूंगा ।"

उसकी दिनानुदिन फैलती लोकप्रियता की बात सुन-सुनकर मैं प्रसन्न होता रहा । उसे कठिन से कठिन दायित्व मिले और सबका निर्वहन उसने बड़ी सफलतापूर्वक किया । एक बार राज्य का एक बड़ा भाग जलप्लावित हो गया और वहां के अधिकारियों की लोलुपता से जनता तबाह हो गयी । सहायता की सामग्री पीड़ितों के बदले अधिकारियों के पॉकेट में जाने लगी । ठेकेदारों और अधिकारियों की मिलीभगत से वह कालाबाजार में पहुंचने लगी, तो 'रिलीफ' का सर्वोच्च अधिकारी के रूप में उसकी ही वहां पदस्थापना हुई ।

उसे सबसे अधिक शोहरत तो तब मिली जब एक पिछड़े जिले के जिलाधिकारी के रूप में उसने दौड़-धूप कर भारी सरकारी सहायता प्राप्त की और उससे समाज के उपेक्षित वर्ग-अनुसूचित जातियों और जनजातियों की

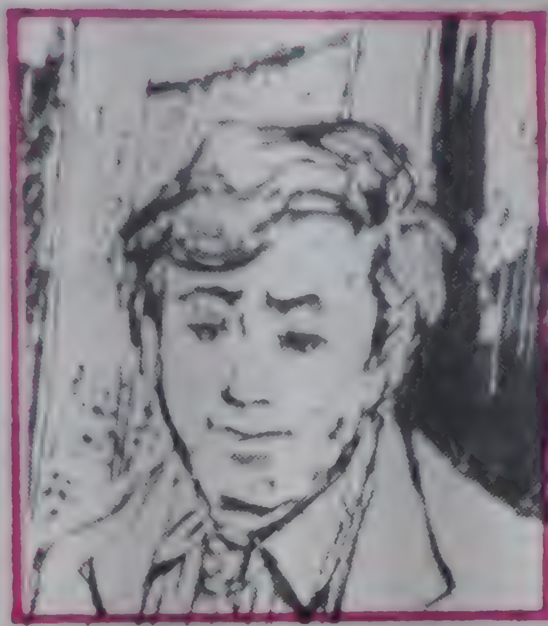
एक पक्की बस्ती ही खड़ी कर दी ।

थोड़े ही दिनों में चारों ओर उसकी ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा का डंका बज गया । जनता उसके नाम की दीवानी हो गयी । मेरा सीना गर्व से फूल गया । आखिर वह मेरा शिष्य, मेरा अनुयायी जो था । उसकी ऐसी और सारी उपलब्धियों, सफलताओं और सत्यनिष्ठा की कहानियां मेरे कानों में पड़ती रहीं । 'मीडिया' से उछलती रहीं । मैं बाग-बाग होता रहा ।

किंतु यह क्या ? आज के अखबार की हेड लाइन पढ़कर मैं हतप्रभ रह गया था । अखबार के साथ-साथ चाय का प्याला भी मेरे हाथ से छूटकर चूर-चूर हो गया । मेरे कपड़ों को चाय की बूंदें दागदार कर गयीं ।

उसे चारा-घोटाले का एक प्रमुख आरोपी बनाया गया था । सी.बी.आई. ने उससे गहरी पूछताछ की थी । इधर कुछ वर्षों तक वह इस विभाग का सचिव रहा था और उसने कड़ी पूछताछ में सब कुछ उगल दिया था । कई बैंकों में उसके खाते थे जिनमें एक करोड़ से अधिक रुपये पड़े थे । देश के सभी प्रमुख शहरों में उसके भव्य भवन बने खड़े थे । और तो और घोटालेबाजों के साथ ही नहीं उनके द्वारा खरीदे टिकटों पर भी उसने देश-विदेश की हवाई यात्राएं भी की थीं । पांच सितारा होटलों में मजे किये थे ।

उसने यह भी स्वीकार किया कि इस बाढ़ के समय जब उसे विशेष 'रिलीफ कमिश्नर' बनाकर भेजा गया था तब भी उसने लाखों का वारा-न्यारा कर लिया था । यह बात भी खुलकर सामने आयी कि अनुसूचित जातियों और जनजातियों की उस बस्ती को खड़ी करने



में भी सरकार को उसने करोड़ों रुपये का चूना लगाया था । इंजीनियरों से मिलकर सीमेंट में बालू की मिलावट पूरी उदारता से की गयी थी तथा मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी का आधा भी नहीं मिला था ।

मैं अखबार को आगे नहीं पढ़ सका था । घोर अवसाद से ग्रसित हो मैं सिर पकड़कर बैठ गया । मेरी आस्था चाय के प्याले की तरह चूर-चूर हो गयी थी । अपनी लंबी नौकरी के दौरान किसी मनुष्य को समझने में मुझे इतनी बड़ी असफलता नहीं मिली थी ।

जमीन पर पड़े अखबार के समाचार की अंतिम पंक्ति पर मेरी दृष्टि पड़ी ।

वह विधिवत 'चार्जशीटेड' होनेवाला था । अब वह किसी भी दिन जेल के सींखचों के अंदर हो सकता था ।

मैं कोने में रखे टेलीफोन तक गया । जी में आया, उससे एक बार दूरभाष से ही बात कर लूं, पर मेरे मन ने इसकी गवाही नहीं दी । फोन के पास पहुंचने के प्रयास में पहुंचता मेरा हाथ कांपकर रह गया ।

—६१, आनंदपुरी, पटना-८००००१

व्यंग्य

दो पड़ोसिनों में तू-तू, मैं-मैं हो गयी ।
पहली बोली :''मैं तो आपको इज्जतदार महिला समझती थी ।''
दूसरी :''मैं भी आपको ऐसा ही समझती थी ।''
पहली :''तो आप ठीक समझती थीं । गलतफहमी का शिकार मैं हुई ।''

●

अंजु :''मेरे पति शेर की तरह बहादुर, चीते-जैसे फुरतीले, खरगोश के समान चतुर तथा हाथी की तरह मस्त चाल चलते हैं ।''
मंजु :''उन्हें देखने के लिए कितने का टिकट लगता है ?''

● पूनम भट्ट

पत्नी :''कौन ज्यादा संतुष्ट है— जिसके पास आठ लाख रुपये हैं, या जिसके पास आठ बच्चे हैं ?''
पति :''जिसके पास आठ बच्चे हैं ।''
पत्नी :''वो कैसे ?''
पति,:''जिसके पास आठ बच्चे हैं वह और नहीं चाहता है और जिसके पास आठ लाख रुपये हैं, वह और चाहता है ।''

●

रमा :''क्योंजी, तुम तो विवाह से पूर्व कहा करते थे कि मैं तुम्हारी छोटी-से-छोटी इच्छा पूरी करूंगा ।''
दिनेश :''हां, हां— पर अब तक यही देख रहा हूं कि तुम्हारी कौन-सी इच्छा इतनी छोटी है, जिसे मैं पूरी कर सकूं ।''

●

पति-पत्नी म्यूजियम देखने गये । पति:(पत्नी से), ''यहां दुनिया के सारे प्राचीन हथियार हैं ।''
''यह संग्रहालय बनानेवाले जरूर अविवाहित रहे होंगे,'' पत्नी ने कहा ।
पति :''क्यों ?''
पत्नी :''इनमें औरतों का हथियार बेलन तो है ही नहीं ।''

● नरेन्द्र सिंघवी

एक सहेली (दूसरी से) :''कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि मैं कैसा पति खोजूं ?''
''मेरी मानो तो तुम पति खोजना बंद कर दो और किसी कुंवारे नौजवान की खोज शुरू कर दो ।''

●

बैंक कैशियर:(युवती से), ''इस चेक पर हस्ताक्षर आपके पति के नहीं लगते हैं ।''
युवती :''हो सकता है । जब वह मेरे लिए किसी चेक पर दस्तखत करते हैं तो अपने आपे में नहीं रहते ।''

●

अपराधी को दो वर्ष की कैद की सजा सुनाते हुए जज ने पूछा :''तुम्हें और कुछ कहना है ?''
अपराधी :''साहब, मेरे लिए एक डायरी-पैन का और इंतजाम करवा दीजिए, पता नहीं वहां किस राष्ट्रीय हस्ती से भेंट हो जाए ।''

●

एक मनचले ने दीवार पर लिखा :''शादी जीवन में सिर्फ एक बार ही होती है ।''
दूसरे दिन उसके नीचे लिखा मिला :''बड़ी दुर्घटनाएं रोज-रोज नहीं घटतीं ।''

●

पत्नी :''चलो बाजार से साड़ी खरीद लायें ।''
पति :''क्यों ?''
पत्नी :''आजकल साड़ी के साथ एक चम्मच मुफ्त मिल रहा है, हमें चम्मचों की जरूरत है ।''

● डॉ. श्याम मनोहर व्यास

तरंग

चारा
अपनी आंखों के आगे
कुछ ऐसा
गुजरते हुए देखा है
मैंने पशुओं का चारा
चरवाहे को
चरते हुए देखा है ।

पहाड़ के नीचे
कभी खड़ा था
सीना ताने
और मुट्ठी भींचे
मगर अब आया है
यह ऊंट
पहाड़ के नीचे ।

● अमर आनंद 'अमरेश'

छौंक
वे अपने सहयोगियों
से मिलकर
खिचड़ी सरकार बनाएंगे
ऊपर से उसमें
घोटालों का
छौंक लगाएंगे ।

मापदंड
कला के साथ
दोहरे मापदंड अपनाये
जाते हैं
ताजमहल बनाने
वालों के हाथ
काटे जाते हैं
अश्लील चित्र बनानेवाले
पुरस्कार पाते हैं ।

धर्म
वे अपने पत्नी
होने का धर्म
निभाती रहीं
पति रिश्वत लेने
के जुर्म में
पकड़े जाते रहे
पत्नी रिश्वत
देकर छुड़ाती रहीं ।

● दीपक चतुर्वेदी

आश्वस्त
गबन-घोटालों से जुड़कर
वह और भी प्रसिद्धि पा रहे हैं
अपनी जीत के लिए
आश्वस्त नजर आ रहे हैं ।

लोकतंत्र
जिसके हाथ में यंत्र
उसकी फूंक भी मंत्र
यही है लोकतंत्र ।

● संतोषकुमार मोदी

चांद-चंदा
वे
बचपन में
'चांद' मांगते थे
जवानी में
चांद-सी मांगते थे
और अब
बुढ़ापे में
'चंदा' मांगते हैं ।

परिवर्तन
कुरसी पाते ही
उनका कद
इतना बढ़ गया कि
उनकी नजर में
हर समस्या का कद
छोटा हो गया ।

प्रगति
वे परिवार-नियोजन
के प्रचार में
इतने खो गये
कुछ ही वर्षों में
उनके ही
दर्जनभर बच्चे
और पैदा हो गये ।

● प्रदीप शर्मा

एक ?
एक पत्रकार ने
मंत्रीजी से प्रश्न किया
महोदय
आप देश को
इक्कीसवीं सदी में
कैसे ले जाएंगे ?
मंत्रीजी ने
मुसकराकर उत्तर दिया
भ्रष्टाचार, लूटमार और
दंगा-फसाद में
गजब की तेजी लाएंगे
इससे बेरोजगारों को
रोजगार दिलाएंगे

● प्रमोद राज पुरी

अर्वाचीन युग में बसंत के आगमन की विधिवत सूचना हमें मच्छरों से प्राप्त होती है क्योंकि पीली सरसों, बौराये आम, नाना प्रकार के वृक्ष कठोर कानूनों के साये में दूर-दूर तक दिखायी नहीं देते और प्लास्टिक के कृत्रिम फूल, लताएं, पौधे, घर-आंगन, ड्राइंगरूम में सदाबहार बसंत की उपस्थिति दर्शाते हैं तो रंगीन टी.वी. पर विभिन्न चैनलों की रंगीन छटा में पता ही नहीं रहता कि बसंत भी कुछ है। जो भी हो बसंत आता है, आकर चला जाता है परंतु मच्छर आते हैं तो आते चले जाते हैं। वे कभी जाते नहीं।

हास्य-व्यंग्य

देख सखी री मच्छर आये

● डॉ. महेश सांख्यधर

यदि मच्छरों की उत्पत्ति का इतिहास खोजें तो पाएंगे कि वे अंगरेजों से भी पहले आये, यवनों, शकों, हूणों से भी पहले आये और यदि मान भी लें कि आर्य कहीं से आये तो मच्छर उनसे भी पहले आये।

वास्तव में अंगरेजों के आने से पूर्व मच्छर संन्यासी जीवन व्यतीत करता था। जंगल में रहता था। जब अंगरेज ने भारतीयों का खून चूसना प्रारंभ किया तो वह बदला लेने के लिए शहरों में आकर गृहस्थ हो गया और सपरिवार अंगरेजों का खून चूसने लगा। इसी डर से अंगरेजों ने शहरों से पृथक सिविल लाइंस बनायीं परंतु मच्छर भारतीय जमींदारों की भांति अंधे या मूर्ख न थे जो अंगरेजों को छोड़कर बस्तियों में अपने ही भारतीयों का खून चूसते रहते। वे सिविल लाइंस में भी जा धमके। अंगरेजों ने मच्छरदानी बनायी, डी.डी.टी. खोज निकाली परंतु मच्छरों ने हिम्मत न हारी, वे मर-मरकर पुनः जन्म लेते रहे और अंगरेजों को काटते रहे। धीरे-धीरे वे अंगरेजों की चाल समझने लगे और सिविल लाइंस के अतिरिक्त उन बस्तियों में भी फैल गये जहां अंगरेजों के पिछलग्गू रहते थे।

अंगरेज, अंगरेजी और अंगरेजियत जब गांवों में पहुंची तो मच्छरों को गांवों में भी पहुंचना पड़ा और वे निरंतर अंगरेजी, अंगरेजियत के विरुद्ध अपना बिगुल बजा रहे हैं। भारतीय संस्कृति के विरोधियों का खून चूस रहे हैं वरना जब तक गांवों में विशुद्ध भारतीय संस्कृति रही वहां मच्छर नहीं थे। ज्यों-ज्यों विदेशी संस्कृति बढ़ रही है मच्छर बढ़ रहे हैं, जहां-जहां फैल रही है, वहां-वहां मच्छर फैल रहे हैं उसे मिटाने के लिए अब वे पहले की तरह वर्ष में चुनावी दलों के समान एक-दो बार नहीं आते, स्थायी रूप से पाला और लू के थपेड़े झेलकर भी इस विदेशी संस्कृति और भाषा का विरोध कर रहे हैं।

अंगरेजों के जाने के बाद हमारी सरकार ने भ्रमवश मच्छरों को मिटाने का बीड़ा उठा लिया और संपूर्ण देश में 'न मच्छर रहेंगे न मलेरिया' का आंदोलन छेड़ दिया। मच्छर सरकार की

गलतफहमी समझकर प्राणायाम साध गये। कई वर्षों बाद सरकार समझ गयी कि मच्छर राष्ट्रीय हैं ये मरकर भी अमर रहेंगे सो उसने भूल सुधारी —'मच्छर रहेंगे परंतु मलेरिया का अंत हो जाएगा।' धीरे-धीरे स्वास्थ्य विभाग और लोक सेवकों की समझ में आ गया कि मच्छरों को मारना न देश के हित में है न संस्कृति और न समाज के। इसलिए उन्होंने शासन की डी.डी.टी., बी.एच.सी. पाउडर छिड़काव की नीति कागजों तक सीमित कर दी। इसके लिए वे सचमुच बधाई के पात्र हैं। बधाई के पात्र स्थानीय निकायों के वे कर्मचारी और अधिकारी भी हैं जो अंगरेजी, अंगरेजियत और विदेशी प्रभाव को रोकने के लिए विभिन्न प्रकार के मच्छरों के मार्ग में आनेवाली बाधाओं को हटा रहे हैं।

मच्छरों से बचने के लिए असली, नकली अंगरेज, कूलर, एयरकंडीशनर, मच्छरदानी आदि नाना प्रकार के हथकंडे अपना रहे हैं परंतु मच्छर प्राण हथेली पर रख कर्त्तव्य पालन के लिए उनमें भी घुस जाते हैं और उनका अंगरेजी खून चूसते हैं, अंगरेजी मानसिकता काटते हैं। मच्छर उन भारतीयों को भी जगाने के लिए ललकारते हैं जो सोये हुए हैं या सो जाना चाहते हैं और देश पर जकड़ते विदेशी शिकंजे, चालों जालों से अनभिज्ञ हैं या अनभिज्ञ बने रहना चाहते हैं। वे ऐसे भारतीयों को जगाने के लिए काटते भी हैं जिन्हें पता ही नहीं कि बसंत आ रहा है और इस बसंत बहार को लूटने के लिए विदेशी कंपनियां आ रही हैं, आतंकवादी आ रहे हैं। वायुयान देश में हथियार गिराकर भागे जा रहे हैं, हमारी भाषा, संस्कृति, विचार मिटाने के



लिए टी.वी. के सहारे मधुर विष आ रहा है, विदेशी रक्त आ रहा है। मच्छर संदेश लाये हैं—"भारतवासियों इस धोखे में मत रहो कि हमने सारी संस्कृतियों, सभ्यताओं को पचाकर अपना अस्तित्व बचाये रखा है। यदि सोते रहोगे तो यह भाषा, संस्कृति, रक्त तुम्हें पचा जाएगा।" इसलिए वे हमें सोने नहीं देते।

अभी तक किसी वैज्ञानिक ने नहीं बताया कि मच्छरों का विकास किस प्राणी से हुआ और भविष्य में ये मच्छर विकसित होकर क्या बन जाएंगे ? अंगरेजों के पूर्ववर्ती भारतीय साहित्य, इतिहास में मच्छरों का वर्णन नहीं मिलता। अंगरेजी काल, पूर्ववर्ती काल में भी कवियों, लेखकों ने उनकी उपेक्षा की, यह खेद का विषय है।

— कविकुल

स्टेशन रोड, बिजनौर (उ.प्र.)

लुप्त हो रहा है जंगल का

प्राणी उद्यान में चीते के बाड़े के पास दर्शक पहुंचते हैं तो कोई उसे शेर कहता है और कोई तेंदुआ उन्हें इन शब्दों के अर्थ का भेद ही नहीं मालूम । जाली के बाहर लगे नाम-पट्ट को पढ़कर वे जान पाते हैं कि यह चीता है । चीता इसका हिंदी नाम है जो अंगरेजी में भी अपना लिया गया है । यह शब्द संस्कृत के चित्रक शब्द का अपभ्रंश है । चित्रक का अर्थ चित्तियोंवाला, चमकीला, प्यारा, पालक के अनुकूल बन जानेवाला, बहादुर जीव है । चीते को गुजराती, मराठी तथा राजस्थानी में चीता, बंगाली में चीता बाघ और तेंदुआ बाघ, गोंडी में चित्रा, कच्छी में चित्रो, कन्नड़ में चि[illegible] सिबुंगी, तमिल में सिबिंगी, तेलुगु में चीता-पुलि, अरबी में फाह्द तथा फारसी में यूज़-पलंग कहते हैं ।

अक्सर तेंदुए और चीते में अंतर नहीं किया जाता । चीता भारत में नहीं है, लेकिन अखबारों में तेंदुए संबंधी छपनेवाले समाचारों में और लेखों में तेंदुए को चीता लिखा जाता है ।

जंगल का राजकुमार

चीते का शरीर सुंदर, गठीला तथा छरहरा होता है । टांगें असाधारण रूप से लंबी होती हैं । चाल आकर्षक होती है । शरीर तेज गति में ये विशेषताएं होती हैं ।

शिकार खेलने में विशेष रूप से दक्ष होने के कारण अंगरेजी में इसे शिकारी तेंदुआ (हंटिंग लैपर्ड) भी कहते हैं । मध्य युग में अंगरेजी में इसे आउंस पाई और चित्तीदार सिंह (स्पोटेड लायन) कहा जाता था । विडाल वंश के इस प्राणी का आधुनिक जीव-विज्ञान में आचिनोक्सिस युबातुस शेबर नाम है । विभिन्न विद्वानों ने इसकी करीब बारह किस्में लिखी हैं । भारतीय चीते को जीव-विज्ञान के विद्वान आचिनोनिक्स युबातुस वेनातिकुस कहते हैं ।

के लिए बना होता है । नाखून कुत्तों के नाखून के समान खुंडे होते हैं । चीते के ऐसे नाखून मारक हथियारों के रूप में काम नहीं आते, इस लिए इन्हें पैना रखने की जरूरत ही नहीं होती ।

चीते के बाल खरवे होते हैं । पूंछ बहुत लंबी, मोटी और सिरे पर झब्बेदार होती है । पूरी रफ़्तार से भागते समय अचानक मुड़ने में पूंछ सहायता करती है । विद्युत की गति से भागते समय पंजे धरती को दृढ़ता से पकड़ लेते हैं । यह समझदार प्राणी है । इसकी निगाह तेज होती है । मैल्कम मेकडानल्ड ने केन्या का खजाना (ट्रेजर ऑव केन्या) नामक पुस्तक में लिखा है कि मुझे केन्या के खूबसूरत जंगली जीवों में से चुनाव करने को कहा जाए तो मैं चीते को सबसे सुंदर प्राणी बताऊंगा । उनकी यह पसंद

ख्यतः इन विशेषताओं पर आधारित है : सरत करनेवाले के शरीर-जैसा सुगढ़ ढांचा, आकर्षक चाल, शिकारी के रूप में शानदार ारनामे, तुलना में कम शर्मीलापन और अपने ही संतुष्टि । चीते को हम जंगल का जकुमार कह सकते हैं ।

चीते और तेंदुए में भेद

दूर से देखने पर चीता और तेंदुआ एक-जैसे मालूम होते हैं, पर इन दोनों में बहुत कम

राजकुमार

● रामेश बेदी

समानता है । तेंदुए के छोटे कद, अधिक लंबाई, छोटी और भारी टांगों की तुलना में चीता ऊंचा होता है । यह ९० से १२० सेंटीमीटर तक ऊंचाई प्राप्त कर लेता है । सिर से पूंछ के सिरे तक इसकी लंबाई १२० सेंटीमीटर और तेंदुए की २१५ सेंटीमीटर होती है । इसकी गरदन तथा टांगें लंबी और शरीर हलका होता है । कंधे उभरे रहते हैं जो एक किस्म का ककुद बनाते हैं । शरीर की बनावट में हम इसे सामान्यतः कुत्ते के अधिक नजदीक पाते हैं, लेकिन वास्तव में यह कुत्ते और बिल्ली का अद्‌भुत मेल है । इन दोनों का संकर संभव हो तो, जो संतान पैदा होगी उसका नमूना चीते को समझना चाहिए । इसका सिर बिल्ली-जैसा होता है और शरीर के कुल आकार की तुलना में बहुत छोटा होता है । आंखें बड़ी होती हैं । गलमूछें बहुत संवेदनशील स्पर्शेंद्रिय का काम करती हैं ।

पैरों में कुत्ते के समान सख्त गद्दियां होती

जंगल का राजकुमार



हैं । पंजे छोटे होते हैं । अगले पंजों में पांच-पांच और पिछले में चार-चार अंगुलियां होती हैं । इनमें तेंदुए के पंजों के समान पूर्णतः अंदर की ओर खिंचनेवाले नाखून नहीं होते । नाखून कुत्तों के समान दृढ़ नहीं होते, अंशतः अंदर खिंच जाते हैं । दरअसल नाखूनों के ऊपर तेंदुए के समान आवरण नहीं होता, ये नंगे रहते हैं । चीता तेंदुए के समान तुरंत पेड़ पर नहीं चढ़ सकता । पेड़ का तना तिरछा लेटा हुआ है तो उस पर चढ़ जाता है । उस पर पंजों को गाड़ने की विशेष जरूरत भी नहीं पड़ती । चीते की पीठ पर ठोस-काले चटाक फैले होते हैं । अंदाज है कि सारी देह पर लगभग २,००० चटाक होंगे । आंख के अंदर के कोने से दो काली रेखाएं आरंभ होकर ऊपर के होंठ पर गलमूछों के बीच में समाप्त होती हैं । चेहरे की इस निशानी द्वारा चीते को अपनी बिरादरी के जानवरों से अलग पहचाना जा सकता है । नाक के दोनों ओर ये काली धारियां ऐसी चमकती हैं मानों अश्रुग्रंथियों से काली स्याही के आंसू बह रहे हों ।

क्या खाता है ?

छरहरे शरीरवाले चीते सामान्यतः छोटे और मध्यम आकार के जानवरों का शिकार करते हैं । कभी-कभी अपने से चार गुना भारी जेबरा—जैसे बड़े जानवरों और जंगल के बड़े पशुओं को भी मार लेते हैं । इस बात पर पूर्णतः विश्वास तो नहीं होता, पर वालिक-जैसे प्रकृतिविद् इसके प्रत्यक्ष गवाह हैं । एक बार उन्होंने चार चीतों को एक जेबरा खाते हुए देखा था । लजीले चीते उन्हें देखकर तुरंत दौड़ गये । जेबरे का मुआयना करने से उन्हें पता चला कि चीतों ने उसे खाना शुरू ही किया था । जेबरे की देह अभी गरम थी और उसके गले पर काटने के निशान थे । यह सोचना युक्तिसंगत नहीं था कि चीतों ने सिंह से अथवा किसी शक्तिशाली तेंदुए से मारा हुआ शिकार छीन लिया था । निःस्संदेह उन्होंने उसे खुद मारा था ।

कभी-कभी चीता बड़ी जाति की हिरणी पर या उसके बच्चों पर लपक पड़ता है । जेबरे को भी मारता हुआ देखा गया है । चीते द्वारा बबून-जैसे खतरनाक बंदरों को मारने के उदाहरण भी मिल जाते हैं ।

बहुत भूखा हो तो चीता खरगोश, खर्वा सूअर, गिनी फाउल और शुतुरमुर्ग के बच्चे-जैसे छोटे शिकार को पकड़ लेता है । यह गिद्ध के मांस को पसंद नहीं करता ।

मुख्यतः दिन में और प्रायः तीसरे पहर चीते जोड़ों में या परिवार के साथ शिकार खेलने निकलते हैं । चांदनी रातों में क्रियाशील रहते हैं । इनकी सूंघने की शक्ति अधिक तेज नहीं होती, देखने की शक्ति तेज होती है, इसलिए शिकार करने में दृष्टि पर और सहसा तेज गति (एक सौ दस किलोमीटर तक प्रति घंटा) की क्षमता पर भरोसा करते हैं । कोई भी जानवर भागने में चीते का मुकाबला नहीं कर सकता । सावधानी से चुने हुए अपने लक्ष्य को यदि यह लगभग छह सौ मीटर के अंदर घुटने टेकने के लिए मजबूर नहीं कर सकता तो उसका पीछा करना छोड़ देता है । वह थककर चूर हो जाता है ।

दौड़ते हुए जानवर को पकड़ने के लिए चीता उसके पीछे-पीछे नहीं दौड़ता बल्कि उसकी बाजू

में दौड़ता है और पास पहुंच जाने पर लपकता है। अंतिम छलांग का परिणाम जानवर की मौत होती है। चीता उसे गरदन से पकड़ लेता है। शिकार का पीछा करने में और उसे मारने में बहुत कम समय लगता है। जंगल में मौत प्रायः बड़ी तेजी से आती है जिसमें देर तक तड़पने की जरूरत नहीं होती।

भारत में लुप्त हो गया

मध्य प्रदेश में बस्तर के उत्तर में भूतपूर्व कोरिआ रियासत में, सन् १९४८ की सरदियों में तीन चीते भूल से शूट किये गये थे। मारने वाले को नहीं पता था कि ये चीते हैं। वह उन्हें तेंदुए समझ रहा था। ये भारत में पाये जानेवाले अंतिम चीते माने जाते थे। ये तीनों नर थे और एक ही जगह रात को कृत्रिम प्रकाश में मार गिराये गये थे। खयाल था कि ये तीनों एक ही ब्यात के चीते थे। इसलिए विश्वास किया जाता था कि उनके मां-बाप जिंदा होंगे। उस दुखद घटना के बाद भी क़ोरिआ में चीते मिलने की रिपोर्ट शिकारी देते रहे हैं पर उनकी बात को प्रकृतिविदों ने पूरी तरह स्वीकार नहीं किया।

एशियाई चीता यद्यपि भारत से लुप्त हो गया है, लेकिन विशेषज्ञों का विश्वास है कि यह अब भी पाकिस्तान की सीमा के पास ईरान के मरु क्षेत्रों में मिल सकता है। इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑव नेचर एंड नेचुरल रिसोर्सेज के अनुसार पाकिस्तान-ईरान सीमा के पास अब भी लगभग सौ चीते बचे हैं।

भारत में फिर बसाने की कोशिशें

वन्य जीवों और वनस्पतियों की लुप्त होती हुई जातियों के परिरक्षण और उनकी वंश वृद्धि के लिए, हमारे देश में सभी राज्यों में अनेक अभयवन और नेशनल पार्क स्थापित हो चुके हैं। मध्य प्रदेश में ही ४५ के लगभग नेशनल पार्क, अभयवन या संरक्षित वनखंड विद्यमान हैं। इनमें हम नये सिरे से चीते को बसाने की कोशिश कर सकते हैं। इस प्रदेश में इसके पाये जाने के पुराने रेकार्डों को देखते हुए आशा करनी चाहिए कि इस दिशा में किये गये परीक्षण सफल हो सकते हैं। मध्य प्रदेश के अलावा कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान में इसे जंगलों में उपयुक्त स्थान पर बसाया जा

दौड़ते हुए जानवर को पकड़ने के लिए चीता उसके पीछे-पीछे नहीं दौड़ता बल्कि उसकी बाजू में दौड़ता है और पास पहुंच जाने पर लपकता है। अंतिम छलांग का परिणाम जानवर की मौत होती है। चीता उसे गरदन से पकड़ लेता है। शिकार का पीछा करने में और उसे मारने में बहुत कम समय लगता है। जंगल में मौत प्रायः बड़ी तेजी से आती है जिसमें देर तक तड़पने की जरूरत नहीं होती।

सकता है । कर्नाटक के बीजापुर और गुलबर्गा के रानी वेन्नूर जंगलों में इसके रहने के लिए अनुकूल जगह हो सकती है ।

भारत के चिड़ियाघरों ने सन् १९४९ से सन् १९९० तक ३५ चीते आयात किये थे । आयात करनेवाले चिड़ियाघर दिल्ली, कलकत्ता, चेन्नई और मुंबई के चिड़ियाघर थे । ये चीते खरीदे भी गये थे और विनिमय में भी आये थे । बंदी अवस्था में चीतों के प्रजनन की जिम्मेदारी निभाने के लिए दिल्ली, चेन्नई और हैदराबाद के चिड़ियाघरों का एक संगठन बना दिया गया था । भारत में पहुंचने के बाद पांच साल के भीतर सब चीते मर गये । दिल्ली के नेशनल जुलॉजिकल पार्क में सन् १९९५ की जनवरी के शुरू में एक चीता मर गया । यह कुछ दिनों से बीमार चल रहा था । पार्क के अधिकारियों का मानना था कि उन दिनों चल रही दारुण शीत लहर से उसकी मौत नहीं हुई थी, बल्कि चीते के फेफड़ों में संक्रमण था, लेकिन यह निमोनिया नहीं था । शव परीक्षा में फेफड़ों में सिलिकोन के कण पाये गये और अन्य धब्बे भी देखे गये । इस मौत के बाद नेशनल पार्क में केवल एक मादा चीता बची थी, उसकी सेहत भी ठीक नहीं थी । रोग के लक्षण मृत चीते के सदृश थे । ११ जनवरी, १९९५ में नेशनल पार्क में आखिरी चीते की मौत हो जाने से चिड़ियाघरों में चीते की प्रजनन योजना चकनाचूर हो गयी ।

चूजे से चीते तक

दक्षिण अफरीका में एक किसान के पालतू पशुओं को एक जंगली जानवर मार लिया करता था । एक बार निशाना साधकर वह उसे शूट करने बैठ गया । उसका दुश्मन मादा चीता निकली जो पयस्वती थी और तीन दुधमुंहे बच्चों को पाल रही थी । अनाथ हो जाने से बचाने के लिए उसने बच्चों को उठा लिया । एक बच्चा मर गया । बाकी दो को आन वान डाइक के भाई ज्योफ्री को सौंप दिया, वह वन्य जीवों का संरक्षण करता था । अपने कारोबार के सिलसिले में वह शहर से बाहर जा रहा था । उसने बच्चों को अपनी बहन आन को सौंप दिया, वह भी वन्य जीवों को प्यार करती थी । जंगल के जीवों का संरक्षण करनेवाली अकेली महिला के संरक्षण में योगदान की यह दिलचस्प कहानी की शुरुआत थी ।

चीते के अनाथ बच्चों को पालने की जिम्मेदारी निभाने का कार्य आन के लिए आसान नहीं था, इन जानवरों की आदतों से वह बिलकुल अपरिचित थी । उसके सामने अन्य समस्याएं भी थीं । स्थानीय अधिकारियों ने उससे कहा कि लाइसेंस के अभाव में वह चीते नहीं रख सकती । वह तुरंत अपने फार्म के नजदीक प्रिटोरिआ के पश्चिम में स्थित नेशनल जुलॉजिकल गार्डेंस की सहायता प्राप्त करने के लिए चली गयी । उसकी योजना थी कि वह और नेशनल जुलॉजिकल गार्डेंस दोनों संयुक्त रूप से चीते का संरक्षण और प्रजनन करें ।

ज्यों-ज्यों बच्चे बड़े होते गये, उनमें आन की आसक्ति बढ़ती गयी । वह उनके लालन-पालन, उनकी देखभाल और उनके सुख पहुंचाने के कामों में खोयी रहने लगी । वह उनके बिना नहीं रह सकती थी । उसने चीते के और बच्चे पालने का फैसला किया । चारों तरफ उसकी शोहरत फैल चुकी थी । उसकी



काले हिरण का गला दबोच रहा है चीता

योजना को निर्विघ्न चलाने के लिए वन्यजीवों के प्रेमी दान देने लगे । उसने अपने फार्म को नौ चीतों के प्रजनन के पहले प्रयास के रूप में संगठित कर दिया । विनाश के कगार पर पहुंची जंगल की एक जाति को उबारने के लिए वह देवदूती की तरह अवतरित हो गयी । दक्षिण अफरीका के आकर्षणों में आन वान डाइक समूचे विश्व का आकर्षण बन गयी ।

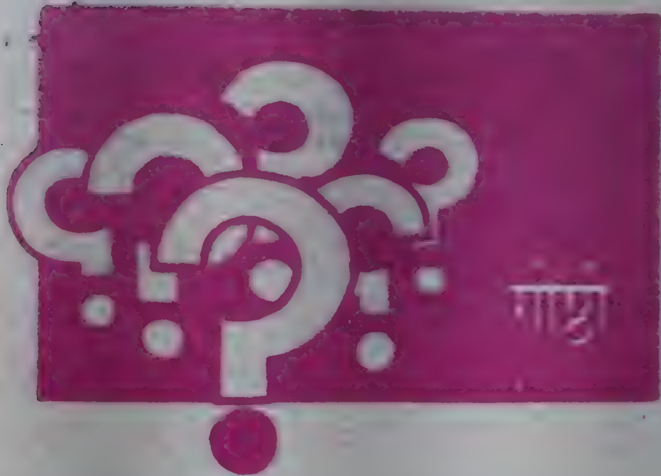
उर्वरता की परीक्षाओं का उसने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया, चीतों को उपयुक्त आहार देने की अहमियत समझी, सवन्नाह परिवेश में रहने के लाभ जाने । यह ज्ञान चीते के बंदी अवस्था में प्रजनन को जानने की कुंजी थी ।

सन् १९७५ में उसकी योजना के परिणाम नजर आये जब छह मादाओं के तेईस बच्चे पैदा हुए । तब तक समूचे विश्व में बंदी अवस्थाओं में एक सौ चालीस चीते पैदा नहीं हुए थे । अपनी सफलता से उत्साहित आन चार सौ चीते बढ़ाने में लगी थी । वंश वृद्धि होती गयी । सन् १९८१ तक स्वीकार कर लिया गया कि चीते अब लुप्त होने के खतरे से बाहर निकल आये हैं ।

आन मानती है कि बंदी अवस्थाओं में पैदा हुए चीतों को फिर से जंगल में बसाना आसान नहीं है । बंदी जीवन में पैदा हुए पहले ब्यात के तीन चीतों को उसने जब जंगल की आजादी में पनपते हुए चीतों के बीच में, एक पार्क में, छोड़ा तब उनमें से कुल एक ही बच पाया । स्नेह से पाले हुए अपने चीतों को दुबारा जंगल मे मुक्त करने का इरादा उसने छोड़ दिया । उन्हें वह विश्व के अन्य भागों में चिड़ियाघरों को या प्रजनन फार्मों को दे देती है ।

आन के विचार में भारत में बाघ संरक्षण योजना और हाथी संरक्षण योजना के समान चीते की योजना भी शुरू की जा सकती है । आन का मत है कि पहले बंदी अवस्थाओं में प्रजनन का फार्म स्थापित किया जाए, वहां पैदा हुए चीतों के लिए एक अलग पार्क बनाया जाए और उसमें काले हिरणों की बहुतायत हो । इस योजना से भारत में लुप्त हो चुकी इस जाति को फिर से बसाया जा सकता है ।

—बेदी शोध संस्थान
डी-२८ राजौरी गार्डन नयी दिल्ली



बेला बोस, भागलपुर

● स्वास्थ्य के लिए गाजर कितनी उपयोगी है ?

□ **गाजर एक प्रकार का कंदमूल है । यह रक्तपित्त, कृमि, संग्रहणी, वायु और कफ विकार को बढ़ने नहीं देती । दस्त को भी बांधती है । इसमें विटामिन 'ए' और 'ई' दोनों ही विद्यमान हैं । विटामिन 'ए' के सेवन से नेत्र ज्योति की रक्षा होती है और इसकी कमी से त्वचा, दंत, क्षय, पथरी, निर्बलता और अस्थि संबंधी रोग हो सकते हैं । चबाकर गाजर खायें, तो दांतों और मसूढ़ों को लाभ प्राप्त होता है । मधुमेह के रोगियों को भी यह अनुकूल पड़ती है । विटामिन 'ई' शरीर में कैंसर रोग के पनपने की संभावनाओं को सीमित करता है ।**

प्रकाश यादव, गुना

● इंटरनेट से क्या तात्पर्य है ?

□ **संचार तकनीकों से परस्पर आबद्ध लाखों कंप्यूटरों के नेटवर्क को इंटरनेट कहते हैं । इस नेटवर्क का एक कंप्यूटर किसी भी अन्य उस कंप्यूटर से, जो इस नेटवर्क से जुड़ा हुआ है, संपर्क जोड़कर सूचना प्राप्त कर सकता है । अब कई समाचार-पत्र भी इंटरनेट पर उपलब्ध हो गये हैं ।**

सतीश कुमार, पटना

● मानव शरीर में सबसे लंबी हड्डी कौन-सी है ?

□ **जंघा की हड्डी सबसे बड़ी, सबसे लंबी और सबसे अधिक मजबूत होती है ।**

निखिल कुमार गोयनका, सीतामढ़ी; डी. एन. लखेड़ा, वीरभद्र (उत्तराखंड)

● इक्कीसवीं सदी सन् २००० से शुरू होगी या २००१ से ?

□ **बीसवीं शताब्दी १९०० से शुरू हुई और १९९९ तक रहेगी, और २१वीं शताब्दी की शुरुआत १ जनवरी २००० से होगी । इस प्रकार अटलांटा-९६ ओलिंपिक इस सदी के अंतिम ओलिंपिक खेल थे ।**

सविता सत्यार्थी, दानापुर

● षट्तीर्थ कहां है ?

□ **ये छह तीर्थ हैं : १. भक्ततीर्थ (युधिष्ठिर विदुर से कहते हैं, 'आप-जैसे भागवत स्वयं ही तीर्थ रूप होते हैं, जो अपने हृदय में विराजित भगवान के द्वारा तीर्थों को भी महातीर्थ बनाते हुए विचरण करते हैं), २. गुरुतीर्थ (शिष्य के अज्ञानमय अंधकार को गुरु दूर करते हैं), ३. माता तीर्थ, ४. पिता तीर्थ (पुत्रों के लिए माता-पिता का पूजन ही धर्म है),**

५. पति तीर्थ (पति सर्वतीर्थमय माना गया है) और ६. पत्नी तीर्थ—(सती, साध्वी, पुण्यमयी पत्नी जिस घर में हो वहां देवताओं का निवास माना गया है । ऐसी पत्नी भी पवित्र तीर्थ है) ।

सुशील गायकवाड़, देवास

● पौधों को खुराक कैसे मिलती है ?

□ यह कार्य पौधों की पत्तियां करती हैं । ये हवा से कार्बन डायक्साइड और मिट्टी से जल प्राप्त करके शर्करा का निर्माण करती हैं । उनकी यह प्रक्रिया फोटोसिंथेसिस के नाम से जानी जाती है । कुछ पौधे ऐसे भी हैं, जिनमें यह शर्करा नहीं होती, क्योंकि यह स्टार्च और प्रोटीन सदृश खाद्य में परिवर्तित हो जाती है । पौधों को शर्करा धूप के रहते प्राप्त होती रहती है ।

महेश कुमार, दिल्ली

● न्यायिक हिरासत और पुलिस हिरासत में क्या अंतर है ?

□ पुलिस हिरासत में अभियुक्त थाने के हवालात में रहता है, जहां वह पुलिस की पहुंच में रहता है, जब उससे पूछताछ की जाती रहती है । न्यायिक हिरासत में अभियुक्त को जेल भेज दिया जाता है, जहां वह न्यायालय के अधीन रहता है, पुलिस इस तक नहीं पहुंच सकती ।

असमा जकरिया, बुरहानपुर

● मेंहदी से हमारी त्वचा रंगीन क्यों हो जाती है ?

□ मेंहदी की पत्तियों में नेफ्थाक्वीनोन वर्ग का लासोन नामक एक रंजक रसायन होता है । हमारी त्वचा पर प्रोटीन के धागों का एक जाल प्रकृति ने बनाया है, जिनसे अभिक्रिया करके यह रंजक रसायन एक यौगिक बनाता है । इस कारण हमारी त्वचा रंगीन हो जाती है ।

अरुण आलोक, दरभंगा

● कोकीन कैसे बनती है और इसकी उपयोगिता क्या है ?

□ एरिथरॉक्सीलॉन कोका नामक एक पेरुवियन वृक्ष की काश्त जावा, दक्षिण अमरीका और श्रीलंका में की जाती है तथा इसकी पत्तियों को सुखाकर उनसे कोकीन प्राप्त होती है । यह अल्कलाइड का रूप धारण करती है, जिससे अनिस्थीसिया का निर्माण किया जाता है । इसका उपयोग छोटी-छोटी शल्यक्रिया के समय प्रभावित क्षेत्र को सुन्न करने के लिए किया जाता है ।

प्रभात कुमार चतुर्वेदी, गुना

● सबसे अधिक राष्ट्रीय उद्यान किस राज्य में हैं ?

□ हमारे देश में सबसे अधिक राष्ट्रीय उद्यान मध्य प्रदेश में हैं । पहले पहल कान्हा में उद्यान बनाया गया था । इसकी शुरुआत सन् १९५५ में की गयी थी तथा इसके बाद १० अन्य उद्यान बनाये गये । सफेद बाघों के लिए बांधवगढ़ उद्यान विख्यात है । इसे सन् १९५९ में राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा दरजा दिया गया । इसके अतिरिक्त मंडला, होशंगाबाद, सिवनी,

बस्तर, पन्ना, संजय (सीधी), कंगेरघाटी और भोपाल के निकट वन विहार राष्ट्रीय उद्यान काफी संपन्न हैं ।

जयंती शाह, इलाहाबाद

● अवटु ग्रंथि शरीर के किस भाग में होती है और क्या काम करती है ?

□ **अवटु, यानी थायरायड, ग्रंथि गले में स्थित होती है और थायरॉक्सिन नामक हार्मोन का उत्पादन करती है । इसके प्रभाव से ही शारीरिक एवं मानसिक विकास उचित ढंग से होता है । बचपन में ही इसके दोषयुक्त होने से थायरॉक्सिन का उत्पादन न होने से बच्चे का विकास बाधित हो जाता है । उसका कद नहीं बढ़ पाता है और वह बुद्धि से भी कमजोर रह जाता है ।**

प्रकाश चंद्र पाहवा, इंदौर

● शक संवत् कब से प्रारंभ हुआ ?

□ **यह कनिष्क के राज्याभिषेक के समय ईस्वी सन् ७८ से प्रारंभ हुआ । इसे भारतीय राष्ट्रीय संवत् के रूप में अब भी माना जाता है ।**

राजकुमार मिश्र, गोरखपुर

● उरांव जनजाति के लोग कहां के निवासी हैं ?

□ **उरांव जनजाति बिहार के छोटानागपुर क्षेत्र की प्रमुख जनजाति है । इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा में भी इनकी बस्तियां हैं । ये लोग द्रविड़ वंश के हैं । इनकी अपनी बोली है जो तमिलमूलक है ।**



एक पूरा दिन

उगते सूरज की सुबह
और, डूबते सूरज की शाम के बीच
एक पूरा दिन है
समस्याओं की फेहरिस्त के साथ
लड़ाई शुरू होती है
एक के अंत पर
दूसरी रोती है
यह दोपहर के पहले का हाल है,
उपलब्धियों के बीच आदमी कंगाल है
मरीचिका की मार से टूटता जिस्म लिए
आदमी की दौड़ जारी है
थोड़ा-सा और...कुछ थोड़ा और
पाने की ललकभरी लाचारी है
फटी-फटी आंखों पर धूल-अटी रूमाल है
सुबह की लाली में होश था
शाम की लाली निढाल है
और
इन दोनों के बीच
एक पूरा दिन है !

—कृष्ण बिहारी

पो.बॉक्स-४६४९२, अबूधाबी, यू.ए.ई.

तीसरी बार तलाक

● वी.के. माहेश्वरी

वैसे तो न्यायिक जीवन के दौरान तलाक के अनेक वाद न्यायाधीशों के समक्ष सुनवायी हेतु आते रहते हैं परंतु उनमें से अधिकतर एक ही तरह के होते हैं जिनमें कि विवाह के तुरंत या केवल कुछ ही वर्षों के अंतर्गत तलाक की याचना की जाती है । अधिकतर वादों में किसी न किसी कारण से पति-पत्नी के मध्य आपसी सामंजस्य स्थापित न होना ही मुख्य आधार होता है । इन सभी प्रकरणों में संबंधी, मित्र या परिजन समझौता कराने का प्रयास करा चुके होते हैं, जब वे सफल नहीं होते, तब अंततः मामला तलाक हेतु न्यायालय के समक्ष पहुंच जाता है तथा एक-दूसरे के विरुद्ध विभिन्न प्रकार के सत्य-असत्य आरोप-प्रत्यारोप लगाकर वाद पत्र प्रस्तुत किया जाता है । कुछ मामलों में विवाद स्वयं पति-पत्नी के मध्य न होकर, उनके माता-पिता या परिजनों के मध्य होता है, जिनका संताप उनकी संतान अर्थात पति-पत्नी को झेलना पड़ता है परंतु इन अधिकतर मामलों से हटकर कुछ ऐसे रोचक वाद भी सुनवायी हेतु आते हैं, जो कई वर्षों के अंतराल के उपरांत भी मनो-मस्तिष्क पर ताजा रहते हैं और जिनके तथ्य मन को झकझोर देते हैं ।

ऐसा ही एक वाद सिविल न्यायाधीश के रूप में कार्यरत रहते हुए मेरे समक्ष आया । न्यायालय में प्रतिदिन की भांति एक मुकदमे में आवाज लगवायी तो लगभग पचहत्तर वर्ष का एक बूढ़ा व्यक्ति मेरे समक्ष आया । मैंने समझा मामला उसकी संतान से संबंधित है । फिर भी मैंने उसे अधिवक्ता को बुलाने को कहा तथा इस बीच न्यायालय की पत्रावली पढ़ने लगा तो पता चला कि उस बूढ़े सज्जन ने विवाह के उनचास वर्ष के उपरांत तलाक का वाद योजित किया था । तलाक का कारण पत्नी का झगड़ालू व उसके प्रति निर्दयी व क्रूर होना बताया गया था ।

मुझे यह जानकर घोर आश्चर्य हुआ कि विवाह की इतनी लंबी अवधि के उपरांत तलाक का यह वाद क्यों ? इस तरह का वाद पहली बार मेरे सामने आया था । मैं मन ही मन में विचार कर रहा था कि जब विवाह को उनचास वर्ष हो गये व इस मध्य पति-पत्नी साथ-साथ रहे, तब जीवन की संध्या में तलाक का कारण, क्या वास्तव में पत्नी का क्रूर होना ही है ? यह तथ्य मुझे कुछ जंच नहीं रहा था । मेरी इसी मानसिक उलझन के बीच उस व्यक्ति के वकील

न्यायालय में आ गये, आते ही उन्होंने तुरंत तर्क प्रस्तुत किया, "सर, पत्नी पर समन की तामील हो चुकी है। वह न्यायालय के समक्ष उपस्थित नहीं हुई है, अतः उसके विरुद्ध वाद एकतरफा चलाकर, इस बूढ़े याची को तलाक दिया जाए।" तभी मैंने वकील साहब से जानना चाहा कि क्या सचमुच पत्नी के कठोर व्यवहार के कारण यह व्यक्ति तलाक चाहता है ? यदि पत्नी इतनी क्रूर है तो यह उसके साथ, इतने दिन तक कैसे रहा ? इनकी संतान क्या-क्या करती है, तलाक लेकर इस आयु में यह बूढ़ा व्यक्ति क्या करेगा ?

पहले तो वकील साहब, इधर-उधर के तर्क देकर मेरा मुख्य प्रश्न टालते रहे व पत्नी के क्रूर होने पर ही बल देते रहे परंतु जब मैंने उनको दो टूक शब्दों में स्वयं कहा कि पहले सत्य बताइए क्या है ? तब ही तलाक की बात करिए, तब वकील साहब ने जो तथ्य बताये वह वाद में लगाये गये आरोपों से विपरीत ही नहीं बल्कि चौंकानेवाले थे। वकील साहब ने बताया कि इन दोनों ने अब तक पूर्ण संतुष्ट वैवाहिक जीवन व्यतीत किया है व इन पति-पत्नी की एकमात्र संतान एक पुत्री है, जो विवाहित है तथा अपने प्रोफेसर पति के साथ सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत कर रही है और कोई पुत्र न होने के कारण इनका वास्तविक विवाद, इनकी मूल्यवान कृषि भूमि व अन्य संपत्ति है। यह बूढ़ा व्यक्ति अपनी कृषि भूमि को अपने भतीजों को देना चाहता है, जबकि पत्नी की इच्छा है कि भूमि उनकी पुत्री व दामाद को दी जाए। इसी विवाद के कारण पत्नी अपनी पुत्री के पास जाकर रहने लगी है, अब चूंकि यह बूढ़ा व्यक्ति अपने भतीजों को अपनी संपत्ति देना चाहता है इसलिए वह अपने भतीजों के पास ही रहता है। तब पूरा मामला मेरी समझ में आ गया कि यह मामला वैवाहिक विवाद का नहीं है बल्कि संपत्ति का विवाद है। मन में तभी टीस-सी उठी कि संपत्ति का विवाद कहां से कहां पहुंचा देता है। वास्तव में तलाक का वाद उस व्यक्ति से, उसके भतीजों ने दायर कराया था।

एक ही आधार पर तीसरी बार तलाक

न्यायाधीश का कार्य नीरसता भरा नहीं है। नित्य नये-नये वाद नये-नये तथ्यों के आधार पर न्यायालयों में प्रस्तुत किये जाते हैं, जिन पर विधिक प्रावधानों को लागू करने में भी रोचकता बनी रहती है परंतु कुछ प्रकरण तो अत्यंत रोचक व दूसरे वादों से एकदम भिन्न प्रकार के होते हैं। ऐसे वादों की सुनवायी करने तथा निर्णय करने में एक अलग ही आनंद की अनुभूति होती है। मेरे सामने भी एक ऐसा ही तलाक का मामला आया, जो शायद अपने प्रकार का अकेला ही मुकदमा था।

तलाक का मुकदमा कमल के द्वारा दायर किया गया था जो अत्यंत ही सुंदर, हृष्ट-पुष्ट व लंबा नवयुवक था व भारत सरकार के अधीन उच्च पद पर कार्यरत था। उसकी पत्नी, जिसके विरुद्ध उसने तलाक का वाद योजित किया था, अत्यंत सुंदर तथा उच्च शिक्षा प्राप्त थी। वह कमल की पहली पत्नी थी, जबकि कमल उक्त महिला का तीसरा पति था। कमल ने अपने तलाक के मुकदमे में अपनी पत्नी के विरुद्ध यह आरोप लगाया था कि उसकी पत्नी विवाह के पूर्व से किसी अन्य व्यक्ति से गर्भवती थी। उसका यह तथ्य प्रमाणित भी था, क्योंकि उन

वाद विचाराधीन ही था कि मेरा स्थानांतरण हो गया इसलिए क्या निर्णय हुआ, यह पता नहीं चल सका परंतु यह अपने प्रकार का पहला प्रकरण था कि एक महिला के विरुद्ध विवाह से पूर्व गर्भवती होने के आधार पर तीसरी बार तलाक चाहा गया था ।

दोनों का विवाह मई माह में हुआ, जबकि उक्त महिला ने उसी वर्ष अक्तूबर में एक स्वस्थ लड़के को जन्म दिया था । उसके तुरंत बाद ही तलाक का उक्त मुकदमा दायर कर दिया गया था । तलाक के उक्त मुकदमे में, उक्त महिला के दो पूर्व विवाह व उनके तलाक का भी उल्लेख था । वह इस प्रकार था कि महिला का प्रथम विवाह एक चिकित्सक के साथ हुआ था । जो विवाह के उपरांत देहरादून में रहने लगे थे परंतु विवाह के प्रथम वर्ष में ही पति के द्वारा देहरादून के न्यायालय में तलाक का वाद, इस आधार पर दायर कर दिया गया कि पत्नी विवाह के पूर्व से ही किसी दूसरे व्यक्ति से गर्भवती थी व उसकी पत्नी ने एक तरह से यह स्वीकार कर लिया था तथा दोनों की सहमति से तलाक हो गया था ।

पति ने तलाक के एवज में नगद धन तथा एक कार भी अपनी पत्नी को दी थी । यह तलाक देहरादून न्यायालय से ही हुआ था । कुछ ही दिन के उपरांत उक्त महिला का दूसरा विवाह चंडीगढ़ में कार्यरत एक वरिष्ठ राजकीय अधिकारी से हुआ । उक्त अधिकारी ने विवाह के एक वर्ष के अंदर ही उक्त महिला के विरुद्ध चंडीगढ़ में तलाक का वाद इसी आधार पर योजित किया कि उसकी उक्त पत्नी विवाह के पूर्व से किसी अन्य व्यक्ति से गर्भवती थी । उक्त वाद में भी दोनों पक्षों में इसी आधार पर तलाक हो गया था । इसके उपरांत उक्त महिला ने कमल नामक उपरोक्त नवयुवक से तीसरी बार विवाह किया था तथा कमल ने सुंदर, स्वस्थ, अविवाहित तथा अच्छे पद पर कार्यरत रहने के उपरांत भी यह जानते हुए कि उक्त महिला पहले से दो बार तलाकशुदा है, से विवाह किया था परंतु जब उसकी ओर से भी विवाह के कुछ ही माह के अंतर्गत तलाक का उपरोक्त वाद मेरे समक्ष योजित किया गया तो मेरे आश्चर्य का कोई छोर ही नहीं रहा कि विवाह से पूर्व गर्भवती होने के एक ही आधार पर तीसरी बार तलाक ।

उक्त महिला के न्यायालय में उपस्थित होने के उपरांत उसके अधिवक्ता से मैंने जिज्ञासावश यह जानना चाहा कि इस मामले में उनके मुवक्किल का क्या बचाव हो सकता है, क्योंकि मई में विवाह व अक्तूबर में पुत्र के जन्म से यह स्पष्ट था कि महिला विवाह से पूर्व गर्भवती थी, जिस पर महिला के अधिवक्ता ने कहा, ''सर मुझे सोचने के लिए तीन दिन का समय दीजिए और मैं न्यायालय में जवाबदावा प्रस्तुत करने से पूर्व ही आपको अपना बचाव बता दूंगा ।'' तीन दिन के उपरांत उक्त अधिवक्ता ने महिला की ओर से बचाव का जो आधार मुझे, मौखिक रूप से बताया, वह और भी अधिक आश्चर्यजनक था । अधिवक्ता द्वारा बताया गया

कि प्रथम विवाह से पूर्व से ही उक्त महिला के प्रेम प्रसंग कमल नाम के उपरोक्त व्यक्ति से थे जिसने उक्त महिला के प्रथम बार गर्भवती होने के उपरांत उससे विवाह करने से इनकार कर दिया था इस कारण उक्त महिला ने चिकित्सक से विवाह कर लिया था। विवाह से पूर्व गर्भवती होने का तथ्य ज्ञान में आने के उपरांत उक्त चिकित्सक ने तलाक दे दिया था जिसके उपरांत उक्त महिला फिर कमल के संपर्क में आ गयी एवं पुनः गर्भवती हुई परंतु कमल ने विवाह करने से पुनः इनकार कर दिया। हालांकि महिला कमल के प्यार में दीवानी थी। जब बार-बार कहने पर भी कमल विवाह के लिए तैयार नहीं हुआ, तब उक्त महिला ने दूसरा विवाह अधिकारी के साथ कर लिया परंतु उक्त अधिकारी के ज्ञान में महिला के पहले से गर्भवती होने की बात आने पर उक्त अधिकारी ने भी उसे तलाक दिया। उक्त तलाक के उपरांत स्वयं कमल उक्त महिला के पास आया और अपनी गलतियों की क्षमा मांगी। चूंकि उक्त महिला पहले से कमल से अत्यंत प्रभावित थी, अतः महिला ने कमल को पुनः अपने संपर्क में आने का अवसर दे दिया, जिससे वह तीसरी बार गर्भवती हो गयी। उसके उपरांत कमल ने उक्त महिला से विवाह कर लिया। इस प्रकार महिला के अधिवक्ता द्वारा बचाव का यही आधार बताया गया कि तीनों बार उक्त महिला कमल के संपर्क में आने पर गर्भवती हुई।

जब यह वाद विचाराधीन ही था कि मेरा स्थानांतरण हो गया इसलिए क्या निर्णय हुआ, यह पता नहीं चल सका परंतु यह अपने प्रकार का पहला प्रकरण था कि एक महिला के विरुद्ध विवाह से पूर्व गर्भवती होने के आधार पर तीसरी बार तलाक चाहा गया था।

—अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश
देहरादून

बकवास

सर सी. पी. रामा स्वामी अय्यर काशी विश्वविद्यालय के कुलपति बनने से पूर्व मद्रास में वकालत करते थे। वह वहां के प्रसिद्ध वकीलों में से थे।

एक बार उनके सामने सरकार की ओर से एक प्रस्ताव पहुंचा। उस प्रस्ताव में सरकार ने उनसे आग्रह किया था कि वह मद्रास हाईकोर्ट के न्यायाधीश के पद को सुशोभित करने की कृपा करें।

सर रामा स्वामी अय्यर ने इस आग्रह को स्वीकार करने में असमर्थता प्रकट की और अपनी असहमति का पत्र सरकार को लिख भेजा।

बाद में उनके परिचितों ने उनसे इस प्रतिष्ठित व महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव को स्वीकार न करने का कारण पूछा, तो रामास्वामी अय्यर का जवाब था, ''मैं बकवास सुनने की अपेक्षा बकवास करना अधिक पसंद करता हूं।''

● वीणा श्रीवास्तव

भारत का प्रथम राष्ट्र-गान उपेक्षा क्यों ?

• गोरे लाल दास कलाकार

वर्तमान भारतीय संविधान की रूपरेखा एक विशेष संविधान निर्माण समिति द्वारा दिनांक ९ दिसम्बर, १९४६ को निर्मित हुई । निर्मात्री समिति के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एवं उप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व में संविधान का स्पष्ट अस्तित्व प्रकाश में आया । यद्यपि भारतीय संविधान को स्वीकृति सन् १९४९ में दिनांक २६ नवंबर को दी गयी । परंतु, इसे २६ जनवरी, १९५० को भारत में पूर्णतः लागू कर दिया गया । अतः २६ जनवरी 'गणतंत्र दिवस' के रूप में प्रति वर्ष हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है ।

हमारा संविधान : विश्व का सर्वोत्तम संविधान

भारतीय संविधान विश्व का सर्वोत्तम संविधान माना गया है, क्योंकि इसके गठन में विश्व के महान गणराज्यों—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ग्रेट ब्रिटेन, सोवियत रूस तथा फ्रांस की धाराओं-उपधाराओं को सम्मिलित किया गया है । विभिन्न संवैधानिक प्रावधानों के तहत संसार के संविधान की भांति भारत में भी एक अदद 'राष्ट्रीय गान' की आवश्यकता महसूस की गयी । फलतः विश्व कवि रवींद्र नाथ टैगोर द्वारा संरचित—'जन-गण-मन अधिनायक, जय हे भारत भाग्य विधाता...' को राष्ट्रीय गान के रूप में २४ जनवरी, १९५० ई. को अंगीकृत किया गया ।

इस गान को सर्वप्रथम २७ दिसंबर, १९११ ई. को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस महासम्मेलन, कलकत्ता में गाया गया । हालांकि इसमें पांच अंतराएं हैं, लेकिन मात्र प्रथम अंतरा को ही मंजूरी प्रदान की गयी । इस तरह राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस और अन्य राष्ट्रीय आयोजनों में उक्त गान गाकर समापन करने की प्रथा विद्यमान है ।

राष्ट्रगीत की मान्यता

उपर्युक्त राष्ट्रीय गान के अतिरिक्त, तत्कालीन महान उपन्यासकार बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखित 'वंदे मातरम...' को भी द्वितीय राष्ट्र-गीत के सदृश्य मान्यता दी गयी, जो सन् १८७५ में रचित और सन् १८८२ में प्रकाशित मशहूर उपन्यास 'आनंद मठ' से लिया गया है । इस ओजस्वी गीत को प्रथम बार सन् १८९६ के अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महाधिवेशन में जोश-खरोश के साथ गाया गया । रवि बाबू ने तेजस्वी राग प्रदान कर उसे प्रवीणता दी । यह राष्ट्र गीत 'आनंद मठ' रचने

के पूर्व सन् १८०५ में टैगोर की पारिवारिक पत्रिका में प्रकाशित हो चुका था। उस समय इस राष्ट्र-गीत में जय मां भवानी के अनुरूप 'भारत माता' का पुरजोर आह्वान किया गया था। इस गीत में भारत माता की नाजुकता, वात्सल्य, सौंदर्य, गौरव, तेजस्विता और बौद्धिकता प्रभुत्व को बहुत सुघड़ता से कुशल चितेरे की तरह चित्रित किया गया है। परतंत्र भारत में 'वंदे मातरम्' ही एक अदम्य मूल मंत्र था स्वतंत्रता सेनानियों के लिए।

सन् १८५७ के उपरांत पुनः पराधीन भारत में 'वंदे मातरम्' ने एक नवीन राष्ट्रीय चेतना की चिंगारी प्रज्वलित कर दी थी। कश्मीर से कन्या कुमारी और अटक से कटक तक जन-जन, कण-कण में देशाभिमान गूंज उठा था।

गुलामी की नापाक बेड़ियां टूट-टूटकर बिखर गयी थीं। बंकिम बाबू हुंकार कर उठे थे—"के बेले मां ! तुम अबले मां !!..." इस महत्त्वपूर्ण राष्ट्र-गीत का उद्‌भव यहां की महान अमर संस्कृति-व-अजर साहित्य से हुआ है। वस्तुतः यह गीत अथर्ववेद के १२वें कांड के 'मातृभूमि सूक्त'—से परिवेष्ठित निम्नांकित श्लोक पर संभवतः आधारित है।

यथा—"माता भूमिः पुत्रो ऽ हम् पृथिव्याः।"

राष्ट्र-गान, राष्ट्र-गीत के अलावा एक और गीत तृतीय राष्ट्रीय स्तर के गीत का हक रखता है, वह है—कौमी तराना सन् १८५७ का। जिसके जां निसार बोल थे—"हम हैं इसके मालिक, हिंदुस्तां हमारा... ' जो 'पयामें आजादी' नामक पत्रिका में प्रकाशित किया गया था। राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत इस क्रांतिकारी पत्रिका ने भी राजनीतिकअग्नि को धधकने में घी समान कार्य किया। ब्रिटिश सरकार ने पायामे आजादी से बौखलाकर उसकी सारी प्रतियों को जब्त कर लंदन के ब्रिटिश म्यूजियम में रिजर्व रख दिया है।"

शिकवा-शिकायत से तो यह बेहतर है कि अन्य संविधान संशोधनों की मानिंद संविधान में उपयुक्त परिवर्तन कर क्यों न भारत के प्रथम राष्ट्र-गान को निर्विवाद स्वीकृति प्रदान करते हुए राष्ट्रीय अस्मिता को अक्षुण्ण रखा जाए ?

ज्ञातव्य है कि कवींद्र रवींद्र नाथ टैगोर के 'जन-गण-मन...' को राष्ट्र-गान की तरजीह सर्वसम्मति से दी गयी और बंकिम बाबू की वंदे मातरम् को राष्ट्र-गीत की।

आरोप के घेरे में

राष्ट्र-गान के परिप्रेक्ष्य में गत कई वर्षों से अनेक समीक्षकों ने आक्षेप लगाये हैं कि रवि बाबू ने शायद अपने गान में तत्कालीन वायसराय (जार्ज पंचम) लार्ड माउंटबेटन की भूरी-भूरी प्रशंसा की है, जो सर्वदा हमारे स्वतंत्र भारत की मान-मर्यादा के विरुद्ध है। साथ ही

त्रि संपूर्ण स्वदेश का सही गरिमामय प्रतिबिंब प्रस्तुत करने में असफल रहा है । उसमें मात्र पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा, द्रविड़, उत्कल बंगाल तथा विंध्य, हिमाचल, गंगा-यमुना का जयजयकार किया गया है जबकि हमारी पतित-पावन नदियां सरयु-गोदावरी एवं मन-भावन मलय पवन प्रवाहक नीलगिरि, धर्मस्थली काशी तथा महापुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, लोकनायक श्रीकृष्ण, सत्यवादी हरिश्चंद्र, भगवान महावीर, बुद्ध, जगत्गुरु शंकराचार्य और सती-साध्वी सीता-सावित्री-जैसी चमत्कारी हस्तियों को यशोगान से परे रखा गया है । आखिर क्यों रखा गया है ?

लगता है, उनको साहित्य में नोबेल पुरस्कार (१९१३) मिलने की वजह से उनसे प्रभावित होकर हमारे संविधान निर्माताओं ने अपनी अमर सांस्कृतिक धरोहर 'यजुर्वेद' में उल्लेखित प्रथम राष्ट्र-गान को नजर अंदाज कर दिया है । शकवा-शिकायत से तो यह बेहतर है कि अन्य संविधान संशोधनों की मानिंद संविधान में उपयुक्त परिवर्तन कर क्यों न भारत के प्रथम राष्ट्र-गान को निर्विवाद स्वीकृति प्रदान करते हुए राष्ट्रीय अस्मिता को अक्षुण्ण रखा जाए ?

दृष्टव्य :

"ओम् आ ब्रह्मन ब्राह्मणो,
ब्रह्म वर्चसी जायताम् ।
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योति,
व्याधिर्महारथो जायताम् ।।
दोग्धी धेनु बोढानड्वानाशु :,
प्तिः पुरध्रियोर्षा जिष्णु ।
रथेष्ठा सभेयो युवास्य,
यजमानस्य वीरो जायताम् ।।
निकामेनिकामे नः पूर्जन्यो वर्षतु,
फलवत्यो न औषधि या पत्यंताम् ।
योगक्षेमो नः कल्पताम् ।।"

अर्थात्—हमारे राष्ट्र के ब्राह्मण जन ब्रह्मतेजधारी हों । क्षत्रिय शत्रु का नाश करनेवाले महारथी हों । गौएं दुधारी हों और बैल-घोड़े सभी पशु भारी बोझा ढोनेवाले शीघ्रगामी हों । हमारे राष्ट्र की आधारस्तंभ नारियां सुगम एवं सदाचारी हों । हमारे देश के नागरिक सभ्य, सुशिक्षित, बलवान और सहिष्णु हों । हमारी इच्छा तथा आवश्यकतानुसार बादल बरसें तथा वृक्ष-वनस्पतियां फल-फूल औषधियों से लदी हों । हमारे देश की स्वाधीनता योगक्षेमकारी हो !"

— ग्राम—मसदी हाता,
पत्रालय—सुलतानगंज ८१३२१३,
जनपद—भागलपुर (बिहार)

जूती ऊंची रहे

आचार्य पं. रामचंद्र शुक्ल गोल टोपी लगाया करते थे । एक बार एक भिखारी उनके सामने आ खड़ा हुआ और हाथ फैलाते हुए बोला, "बाबू साहब की टोपी ऊंची रहे ।" शुक्लजी ने भिक्षा देते हुए उससे पूछा, "अगर किसी औरत से भीख मांगनी हो, तो क्या कहोगे ?"

बेचारा भिखारी असमंजस में पड़ गया । जब वह कुछ बोल न सका तब आचार्य शुक्ल ने स्वयं उसका समाधान करते हुए कहा, "कहना, मेम साहब की जूती ऊंची रहे ।"

● मधुरिमा दिनकर

गांव-गिरांव

समूचा गांव धू-धू कर जल रहा है

● भगवती प्रसाद द्विवेदी

लखरांव में खड़ा होकर मैं अपनी फटी-फटी आंखों से सरेह की ओर निहार रहा था। खेत-बधार सब पानी में डुबकी लगाये हुए थे। धाना-मोचा लिये हुए मकई के पिलपिलाते पौधों को कुछ मजूर छानने में लवसान थे। बनिहारिनों ने लूगा को पोंछिटा बनाकर पीछे की ओर खोंस रखा था। नीचे पांक-पानी में बजबजाकर सड़ते पांव और ऊपर गरम तवे-सी तपती-चिलचिलाती धूप में झुलसता पूरा बदन। सभी के चेहरे पसीने से सराबोर हो आये थे।

''पां लागीं दूबेजी !'' धड़ीमन दुसाध बोझा पटककर मेरी तरफ मुखातिब हो गया।

बुढ़ौती में भी जांगर ठेठाये जा रहा है धड़ीमन। मगर न जाने कौन-सा विचार दिमाग में पैठ गया कि मैं हाल-चाल पूछने की औपचारिकता का निर्वाह भी नहीं कर पाया। हां, यही तो कि वह मुझे 'दूबेजी' क्यों कह रहा है ? बाबूजी को तो 'भइया' का संबोधन देता है। तो क्या वह मुझे 'बबुआ-बचवा' नहीं कह सकता था ?

''इस बरस की तबाही तो बस मत पूछिए, मलिकार !'' जेब से चुनौटी निकालकर वह खैनी बनाता हुआ बातों का सिलसिला आरंभ करता है, ''बरसात के पहले ही धुआंधार बरखा होने लगी। फिर बीया बोने का टैम आया तो सुखार हो गया। लोग हरपरौरी गाये, हरिकीर्तन हुआ, मगर कोई असर नहीं। सरग में अगलग्गी हो गयी थी। इधर बरखा होनी शुरू हुई तो बस छूटने का नाम नहीं। देखिये न चारों तरफ बाढ़ का नजारा। साक्षात् दुरभिच्छ पड़ा है सरकार ! इंदर भगवान भी मनमानी पर उतर आये हैं।''

धड़ीमन मैदान होने आगे बढ़ जाता है। मैं पुनः लखरांव के सांय-सांय करते वातावरण में निरा अकेला रह जाता हूं। बचपन में इस लखरांव के बारे में तरह-तरह की अजीबोगरीब कहानियां सुनी थीं। इमली के इस बगीचे में आने के नाम से ही हमारी रूह कांपती थी। लोग कहते थे, एक भयंकर प्रेत है इस बगीचे में। लकड़ी काटते वक्त या इमली तोड़ते हुए जो चपेट में आ गया उसकी खैर कहां ! दादी बताया करती थीं कि कैसे सोमरुवा को उस प्रेत ने एक इमली के गाछ पर से धड़ाम-से पटक दिया था और वह चारों खाने चित्त होकर धरती पर बेहोश पड़ा हुआ था। टांग-टूंगकर घर लाया गया। दवा-बीरो देने पर जब होश आया तो बस यही चिकर-चिकर कर कहता, ''वह देखो मुंडेर पर सांप ! देखो, वह एकदम सुच्चा

धुआंती मान्यताओं की माटी में अंकुराती शहरी मानसिकता क्या इस गांव को निगल नहीं जाएगी ? विचारों का ज्वालामुखी फट रहा है । समूचा गांव जैसे-धू-धू कर जल रहा है और सब कुछ धुआंता जा रहा है ।

ुअन कोनसिया घर में घुस रहा है !''
सबलोग वहां-यहां चिहा-चिहाकर देखते, र कहीं सांप हो तब न ? मगर जुग-जुग एं महाराजजी, कि उनकी भभूत फांकते ही भाग-परा गया, वरना भगवान ही मालिक !

आज न वे इमली के गाछ-बिरिछ हैं, न वे वनी बातें हीं । अब तो इस समूची जमीन परधानजी का राज है । अब किसी की है ाल, जो इस धरती को 'खलिसा' कह ? जिसका राज, उसकी दुहाई !

दूर से आती उल्लू की एक मनहूस आवाज न में अजब मनहूसी ला दी है । जमुहाई हुआ घर की तरफ लौट चला हूं ।

परधानजी का दुआर दूर से ही चमचमा रहा लक्ष्मी आती हैं तो छप्पर फाड़कर । भला भी तो क्यों नहीं ? गांव-समाज की ह-जमीन, नदी-नाले आहिस्ता-आहिस्ता ानजी की व्यक्तिगत संपत्ति जो बनते जा रहे तभी तो इस बार के चुनाव में परधानजी ने ड़म लगाकर ऐसा धोबियापाट दांव मारा अबकी दफा फिर बाकी सभी उम्मीदवार खाने चित्त !

'ई आगे कौन जा रहा है हो ?'' पीछे से नक एक आवाज आकर कान खड़ा कर है ।

''दूबे जिउवा का बेटवा है—वही, जो शहर में मटरगश्ती करता फिरता है ।'' उत्तर सुनकर मेरी पीछे मुड़कर देखने की भी कूबत नहीं पड़ी । कभी-कभी आदमी कितना बेवस हो जाता है ।

''मैंने तो दो-दो जगह नौकरी दिलवायी, मगर कहीं मन लगाकर करे तब न ! बहुत पसेवा से होती है नौकरी, बहुत कुछ सहना पड़ता है ।'' दुआर के पिछवाड़े से छोटे भाई, सुरेश के स्वर गूंजते ही मैं ठिठककर खड़ा हो गया-भौंचक । अच्छा, तो यहां भी बतकही का विषय मैं ही हूं !

''हां भई, नौकरी पितमरू आदमी से होती है । कोई हंसी-ठट्ठा नहीं है सरकारी नौकरी करना । हुंह ! जनाब हमेशा कविताई ही करते रहते हैं । क्या कविताई से पेट भरेगा ? एक महीना छोड़ दो तो सब कविताई घुसर जाएगी...में ।'' बाबूजी की बात मन में गहरे और गहरे पैठती जा रही है ।

''अब तो पढ़-लिख गया । निकहा पढ़ाई में पैसा भी झोकवा दिया । अनेर घर का आटा गीला हुआ । आखिर महतारी-बाप-भाई ने जिनगी-भर का ठेका तो नहीं ले रखा है, जो उसकी परवरिश करते रहें !'' कम-से-कम मां से तो मेरी ऐसी अपेक्षा नहीं ही थी । आगे अब कुछ भी सुनना मेरे बर्दाश्त से बाहर हो गया

और लंबे डग भरते हुए मैं उनके बीच जाकर खड़ा हो गया ।

मुझे देखते ही तीनों जने के मुंह पर चुप्पी का ताला लग गया । मैं चौकी पर अनमने भाव से जा बैठा । अब जाकर भान हुआ अपनी असली कीमत का । सुरेश अफसर क्या हुआ कि मुझ पर ही रौब गांठना शुरू कर दिया । तनख्वाह के अलावा भी अच्छी-खासी ऊपरी आमदनी जो है उसकी ! तभी तो उस रोज, जब हम दोनों भाई एक साथ ही शहर से आये तो बाबूजी ने उसे देखते ही गले से लगा लिया और उसके हाथ का ब्रीफकेस अपने हाथों में थाम कर हाल-चाल पूछने लगे । मेरे, पैर छूने के बावजूद उन्होंने मुझे अनदेखा कर दिया था । दोनों हाथों में सुरेश की अटैची लिए हुए, जब मैं काफी देर तक बोर होता रहा तो आहिस्ता-आहिस्ता अकेला ही आगे बढ़ने लगा था । बाबूजी की आंखों में ठहरी हुई उपेक्षा को लखकर मेरा मन अंदर-ही-अंदर दरकने लगा था और आज...

"रमाकांत की शादी तय होनेवाली है । चालीस हजार पर मामला अटका हुआ है ।" मां चुप्पी तोड़, बात को एक नया मोड़ देती हैं ।

"पहले रपाकांत के बाबूजी अपनी जवान बिटिया का ब्याह क्यों नहीं करते ?" मैं अचानक बीच में यूं टपक पड़ता हूं—जैसे मेरा झगड़ा इन लोगों से न होकर रमाकांत के बाबूजी से ही हो ।

मेने मन में एक सवाल बार-बार उमड़-घुमड़कर नाच रहा है कि पत्नी के मर जाने पर क्या रमाकांत की दोबारा शादी नहीं होगी ? और यदि हां, तो उसकी बहन की क्यों नहीं ? मगर कहने की हिम्मत कहां है मुझमें ! मालूम नहीं, यह संस्कार का दोष है अथवा किसका ? उन्नीस बरस की उस जवान लड़की के हिस्से में अब वैधव्य की मनहूस-सी जिंदगी ही तो है । शादी के बाद गौना हुआ नहीं, मगर वह विधवा हो गयी । उसने सुहाग रात भी तो नहीं देखी कि आखिर क्या होती है सुहागरात ? हां, लड़की एक ऐसी रचना है जिसे स्वीकृत होते ही पति रूपी प्रकाशक अपने लिए उसका सर्वाधिकार सुरक्षित करा देता है, भले ही वह छपे, न छपे ।

मैं मां, बाबूजी और भाई की आंखों में एक-एक कर झांकता हूं । मेरे अंतर्मन में सवालों का सैलाब उमड़ता है और उन पनीली आंखों में ही सबका उत्तर ढूंढ़ना चाहता हूं । उनमें छल-कपट, प्रपंच और स्वार्थ ही क्यों झिलमिला रहे हैं ? वे लोग मुझसे घुल-मिलकर बातें क्यों नहीं करते ? यहां शहरों-जैसी औपचारिकता कहां से आ गयी ? बहुत दिनों के बाद तो गांव आया हुआ हूं, ठीक वैसे ही, जैसे ब्याहता बिटिया ससुराल से नैहर आती है । मगर ससुरैतिन बेटी को तो मां-बाप-गांव-सबका प्यार-दुलार मिलता है । मुझे सब कुछ जैसे काटता हुआ क्यों नजर आ रहा है ? कहां बिला गयीं बाबूजी-मां की वे स्नेहिल आंखें ? प्यारभरी बातें ? भइया, काका, बाबा के बजाय तिवारीजी, चौधरीजी, दूबेजी के ये रिश्ते कहां से आ टपके ? धुआंती मान्यताओं की माटी में अंकुराती यह शहरी मानसिकता क्या इस गांव को निगल नहीं जाएगी ?

—द्वारा, महाप्रबंधक, दूरसंचार जिला, पोस्ट बॉक्स ११५, पटना-८००००१ (बिहार)

पक्षी भी निभाते हैं मित्रता

• शमशेर अहमद खान



हमारे देश में पक्षियों को प्राचीन काल से ही महत्ता दी जाती रही है । क्रौंच वध से प्रेरित होकर आदि कवि ने काव्य शिल्प की आधारशिला रखी । महापुरुष श्रीकृष्ण ने अपने मुकुट में सतरंगी मोरपंख को सर्वोच्च स्थान दिया तथा महान सम्राट अशोक के बौद्धमत में दीक्षित होने के उपरांत पक्षियों को संरक्षण दिया गया । मुगल सम्राटों ने शिकारी पक्षियों को पाला । यद्यपि ऐसे अनेक प्रसंग जाने-अनजाने बिखरे पड़े हैं जो पक्षियों की महत्ता पर प्रकाश डालते हैं, किंतु पक्षियों पर वैज्ञानिक ढंग से विवेचन अंगरेजों से पूर्व नगण्य-सा ही था ।

इस संदर्भ में भारतीय पक्षी विज्ञान का प्रारंभ सन् १८६२-६४ में टी.सी. जेरडन द्वारा लिखित पुस्तक 'दि बर्ड्स ऑव इंडिया' से पक्षी वैज्ञानिक मानते हैं । डॉ. जेरडन फौज में सर्जन थे जो देश के विविध भागों में वर्षों तक रह चुके थे । इसके बाद पक्षी विज्ञान में दूसरा महत्त्वपूर्ण नाम एलेज ओक्टेविनह्यूम का आता है जो इंडियन सिविल सर्विस में थे और जो इंडियन नेशनल कांग्रेस के संस्थापक भी रहे । श्री ह्यूम ने सन् १८७२-१९८८ ई. तक भारतीय पक्षी विज्ञान पत्रिका 'स्ट्रेफेदर्स' के ग्यारह अंकों का संपादन किया जिसमें भारतीय पक्षियों की महत्त्वपूर्ण जानकारियां दीं ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय पक्षी विज्ञान में काफी काम हुए जिसमें व्हिसलर और क्लाड बी टाइसहर्स्ट के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं ।

आज यद्यपि भारतीय पक्षियों पर अनेक सामान्य पुस्तकें उपलब्ध हैं तथा इस विषय पर विभिन्न कोणों से पुस्तकें लिखी तथा प्रकाशित की जा रही हैं, किंतु इस पर वैज्ञानिक एवं शोधपरक कार्य 'बांबे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी', 'सालिम अली पक्षी अनुसंधान संस्थान' तथा 'दिल्ली चिड़ियाघर' द्वारा किया जा रहा है, जो भारतीय पक्षी विज्ञान की कड़ी के रूप में हैं ।

पक्षी वैज्ञानिकों के अनुसार कई पक्षियों में

उनकी मस्तिष्क संरचना के आधार पर उनकी समझ का स्तर बहुत उच्च होता है, किंतु जिन पक्षियों में समझ का स्तर बहुत उच्च नहीं होता वे अपनी सहज वृत्ति के कारण, जो उन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी सहजता से प्राप्त होती है, के द्वारा प्रवास यात्राएं, आचार-व्यवहार, कला-कौशल पूरा करती हैं तथा इसी गुण से वे अपने अस्तित्व को बनाये रखती हैं। अपनी प्रजाति के अस्तित्व को बनाये रखने में नीड़न की भूमिका महत्त्वपूर्ण मानी जाती है तथा नीड़न के उपरांत अंडों एवं उनसे उत्पन्न शिशुओं की उत्तर जीविता की समस्या पक्षियों के समक्ष एक चुनौती होती है। उस समय इस चुनौती का सामना वे अपने कला-कौशल का प्रयोग अपने घोंसलों के निर्माण के रूप में करते हैं, किंतु शत्रुओं से अपने शिशुओं की रक्षा की चुनौती ही अधिक जरूरी उनके समक्ष शिशुओं को दिये जानेवाले आहार की होती है। पक्षी वैज्ञानिक डॉ. सालिम अली के अनुसार पक्षी का एक नवजात बच्चा चौबीस घंटों के भीतर अपने भार से अधिक आहार ले लेता है। इसलिए पक्षी अपना नीड़न उस समय करते हैं जब वहां उनके शिशुओं को पर्याप्त मात्रा में भोजन उपलब्ध हो सके। इसके लिए वे प्रतिकूल मौसमों को भी झेल लेते हैं। वर्षा यद्यपि तूफान, झंझावात की ऋतु होती है, किंतु इस मौसम में कीट-पतंगे, कृमि आदि बहुलता से उपलब्ध होते हैं। पक्षी यद्यपि वर्ष में एक बार घोंसला बनाते हैं, किंतु यदि वह नष्ट हो जाए तो वे तत्काल पुनः बना लेते हैं।

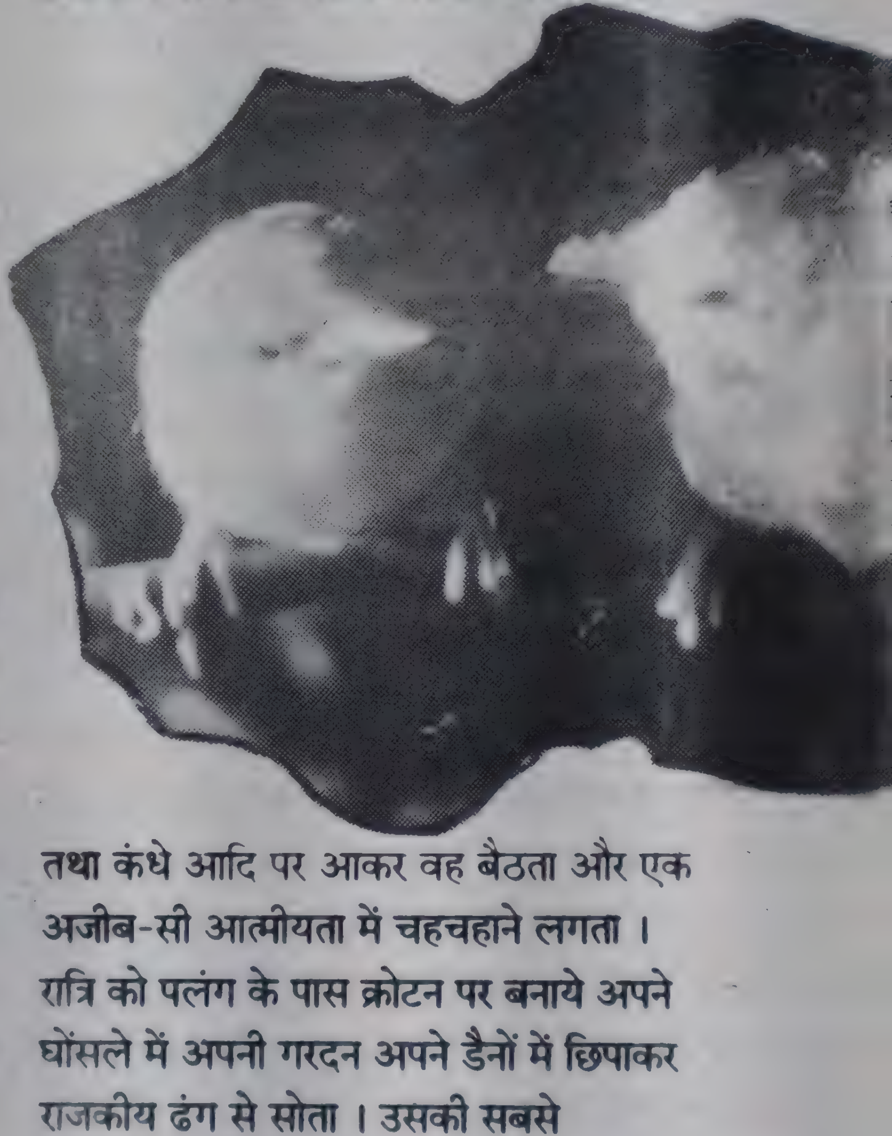
पक्षी वैज्ञानिकों के अनुसार जिन प्रजाति के पक्षियों का शिकार अधिक होता है उनमें उत्तरजीविता के लिए संघर्ष की क्षमता अधिक होती है। यदि बहुत ही प्रतिकूल स्थितियां न हो तो वह प्रजाति जल्दी विलुप्त नहीं होतीं। घरेलू मुरगी मानक आहार मिलने पर जहां वर्षभर अंडे देती है, वहीं बगुला, सारस, फुदकी, दर्जिन तथा फूलचुकी आदि वर्ष में केवल एक बार अंडे देती हैं। बोगहंस-जैसा पक्षी अगर अनुकूल मौसम न हुआ तो वह उस वर्ष अंडे ही नहीं देता।

कुछ पक्षी जहां अपने घोंसलों की सफाई प विशेष ध्यान देते हैं तो वहीं कुछ पक्षी अपने घोंसलों में इतनी दुर्गंध रखते हैं कि उस दुर्गंध से उनके शत्रु उन तक फटकते ही नहीं। हुदहु ऐसा ही पक्षी है जो अपनी रक्षा अपने घोंसले की दुर्गंध से करता है। कुछ पक्षियों के बच्चे घोंसलों में ही बीट करते हैं, किंतु कुछ पक्षी ऐसे होते हैं जिनके बच्चे अपना मल मुंह से त्याग करते हैं और उनका घोंसला साफ-सुथरा बना रहता है। यह देखा गया कि फुदकी अपने बच्चों को जहां कीट-कृमि लाकर खिलाती, व कुछ अंतराल में अपने बच्चों के मुख से सफेद गोला-सा निकालकर ले जाती। फूलचुकी का बच्चा अपना मल त्याग मुख से लाल रंग का करता है जबकि बाज के बच्चे का मल त्याग काला होता है।

जुलाई की एक सुबह जब सूर्य रश्मियां वनस्पतियों पर पड़कर प्रकृति में एक अनोखी आभा बिखेर रही थीं। मंद-मंद समीर बह रह था और बादल के इक्के-दुक्के टुकड़े निहारते हुए मंद गति से बह रहे थे, २-ए, पृथ्वीराज रोड, नयी दिल्ली स्थित अपने कार्यालय में सुबह

पहली चाय लेने चार सहकर्मी आम्र वृक्ष के नीचे खड़े थे । हम लोगों ने चुस्कियों का आनंद लेना शुरू ही किया था कि ठीक मेरे ऊपर आम्र कुंज में पक्षियों की चहचहाहट सुनायी पड़ी और मैं ऊपर देखता कि ठीक मेरे पैर के पास दाहिनी ओर जैतूनी रंग का फूलचुकी का बच्चा आकर गिरा । फूलचुकी के बच्चे के पर अभी पूर्णतः विकसित नहीं हुए थे, उसकी पूंछ भी नहीं निकली थी । मैंने उसे उठा लिया । फूलचुकी का यह बच्चा उड़ नहीं सकता था । उसका घोंसला भी दिखायी नहीं पड़ा लिहाजा उसे छोड़ना उपयुक्त नहीं था । अब समस्या थी कि इसे बचाने के लिए क्या किया जाए ? मुझे याद आया कि गाजियाबाद में हमारी एक परिचिता हैं जिन्होंने कभी सूर्यपक्षी पाला था तथा जिन्होंने उसे चीनी के घोल पर जीवित रखा था । फुदकी, दर्जिन, फूलचुकी तथा सूर्यपक्षी आदि प्रजाति के पक्षियों की चोंच की संरचना ऐसी होती है कि गौरैया, फाख्ता, मुरगी, कबूतर, तोते आदि की भांति न तो दाना चुग सकते हैं और न ही फल खा सकते हैं, किंतु किसी भी प्रजाति के बच्चों को वयस्क होने के पहले तक पालना सुगम होता है क्योंकि ये बच्चे गले तक मुख फाड़कर खाते हैं तथा चोंच का प्रयोग करते ही नहीं । फिर भी उस फूलचुकी के बच्चे को मैंने अपनी मेज की दराज में रख दिया था । भूख से वह काफी चिंचियाता रहा । इसी समय एक छोटी-सी बोतल में चीनी का घोल तैयार कर पंद्रह-पंद्रह मिनट के अंतराल पर उसे देता रहा । अब तक मैंने अपने मित्रों से उस पक्षी के बच्चे के बारे में जानकारी दे दी तथा उनसे इसके विषय में भी गहन जानकारियां प्राप्त कर लीं ।

फूलचुकी मेरे पास कोई नौ दिन तक साथ रहा । जैसे-जैसे वह वयस्क होने लगा वैसे-वैसे हमने उसकी खुराक कम और बदलनी शुरू कर दी । आरंभ के पांच दिनों तक वह मेरे साथ था । उसके मां-बाप की भूमिका का निर्वाह मैंने किया, किंतु जब वह कुछ बड़ा हो गया तो यह दायित्व मेरी पत्नी ने उठा लिया । मैंने महसूस किया कि पक्षियों में संवेदनशीलता बड़ी तीव्र होती है । शाम को मेरे घर लौटने पर मेरी गोद



तथा कंधे आदि पर आकर वह बैठता और एक अजीब-सी आत्मीयता में चहचहाने लगता । रात्रि को पलंग के पास क्रोटन पर बनाये अपने घोंसले में अपनी गरदन अपने डैनों में छिपाकर राजकीय ढंग से सोता । उसकी सबसे आश्चर्यजनक बात मुझे यह लगी कि मैंने जब-जब फोन किया तब-तब फोन पर उसकी आवाज मुझे सुनने को मिली । पत्नी हमेशा यही कहतीं कि लो पहले अपने प्रिय पक्षी से बात कर लो । यह केवल मेरे पत्नी को फोन करने पर

माउथपीस पर बैठता था, किंतु सब दिन समान नहीं होते हैं । मैं सोच रहा था कि उसे एक या दो दिनों में वन में या किसी बगीचे में ले जाकर मुक्त कर दूंगा । रात्रि को कई बार शिद्दत से मैंने यह महसूस किया था कि फूलचुकी मानो हजारों ध्वनि तरंगें निकाल रही है और मेरे मस्तिष्क पर ऐसी ही हजारों सुइयां चुभ रही हैं । इसके पीछे का वैज्ञानिक कारण स्पष्ट तो नहीं हो पाया था, किंतु यह अनुमान अवश्य हो गया था कि फूलचुकी कुछ ऐसी ध्वनि तरंगें निकालती हैं जो अल्ट्रासाउंड या इसके निकट की हैं । इसलिए बहुत से पक्षियों को पालतू नहीं बनाया जाता ।

यह अब स्वयं अपना आहार लेने लगा था । इसके लिए हमने ब्रेडजाम, अंगूर के छोटे-छोटे दाने तथा चीनी का घोल रख दिया था, किंतु एक दिन वह घर की छत के पंखे से टकराकर घायल हो गया और काफी संघर्ष के बाद भी वह जीवित न रह पाया । उसके शोक में हमारे परिवार के किसी सदस्य ने खाना नहीं खाया और उसे सम्मान के साथ दफना दिया ।

सफेद रंग की फाख्ता

इधर मुझे असम जाना पड़ा और असम के वनों में पक्षी निरीक्षण का अवसर भी मिला । बराक घाटी में मुझे कोई विशेष पक्षी तो नहीं दिखे । हां, उत्तर भारत में मिलनेवाले पक्षी —जैसे देशी मैना, भुजंगा, फाख्ता, तोता, बुलबुल, कौआ, चील, लतोरा, मैगपाई, गौरैया, दर्जिन, फुदकी आदि दिखीं, किंतु इन पक्षियों की विशेषता यह थी कि इनकी रंगत में निखार था । डिगबोई में जो फाख्ता दिखी वह अन्य फाख्ताओं से थोड़ी भिन्न अवश्य थी । बोकाजान में यद्यपि पक्षियों की प्रजातियां तो कम ही दिखीं, किंतु कस्तूरी को देखने की उपलब्धि विशेष रही ।

फाख्ताएं सामान्यतः चित्तीदार राख या ईंट के रंग की होती हैं, किंतु एक परिचित ने बताया कि उनके एक मित्र के पास सफेद रंग की फाख्ता है । सफेद रंग की फाख्ता को अलबीनो कहा जाता है । जिन पक्षियों में रंग के पिगमेंट्स नहीं होते उन्हें अलबीनो कहा जाता है । ऐसे ही अल्बीनो फाख्ताओं का एक जोड़ा वे सज्जन साथ लाये थे जिससे उन्होंने इसके ग्यारह जोड़े तैयार किये, किंतु नेवलों ने बीस दुर्लभ सफेद फाख्ताओं को काट डाला ।

पक्षियों के प्रति बचपन की स्मृतियां

उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले का वह गांव आज भी मेरे लिए पर्यावरण के संरक्षण में प्रेरणाप्रद है । गांव के बीच में एक बड़ा-सा पोखर है । पोखर के तीन तरफ आम्रकुंज हैं । इन आम्रकुंजों में मैंने नीलकंठ, किंगशिर, फाख्ता, बगुले, पीलक, लालमुनिया, तोता, हार्नबिल तक देखीं, किंतु इन सबसे परे हर वर्ष अक्तूबर-नवंबर में हिमालय की ओर से दक्षिण की ओर 'वी' आकार में लंबी-लंबी कतारों में पक्षियों के झुंड आते हैं और साथ ही ये कराकुल की ध्वनि भी करते जाते हैं । इसका तात्पर्य था, लो कराकुल आ गये और रबी की फसल बोने का समय हो गया । अपनी इन्हीं ध्वनियों के कारण इन्हें कराकुल अथवा जलीय काला बाज भी कहते हैं ।

साईबेरिया से आनेवाले ये पक्षी शरद ऋतु शुरू होते ही भारत आ जाते हैं । कई वर्षों तक मैंने उन्हें इसी रास्ते से अपने देश में आते देखा है । बहेलियों को छोड़कर सामान्य लोग काली

आइबिस अर्थात् काले बाज को आदर की दृष्टि से देखते हैं तथा वे इन्हें कभी नहीं छेड़ते हैं। यद्यपि पाश्चात्य देशों की तुलना में हमारे यहां जीव दया एक सामाजिक मर्यादा है, किंतु पक्षियों के विस्तृत ज्ञान व उनकी उपादेयता की जानकारी के अभाव में हम उनके संरक्षण के





प्रति निष्क्रिय हो जाते हैं। हमारी जीव दया का ही परिणाम रहा कि आज भी हमारे देश में लगभग बारह सौ प्रकार के पक्षी पाये जाते हैं जो हमारे लिए गौरव की बात है।

—एम. ६९/ए,
संजय नगर, सेक्टर-२३,
गाजियाबाद-२०१००२

सभी चित्र : शमशेर अ. खान

अस्सी वर्ष । कोई कम नहीं होती उम्र अस्सी वर्ष की, जिस पर कि वह नंगे पांव चालीस वर्ष से निरंतर परिभ्रमण कर रहा था, उत्तर भारत के एक बड़े भू-भाग— आज के बिहार और उत्तर प्रदेश के परिक्षेत्र में, सद्धर्म का प्रचार करते हुए । कंटकाकीर्ण थी वह पद-यात्रा । ढाई हजार साल पहले न तो पथ थे, न राजमार्ग । ऊबड़-खाबड़ पगडंडियां





रामभार स्तूप चित्र : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश

निर्वाण मंदिर में महापरिनिर्वाण अवस्था में गौतम बुद्ध



चित्र : सुभाष चंद्र सिंह

जहां बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया

● डॉ. जगदीश चंद्रिकेश

भगवान बुद्ध की पारमिता प्रज्ञा के अलौकिक स्मारक के रूप में कुशीनगर एक परम पावन तीर्थ है, विशेषकर बौद्धों के लिए, क्योंकि भगवान बुद्ध ने स्वयं ही इस उपनगर का चयन अपने परिनिर्वाण-स्थल के रूप में किया था और निर्देश दिया था कि निराग की प्राप्ति के लिए आस्थावान यहां की यात्रा करें।

थीं— बीहड़ जंगल थे। कहीं-कहीं मिल जाते थे— राजपथ। कष्टभरी श्रमसाध्य यात्राओं ने थका दिया था भगवान बुद्ध को। रुग्ण हो गये थे वह। फिर वृद्धावस्था तो अपने आप में एक असाध्य रोग है ही। आभास हो गया था अपने अंत समय का, तभी तो वह बोले थे, 'आनंद ! मैं वृद्ध हुआ। अस्सी वर्ष का हुआ। पुरानी गाड़ी— जैसे मरम्मत कर चलायी जाती है, वैसे ही मैं यह शरीर चला रहा हूं।'

फिर वैशाली से प्रस्थान करते हुए भिक्षु समूह को संबोधित कर कहा, 'मेरा परिनिर्वाण समीप आ गया है। तीन माह पश्चात मेरा परिनिर्वाण होगा।' वह स्थान, जहां उन्होंने यह कहा और जहां से मुड़कर अंतिम बार वैशाली को देखा, आज भी मौजूद है।

भगवान बुद्ध चल पड़े वैशाली से अपनी सद्धर्म प्रचार यात्रा पर। साथ में था आनंद और भिक्षु समुदाय। कई दिनों की यात्रा के बाद बुद्ध जा पहुंचे पावा में। पावा मल्ल जाति के गणराज्य की राजधानी। हिमालय की तलहटी के घने जंगलों में रहनेवाली मल्ल जाति ने अपने लिए गणतांत्रिक राज्य व्यवस्था स्थापित कर रखी थी।

पावा पहुंच बुद्ध ने अपना पड़ाव डाला, अपने एक उपासक चुंद कर्मार के आम्रवन में। चुंद ने उनकी अभ्यर्थना की और आमंत्रित किया कि दूसरे दिन आवास पर पधार कर भोजन ग्रहण करें। आमंत्रण स्वीकार हुआ। भिक्षु संघ सहित बुद्ध ने चुंद के आवास पर भोजन ग्रहण किया। पर वह उन्हें पचा नहीं। अतिसार हो गया। कुछ कहते हैं भोजन में सूअर का बासी मांसाहार था, तो कुछ कहते हैं, इस क्षेत्र में पाया

जानेवाला शकरकंद-जैसा शाकाहार था। 'शूकर मार्दव' नामक इस भोज्य पदार्थ के नाम से दोनों ही अर्थ निकलते हैं। लेकिन कुछ भी हो, वह उन्हें पचा नहीं।

व्याधि बढ़ गयी। रक्तस्राव होने लगा, फिर भी निरंतर गतिशील बुद्ध के चरण रुके नहीं, बढ़ चले आगे की ओर! पच्चीस दिन के बाद वह जा पहुंचे कसिया या कास्या। कसिया यानी कुशीनगर, जिसका उल्लेख कुशावती या कुशीनारा के रूप में भी मिलता है। कुशीनगर क्षेत्र आज के नेपाल के नीचे, हिमालय की तलहटीवाला क्षेत्र। इस क्षेत्र में भी मल्लों की एक दूसरी शाखा का गणराज्य था। राजधानी थी अनुपिया— शायद, वर्तमान छपरा जिले में कहीं पर, अनोमा नदी के पास। कुशीनगर था एक छोटा-सा साधारण उप-नगर।

बुद्ध कुशीनगर के बाहर वन-प्रांतर में जा पहुंचे। सघन साल वृक्षों का वन था वहां। पूर्णिमा की रात थी। ग्रीष्म ऋतु की तपन सायंकालीन मंद पवन के स्पर्श से कुछ-कुछ शीतल हो चुकी थी, जो उनकी थकी-मांदी काया को सहलाकर विश्रांति पहुंचा रही थी। साल वृक्षों पर खिले फूलों की सुगंध वातावरण में तैर रही थी। महाकवि अश्वघोष के 'बुद्ध-चरित्र' में और 'ललित-विस्तार' में इस प्राकृतिक वातावरण का जो चित्रण मिलता है, वैसा वातावरण इस काल-खंड में था। हां, आज वह जन-संकुलता और बदले हुए पर्यावरण में काल्पनिक ही लगता है। आज न यहां साल वृक्ष हैं, न वन। न जाने कब के सब कट-कटा गये।

बुद्ध ने कहा, "आनंद, मैं थक गया हूं। लेटूंगा।' फिर दो साल वृक्षों की ओर इंगित कर कहा, 'दो साल वृक्षों के मध्य, दक्षिण की ओर पैर और उत्तर दिशा में शीर्ष करके मंचक (बिछोना) बिछा दे।'

आनंद ने मंचक बिछा दिया। बुद्ध उस पर दाहिनी करवट लेट गये। आनंद भांप गया कि बुद्ध का अंत समय आ गया है। ससंकोच पूछा, "भंते, आपके शरीर की अंत्येष्टि हम किस प्रकार करेंगे ? आपके शरीर का क्या होगा ?"

"चक्रवर्ती के शरीर के साथ जो क्रिया की जाती है, वह इस शरीर के साथ करना, आनंद।"



"चक्रवर्ती के शरीर के साथ क्या होता है भंते ! आनंद ने पूछा।

बुद्ध ने बताया कि चक्रवर्ती के शरीर को नवीन वस्त्र में लपेटते हैं। नवीन वस्त्र में लपेटे जाने पर नवीन धुनी हुई रुई से लपेटते हैं। पुनः नवीन वस्त्र में लपेटते हैं। तेल से भरी लौह द्रोणी (कढ़ाव) में उसे रख देते हैं। दूसरी लौह

निर्वाण चैत्य के सामने बौद्ध विहार के भग्नावशेष



रामाभार स्तूप के निकट मुकुटबंध विहार के भग्नावशेष



द्रोणा से उसे ढक देते हैं । गंधयुक्त काष्ठ (चंदन की लकड़ी) से चिता रची जाती है । शरीर को अग्नि देते हैं । भस्म होने के पश्चात चौराहे पर स्तूप बनाते हैं ।

मृत्योपरांत की व्यवस्था बता दी बुद्ध ने । फिर कुछ क्षण पश्चात भिक्षु समुदाय के सम्मुख बुद्ध ने अपने अंतिम वचन कहे—

हंद दानि भिक्खवे !
आमंतयामि वो,
वयधम्मा संखारा,
अप्पमादीन संपादे था इति ।

—महापरिनिर्वाण सुत्त-१६३

—हरेक वस्तु नाशवान है । अप्रमाद के साथ जीवन संपादन करो— यह तुम्हारे तथागत का अंतिम वाक्य है ।

इतना कहकर बुद्ध मौन हो गये । सो गये । हमेशा-हमेशा के लिए । पूर्णिमा की रात्रि के तीसरे प्रहर में परिनिर्वाण पर गये बुद्ध । ठीक उसी तरह जिस तरह अस्सी साल पहले उन्होंने इसी पूर्णिमा की रात्रि के प्रथम प्रहर में जन्म पाया था । इतना ही नहीं बुद्धत्त्व भी उन्होंने इसी पूर्णिमा की रात्रि के प्रथम प्रहर में पाया था, बोध गया में, अश्वत्थ वृक्ष के नीचे, सुजाता की खीर खाने के बाद ।

जंगल की आग की तरह समाचार दसों

दिशाओं में फैल गया कि बुद्ध परिनिर्वाण पा गये हैं ।

युग-पुरुष थे वह

सामान्य जन नहीं थे बुद्ध । राज-पुत्र थे वह । राज-कन्या यशोधरा के पति थे वह । सभी बड़े-बड़े राजाओं द्वारा पूजित थे वह । राजाओं के राजा थे वह । क्रांतिदर्शी, युगदृष्टा युग-पुरुष थे वह । इसलिए उनकी महत्ता के अनुरूप ही होना था उनका अंत्येष्टि-कर्म । उनके निर्देशानुसार उनके पार्थिव शरीर को तेल भरे लौह कढ़ाव में रख दिया गया, तब तक की संरक्षा के लिए, जब तक कि उनके श्रद्धालु भक्त, राजे-महाराजे, गणराज्यों के गण-प्रमुख, अनुयायी-अनुचर सभी जुट न जाएं ।

जब सब जुट गये, तो सातवें दिन कुशीनगर के गण-प्रमुखों की अगुआई में शव-यात्रा निकली बड़ी धूमधाम से गाजे-बाजे के साथ ।

महापरिनिर्वाण सुत्त के अनुसार शव-यात्रा ने उत्तर द्वार से नगर में प्रवेश किया । नगर के बीच से गुजरते हुए, नगर के पूर्व द्वार से बाहर निकली और फिर पहुंची मुकुट बंध चैत्य के समीप । वहीं दाह-संस्कार किया गया ।

शव-दाह के बाद अस्थि-चयन हुआ । अस्थि-अवशेषों को एक स्वर्ण-कलश में भरा गया । स्वर्ण-कलश को संथागार (सभागार) में रखा गया ।

अब इन अस्थि-अवशेषों के स्वामित्व को लेकर प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि वे किस को मिलें ? कौन है उत्तराधिकारी इन अस्थि-अवशेषों का ?

उत्तराधिकार का प्रश्न इसलिए उठा कि कपिलवस्तु के शाक्यों ने कहा कि बुद्ध हमारे राज-पुत्र थे । रामग्राम के कोलियों ने कहा, बुद्ध हमारे दौहित्र थे, मगध के राजा अजातशत्रु के दूत ने कहा कि बुद्ध हमारे स्वर्गीय राजा बिंबसार के मित्र थे । वैशाली के लिच्छिवियों ने कहा कि बुद्ध को वैशाली अतिप्रिय थी, इसलिए बुद्ध हमारे थे । इसी तरह अल्लकप्प के बुलियों, वेठद्वीप के ब्राह्मणों और पावा के मल्लों ने कहा कि बुद्ध हमारे भी थे, अस्थि-अवशेष हमें मिलने चाहिए । कुशीनगर के मल्ल गण-प्रमुखों ने कहा, "बुद्ध ने हमारे यहां परिनिर्वाण प्राप्त किया है, इसलिए अस्थि-अवशेष हमारे हैं । इन्हें हम किसी को नहीं देंगे ।"

आठ दावेदार हो गये बुद्ध के अस्थि-अवशेषों के । कोई भी अपना दावा छोड़ने को तैयार नहीं । वाद हुआ, विवाद हुआ और फिर तलवारें म्यान से बाहर निकलने के लिए मचल पड़ीं । तभी बीच में कूद पड़ा द्रोण । सर्व-सम्मानित और कुशाग्र बुद्धि ब्राह्मण द्रोण ।

द्रोण बोला, "राजन, लड़ते क्यों हो ? तथागत क्षांतिवादी (क्षमाशील) थे । क्या क्षांतिवादी की अस्थियों के लिए रक्तपात होना चाहिए ?"

सभी बोल पडे, "नहीं ! कदापि नहीं !"

"तो फिर अस्थियों को आठ भागों में विभाजित कर लेना चाहिए ।"

द्रोण का सुझाव मान्य हुआ । सभी ने कहा, "फिर आप ही विभाजन कर दीजिए ।"

द्रोण ने स्वर्ण कलश को उलटाया । अस्थि-अवशेषों को बराबर-बराबर आठ भागों में बांटा । आठों दावेदारों को एक-एक हिस्सा



दया और स्वर्ण कलश स्वयं अपने घर ले
या ।

कुशीनगर के मल्लों ने अपने हिस्से में आये
अस्थि-अवशेषों के ऊपर उसी स्थान पर एक
तूप बनवाया, जहां उन्होंने बुद्ध का दाह-संस्कार
कया था ।

कुशीनगर में

गोरखपुर से देवरिया के रास्ते बस से
टे-पौन घंटे की दूरी पर है— कुशीनगर ।
ानी गोरखपुर से लगभग ५५ किलोमीटर ।
कसिया कुशीनगर से कुछ दूरी पर आगे है ।
ाज एक भरा-पूरा कस्बा है— कुशीनगर ।
ख्य सड़क पर एक तिराहा है । तिराहे से जो
ीसरी सड़क जाती है, उसी पर हैं सभी बौद्ध
वहार-पथिक निवास और उत्तर प्रदेश सरकार
ा पर्यटन सूचना केंद्र । सामने ही परिनिर्वाण
त्य (मंदिर) और स्तूप है । आगे माथा कुंवर
दिर और फिर इसी सड़क पर डेढ़ किलोमीटर
र रामाभार स्तूप ।

पासवाले परिनिर्वाण चैत्य को तो बाद में
खूंगा, पहले दूरवाले रामाभार स्तूप को देख
, सोचकर मैं चल पड़ता हूं, पैदल ही,
योंकि, कहीं कोई रिक्शा-तांगा तो दिखायी पड़
नहीं रहा ।

रास्ता लंबा है । सन्नाटेदार सुनसान भी, क्योंकि, मई के महीने (बुद्ध पूर्णिमा) की तेज दुपहरी है । राहगीर तो कभी-कभार ही कोई दिखता है वैसे सड़क के दोनों ओर कई देशों के नये बने बौद्ध विहार और चैत्य जरूर हैं । डेढ़ किलोमीटर की दूरी तय करनी है । मैं याद करता हूं चीनी यात्री ह्वान सांग को और उसके लिखे यात्रा-वृत्तांत को ।

जब ह्वान सांग आया

कुशीनगर के बारे में ह्वान सांग ने लिखा है लुंबिनी (बुद्ध के जन्मस्थान) से पूर्व दिशा में वीरान जंगलों को पारकर मैं ग्राम राज्य पहुंचा, वहां से घने जंगल में छह सौ ली (यानी) तीन सौ किलोमीटर चलने पर अशोक स्तूप मिला । इस स्तूप के दक्षिण-पूर्व से वीरान मैदान में नब्बे किलोमीटर चलने के बाद न्यग्रोध वन आया, और इस वन से निकलकर मैं कुशीनगर पहुंचा ।

इस प्रकार ह्वान सांग लुंबिनी से लगभग पांच सौ किलोमीटर की दूरी पार करता हुआ कुशीनगर पहुंचा । जब सन् १८९६ में लुंबिनी खोज ली गयी, तो एलेक्जेंडर कनिंघम के लिए

कुशी नगर के बौद्ध स्मारक

● सुभाष चंद्र सिंह

कुशीनगर के बौद्ध स्मारकों में परिनिर्वाण चैत्य (मंदिर) प्रमुख है। इस मंदिर में महापरिनिर्वाण अवस्था में लेटे हुए बुद्ध की ६.१० मीटर लंबी एक भव्य मूर्ति है, जिसका निर्माण एक बौद्ध हरिबल ने कुमार गुप्त के शासन काल (सन् ४१३-४५५ ई.) के दौरान करवाया था। यह मूर्ति चुनार के लाल बलुआ पत्थर के एक शिलाखंड से बनी है। यह मूर्ति खंडहरों में दब गयी थी। सन् १८७६ में इसे पुरातत्वविद् कार्लायल ने खुदाई करके निकलवाया था। वह मूर्ति भी क्षतिग्रस्त थी। बाद में इस मूर्ति का पुनरुद्धार किया गया। साथ ही चैत्य का भी। सन् १९५६ में २५००वीं बुद्ध जयंती के मौके पर भारत सरकार द्वारा इस चैत्य की पुनर्स्थापना की गयी।

इसके ठीक पीछे मुख्य स्तूप है। पुरातत्वविदों की राय में इस स्तूप का पुनरोद्धार विगत सदियों में कई बार हुआ है। प्रारंभ में इस स्तूप की ऊंचाई ४५.७२ मीटर रही थी। स्तूप का मौजूदा स्वरूप बर्मा के दो बौद्धों उ पो क्यु और उ पो हलैंग के आर्थिक सहयोग से हुआ।

पुनरुद्धार के समय इस स्तूप में लकड़ी का कोयला और मिट्टी के कुछ टुकड़े, समाधि मुद्रा में बुद्ध की प्रतिमा और गुप्तकालीन तांबे और चांदी के सिक्के मिले थे।

कुशीनगर को खोजना सहज हो गया। इस खोज में ह्वान सांग के यात्रा-वृत्तांत ने बहुत सहायता की।

अपने यात्रा-वृत्तांत में ह्वान सांग ने आगे लिखा है कि कुशीनगर के प्राचीर ध्वस्त हो चुके थे। नीरवता व्याप्त थी। राजधानी की परिधि पांच किलोमीटर से अधिक थी। निवासी कम थे और गलियों में वीरानी छायी हुई थी। राजधानी के उत्तर-पूर्व के कोने में एक अशोक-स्तूप था, जहां अतीत में चुंद का पुराना आवास था।

नगर से डेढ़-दो किलोमीटर दूर उत्तर-पश्चिम में अजितवती नदी के उस पार पश्चिमी तट से कुछ ही दूरी पर एक साल वन था। इसी वन में बुद्ध परिनिर्वाण को प्राप्त हुए थे।

'ईंटों से बने एक वृहद चैत्य में सिर उत्तर की ओर किये सोते हुए बुद्ध की प्रतिमा सुशोभित थी। चैत्य के पास एक स्तूप था, जो सम्राट अशोक ने बनवाया था। स्तूप की नींव ढह चुकी थी, लेकिन स्तूप फिर भी दो सौ फुट ऊंचा था। स्तूप के समक्ष एक प्रस्तर स्तंभ था, जिस पर तथागत के परिनिर्वाण का विवरण अंकित था। अभिलेख तो था, किंतु उसमें तिथि और मास अंकित नहीं था।'

अन्य अनेक स्तूपों का उल्लेख करते हुए वह आगे लिखता है कि, 'नगर के उत्तर में नदी



मुख्य स्तूप : निर्वाण चैत्य के पीछे

इसके दक्षिण-पश्चिम में कुछ ही दूरी पर एक बौद्ध विहार था—माथा कुंवर । अब विहार तो नहीं है । एक छोटे-से चैत्य में नीले पत्थर से बनी बुद्ध की एक भव्य प्रतिमा है जो तीन मीटर ऊंची है । यहां से प्राप्त एक प्रस्तर अभिलेख के अनुसार यह मूर्ति कलचुरि वंश के स्थानीय शासक भीमट द्वितीय के काल की है ।

बुद्ध के अंत्येष्टि स्थल पर निर्मित स्तूप रामाभार की शैली अन्य स्मारकों से बिल्कुल भिन्न है । इतिहासकारों के अनुसार इस स्तूप की कई बार मरम्मत हुई है । इसके स्तूप के अंड और मेधि का व्यास क्रमशः ३४.१४ मीटर तथा ४७.२४ मीटर है । इस स्तूप के अंदर से किसी प्रकार के अस्थि अवशेष प्राप्त नहीं हुए हैं । इस स्तूप के दक्षिण की ओर भवनों के अवशेष मिले हैं, जो संभवतः मुकुटबंध विहार के हैं ।

—द्वारा श्री शिवपूजन सिंह
वार्ड नं. ३, नयानगर,
पोस्ट व जिला सुपौल ८५२१३१

के उस पार से तीन सौ कदम की दूरी पर एक स्तूप था, जहां तथागत का दाह-संस्कार किया गया ।' लेकिन ह्वान सांग ने इस स्तूप का कोई नाम नहीं लिखा— न तो अंगार स्तूप लिखा है और न मुकुट बंध स्तूप, और न रामाभार स्तूप ।

रामाभार स्तूप पर

रामाभार स्तूप आ गया है । मैं उसके परिसर में प्रवेश करता हूं । मेरे सामने है एक भव्य गोलाकार स्तूप । रामाभार ताल, जो गरमियों के इस मौसम में सूखा हुआ है, के पूर्वी तट पर बने होने के कारण इस स्तूप का नाम रामाभार पड़ा है, या उस टीले रामाभार के नाम पर, जिसके नीचे यह स्तूप छिपा पड़ा था, कुछ निश्चित तौर से नहीं कहा जा सकता । लेकिन कुशीनगर और उसके अन्य स्मारकों से इसकी दूरी, विशेष आकार-प्रकार एवं शैली को देखते हुए, यह निश्चित रूप से मान्य है कि यह बुद्ध शवदाह स्थल पर बना स्तूप है ।

वापसी में बुद्ध की परिनिर्वाण मुद्रा में लेटी विशाल प्रतिमा वाले चैत्य, अशोक स्तूप और उसके परिसर में बौद्ध विहार के भग्नावशेषों को देखता हुआ लौट पड़ता हूं मैं अपने पड़ाव— बिरला धर्मशाला में ।

—सी.बी. ६६ डी, जी-८ एरिया
राजौरी गार्डन, नयी दिल्ली-११००६४

'राजमहिषी', सब इसी नाम से पुकारते थे उन्हें । लंबा कद, कुछ ज्यादा भरा शरीर, ललाई लिये गौरवर्ण, तेजस्वी ललाट । चाल-ढाल, उठने-बैठने का संतुलित, सामंती तरीका । पिता भी जब इतने संपन्न, तो पुत्री को इस नाम से पुकारा जाना कुछ अन्यथा तो ना था ।

पितृगृह में ज्येष्ठ कन्या होने का सौभाग्य

कहानी

राजमहिषी

● डॉ. नीहार गीते

उसके हिस्से आया था । कान्यकुब्ज परिवार की ज्येष्ठ कन्या । आठ साल की उम्र होते न होते, घर में नौकरों की जमात रहते भी, मां ने चूल्हा-चौका दिखा दिया था । खानपान के प्रमुख ब्राह्मणी संस्कार को जीवित रखना ब्राह्मण कन्या का प्रथम दायित्व जो था ।

पिता की सहृदयता में उनकी संपन्नता कभी आड़े नहीं आयी । प्रखर संवेदनशीलता लिये हरिजनों, बलाइयों की समस्याओं से जूझते, उनका साथ देते-देते पिता कब परिवार से विमुख हो गये, किसी को पता ही न चला ।

ज्येष्ठ कन्या होने के नाते किस को दिन के खाने से लेकर रात के खाने तक क्या परोसना है । दस की उम्र तक आते-आते तो वह हर मायने में अपना नाम सार्थक करने लगी । उदार इतनी कि गरीब को भी मेवा-मिष्ठान्न चखाने में संकोच न करती । मां भी आती-जाती रिश्तेदारियों से निपटने और चौसर जमाने में इतनी व्यस्त होतीं कि जेठी को चाबियों का खनखना पकड़ा मस्त रहतीं ।

उसकी इसी सुंदरता, सौम्यता पर मुग्ध हो, जब उसके पिता के करीबी दोस्त लक्ष्मीशंकर पांडेजी ने अपने आय.पी.एस. सुपुत्र के लिए उसका हाथ मांगा, तो पिता उसकी उम्र कच्ची होते हुए भी न नहीं कह सके थे । इंटर की परीक्षा पास भी नहीं की थी उसने, सपने देखना तक शुरू नहीं कर पायी थी वह, रंगों के मतलब समझने की ओर ध्यान तक नहीं गया था उसका कि ब्याह दी गयी वह ।

लेन-देन में कोई कोर-कसर न रह जाए, इसलिए महल्ले की हर बड़ी-बूढ़ी की सलाह मानी गयी ।

सन् उनचास में ऐसी धूमाधामी की शादी आसपास लोगों ने देखी न सुनी ।

पर बारात तो बारात ठहरी । ठेठ कनौजिया बारात । जब तक पूरा रंग दिखा न दे, रंग देख न ले, तब तक चैन कहां ? पांडेजी यूं तो स्कूल में हेडमास्टर थे, पर स्कूल का हेडमास्टर होने में वह मजा कहां, जो बेटे की बारात का हेड होने में है । समधियाने को बेरंग कर उन्होंने फाग का-सा मजा लूटा ।

श्वसुर गृह में उसे पहले से भी ज्यादा जिम्मेदारियां थमा दी गयीं । उजाले में पति से चार बात तक कर लेने की अनुमति सास से प्राप्त करनी होती । सास बेटे के मोह में ऐसी पागल कि उसकी हर बुराई को शै देतीं, इसकी

हर अच्छाई पर पानी डाल छोटी-से-छोटी गलती को बढ़ाती जातीं । मां की आड़ ले बेटा अपने आक्रोश का प्रसाद जब-तब उसे दिया करता । शरीर पर निशान, मन में अवसान लिये वह इस-उसकी जरूरतें नापती अकबरपुर के उस तिमंजले मकान को ऊपर-नीचे किये रहती ।

सास की खटिया बरामदे में ऐसी जगह लगी थी, जहां से कोई कोना अनदेखा न होता । पंडितजी आंगन के जलते चूल्हे में लकड़ी का एक अद्धा भी ज्यादा सरका देते, तो वह फुरती से उसे खींच पानी लुढ़का देतीं ।

एक पानी की दाल की आस में चढ़ी बटलोई में मजाल है कि कोई आधा चमचा कच्चा पानी मिला तो देता ।

हां उनकी अपनी कोठरी पास ही थी । जिसका सिमसिम उनकी बेटियों के आने पर बेहिचक खुल जाता । बेसन के लड्डुओं, मठरियों की वाचाल गंध उसे बेहाल कर जाती । टूटे टुकड़े जो हिस्से में आते, उसमें वह संपूर्णता कहां होती ? पर सासु ऐसे गरिष्ठ नाश्ते करा उसका स्वास्थ्य बिगाड़ना नहीं चाहतीं, उस वय में भी उनके खुद के लिए वही सब सुपाच्य होता ।



श्वसुर जरूर उसकी सेवा से खुश हो जब-तब कभी घी की जलेबी, तो कभी हरे चनों का दोना उसके नाम ले आते, जिसका सुख तो उसे कम ही नसीब हुआ, बदले में उसका घूंघट जरूर बढ़ता गया। पितृगृह में मुक्तहस्त से खानपान लुटाती, अपने लिए इतनी मोहताज हो जाएगी, कभी सोचा न था। अम्माजी का दिया बेहिसाब, नाजायज लाड पति सच्चिदानंद को ज्यादा ही आरामतलब बनाता गया। प्रथम बैच का आय.पी.एस. होना क्या आसान था ? कुछ ही अंकों से आय.ए.एस. चूक जाने का गम उसके गर्व को ठंडा करना चाहता, यह उसे पसंद न था।

नौकरी की अपनी दिक्कतें सभी को आती हैं। विलक्षणता के दंभ, आत्ममुग्धता की पराकाष्ठा, अपनी कुशाग्र बुद्धि के आगे किसी को कुछ न समझने की उसकी आदत और झूठे अहम ने सच्चिदानंद से त्यागपत्र लिखवा ही लिया। उसकी तेजस्विता की तीक्ष्णता ने व्यावहारिकता के सारे बंधन काट दिये। एक क्षण को भी उसने न सोचा कि उसके इस एक गैर जरूरी निर्णय से कितने जीवन बरबाद होंगे। पत्नी की सलाह का तो कोई मोल था ही नहीं, उसकी निगाह में।

जब दिन-रात के खाली बैठने और बचे पैसों को शराब में उड़ा देने के बाद करने को कुछ न बचा, तो पत्नी पर घूंसों, लातों का गणित बढ़ता गया। रुतबा न रहा, तो रिश्तेदारों ने, दोस्तों ने सिकुड़ना शुरू किया। और तो और वही मां जो उसकी बुद्धि, उसके रूप का गुणगान करते थकती न थीं, दो बात करते भी कतरातीं। मलाई के दोनों की जगह चने परवल का नाश्ता उन्हें कबूल न था। उनकी अपेक्षाएं दूसरे बेटों की ओर उठ गयीं, तो स्नेह का बहाव भी रास्ता बदल गया।

असफलता यूं चुभती है, सच्चिदानंद ने यह तब जाना था। संस्कारी अहं ने झुकना तो सिखाया ही न था, वह टूट गया, पर झुका नहीं। विक्षिप्तता के क्षणों में बस किसी को पहचानता, तो अपनी दो साल की बेटी नैनी को।

ऐसे में जब वह फटेहाल हो आयी, तो डिग्रियों की ओर ध्यान गया। पिता ने इतना कुछ दिया, जो सबसे जरूरी था, वही न दे पाये। छोटी परीक्षाओं की सफलता के बूते पर जब नौकरी तलाशने निकली तो हाथ खाली रहे। समस्याओं से जूझती किसी तरह वह कुछ और पढ़ पाने में सफल हो गयी। कुछ छोटी-मोटी ट्यूशनें मिलीं जो घर-खर्च के काबिल न थीं। सुघड़ बेटी की ऐसी खस्ताहाली जब पिता से सहन न हुई, तो उन्होंने उसे अपने शहर के ही एक छोटे से 'प्रायवेट' स्कूल में पढ़ाने बुलवा लिया। देर रात जब ट्रेन से वह मायके पहुंची, तो पिता को स्वयं आया देख फूट पड़ी। शुरू से ही मां ने जितना झिड़का, पिता ने उतना ही लाड़ दिया था उसे। घर तक के रास्ते में सबसे प्रिय बिटिया पर बीती की नापजोख करते पिता के भाव कहीं भीतर-ही-भीतर घुमड़ पथरा ही गये। पिता की कोठी का ऊपरी हिस्सा जो सिर्फ फरनीचर से आबाद था, उसके और नैनी के आ जाने से महक गया। वर्षों बाद मां-बेटी को सुविधा हो आयी।

रात के अंधेरों में जो बात छिपी रह गयी थी, दिन के उजाले में साफ होते देर न लगी। भाई

के स्वभाव की कटुता तो वह बचपन से झेलती आयी थी, पर अब साथ में भाभी की अव्यावहारिकता की चाबुक उस पर जानकर चलती। मां का व्यवहार देख बचपन का शक मजबूत होने लगता "मां सौतेली तो नहीं ?" पिता का सहारा था। 'बेटी के लिए क्या करें ? क्या न करें ?' की ऊहापोह में एक दिन वह भी चल पड़े। उम्र तो अधिक न थी, पर परिवार में स्निग्धता का खूंटा भी तो न था, जो बांधे रख सकता। सवा महीना होते-न-होते इकलौते भाई ने जायदाद के सारे कागजों पर बहनों का समर्पण चाहा था। उसने बाकी सब तो लिख दिया, एक छोटा हिस्सा मकान में अपनी और नैनी की छत्रछाया के लिए रखना चाहा, तो भाई-भाभी ने बवाल खड़ा कर दिया। हारकर उस सबसे भी मुक्त हो गयी वह।

पिता से अर्जित संपन्नता के बल पर आस-पड़ोस के सुख-दुख में सहभागिता दिखाता भाई अपनी ही सहोदरा के प्रति कैसा कठोर हो आया था। हिस्से की चाह की अपराधिनी जो थी वह। पिता की मौत के ठीक इकतालीसवें दिन, भर बारिश में, भाई ने सामान के नाम पर जो कुछ था पूरी छत पर बिछा दिया। स्वार्थ में रिश्ते-तो-रिश्ते क्या, इनसानियत भी अजनबी हो जाती है ? उधर गीला होता सामान इधर भीगा मन, रोती छोटी बच्ची, रीता तन, किस-किसको संभालती वह ? कब मां ने फोन कर तेजी बुआ को बुला लिया उसे पता ही न चला, वह ही उसे समेटकर अपने साथ ले गयी थीं। उन्होंने ही धीरे-से एक छोटा मकान उसे मुहैया कराया था।

छोटी नौकरी, छोटा मकान, छोटी-सी बच्ची, पर जरूरतें तो इतनी छोटी न थीं। चोरों से ज्यादा लोगों का डर। घर पर बागड़ बांधना जरूरी हो आया।

मां कभी-कभी मिलने आ जाया करतीं। गौरवर्ण, ठसकेदार ऊंचा शरीर, कसकर बांधे हुए बालों की छोटी-सी जूड़ी, भीतर तक तपासती बड़ी-बड़ी आंखें, पिता की मृत्यु पश्चात बातों में आया संतुलन और हंसी आधे गालों तक समेट लेने की उनकी क्षमता उनके व्यक्तित्व को और संपन्न बनाती। घर में भी लकदक सफेद साड़ी की कलफ की परत ढीली न पड़ती। शहर में मान था उनका। इस मान की

समय बीतता चला। कुछ दोस्तियां मिलीं, तो कुछ धोखे भी। कुछ ने आगे बढ़ाया, तो कुछ ने रोड़े भी अटकाये। जीवन के खालीपन से ध्यान हटा, नौकरी के अलावा समाजसेवा में वह ऐसे जुटी कि लोग उसे जानने लगे।

दीवार को वह दरकने देना नहीं चाहती थीं। बेटी की आवश्यकताओं को वह कभी नातिन को चार दिन घर रख, तो कभी तीज-त्यौहार टिफिन पहुंचा पूरा किया करतीं। बेटी की खस्ताहाली उनसे छिपी न थी।

समय बीतता चला। कुछ दोस्तियां मिलीं, तो कुछ धोखे भी। कुछ ने आगे बढ़ाया, तो कुछ ने रोड़े भी अटकाये। जीवन के खालीपन



से ध्यान हटा, नौकरी के अलावा समाजसेवा में वह ऐसे जुटी कि लोग उसे जानने लगे । कुछ मान मिला, तो कुछ अपमान भी ।

ब्राह्मण संस्कार भाई को दिन में दो बार नहलाते, पर मन पर चढ़ी कालिख से वह जिस-तिस को कलंक लगाता । अर्द्धविक्षिप्त पति के पास रह वह बार-बार लुटती-पिटती रहती या भाई के आश्रय में बरतन भी मांज रही होती, तो कुलीन कही जाती । अपना अस्तित्व बना नाक ऊंची कर चलनेवाली बहन का सुख खुद भाई से देखा न जाता । जब-जब वह उसके यहां उसका बढ़ता दुख महसूसने जाता, उसे पहले से भी अधिक सबल पाता । अपनी कम हैसियत में भी वह जी खोल सबका स्वागत करती । उसे छोटा करने पहुंचे रिश्तेदार, उसका निश्चल स्वागत देख, खुद ओछे हो बाहर आते, तो अपनी कृपणता छिपाते हुए, उसकी उदारता पर सौ-सौ लांछन लगाते । 'इतना लुटाने की जरूरत क्या है ? बड़ी राजमहिषी बनी फिरती है ।'

देखते-ही-देखते असुरक्षा के आंसू बेटी की आंख का पानी बन गये । इस पानी को उस अकेली को ही तो बांधना था । पति काबिल न हो, तो श्वसुरगृह से भी आस जाती रहती है । अपनी तरफ से ठोक-बजा एक संभ्रांत परिवार को बेटी सौंप ही दी । अब तक का सहेजा-समेटा सब-कुछ बेटी का दहेज बन गया ।

जीवन की संपूर्णता, अपूर्णता की साक्षी, अपनी दोस्त, अपनी बेटी का दान कर वैसे ही वह रिक्त हो गयी थी कि बिटिया की सास की इच्छाएं, आकांक्षाएं उसके कानों में मुखर होने लगीं । उसके यहां की हर चीज उन्हें अपने घर के उपयुक्त नजर आने लगी । ''अकेली जान राजमहिषी-सा जीवन जीती हैं, टी.वी., फ्रिज, टेलीफोन, इतने सुखभोग की क्या जरूरत है ? बनाने-खाने में इतना क्यों खर्चती हैं ?''

पति से दूर अकेली रहनेवाली स्त्री के भाग्य में क्या सभ्यता से रहना भी नसीब नहीं ? पति के व्यसनों के साथ सती न हो गयी, तो क्या सुविधाएं अक्षम्य हो जाएं ?

टूट गयी है वह लोगों का जहर पीते-पीते । पर अब और टूटने नहीं दूंगी मैं उन्हें ।

इस राजमहिषी के पीछे छिपी असली मोहिनी, को वे जान नहीं सकते, जानना चाहते भी नहीं । मरे हुओं की अर्थियों पर बड़े-बड़े भाषण, फूल चढ़ानेवाले कितनी सहजता से जीती-जागती जिंदगियों को मौत दे जाते हैं । पर मैं नहीं बनने दूंगी उन्हें एक और अर्थी । लड़की शब्द का पर्याय सिर्फ लेना-लेना ही नहीं बनने दूंगी मैं, क्योंकि मेरे लिए तो वे हर भावना से सर्वोपरि किसी भी राजमहिषी से श्रेष्ठ सिर्फ मां हैं मां । इतनी बार गुदते-गुदते स्वभाव का जो मीठापन बाहर छलक गया है, उसे मैं समेटूंगी । मैं ।

—४०३, अलंकार अपार्टमेंट
२३२, अनूप नगर, इंदौर

बुद्धि विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

— संपादक

१. क. **सम्राट** अकबर के जमाने में रामायण का अनुवाद फारसी में किसने किया था, जिसकी हस्तलिपि अब भी मौजूद है ?

ख. आधुनिक काल में 'कुरान' का संस्कृत काव्य में अनुवाद किसने किया है ?

२. क. **जहांगीर** के समय में पहले कौन अंगरेज और कब आया था ? वह कहां और कौन-से जहाज से उतरा था ?

ख. वह जहांगीर से कब और कहां मिला था ?

३. क. **अमरीका** के किस राष्ट्रपति ने देश का क्षेत्र एकदम दुगुना कर दिया ?

ख. कौन-सा क्षेत्र, किस तरह मिला लिया ?

४. क. **हाल** में भूगर्भ सर्वेक्षण के अनुसार भारत में सोने की खदानें कहां मिलने की संभावना है ?

ख. देश में प्रसिद्ध सोने की खदान कहां है ? आजकल वहां सोने का उत्पादन कितना होता है ?

५. क. **भारत** में ५०वीं वर्षगांठ किस सिलसिले में मनायी जा रही है ?

ख. किस भारतीय नेता की जन्मशती विगत जनवरी में मनायी गयी, किस रूप में ?

६. क. **विघटित** सोवियत संघ से पृथक देशों ने रूस की कौन-सी बात मानने से इनकार कर दिया है ?

ख. इनमें कौन-से देश शामिल हैं ?

७. क. **अमरीकी** सेना तथा 'नासा' ने हाल में संयुक्त रूप से कौन-सी खोज की है ?

ख. 'नासा' किसका संक्षिप्त रूप है ?

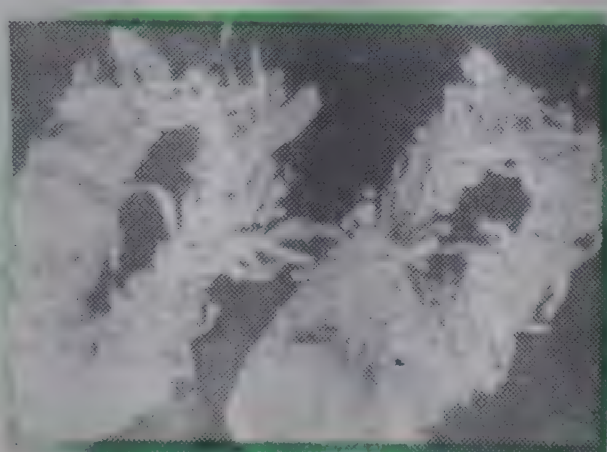
८. **निम्नलिखित** पुरस्कार या सम्मान किसे मिले हैं ?

क. वर्ष १९९६ का यूनेस्को मानवाधिकार पुर. ख. के.के. बिड़ला फाउंडेशन का वर्ष १९९६ का सरस्वती सम्मान, ग. वर्ष १९९६ का नेहरू एवं टैगोर साक्षरता पुर., घ. वर्ष १९९६ का ज्ञानपीठ पुर. ।

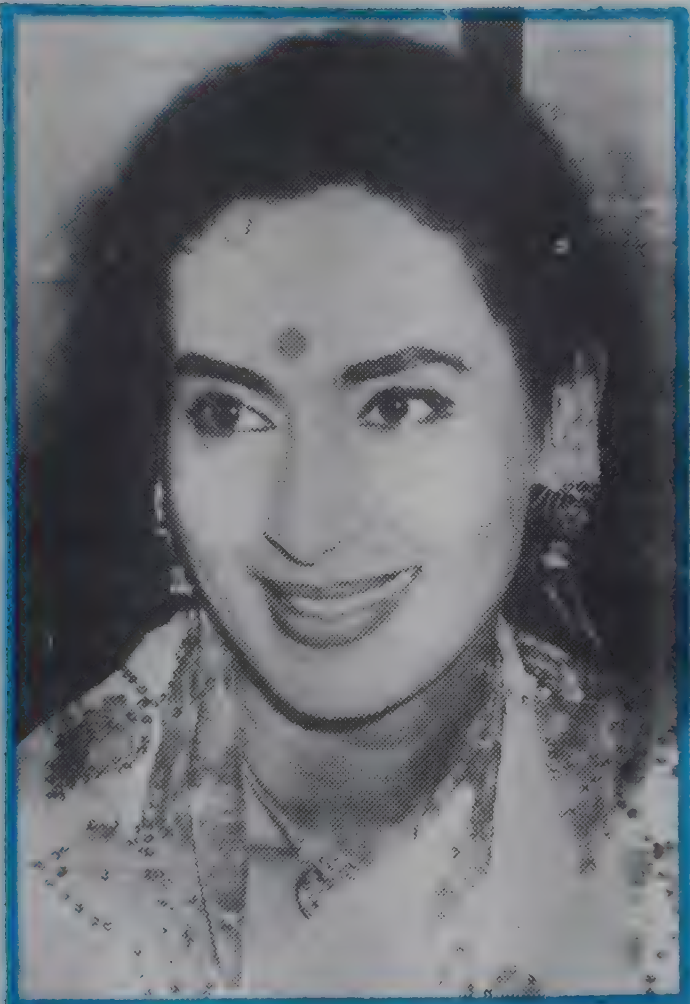
९. क. **ग्रैंड** स्लैम चैंपियन का खिताब जीतनेवाली टेनिस की सबसे कम उम्र की महिला खिलाड़ी कौन हैं ?

ख. पोल वाल्ट में नया कीर्तिमान स्थापित करनेवाली महिला एथलीट कौन है ?

१०. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—



फिल्म



नूतन तू प्यार का सागर है

मुंबई, जो तब बंबई था, का एक सिनेमा हॉल । हॉल में एक फिल्म लगी है, जिसे 'ए' सर्टिफिकेट मिला है, अर्थात 'वयस्कों के लिए' । एक सोलह वर्षीया नवयुवती हॉल में प्रवेश करने ही जाती है कि गेट कीपर उसे रोक देता है । वह कहता है, 'यह फिल्म बच्चों के लिए नहीं है ।'

शायद गेट कीपर उस नवयुवती को पहचान नहीं पाया था । इस फिल्म की वही नवयुवती तो नायिका थी । और यह और कोई नहीं, नूतन थी और फिल्म थी 'नगीना' । 'नगीना' नूतन की पहली चर्चित फिल्म थी । नायक थे, दिलीप कुमार के भाई नासिर खां । इस फिल्म का एक गीत बेहद प्रसिद्ध हुआ था—

रोऊं मैं सागर किनारे
सागर हंसी उड़ाये
क्या जानें ये चंचल लहरें
मैं हूं आग छिपाये

उस गीत के गायक थे, सी. एच. आत्मा, जो तब किसी विमान कंपनी में कार्य करते थे । और इस गीत ने लोगों के मन में सहगल की याद ताजा कर दी थी । निस्संदेह सी. एच. आत्मा की आवाज खरजदार थी, पर उसमें सहगल की आवाज— जैसा जादू नहीं था । 'नगीना' एक भयोत्पादक, डरावनी फिल्म थी और इसीलिए उसे 'ए' सर्टिफिकेट दिया गया था । यह फिल्म अच्छी-खासी चली थी और सी. एच. आत्मा को भी उक्त गीत के कारण ख्याति मिली थी । इसी फिल्म ने भारतीय रजत पट को नूतन-जैसी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न, संवेदनशील अभिनेत्री भी दी । इस फिल्म का एक दृश्य, आज भी, इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी स्मृति-पटल पर ज्यों-का-त्यों सुरक्षित

है, किसी अलबम में सहेज कर रखे गये चित्र की तरह । दृश्य में एक कातिल नूतन को डरा रहा है । स्क्रीन पर केवल नूतन का चेहरा दिखायी देता है । आंखों में आतंक से उत्पन्न भाव, कुछ कहने के लिए कांपते ओठ । नूतन ने अपनी आंखों एवं ओठ कंपकंपाकर भयभीत होने की जो अभिव्यक्ति की थी, वह निस्संदेह सर्वोत्कृष्ट थी । 'सीमा' और 'सुजाता', 'बंदिनी' आदि में ऐसी मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति बार-बार देखने को मिली ।

'हमारी बेटी'/ 'हम लोग'

इस फिल्म के निर्माता थे पांचोली और निर्देशक थे रवीन्द्र दवे । संगीत शंकर-जयकिशन का था । फिल्म के एक अन्य प्रमुख कलाकार थे चरित्र-अभिनेता विपिन गुप्ता । यह फ़िल्म आज से लगभग ४७ वर्ष पूर्व अर्थात सन् १९५१ में बनी थी । इसके पूर्व सन् १९५० में नूतन की मां, प्रसिद्ध अभिनेत्री शोभना समर्थ ने अपनी दोनों बेटियों नूतन और तनूजा को लेकर एक फिल्म बनायी थी 'हमारी बेटी', जिसमें नायक थे शेखर । इस फिल्म में मोतीलाल और शोभना समर्थ की भी प्रमुख भूमिका थी । सन् १९५१ में ही नूतन की एक और फिल्म आयी थी 'हम लोग', जिसमें बलराज साहनी, दुर्गा खोटे, श्यामा—जैसे कलाकारों के साथ उसने काम किया । सन् १९५१ में बनी 'हम लोग' एक उच्च कोटि की सामाजिक फिल्म थी । लेखक और निर्देशक थे जिया सरहदी । इस फिल्म में मध्यम वर्ग के टूटते सपनों का बेहद सजीव चित्रण था । इस फिल्म के संवाद भी बेहद लोकप्रिय हुए थे और नूतन, बलराज साहनी सहित सभी ने इस फिल्म में उत्कृष्ट अभिनय किया था । सन् १९५२ में नूतन की चार फिल्में आयीं—'हंगामा', 'निर्मोही', 'परबत' और 'शीशम' । सन् १९५३ में उनकी फिल्में थीं 'लैला मजनू', 'मालकिन' और 'आगोश' ।



सन् १९५५ में नूतन की एक अविस्मरणीय फिल्म बनी, 'सीमा' । इसके निर्देशक थे अमिय चक्रवर्ती । फिल्म के नायक थे बलराज साहनी । बाद में प्रसिद्ध हास्य अभिनेत्री शुभा खोटे को 'सीमा' से ही 'ब्रेक' मिला था ।

एक अनाथ गुस्सैल लड़की

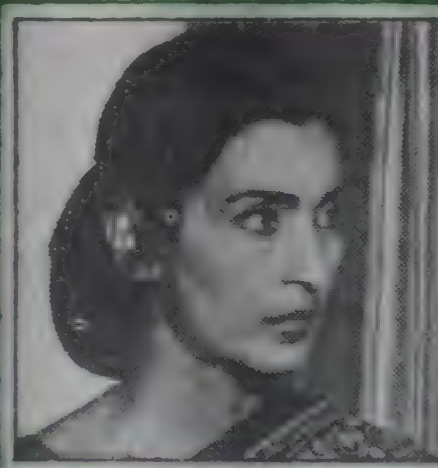
'सीमा' अनाथालय में रहनेवाली एक असहाय लेकिन गुस्सैल युवती की कहानी थी, जो अनाथालय के सहृदय प्रिंसीपल के व्यवहार के कारण पूरी तरह बदल जाती है । नूतन ने गुस्सैल युवती और बलराज साहनी ने प्रिंसीपल की भूमिका की थी । दरअसल इसी फिल्म से नूतन की प्रतिभा का लोगों को परिचय मिला । फिल्म में एक दृश्य है, जिसमें नूतन एक सिक्के को अपने पैर से छिपाना चाहती है । क्षण भर के लिए उसके मन में अंतर्द्वंद्व उठता है कि वह ऐसा करे या न करे । कोई देख तो नहीं रहा है । अंततः वह उसे अपने पैर से छिपा देती है । इस दृश्य में नूतन ने हिचकिचाहट की जो अभिव्यक्ति की, वह उसकी उत्कृष्ट अभिनय प्रतिभा की साक्षी थी । 'सीमा' का एक गीत भी बेहद लोकप्रिय हुआ था—

तू प्यार का सागर है
तेरी इक बूंद के प्यासे हम
लौटा जो दिया तूने
चले जाएंगे जहां से हम

इस गीत के दौरान भी नूतन का अभिनय मन छू लेने वाला था ।

'सोने की चिड़िया' : 'प्यार पर बस तो नहीं है...'

'सीमा' के बाद 'सोने की चिड़िया' में भी नूतन और बलराज साहनी ने कार्य किया । 'सीमा' के सर्वथा विपरीत 'सोने की चिड़िया' में नूतन ने एक ऐसी गायिका-अभिनेत्री की भूमिका निभायी, जिसका शोषण सभी करते हैं । परिवार वाले भी और यहां तक एक जूनियर आर्टिस्ट (तलत महमूद ने यह भूमिका निभायी थी) भी जो उसके प्रेमी होने का नाटक कर उससे लाभ उठाना चाहता है । गायिका-अभिनेत्री का मोह भंग हो जाता है और वह आत्महत्या करना चाहती है, तभी ऐन वक्त पर एक कवि (बलराज साहनी) उसे बचा लेता है । नूतन ने



यह भूमिका भी कुशलता से निभायी थी ।

इस फिल्म में साहिर लुधियानवी के गीत थे । और कुछ गीत बेहद प्रसिद्ध हुए थे । जैसे—

प्यार पर बस तो नहीं है मेरा लेकिन फिर भी
तू बता दे कि तुझे प्यार करूं या न करूं

और यह सार्वकालिक प्रेरणास्पद गीत :

रात भर का है मेहमां अंधेरा
किसके रोके रुका है सवेरा

'सोने की चिड़िया' सन् १९५८ में बनी थी । अगले ही वर्ष नूतन की एक और चिर-स्मरणीय फिल्म आयी 'सुजाता' । 'सुजाता' एक ऐसी

अनाथ हरिजन लड़की की कहानी थी, जिसका लालन-पालन एक परिवार अपनी बेटी के साथ ही करता है । वे अपनी बेटी का रिश्ता जिस युवक से करना चाहते हैं, वह सुजाता की ओर आकर्षित हो जाता है और यहीं से शुरू होती है एक पीड़ादायक त्रासदी ।

'सुजाता' का एक दृश्य दर्शकों को भुलाये नहीं भूलता । कलकत्ता के गांधी घाट पर यह दृश्य फिल्माया गया था । पृष्ठभूमि में एस. डी. बर्मन द्वारा गाया प्रसिद्ध गीत था—*'सुन मेरे बंधु रे, सुन मेरे मितवा, सुन मेरे साथी रे ।'* दृश्य यों है : बरसात हो रही है और गांधी घाट के साये में नूतन और सुनील दत्त हैं । बीच-बीच में गांधी घाट में उत्कीर्ण गांधीजी की प्रतिमा परदे पर आती है । बिमल राय ने संकेतों के जरिए उस पूरे दृश्य की हृदयग्राही संरचना की थी और उसका प्राण था, नूतन का वही मूक जीवंत अभिनय । नूतन में यह विशेषता थी कि वह केवल आंखों और मुखाभिव्यक्ति द्वारा, विशेषकर कांपते ओठों द्वारा भावों का संप्रेषण करती थीं । 'सुजाता' निस्संदेह एक उत्कृष्ट फिल्म थी । इस फिल्म के गीत भी बेहद श्रुति-मधुर थे—जैसे *'जलते हैं जिसके लिए तेरी आंखों के दिये, ढूंढ लाया हूं वही गीत मैं तेरे लिए'* या *'काली घटा छाये मोरा जिया घबराये, ऐसे में कहीं कोई आ जाए'* ।

'सुजाता' में नूतन के अभिनय के बारे में रजनीश बहल कहते हैं, "उसे (नूतन को) बिमल राय के साथ काम करने में मजा आता था और बदले में बिमल राय भी उसे अभिनय में पूरी छूट दे देते थे । यही नहीं, वे उससे यह भी पूछते थे कि कैमरा किस कोण पर रखा जाए ।" 'सुजाता' की चर्चा करते हुए वह आगे कहते हैं, "नूतन इस भूमिका को इतनी सहजता से इसलिए निबाह सकी, इस भूमिका में इतना तादात्म्य इसलिए स्थापित कर सकी कि उसकी निरीक्षण शक्ति अत्यंत सूक्ष्म थी । जब कभी हमारी कार ट्रैफिक सिग्नल पर रुक जाती, तो पास की झोपड़-पट्टियों की औरतें पास आकर, हाथ जोड़कर उससे कहतीं, "बहुत अच्छा काम किया 'सुजाता' में ।"

'सुजाता' अछूत समस्या पर बनी एक अत्यंत संवेदनशील फिल्म थी । जिस वर्ष

यह नहीं कि नूतन केवल करुणाजनक भूमिका निबाहने में ही समर्थ थी । हलकी-फुलकी भूमिका में भी उसने शोख अभिनय किया था । 'अनाड़ी', 'छलिया', 'कन्हैया', 'तेरे घर के सामने', उसकी ऐसी ही कुछ सफल फिल्में थीं । 'अनाड़ी', 'छलिया' और 'कन्हैया' में राजकपूर नायक थे और 'तेरे घर के सामने' में देव आनंद । इन चारों फिल्मों के गीत बेहद लोकप्रिय हुए थे ।

'सुजाता' रिलीज हुई थी सन् १९५९ में, उसी वर्ष नूतन का नौ सेना के एक अधिकारी रजनीश बहल से विवाह हुआ । बाद में रजनीश बहल ने भी नूतन और धर्मेंद्र को लेकर एक बहुत अच्छी फिल्म बनायी थी—'सूरत और सीरत' ।

'सूरत और सीरत' सन् १९६२ में बनी थी । निर्देशक थे रजनीश बहल और संगीतकार थे रोशन । नायक की भूमिका धर्मेंद्र ने की थी, जो फिल्मों में उन दिनों नये-नये आये थे ।

रिटेक नहीं

'सूरत और सीरत' एक ऐसी गरीब, साधारण नर्स की कहानी थी, जिसे एक युवक इसलिए पत्नी के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर देता है कि वह असुंदर है । बाद में एक आंदोलन के दौरान वह नेत्रहीन हो जाता है और वही नर्स उसकी तीमारदारी के लिए प्रयुक्त होती है । अपनी सेवा और व्यवहार से वह उसका हृदय जीत लेती है तथा उससे विवाह भी कर लेती है । पर एक आशंका उसे सदैव आतंकित करती रहती है, 'यदि उसकी दृष्टि लौट आयी, तो क्या वह उसे ठुकरा देगा ।'

इस फिल्म के फिल्मांकन की चर्चा करते हुए रजनीश बहल कहते हैं— ''एक दृश्य में मैं चाहता था कि नूतन की एक आंख डबडबायी हो और दूसरी आंख से एक बूंद आंसू कपोल पर लुढ़के । मैंने नूतन से इसकी चर्चा की । वह बोली, 'पहले शाट में ही ओके कर लेना । मैं 'रिटेक' नहीं देने वाली ।' इसलिए हमने स्टुडियो के सारे दरवाजे बंद कर दिये और शाट की तैयारी की । मैं जैसा चाहता था, नूतन ने वैसा ही अभिनय किया । अपने भावावेगों पर इस कदर नियंत्रण था उसका ।''

बंदिनी : अविस्मरणीय अभिनय

नूतन ने ऐसी ही मर्मस्पर्शी भूमिका 'बंदिनी' में की थी । उसे सन् १९६३ की श्रेष्ठतम नारी प्रधान फिल्म माना गया था । 'बंदिनी' जरासंध के एक उपन्यास पर आधारित ब्रिटिश काल की पृष्ठभूमि पर केंद्रित, इस फिल्म में नूतन ने एक 'बंदिनी' की भूमिका की थी । उनके साथ थे अशोक कुमार । उन्होंने एक क्रांतिकारी की भूमिका निभायी थी । इस फिल्म के दो गीत बेहद लोकप्रिय हुए थे । एक तो स्वयं एस. डी. बर्मन ने गाया था, ***'ओ मेरे मांझी, ले चल पार, मैं इस पार, मेरे साजन हैं उस पार'*** और दूसरा गीत था, आशा भोसले का गाया—***'अबकी बरस भेज भैया को बाबुल'*** । इन दोनों गीतों की अदायगी, उनका फिल्मांकन बेहद मर्मस्पर्शी था ।

यह नहीं कि नूतन केवल करुणाजनक भूमिका निबाहने में ही समर्थ थी । हलकी-फुलकी भूमिका में भी उसने शोख अभिनय किया था । 'अनाड़ी', 'छलिया', 'कन्हैया', 'तेरे घर के सामने', उसकी ऐसी ही कुछ सफल फिल्में थीं । 'अनाड़ी', 'छलिया' और 'कन्हैया' में राजकपूर नायक थे और 'तेरे घर के सामने' में देव आनंद । इन चारों फिल्मों के गीत बेहद लोकप्रिय हुए थे ।

पुनर्जीवन पर आधारित 'मिलन'

इसी तरह पुनर्जीवन पर आधारित 'मिलन' भी नूतन की एक प्रसिद्ध फिल्म थी । रजनीश बहल के अनुसार, नूतन को पुनर्जीवन वाली भूमिकाएं बेहद पसंद थीं । इसमें नायक थे सुनील दत्त । नूतन की एक और अविस्मरणीय फिल्म है, 'सरस्वती चंद्र' । इसमें नूतन ने कुमुद नामक एक ऐसी विवाहित स्त्री की भूमिका की

थी, जो अपने भ्रष्ट पति के आचरण से विक्षुब्ध हो एक आश्रम की शरण लेती है । इससे पूर्व कुमुद की मंगनी सरस्वती चंद्र से हुई थी । पर दोनों का विवाह नहीं हो पाया था । 'सरस्वती चंद्र' के अनेक गीत लोकप्रिय हुए थे, जैसे—***चंदन-सा बदन, चंचल चितवन, धीरे-से तेरा यों मुस्काना, मुझे दोष न देना जगवालो, हो जाऊं अगर मैं दीवाना', 'मैं तो छोड़ चली बाबुल का देस पिया का घर प्यारा लगे'*** और यह प्रेरणास्पद गीत ***'छोड़ दे सारी दुनिया किसी के लिए, ये मुनासिब नहीं आदमी के लिए'*** ।इन गीतों के संगीतकार थे कल्याणजी आनंदजी ।

सौदागर

सन् १९७३ में नूतन की अमिताभ के साथ एक और अच्छी फिल्म बनी थी, 'सौदागर' । यह एक ऐसी विधवा युवती की कहानी थी, जो बहुत अच्छा गुड़ बनाती है और नायक (अमिताभ) उससे इसलिए शादी करता है कि वह उसकी कमाई से अपने इसी विवाह के लिए मेहर इकट्ठा कर सके । उद्देश्य पूरा हो जाने पर वह उसे तलाक दे देता है, लेकिन अंत में उसे उसी के पास लौट आना पड़ता है । इस फिल्म में नूतन ने जबर्दस्त अभिनय किया था, क्रोध, अपमान, करुणा, संघर्ष, निष्ठा, प्रसन्नता आदि की उसकी अभिव्यक्ति उत्कृष्ट थी ।

रजनीश बहल कहते हैं—'इस फिल्म में तलाक का दृश्य सर्वोत्कृष्ट था । उसे नूतन ने स्वयं लिखा था । इस फिल्म की शूटिंग के पूर्व नूतन ने स्वयं यह जाकर देखा था कि औरतें किस तरह गुड़ बनाती हैं ।' 'सौदागर' के पांच वर्षों बाद नूतन की एक और बहुचर्चित फिल्म आयी थी 'मैं तुलसी तेरे आंगन की' ।

बाद में नूतन बीमार-सी रहने लगीं । इस बीच उन्होंने कुछ फिल्मों और एक टेली सीरियल में भी काम किया ।

नूतन की डायरी से

''मैंने [illegible] ताजमहल होटल, बंबई में दिया था, जब मैं [illegible] की थी । मैंने भारतीय नृत्य सीखा था और उसका प्रदर्शन करने को उत्सुक थी'' ।

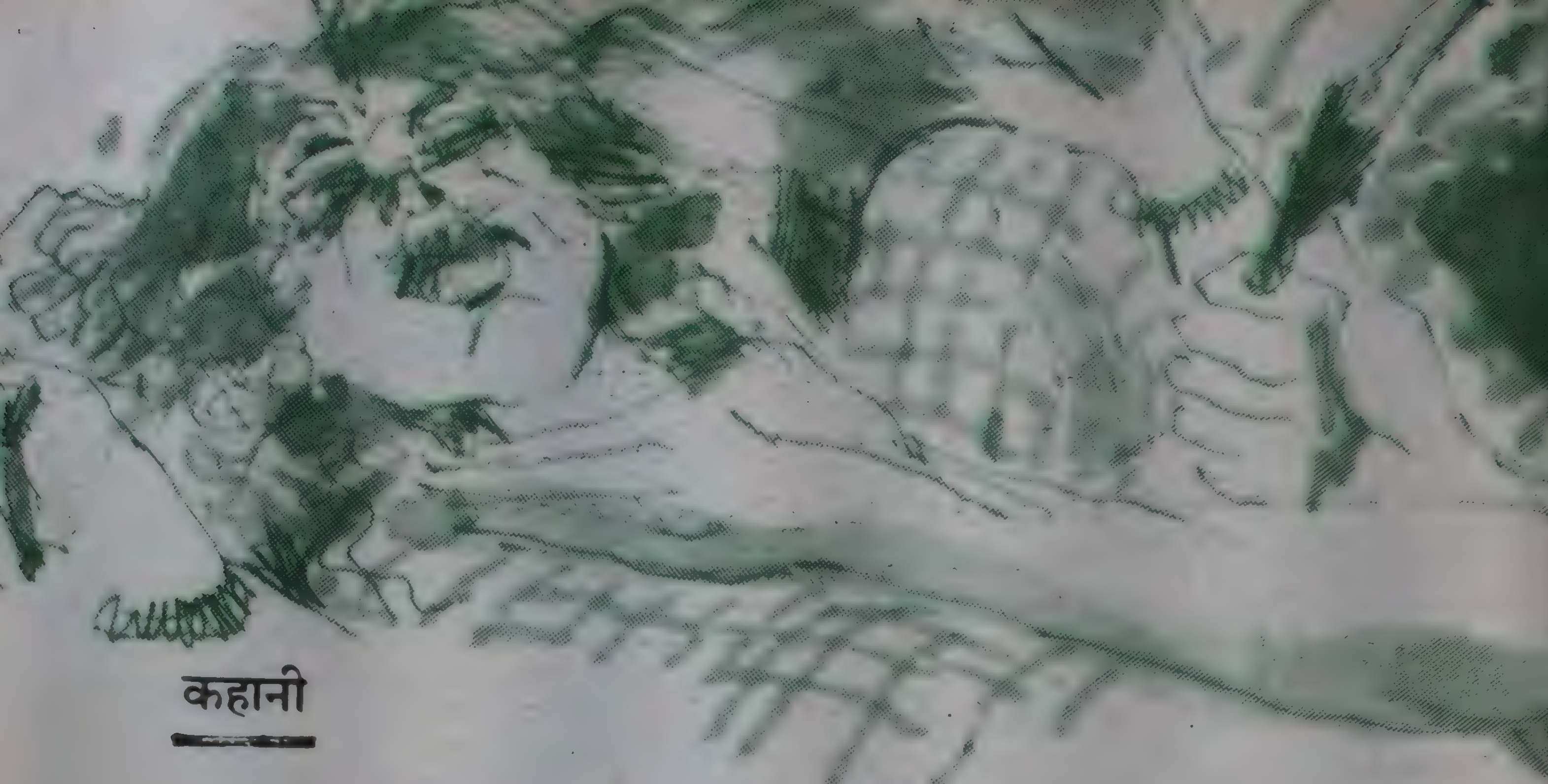
''मैंने अपना पहला फोटोग्राफ सन् १९४१ में साइन किया था, जब मैं पांच वर्ष की थी । तब मैं ज्यूथिका राय वाले एक वेरायटी कार्यक्रम में भाग ले रही थी ।''

''जब मैं दस वर्ष की थी, तब मैंने स्कूल के एक नाटक में भाग लिया था । मैं अपनी 'मम्मी'—जैसी दिखती थी, जो तब एक लोकप्रिय अभिनेत्री थीं । जब मैं सीढ़ियों पर चढ़ रही थी, तो मेरी क्लास टीचर ने (जो 'मम्मी' की प्रशंसिका थीं) मेरी तरफ देखा और पूछा, 'क्या तुम शोभना समर्थ की रिश्तेदार हो ।' मैंने लड़खड़ाते स्वर में कहा, 'हां... !'

रजनीश बहल बताते हैं, '३१ दिसम्बर, १९९० को नूतन ने लिवर में दर्द की शिकायत की । एक जनवरी को हमने सीटी स्कैन करवाया, तो पता चला लिवर कैंसर है ।'

२१ फरवरी को नूतन ने सदा के लिए आंखें मूंद लीं । लेकिन अपने अभिनय के कारण वह आज भी लोगों की स्मृतियों में बसी हैं । नूतन-जैसी अभिनय-क्षमतावाली आज कोई अन्य अभिनेत्री नजर नहीं आती । शायद नूतन के लिए यह कहा जा सकता है, 'न भूतो, न भविष्यति' !

प्रस्तुति : दुष्प्रशु



कहानी

लक्खी

● पुष्पा सक्सेना

प्रायश्चित्त करने का उसका अपना अनोखा ही ढंग था । कभी घर के बाथरूम या किसी गुप्त कोने में वह छिप जाती, कभी जिस बात के लिए उसे डांटा जाता, उसे बिना खाये-पिये पूरा करके ही दम लेती । उसकी इन बातों को मनोरमा उसका प्रायश्चित्त मानती, जबकि सास की दृष्टि में वह छोटी लड़की निहायत बददिमाग और बदतमीज थी । पड़ोस में काम करनेवाली दाई रामावती से बार-बार कहने पर वह अपने गांव से दूर के रिश्ते की भतीजी को ले आयी थी । लक्ष्मी की जगह उसे लक्खी पुकारना ज्यादा आसान था, इसलिए उसका नाम लक्खी ही हो गया ।

उम्र शायद दस-ग्यारह के बीच की रही होगी । धूल और मैल ने उजला रंग धूमिल कर दिया था । देखरेख के अभाव में सुनहरे बालों की लटें बन गयी थीं । अपने से बहुत बड़ी साइज की फ्राक में वह छिप-सी गयी थी । लाल-काली धारियों वाली सूती शाल में अपने को भरसक लपेटे वह शीत से सिकुड़ी जा रही थी ।

"घर में कौन-कौन हैं लक्खी ?"

"नानी-नाना और हम, बस ।"

"तेरे मां-बाप कहां हैं लक्खी ?"

"नहीं हैं ।" लक्खी उदास थी ।

"क्या, तेरे मां-बाप नहीं हैं ?"

"नहीं... । बापू ने दारू पीकर मां को मार डाला, पुलिस बापू को थाने ले गयी, फिर बापू को फांसी हो गयी ।"

मनोरमा स्तब्ध रह गयी । रामावती ने किस जन्म का बदला लिया, खूनी-हत्यारे बाप की बेटी उनके सिर मढ़ दी । उस समय पति ने ही समझाया था "बाप के अपराध में इस बच्ची का क्या दोष ? शहर में वह बात कोई नहीं जानता, इसीलिए नाना-नानी ने दिल पर पत्थर रखकर भेजा होगा । उमर ही क्या है बेचारी की ? पुअर चाइल्ड, हैव पिटी ऑन हर... ।"



नहा-धोकर प्रियंका की फ्राक-स्वेटर पहने लक्खी, पहचान में नहीं आ रही थी। प्रियंका पर यह फ्राक कैसी बदरंग, पुरानी-सी लगती थी, पर वही फ्राक लक्खी पर कैसे खिल आयी थी ? एक क्षण को मनोरमा के मन में उसके रूप के प्रति ईर्ष्या हो आयी थी—काश प्रियंका उसके-जैसा उजला रंग पाती...

"नानी के पास से आते अच्छा नहीं लगा होगा लक्खी ?"

नानी ने कहा, "आपके पास रहना अच्छा है। गांव में तो भरपेट खाना भी नहीं मिलता न ? हम आपका काम अच्छा करेंगे, तो आप हमें भरपेट खाना देंगी न मांजी ?"

"हां-हां तू अच्छा काम करेगी, तो पेटभर खाना भी मिलेगा और तुझे कोई डांटे-मारेगा भी नहीं।"

"तो हम खूब अच्छा काम करेंगे मांजी।" उत्साह और खुशी से उसका चेहरा जगमगा उठा था।

पूरे घर की झाड़ू-बुहारी कर लक्खी ने कपड़े धो डाले थे। छोटे-छोटे हाथों से जिस सुघड़ता से उसने कपड़े फैलाये कि मनोरमा का मन खुश हो गया। लड़की छोटी भले ही थी, पर काम की ट्रेनिंग अच्छी मिली है।

मनोरमा के मन में लक्खी के लिए ढेर सारी सहानुभूति उमड़ आयी थी। जिस उम्र में उसे खेलना चाहिए, वह दूसरों की सेवा में जुटी थी। मनोरंजन उसका भी अधिकार है। रात में काम खतम करने के बाद मनोरमा के साथ टी वी सीरियल देखना, लक्खी का सबसे प्रिय काम होता। नौ बजे के पहले वह सारे काम निबटा टी वी के पास आ बैठती। अपनी मीठी

आवाज में लक्खी सीरियल के बारे में जब कोई सवाल करती, तो प्रियंका नाराज हो उठती—"मम्मी तुम इसे बिगाड़ रही हो, क्या गांव में यह टी वी देखती थी। तुम तो हद ही कर देती हो।"

सास का भी यही खयाल था मनोरमा उसे शह दे, सिर पर चढ़ाये ले रही है। उनके खयाल में नौकर को नौकर की तरह रखो, तभी वो ठीक रहते हैं वरना सिर चढ़कर बोलते हैं।

मनोरमा दुविधा में पड़ जाती, वो बित्तेभर की छोकरी घर के हर प्राणी, यहां तक कि प्रियंका की डॉगी के कामों को पूरा करने के लिए पूरे दिन दौड़ती ही रहती। इतना सब करने के बावजूद वह उन सबके साथ बैठ टी वी के माध्यम से कुछ देर सपनों में भी नहीं जी सकती ? टी वी देखती लक्खी के चेहरे की चमक मनोरमा को मुग्ध कर देती।

मनोरमा के लक्खी के प्रति स्नेह ने घर में दो ग्रुप बना दिये। बेटी और सास विपक्ष में और पति, दोनों के बीच समझ नहीं पाते किसका पक्ष लें, पर अकसर बेटी और मां का ही पक्ष भारी पड़ता। उस दिन भी वही हुआ था—

सुबह से लक्खी को दस्त और उल्टियां आ रही थीं, पर उसने ये बात किसी से नहीं बतायी। मनोरमा पूजा के लिए मंदिर गयी हुई थी। अंततः काम करती लक्खी दस्त और उल्टियों से निढाल, अपनी कोठरी में पड़ गयी थी। लक्खी की खोज मच गयी थी। कोठरी में लक्खी को सोता देख, सासजी का पारा चढ़ गया था। बेटे को सुनाती, वह चीखती जा रही थीं "देखो तो इस मरी को, हम आवाजें दे रहे हैं और ये कान में तेल डाले आराम से सो रहा है।"

मां की बात ने पुत्र की क्रोधाग्नि में घी डाल दिया। लक्खी का हाथ पकड़ जैसे ही उठाया उल्टी से कोठरी में दुर्गंध फैल गयी।

नाक पर कपड़ा रख, सास उसे गालियां देती बाहर चली गयीं—'चुरा-चुरा के तर माल खाती है। अब बाहर उलट रही है निगोड़ी।'

सास के साथ प्रियंका का भी सहयोग रहता, इसीलिए वह दबंग हो बोलती थीं। कभी-कभी वह लक्खी पर इस तरह चिल्लातीं कि मनोरमा को वो बातें सहन करना कठिन हो जाता।

पिछले सप्ताह दो दिनों के लिए मां के घर गयी मनोरमा, जब घर वापस आयी, तो आते ही सास ने लक्खी के खिलाफ शिकायतों का पिटारा खोल दिया—"तुम्हारे लाड़-प्यार का ही ये नतीजा है, जो हमें तो कुछ समझती ही नहीं। मैं कमरे में बैठूं, तो इस जाड़े में भी पंखा चला दे। ये तो चाहती हैं मैं, मर जाऊं और इसे छुट्टी मिले।" सास ने आंखों पर आंचल लगा, रोने का उपक्रम किया था। सफर की थकान के बाद, इस स्वागत ने मनोरमा का दिमाग खराब कर दिया।

"क्यों री तू दादी को तंग करती है ? लक्खी के गाल पर तमाचा लगा, वह बड़बड़ाने लगी थी, "इसी दिन के लिए तुझे यहां इतने प्यार से रखती हूं।"

तमाचे से स्तब्ध लक्खी मनोरमा को ताकती रह गयी थी।

"अब मेरा मुंह क्या ताक रही है। कहीं जाकर मर क्यों नहीं जाती ? रोज-रोज की मुश्किल से तो पीछा छूटे।"

थोड़ी देर बाद लक्खी घर से गायब थी । मनोरमा की आंखें लक्खी को खोज रही थीं । कम-से-कम दो घंटे बीत चुके होंगे । तभी किसी ने डोर-बेल बजायी थी । दरवाजा खोलते ही पड़ोस का पानवाला रामेश्वर खड़ा था । साथ में बुत बनी लक्खी, खड़ी थी ।

"बीबीजी, आज आपकी ये लड़की बच गयी । रेल की पटरी के ठीक बीच में बैठी थी, सामने से रेल आ रही थी । मैं न पहुंचता तो न जाने क्या हो जाता ? उठने को तैयार ही नहीं थी ।"

"क्या ?" मनोरमा स्तब्ध रह गयी ।

"मैं तो इसे यही समझाता आया कि घर में डांट-मार तो चलती ही रहती है, ऐसा करने से कैसे बनेगा ? कल को कुछ हो जाता, तो पुलिस ऐसी की तैसी कर देती । अच्छा चलूं बीबीजी ।"

"भइया, आज तुमने बचा लिया, वरना लड़की कहीं का न छोड़ती । कल ही इसे वापस घर भेज दूंगी ।"

मनोरमा के पीछे लक्खी अंदर आ गयी थी ।

"मांजी, हमें घर नहीं भेजना । हम घर नहीं जाएंगे ।"

"नहीं, अब बहुत हुआ । और नहीं सह सकती ।"

"हम पानी से पोंछा लगा रहे थे, इसीलिए पंखा चलाया था, जिससे फर्श जल्दी सूख जाए । दादी से कहा था, हट जाएं, वह नहीं हटीं और आपसे शिकायत कर दी ।"

"चुप रह, बड़ों के मुंह लगती है ।"

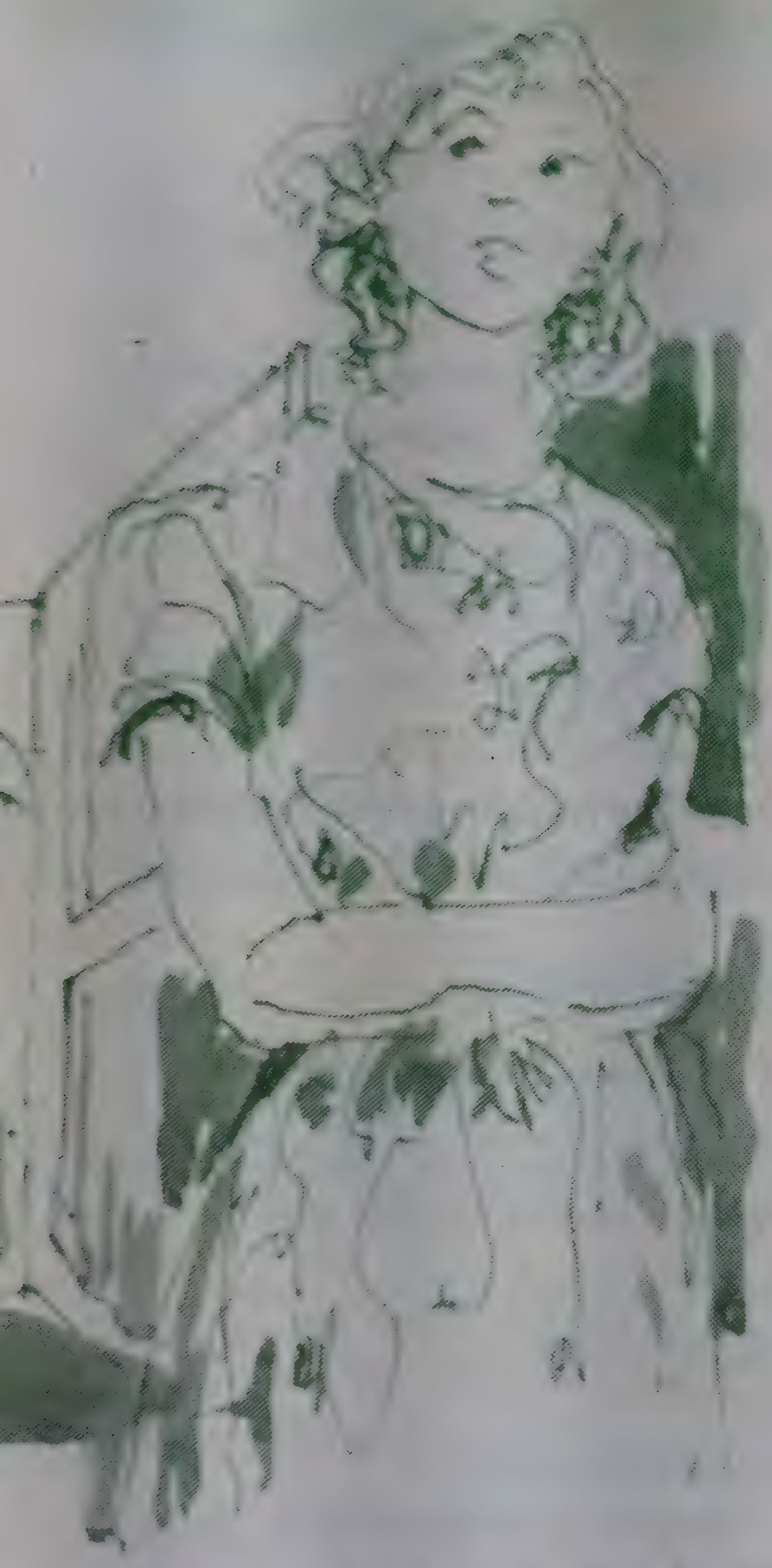
"हम नहीं जाएंगे...दादी झूठमूठ शिकायत करती हैं ।"

उस रात लक्खी ने खाना नहीं खाया था । पति ने सख्त हिदायत दे दी थी, उसकी मनुहार नहीं करनी है । पूरी रात मनोरमा की आंखों के सामने लक्खी का उदास चेहरा आता रहा । अगर प्रियंका भूखी सोती, तो क्या वह सह पाती ?

दो-चार दिन शांति से बीत गये, लक्खी मन लगाकर काम करती रही । रात में दादी के पांव देर तक दबा, लक्खी अपनी गलती का प्रायश्चित्त करती रही ।

कल फिर लक्खी ने अपराध कर डाला । पति के बार-बार मना करने के बावजूद लक्खी ने बगीचे के सारे फूल-पौधों में पानी दे डाला ।

नहा-धोकर प्रियंका की फ्राक-स्वेटर पहने लक्खी, पहचान में नहीं आ रही थी । प्रियंका पर यह फ्राक कैसी बदरंग, पुरानी-सी लगती थी, पर वही फ्राक लक्खी पर कैसे खिल आयी थी ? एक क्षण को मनोरमा के मन में उसके रूप के प्रति ईर्ष्या हो आयी थी—काश प्रियंका उसके-जैसा उजला रंग पाती...



अपने सब कामों में से बगीचे के पौधों को पानी देना उसका विशेष प्रिय काम था । पिछले कुछ दिनों से पानी की सप्लाई कम थी, इसीलिए लक्खी को बगीचे में रोज पानी देने को मना किया गया था । पानी न देने से पेड़ सूख जाते हैं, इसीलिए उसने मना करने के बावजूद पानी दे दिया था । बगीचे में पूरा पानी देने की वजह से घर में पानी खतम हो गया । पतिदेव का क्रोध चरम सीमा पर पहुंच गया—''अब यह लड़की हमें डोमिनेट करेगी ? लाख बार मना किया, कहना नहीं मानती । अब इसकी और मनमानी बर्दाश्त नहीं की जा सकती । आज ही इसे वापस न किया तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा, समझीं ।''

''अरे इस लड़की ने तो बहू पर जादू कर दिया है, वरना ऐसी बदतमीज, बददिमाग छोकरी को कोई दो दिन के लिए भी न सहेगा ।''

पिछले कुछ दिनों से घर के दो ग्रुपों में लक्खी को लेकर जैसे शीत-युद्ध-सा चल रहा था । एक ओर पूरा घर और दूसरी ओर लक्खी के साथ मनोरमा अकेली कर दी गयी थी । पति और सास की बातें सुनती मनोरमा अपना आपा खो बैठी थी—''और कितना सुनवाएगी चुड़ैल ? निकल जा घर से, खबरदार जो दुबारा वापस लौटी...''

लक्खी अवाक मनोरमा की मार सहती रही थी । प्रतिरोध का तो सवाल ही नहीं, आंख से एक बूंद आंसू भी नहीं ढलका था । प्रियंका ने मनोरमा को पकड़ा था—''पागल हो गयी हो मम्मी ? छोड़ो इसे... ।''

गुस्से से कांपती मनोरमा कमरे में पहुंची ही थी कि पीछे से शांत लक्खी ने ठंडे पानी का ग्लास उसकी ओर बढ़ाया था—

''पानी पी लीजिए मांजी... । अब हम कभी ऐसा नहीं करेंगे, साहब की सब बात मानेंगे ।''

मनोरमा की आंखों से झरझर आंसू बह निकले । सामने खड़ी लक्खी को जैसे ही सीने से चिपटाया, वह फूट-फूटकर रो पड़ी थी ।

—ई-३०, श्यामली
रांची-८३४००२

कहा जाता है कि त्रेता युग में रावण के अत्याचार इतने बढ़ गये थे कि उसने दंडकारण्य के ऋषियों से कर स्वरूप रक्त मांगा। ऋषियों ने रक्त एकत्र किये घड़े को शापित कर उसके विनाशकारी होने की बात कही। यह जान रावण ने पुरातन वैर भाव वश उस घड़े को राजा जनक के राज्य में गड़वा दिया। परिणामतः संपूर्ण मिथिला में घोर अनावृष्टि और भयंकर अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गयी। प्रजा त्रस्त हो उठी। तब ऋषियों के सुझाव पर राजा जनक ने हलेष्टि यज्ञ का अनुष्ठान कर के स्वयं खेत कर्षण करने का निर्णय लिया। प्रकृति की शक्तियां अनुकूल हुई और अकाल से झुलसी मिथिला की भूमि को इंद्र ने वर्षा की बूंदों से अभिसिंचित किया। ऐन वक्त पृथ्वी की छाती में हल की नोक लगते ही

जानकी-जन्मभूमि की तलाश में...

● राकेश तिवारी

पुनौरा धाम स्थित जानकी मंदिर



सीता प्रकट हुईं । बाल्मीकि रामायण में अनुसूइया से स्वयं सीता कहती हैं—

''मिथिलाधिपतिर्वीरो जनको नाम धर्मवित्
क्षात्रधर्मे ह्यभिरतो न्यायतः शास्ति मेदिनीम्
तस्य लाङ्गल हस्तस्य कर्षतः क्षेत्र मण्डलम्
अहं किलोप्यिता भित्वा जयतीं नृपतेः सुता ।''

आज जब गौरवशाली नालंदा के प्राचीन भग्नावशेष नवजीवन से अनुप्राणित हो रहे हैं, वैशाली में प्रजातंत्र की विस्मृत समाधि का जीर्णोद्धार हो रहा है, सारनाथ, सांची और बोध गया—जैसे ऐतिहासिक स्थान अपने प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त कर रहे हैं, यह भी आवश्यक हो गया है कि कृषि सभ्यता का विशाल इतिहास छिपाये सीता की जन्मभूमि को भी भारतीय मानचित्र पर उसका उचित स्थान दिया जाए ।

अकाल से मुक्ति पाने के लिए पुरोहितों ने राजा जनक को मिथिला के पश्चिमी भाग में लक्ष्मणा नदी के तट पर यज्ञ करने की सलाह दी थी—

''अपूर्व यज्ञ नक्षत्रे मुहूर्ते मासि माधवे
अद्यैव पश्चिमो यात्रा प्रशस्ता सर्वसिद्धिदा
अतः श्री लक्ष्मणा तीरे यज्ञ भूमि विधीयताम् ।

तब मिथिला के किले से तीन योजन पश्चिम में जनक ने यज्ञ स्थल का चयन किया था । वृहद विष्णु पुराण के अनुसार—

''दुर्गात पश्चिमतो भागे योजनात् त्रितयात् परम्
यज्ञस्थली नरेन्द्रस्य यत्र लांगल पद्धतौ
समुत्पन्ना महाभागा सीता राघव वल्लभा
जनकेन गृहेनीता साक्षात माया स्वरूपिणी ।''

भुशुंडि रामायण के अनुसार ***इरावती तोय तृप्ता उर्विजा कुण्ड पुण्यदा*** अर्थात् सीता इरावती के जल से तृप्त होनेवाली तथा उर्विजा कुंड को पवित्र करनेवाली यानि उर्विजा कुंड से जन्म लेनेवाली हैं ।

जन्मभूमि का विवाद

उपर्युक्त साहित्यांशों के आलोक में जब हम भारतीय मानचित्र पर जानकी-जन्मभूमि को विन्यस्त करने चलें, तो बिहार स्थित सीतामढ़ी जिले में दो स्थान, जो लगभग एक मील की दूरी पर स्थित हैं, इसके लिए अपना दावा-प्रतिदावा पेश करते मिलते हैं । इनमें से एक है सीतामढ़ी शहर में स्थित जानकी स्थान और दूसरा सीतामढ़ी-शिवहर पथ पर यहां से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर बसा—पुनौरा ग्राम । ज्ञात हो कि मिथिला की राजधानी जनकपुर जो नेपाल में है, यहां से मात्र चालीस किलोमीटर उत्तर-पूर्व की ओर

विस्मृति के कगार पर पहुंची सीता और उसकी जन्मभूमि का शोध न सिर्फ भारतीय समाज को अपनी सांस्कृतिक धरोहर के एक नये आयाम से परिचित कराएगा वरन विश्व स्तर पर स्त्री-पुरुष के सर्वरूपेण संतुलन के लिए एक आधारभूमि भी तैयार करेगा ।

अवस्थित है। सीतामढ़ी लखनदेई नदी (प्राचीन नाम लक्ष्मणा) के तट पर बसा हुआ है।

सीता की जन्मभूमि के सर्वोन्मुखी विकास के लिए सन् १९६० के दशक में पहली बार एक गंभीर चर्चा शुरू हुई, जिसमें प्रशासन का भी सहयोग मिला। फलतः सीतामढ़ी में 'सीतायन' नाम की एक संस्था का जन्म हुआ। बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. श्री कृष्ण सिंह ने उक्त संस्था के महत् उद्देश्यों को देखते हुए उस संस्था का उद्घाटन करके इस संदर्भ में अपनी गहरी अभिरुचि दिखायी। 'सीतायन' नामक पत्रिका का भी प्रकाशन शुरू हुआ। हालांकि प्रारंभ में ये प्रयास सराहनीय और औप्मिक थे, लेकिन कुछ ही दिनों के बाद इनमें शिथिलता आ गयी।

सीतामढ़ी (प्राचीन नाम सीतामही) की इस ऐतिहासिक भूमि से मात्र एक मील की दूरी पर सीतामढ़ी-शिवहर मार्ग से उत्तर स्थित है—पुनौरा धाम। जानकी जन्मभूमि के दर्शनार्थ निकले हजारों श्रद्धालु इसी रास्ते से गुजरते हुए इस भूमि का दर्शन अवश्य करते हैं। सीतामढ़ी की तरह ही यहां भी जानकी मंदिर, सीता कुंड (यहां इसे ही उर्विजा कुंड बताते हैं) महाराज सीरध्वज की हल कर्षण करती प्रतिमा तथा सद्यः जाता सीता की बाल मूर्ति के दर्शन होते हैं। सीतामढ़ी की तरह ही यहां भी जानकी नवमी, रामनवमी, विवाह पंचमी, वसंत पंचमी और शिवरात्रि के अवसर पर श्रद्धालुओं की अच्छी भीड़ होती है। यहां के निवासी और मंदिर के महंत यह दावा प्रस्तुत करते हैं कि यह स्थली ही सीता की वास्तविक

पुनौरा धाम स्थित जानकी मंदिर में हल जोतते जनक और सद्यः जाता सीता की झांकी



जन्मभूमि है ।

वर्षों पूर्व यहां श्री जानकी जन्मभूमि विकास परिषद नामक संस्था का गठन हुआ था, जो अब बंद प्राय है । यहां के मंदिर का जीर्णद्धार सन् १९७० ई. में बिडला ट्रस्ट के द्वारा हुआ जिसमें ४०,००० रुपये खर्च हुए थे । उसके बाद तीन वर्षों तक रीगा सुगर फैक्टरी की सहायता से यहां का रख-रखाव हुआ, अब तो भी यहीं प्रकट हुई थीं । तदुपरांत जनक ने मड़इ बनाकर जहां विश्राम किया, वह जगह अब 'सीतामड़ई' से 'सीतामढ़ी' हो गयी है । पुंडरीक ऋषि के आश्रम के रूप में चर्चित इस जगह का प्राचीन नाम पुण्यारण्य बताया जाता है, जो बाद में पुण्यरसा फिर पुण्य उर्वरा और अब पुनौरा के नाम से चर्चित है ।

जन्मभूमि से संबंधित अब तक जो भी

जानकी स्थान, सीतामढ़ी
स्थित जानकी मंदिर



वह भी बंद है । मंदिर के पुजारी बताते हैं कि पांच-सात वर्षों पूर्व एक बार विदेशी फंड मिला था, जिससे पुण्यारण्य पथ, श्री जानकी मंदिर प्रवेश द्वार तथा निकास द्वार का निर्माण हुआ ।

विवाद का मूल

यहां के लोगों से जब सीतामढ़ी स्थित मंदिर की चर्चा की जाती है, तो वे कहते हैं कि जनकजी ने हलकर्षण तो यहीं किया था, सीता पुस्तकें आयी हैं, वे या तो इस विवाद के कारणों पर मौन हैं या किसी एक पक्ष को ही रखकर अपनी भूमिका समाप्त कर दी है । सीतामढ़ी स्थित एक प्राचीन मंदिर के महंत अपना नाम गुप्त रखने के अनुरोध के साथ कहते हैं कि यह विवाद कोई नया नहीं, अपितु तीन-चार सौ वर्ष पुराना है । उनका कहना है कि इसके पूर्व सीता जन्मभूमि के रूप में सीतामढ़ी ही जाना जाता

था। तब मंदिर भी सिर्फ यहीं हुआ करता था।

लेकिन दो सवर्ण जाति विशेष के महात्माओं के आपसी मतभेद ने इस विवाद को जन्म दिया। आपसी टकराहट के कारण ही उन में से एक ने १ मील अलग जाकर एक नये मंदिर की आधारशिला रख दी और उसके सीता जन्म भूमि होने का दावा किया। तब से ही यह स्थिति है।

सीता की वास्तविक जन्मभूमि सीतामढ़ी है या पुनौरा यह एक ऐतिहासिक शोध का विषय हैं। इस विवाद के पीछे चाहे कारण जो भी हों, लेकिन इतना तो तय है कि जानकी और उनकी जन्मभूमि उपेक्षित होकर,
ऐतिहासिक-सांस्कृतिक महत्व की होते हुए भी आज हाशिए पर है।

विस्मृति के कगार पर पहुची सीता और उसकी जन्मभूमि का शोध न सिर्फ भारतीय समाज को अपनी सांस्कृतिक धरोहर के एक नये आयाम से परिचित कराएगा वरन विश्व स्तर पर स्त्री-पुरुष के सर्वरूपेण संतुलन के लिए एक आधारभूमि भी तैयार करेगा।

क्या आशा रखी जाए कि निकटतम भविष्य में, हमारी सरकार इतिहासकारों-पुरातत्ववेत्ताओं के सहयोग से अपनी ही धरती पर कृषि-संस्कृति की प्रतीक सीता को पहचान का एक निश्चित और सुदृढ़ बिंदु दे सकेगी।

—द्वारा गुप्ता एंड संस
शिवहर-८४३३२९
(बिहार)

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. अबुलफजल ने (अकबर के नवरत्नों में), ख. डॉ. सत्यदेव वर्मा ने (यमुनानगर, हरियाणा), २. क. कैप्टेन विलियम हाकिंस, सूरत में पहले ब्रिटिश जहाज 'हेक्टर' से उतरा था (अगस्त, १६०८ ई.), ख. अप्रैल, १६०९ में आगरा में जहांगीर से मिला और नवंबर १६११ तक ठहरा, ३. क. जैफर्सन (सन् १८०१-१८०९ ई.) ने, ख. 'लूइजियाना' का दस लाख वर्गमील से अधिक क्षेत्र डेढ़ करोड़ डॉलर में खरीदा, ४. क. मध्यप्रदेश के रायगढ़, राजनांदगांव तथा जबलपुर जिलों में, ख. कोलार (कर्नाटक), आजकल उत्पादन करीब ठप है, ५. क. स्वतंत्रता की ५०वीं वर्षगांठ, ख. नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की जन्मशती 'देशप्रेम दिवस' के रूप में, ६. क. नाटो (उत्तर अटलांटिक संधि संगठन) की सदस्यता पाने का अभियान छोड़ देने की रूसी मांग, ख. इस्तोनिया, लात्विया, लिथुआनिया, ७. क. रिमोट कंट्रोल से संचालित हेलीकाप्टर की, ख. नेशनल एयरोनाटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन, ८. क. हैती के पूर्व राष्ट्रपति अरिस्तीद, ख. उर्दू के साहित्यकार शमशुर रहमान फारूकी (कृति 'शेर-ए-शोर अंगेज'), ग. योजना आयोग के पूर्व सदस्य श्री तरलोक सिंह, श्रीमती कमलिनी एच. भसाली (मुंबई), घ. बंगला लेखिका श्रीमती महाश्वेता, ९. क. स्विट्जरलैंड की मार्टिना हिंजिस (१६ वर्षीया), ख. ऑस्ट्रेलिया की एमा जार्ज मेलबोर्न (पोत वाल्ट में ४.५५ मीटर का नया रेकॉर्ड), १०. ऊनी जूते।

वैद्य की सलाह

इब्राहीम अली, बनखेड़ी

प्रश्न : उम्र ७५ वर्ष है । पांच वर्ष से घुटनों में दर्द है । चलने-फिरने में परेशानी होती है । बुढ़ापे में काफी परेशानी है ।

उत्तर : **चंद्रप्रभा वटी एक, महायोगराज गूगल एक वटी लेकर सुबह-रात दूध से लें । शीतल पेय, दही और चावल का परहेज कर नियमित छह माह औषधि सेवन करें ।**

राज नन्दनी, चंडीगढ़

प्रश्न : २६ वर्षीय हूं । तेरह वर्ष की आयु में मासिक स्राव हुआ । शुरू में चार दिन रहता था, अब धीरे-धीरे कम होकर एक दिन रह गया । स्राव का रंग काला है । कमर और सिर में दर्द रहता है । पांच वर्ष से परेशान हूं ।

उत्तर : **चंद्रप्रभा वटी एक और आरोग्यवर्धनी एक सुबह-शाम गरम पानी से लें । कुमारि आसव एक चम्मच और लोहासव एक चम्मच लेकर सम भाग पानी मिलाकर भोजन के बाद पियें । दही, खटाई और चावल सेवन न कर छह माह नियमित औषधि सेवन करें ।**

सुमन सिंह, लोहारसी

प्रश्न : ३३ वर्षीय हूं । पाचन ठीक नहीं रहता । कमर और घुटनों में बहुत दर्द है । कमजोरी और थकान रहती है । बचपन से ही परेशान हूं । चिकित्सा से अभी तक कोई लाभ नहीं मिला ।

उत्तर : **सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम और मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से लें । द्राक्षारिष्ट एक चम्मच और अश्वगंधारिष्ट एक चम्मच भोजन के बाद पियें । चन्द्रप्रभावटी एक रात को दूध से लें । तीन माह नियमित औषधि सेवन करें ।**

ओमप्रकाश, मुजफ्फरपुर

प्रश्न : मेरी पत्नी की आयु २२ वर्ष है । दो संतान हैं । तीन वर्ष पहले टी. बी. की शिकायत हुई थी । दवा से ठीक हो गयी । कमजोर बहुत हैं । खाने में रुचि नहीं । भूख नहीं लगती । शारीरिक क्षमता बिलकुल नहीं है ।

उत्तर : **सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, मालती बसंतरस तीन ग्राम, गिलोयसत्व दस ग्राम और मुक्ता शुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । द्राक्षासव दो-दो चम्मच सम भाग जल मिलाकर भोजन के बाद पियें । च्यवनप्राश अवलेह एक-एक चम्मच रात में दूध से लें । छह माह नियमित औषधि सेवन करें ।**

रामेश्वरी, धामपुर

प्रश्न : मेरी आयु २४ वर्ष है । दो वर्ष की अवस्था में हवा लेने से मुंह पर लकवे जैसा प्रभाव रहा । चिकित्सा करवाने पर भी मुंह टेढ़ा है । दोनों गालों में अंतर है ।

उत्तर : त्रयोदशांग गूगल तीस ग्राम, अश्वगंधादि चूर्ण साठ ग्राम और मुक्ता शुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम गरम पानी से लें । अश्वगंधारिष्ट एक चम्मच और दशमूलारिष्ट एक चम्मच भोजन के बाद पियें । महायोगराज गूगल एक-एक बटी रात में दूध से लें । आहार-विहार का परहेज कर एक वर्ष नियमित औषधि सेवन करें ।

प्रतिभा श्रीवास्तव, जगन्नाथपुर

प्रश्न : भाई की आयु ३० वर्ष है । विगत तीन साल से कमर के नीचे बहुत दर्द रहता है । सभी प्रकार की जांच हो चुकी । इलाज भी किया, लेकिन लाभ नहीं मिला । दर्द के समय उठना-बैठना भी कठिन हो जाता है । कृपया अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : समीरपन्नग रस दस ग्राम, गिलोय सत्व दस ग्राम, त्रयोदशांग गूगल तीस ग्राम और अश्वगंधा चूर्ण साठ ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच और दशमूलारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पियें । आहार-विहार का परहेज कर छह माह नियमित औषधि सेवन करें ।

श्रीमती सुजाता घोष, भोपाल

प्रश्न : मेरी आयु ३५ वर्ष है । ५ वर्ष से लगातार कफ बनता है ।जुकाम भी बना रहता है । काफी इलाज करवाया । लाभ नहीं मिला । कृपया दवा लिखें ।

उत्तर : कंटकार्य अवलेह एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । तालीशादि चूर्ण साठ ग्राम, चंद्रामृत रस दस ग्राम, श्वासकुठार रस दस ग्राम और टंकण भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा दिन में दो बार शहद से लें । आहार-विहार के परहेज के साथ नियमित एक वर्ष औषधि सेवन करें ।

क. शर्मा, शक्ति नगर (म. प्रदेश)

प्रश्न : २५ वर्षीय हूं । शारीरिक रूप से दुबली-पतली हूं । सभी स्थिति पत्र में लिख दी है । इस कारण हीन भावना घर कर गयी है । कृपया उपचार बतायें ।

उत्तर : आपको कोई विशेष रोग नहीं । विवाहोपरांत इस प्रकार स्थितियों में स्वयं परिवर्तन हो जाता है । अश्वगंधारिष्ट एक चम्मच और द्राक्षारिष्ट एक चम्मच भोजन के बाद नियमित पियें ।

के. सी. गुप्ता, इंदिरा नगर

प्रश्न : पत्नी की आयु ४३ वर्ष है । दोनों एडियों में बहुत दर्द है । इससे टखनों में सूजन आ जाती है । कुछ देर बैठने के बाद उठकर चलने में बहुत परेशानी होती है ।

उत्तर : केशोर गूगल दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । पुनर्नवा गूगल एक वटी, सिंहनाद गूगल एक वटी और गोक्षुरादि गूगल एक वटी दोपहर-रात गरम पानी से लें । दही, चावल, शीतल पेय और खटाई आदि का परहेज कर छह माह नियमित औषधि सेवन करें ।

श्रीमती संतोष गुप्ता, रोहतक

प्रश्न : मेरी आयु १९ वर्ष है । सिर पर दो जगह से अचानक बाल उड़ गये । काफी परेशान हूं । कोई दवा बतायें ।

उत्तर : प्याज का रस निकाल कर प्रतिदिन दो बार यथा स्थान आहिस्ता-आहिस्ता मालिश करें ।

आर. पी. सिंह पटेल, गहिलरा

प्रश्न : मेरी आयु २७ वर्ष है । दो संतान हैं । शौच में कठिनाई होती है । गुदा मार्ग छिल जाता है । कभी-कभी खून भी आता है ।

उत्तर : अभयारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद दोनों समय नियमित पियें ।

विनोद कुमार सिंह, महथी

प्रश्न : मेरी आयु ४९ वर्ष है । जीवन से निराश हूं । पेट में गड़बड़ी रहती है । मन में बेचैनी, डकार आना, भूख न लगने की शिकायत है । सीने में दर्द है । हर संभव प्रयास कर थक गया हूं ।

उत्तर : आरोग्यवर्धनी वटी दो और चित्रकादि वटी दो सुबह-शाम गरम पानी से लें ।कुंजारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पियें । अविपत्तिकर चूर्ण एक बड़ा चम्मच रात में दूध से लें । तली वस्तुएं, मीठी वस्तुएं और देर से पचनेवाली वस्तुएं, बेसन, चना, अरवी और भिंडी सेवन न कर छह माह नियमित औषधि सेवन करें ।

श्रीमती रचना, ग्वालियर

प्रश्न : उम्र ४५ वर्ष । सिर में दर्द रहता है । कभी-कभी इतना तेज हो जाता है कि बरदाश्त नहीं होता । सभी प्रकार की जांच करवायी । सब ठीक है । ब्लड प्रेशर भी ठीक है ।

उत्तर : सूत शेखर रस एक वटी, शिरशूलादि वज्र रस एक वटी । सुबह-दोपहर-शाम पानी से लें । दही, चावल और शीतल पेय सेवन करें । छह सप्ताह तक औषधि लें ।

हरि गोकुल, मथुरा

प्रश्न : उम्र तीस साल । चेहरा एक ओर से काला होता जा रहा है । पहले की अपेक्षा अब आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ रहा है । अनेक दवाएं लीं, किंतु लाभ नहीं हुआ ।

उत्तर : केशोर गुगुल एक वटी, आरोग्यवर्धनी एक वटी । सुबह-शाम पानी से लें । सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं । दही-खटाई का परहेज कर छह माह तक औषधि का सेवन करें ।

श्रीमती रंजना, जलपाईगुड़ी

प्रश्न :उम्र ३६ वर्ष । दो संतानें हैं । पेट में दर्द रहता है । विशेषकर मासिक से दो-तीन दिन पूर्व शुरू हो जाता है । कभी-कभी तो असहनीय कष्ट होता है । स्राव भी अधिक नहीं है ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक सुबह-शाम गरम पानी से लें । दशमूलारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पिएं । दही-खटाई, चावल का परहेज कर तीन माह औषधि सेवन करें ।

हसमुखराय, यमुना नगर

प्रश्न : उम्र ४० वर्ष । बायें कान में बराबर दर्द बना रहता है । यह दर्द कभी-कभी गरदन की ओर भी बढ़ जाता है ।

उत्तर : त्रयोदशांग गूगल एक वटी सारिवादि वटी सुबह, दोपहर और रात गरम पानी से लें । क्षार तेल दो-दो बूंद कान में सुबह-रात डालें ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

समुद्र मंथन का मथानी

मंदार पर्वत कहां था ?

● दिलीप कुमार

मंदार पर्वत भारतवर्ष की धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, पौराणिक और ऐतिहासिक धरोहर है, जो सदियों से कई अफसाने संजोये मूक खड़ा है । यदि धर्म और इतिहास के अप्रतिम समन्वय का साक्षात्कार करना हो, तो बिहार के भागलपुर कमिश्नरी-अंतर्गत नवसृजित बांका जिला के बौसी प्रखंड के अंतर्गत मंदार पर्वत का भ्रमण जरूर करना चाहिए ।

चंदन नदी और चीर नदी के लगभग मध्य भाग में मनोहर प्राकृतिक उपादानों से अलंकृत 'मंदार पर्वत' भागलपुर से करीब ५० कि.मी. दूर दक्षिण में स्थित है । भागलपुर से बौसी बस या मंदार हिल ट्रेन से पहुंच सकते हैं, लेकिन बौसी से मंदार पर्वत की लगभग ५ कि.मी. की दूरी को रिक्शा या टमटम से तय करना पड़ता है ।

मंदार पर्वत बालिशा नगर में था, जिसका अपभ्रंश नाम बौसी वर्तमान में प्रसिद्ध है । युद्ध पुराण के अनुसार मंदार के समीप एक पुरी होने का प्रमाण है । श्री तोमर ने कहा है कि प्राचीन प्रचलित कथा और स्थानीय लोकगीतों के अनुसार भी २२०० वर्ष पूर्व मंदार के निकट एक विशाल पुरी थी, जिसमें ८८ तालाब, ५३ सड़क एवं ५२ बाजार थे ।

मधु-कैटभ वध का प्रसंग

नरसिंह पुराण के अनुसार एक बार जब भगवान विष्णु क्षीर-सागर में सोये हुए थे, तब



उनके कान के मल से मधु एवं कैटभ नामक दो दैत्य उत्पन्न हुए । ये दोनों भाई जब देवताओं को सताने लगे, तब विष्णु ने उनके साथ युद्ध किया । कैटभ के वध में विष्णु को अधिक परेशानी नहीं हुई, पर उसके बड़े भाई मधु ने भगवान विष्णु को त्रस्त कर दिया । अंत में विष्णु ने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया । लेकिन बिना सिर का धड़ भी कम खतरनाक नहीं निकला और युद्धरत रहा । विवश होकर विष्णु ने मंदार पर्वत को मधु पर रख दिया और उसे पैर से दबाये रखा । मधु के वध के बाद विष्णु का नाम मधुसूदन पड़ा और उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए पर्वत के शिखर पर एक मंदिर बना । विष्णु को रण के लिए ललकारनेवाले वीर दैत्य मधु की स्मृति में भी, शिलाखंडों को काट-तराशकर उसके सिर की मूर्ति यहां बनवायी गयी है, जो पर्यटकों के लिए दर्शनीय है ।

मंदार पर्वत से सागर-मंथन

'पद्म पुराण' के 'सृष्टि खंड' एवं 'स्वर्ग खंड' के अनुसार चौदह रत्नों को निकालने के लिए देवताओं और दानवों ने एक साथ क्षीर-सागर-मंथन किया । इसमें मंदार पर्वत को मंथन-दंड बनाया । इस मंथन में वासुकी नाग ने रस्सी का काम किया (वासुकी नाग के नाम पर वासुकीनाथ का मंदिर बौसी से करीब ८० कि.मी. की दूरी पर है) । विष्णु भगवान की युक्ति से देवतागण दैत्यराज बाली की शरण में गये और उन्हें समुद्र-मंथन से प्राप्त अमृत पीकर अमर होने का प्रलोभन दिया । दैत्यों का राजा बाली देवताओं के चातुर्य को नहीं समझ सका । अमृत दैत्यराज को पिलाकर अन्य निधियां आपस में बराबर बांट लेने की बात निश्चित हो गयी ।

भगवान विष्णु की कृपा से देवासुर मंदार को उठाकर समुद्र ले गये और वासुकी नाग को समेटकर समुद्र-मंथन किया । मंथन से १४ रत्न प्राप्त हुए— कामधेनु, उच्चैश्रवा घोड़ा, एरावत हाथी, कौस्तुभमणि, कल्पद्रुम, रंभा नामक अप्सरा, वारुणी नामक कन्या, पारिजात वृक्ष, चंद्रमा, लक्ष्मी, मदिरा, अमृत, विष और शंख ।

रत्नों की प्राप्ति के बाद देवताओं ने अमृत, लक्ष्मी अच्छे-अच्छे रत्नों को अपने अधिकार में कर लिया । विष किसी ने स्वीकार नहीं किया । पर्वत के ऊपर शंख कुंड में एक महाशंख है, जिसका वजन ५ क्विंटल से भी अधिक बताया जाता है । कहा जाता है कि इसी शंख से देवाधिदेव महादेव ने विषपान किया था । भगवान शंकर ने विष को कंठ में ही रोके रखा । फलस्वरूप उनका कंठ विषाग्नि से नीला हो गया, जिससे शंकर का नाम नीलकंठ पड़ा । मंदार पर अभी भी धारदार लकीरें दृष्टव्य हैं, जो वासुकीनाग की बतायी जाती हैं ।

कुष्ठ निवारक पापहरणी सरोवर

प्राचीनकाल से मंदार भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल है । दक्षिण भारत के चोलवंशी राजा छत्रसेन तीर्थाटन करने के लिए यहां आये थे । वह कुष्ठ रोग से ग्रस्त थे । लंबी यात्रा तय करने के फलस्वरूप उन्हें जोरों की प्यास लगी थी, अतः प्यास बुझाने के लिए उन्होंने पेयजल की खोज में यत्र-तत्र दृष्टि दौड़ायी । मंदार पर्वत के नीचे उन्हें एक जलकुंड दृष्टिगोचर हुआ । वह वहां पहुंचकर दोनों हाथों को जोड़ अंजलि बनाकर जल पीने लगे । कुछ समय बाद एक दैविक चमत्कार हुआ, राजा का कुष्ठ रोग छूमंतर हो गया । यह देख राजा छत्रसेन मारे खुशी के

पागल हो गये । पुराण में वर्णित मंदार कुंड और मनोहर कुंड पापहरणी बन गया । आज भी इस तालाब के प्रति लोगों के हृदय में असीम श्रद्धा-भक्ति है । इस क्षेत्र के विद्वान प्रो. अभयकांत चौधरी ने अपनी पुस्तक 'मंदार परिचय' (१९५६) में लिखा है कि 'कविश्रेष्ठ कालिदास ने भी मंदार पर्वत के विष्णु चरण-चिह्न का उल्लेख अपने प्रसिद्ध काव्य 'कुमार संभव' में किया है ।'

गुप्तवंशीय सरोवर

भारतीय इतिहास के विद्वान प्रो. राखालदास बनर्जी ने मंदार पर्वत पर अंकित शिलालेखों का सूक्ष्म अध्ययन कर लिखा था कि मंदार पर्वत के नीचे पापहरणी सरोवर को गुप्तवंशीय राजा आदित्यसेन की धर्मपत्नी कोणदेवी ने सन् ६७२ ई. में खुदवाया था । पर्वत पर भगवान नरसिंह की प्रतिमा भी आदित्य सेन और उनकी धर्मपत्नी ने बनवायी थी, लेकिन हो सकता है कि जिस मंदार कुंड की चर्चा पुराण में की गयी है, उसका इन्होंने विस्तार किया हो, जो वर्तमान स्वरूप में विद्यमान है ।

यहां यह उल्लेखनीय है कि आदित्यसेन परवर्ती गुप्त राजाओं के वंशज थे, जो मगध में राज करते थे । सम्राट हर्षवर्धन की सन् ६४७ ई. में मृत्यु के बाद ये मगध के स्वतंत्र शासक बने और सन् ६७२ ई. के आसपास इन्होंने पापहारिणी के उत्खनन में अपनी पत्नी को सहयोग और साधन दिये थे । मंदार के दो अन्य शिलालेख भी पढ़े जा चुके हैं, जिनका उल्लेख जे.एफ. फ्लीट के प्रसिद्ध ग्रंथ 'कारपस इंसक्रिप्सनम इंडिकेरम' के तीसरे भाग में हुआ है ।



दैत्य मधु

काला पहाड़ का प्रकोप

प्रो. अभयकांत चौधरी ने लिखा है कि काला पहाड़ ने मंदार पर्वत पर बहुत उत्पात मचाया । उनके अनुसार काला पहाड़ पहले एक ऊर्जावान हिंदू युवक था । उसे बंगाल के नवाब की कन्या से प्रेम हो गया । पहले नवाब ने विरोध किया, पर अपनी पत्नी की जिद के कारण काला पहाड़ का धर्म परिवर्तन कराकर उससे पुत्री का विवाह कर दिया । बाद में काला पहाड़ अपने इस निर्णय से बहुत संतप्त हुआ और उसने फिर अपने धर्म से जुड़ने का प्रयास किया, फिर चारों तरफ से मिलनेवाली वितृष्णा, उपालंभ और कटु वचनों से क्रुद्ध होकर वह हिंदू धर्मस्थलों का कट्टर शत्रु हो गया । यहां

यह उल्लेखनीय है कि काला पहाड़ बादशाह अकबर के समय बंगाल के हाकिम सुलेमान कर्रानी के पुत्र विद्रोही अफगान सरदार दाऊद खां का प्रधान सेनापति था ।

प्रो. चौधरी ने लिखा है कि काला पहाड़ के कोप से मधुसूदन की मूर्ति को सुरक्षित रखने के लिए तत्कालीन राजपूत नरेश ने मूर्ति को वहां से हटाकर कुछ दिन इधर-उधर रखा । जब काला पहाड़ विध्वंस मचाता हुआ यहां से चला गया, तब उक्त नरेश ने पर्वत के नीचे एक मंदिर बनवाकर मूर्ति को उसी में संस्थापित करवा दिया । उल्लेखनीय है कि जब काला पहाड़ के आक्रमण के भय से मधुसूदन की मूर्ति पर्वत शिखर से हटा ली गयी, तब से वहां मधुसूदन के चरण-चिह्न की पूजा शुरू हो गयी ।

शंख कुंड से वाराह अवतार की एक प्रतिमा निकाली गयी थी । कला की दृष्टि से इसे पूर्व 'पाल' काल का माना गया है । अभी इसे भागलपुर संग्रहालय में रखा गया है । शंख कुंड के पश्चिम में पाषाण कोठरियों के पास एक गुहा है । गुहा के भीतर शिलालेख है । उसी जगह भगवान वामन की आदमकद मूर्ति है, जो पाषाण फलक को तराशकर बनायी गयी उत्कृष्ट कारीगरी का नमूना है । थोड़ा आगे बढ़ने पर सीढ़ियां मिलती हैं, जो ऊपर पहाड़ की खोह में ले जाती हैं, जहां हर समय पानी भरा रहता है, श्रद्धालु इसे आकाश गंगा कहते हैं । इस आकाश गंगा में विष्णु की छोटी-सी मनोहारी मूर्ति है, जो खोह की चट्टानों को काटकर बनायी गयी है । पर्वत पर शिव की कई मूर्तियां और शिवलिंग देखे जा सकते हैं । इतिहासकारों का मत है कि इन्हें पूर्व 'पाल' काल में बनाया गया था, जो शैव संप्रदाय के पुनरुद्धार का सूचक था । पापहारिणी से ऊपर चढ़ने पर कई मूर्तियां मिलती हैं, पर स्थापत्य की दृष्टि से उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं हैं । थोड़ा और ऊपर आने पर एक चित्ताकर्षक मूर्ति का दर्शन होता है, जिसे स्थानीय जन महाकाल भैरव बताते हैं । बुकानन ने अठारहवीं शताब्दी के आरंभ में यहां यात्रा की थी।

इस मठ से थोड़ी दूर उत्तर-पूर्व दिशा में एक मंदिर है, जिसे चैतन्य महाप्रभु के मंदिर के रूप में जाना जाता है । सन् १५०५ ई. में गया जाने के रास्ते में वह यहां रुके थे ।

—शिवपुर, टिकिया टोली,
महेंद्रू, पटना-८००००६, (बिहार)

भगवान विष्णु की कृपा से देवासुर मंदर को उठाकर समुद्र में ले गये और वासुकी नाग को समेटकर समुद्र-मंथन किया । मंथन से १४ रत्न प्राप्त हुए—कामधेनु, उच्चैश्रवा घोड़ा, ऐरावत हाथी, कौस्तुभमणि, कल्पद्रुम, रंभा नामक अप्सरा, वारुणी नामक कन्या, पारिजात वृक्ष, चंद्रमा, लक्ष्मी, मदिरा, अमृत, विष और शंख ।

स्वास्थ्य

महामारी के रूप में लौटा तपेदिक

• मनोज मनु

आजकल विश्व कई तरह की खतरनाक बीमारियों से जूझ रहा है । कैंसर, एड्स, मलेरिया आदि इसी तरह की खतरनाक बीमारियां हैं । इनके अलावा एक और खतरनाक बीमारी है, तपेदिक । कई साल पहले इसे लाइलाज बीमारी माना जाता था । जिसे यह रोग हो जाता वह बच नहीं पाता था परंतु वैज्ञानिक प्रगति ने इस बीमारी का इलाज ढूंढ़ निकाला है । फिर भी इस बीमारी की भयंकरता आज भी बनी हुई है । अनेक लोग उचित इलाज के अभाव में तपेदिक का शिकार होकर मर रहे हैं ।

रोगियों की बढ़ती संख्या

हाल ही में राष्ट्रीय तपेदिक नियंत्रण कार्यक्रम के एक अध्ययन से पता चला है कि विश्व में प्रतिवर्ष लगभग ८० लाख तपेदिक के नये मामले सामने आते हैं । इस ८० लाख में से १५ लाख मामले सिर्फ भारत में ही प्रकाश में आते हैं । भारत में प्रतिवर्ष तपेदिक रोगियों की बढ़ती हुई संख्या एक गंभीर चिंता का विषय है । सिर्फ भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में यह रोग गंभीर खतरे का रूप धारण करता जा रहा है । एक अनुमान के आधार पर ५० वर्षों में लगभग ५० करोड़ लोग इस बीमारी से ग्रसित हो जाएंगे ।

राष्ट्रीय तपेदिक नियंत्रण कार्यक्रम के अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ है कि तपेदिक की बीमारी एच. आई. वी. के विषाणुओं के फैलने से और भी अधिक जटिल हो गयी है । साथ ही इस बीमारी की जटिलता के भारत में एड्स के करीब ६० प्रतिशत मामले प्रकाश में आये हैं ।

तपेदिक के जीवाणु

तपेदिक के जीवाणु तीन प्रकार के होते हैं । माइको ट्यूबर क्लोसिस, माइकोवेपिस तथा एटिलीकल माइको बैक्टिरिया । ये जीवाणु तपेदिक रोगी के खांसने और छींकने से हवा में फैलते हैं, जो अन्य लोगों के शरीर में हवा के साथ प्रवेश कर जाते हैं और उन्हें अपना शिकार बनाते हैं ।

भारत में इस बीमारी से निबटने के लिए सन् १९६२ में राष्ट्रीय स्तर पर तपेदिक नियंत्रण कार्यक्रम शुरू किया गया था । साथ ही पिछले बीस वर्षों से इस कार्यक्रम को प्रधानमंत्री के २० सूत्रीय कार्यक्रम में भी शामिल किया जा रहा है । इस कार्यक्रम को चलाने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों की सहायता ली जाती है । जिला स्तर पर भी इस तरह के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं । जिसे जिला तपेदिक केंद्रों तथा स्वास्थ्य संगठनों द्वारा संचालित किया जाता है । भारत के ४४६ जिलों में तपेदिक नियंत्रण केंद्र कार्य कर रहे हैं ।

— संप्रेषण, डी-७५३ सरस्वती विहार
दिल्ली-११००३४

प्रवेश

प्यासा घट

निमिष निमिष
घट घट
डूबे उबरे
देह मत्स्य-सी
मधुर सुगंध के
सागर में

डूबी आकंठ
आसक्ति की
गागर में

नयनों के
प्यासे घट
तरसें

निशि-दिन
सावन से
बरसे

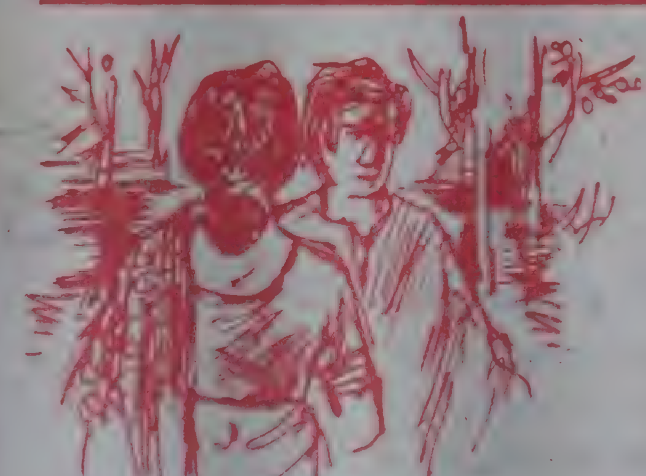
पा सामिप्य तुम्हारा
एक सुगंध में
रमते जोगी से
डूबे रहें
पूर्ण आनंद में ।



● प्रतीक्षा पुष्प

आत्म कथ्य: भाषा शैली व अन्य भाषागत प्रयोगों से अलग हट कर भावों की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त हुए शब्दों का तुकांत समुच्चय ही मेरे लिए कविता है ।

पता: ४/८, आई जी एन पी कॉलोनी, बीकानेर



समय

ऐसा क्यों होता है
कि
एक लड़की
जिसे
एक पिता पालता है पेट काटकर
जिसे
सींचती है मां अपना रक्त देकर
और
जिसे मानते हैं
अपना अंग
वो ही हो जाती है पराई
और बन जाती है बोझ
जिसे ढोना
जिसे पालना
कठिन हो जाता है
उसी परिवार के लिए ?



● अमित कुमार

आत्म कथ्य: जीवन के भाव ही कविता के स्रोत हैं ।

पता: एम-२-सी/१०,
सेक्टर-सी, सीतापुर रोड योजना,
जानकीपुरम, लखनऊ-२२६०२१

सूरज की चाह

डूबता हुआ सूरज का
लाल गोला
बहुत देर तक अपनी छाप
मेरे हृदय पर छोड़ जाता है
भागीरथी
बड़े-बड़े मकानों और
ऊंची दरख्तों के
ऊपर से निकलता हुआ
सूरज पीछे की ओर
खिसकता ही जाता है
मैं भी दौड़ लगाती हूं
पर हाय
उसकी तरफ इस चौड़ी नदी पर
कैसे छलांग लगा सकती हूं
मकानों को कैसे पार करूं
ऊंचे-ऊंचे दरख्त
क्या मुझे राह देंगे
सूरज को पकड़ने देंगे
यह सब सूरज ने अपने
बचाव के लिये
पहरेदार रख छोड़े हैं
सूरज की अपनी बाहों में
बांध लेने का मेरा ख्वाब
हर दिन की तरह
आज भी
अधूरा रह जाता है !!



● माला वर्मा

आत्म कथ्य: कविता लिखने के लिए कभी मूड नहीं बनाना पड़ा। शब्द स्वतः ही पन्नों पर उभरने लगते हैं।

पता: हुकुम चंद जूट मिल्स, हाजीनगर, २४ परगना (उत्तर) प. बंगाल-७४३१३५

यह सब देखते हुए

किसी उजाड़ जंगल-सा
मेरा गांव
अपने अस्तित्व पर होते
कुठाराघातों से आहत
चीत्कार करता हुआ
मानवीय श्रम को
काटने आतीं
नित नयी मशीनें
पलायनवादिता को
दे रही हैं बढ़ावा
पूंजीपतियों के अस्तित्व की लड़ाई में
कहीं अनजाने ही पिसता श्रमिक
स्वयं को दुःखातीत करने के हेतु
बांध लेता है
अपनी पीठ पर अपने बच्चे
दुःखी है मेरा गांव
यह सब देखते हुए
किंतु
देख भी नहीं सकता वह
उन सबकी अधोगति
जिनकी किलकारियों ने
दिया है उसे
अपनी गोद में खेले
बच्चों के प्रति
पिता होने का
महत्त्वपूर्ण दायित्व ।



● अशोक कपूर 'ईशान'

आत्म कथ्य: मेरी कविता समाज में फैली विसंगतियां एवं उनके परिणामस्वरूप उद्वेलित मन की भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।

पता: श्री जी मंदिर के पास, चौधरी चौक, बरेली, जिला/रायसेन (म.प्र.)

जीवन का सार

दूर क्षितिज के झरनों से
शीतल पल के कर कमलों से
हंसवाहिनी समय की आहट
पल-भर पुलकित हृदय कर जाए
पल-भर जीवन कंटक कर जाए
जब सुबह की वेली नये गीत कह जाए
सायं उसे मध्यम कर जाए
सहिष्णुता की बेली फिर
नये राग-अलाप सुनती भर गाये
एक पल जीवन त्याग वेली पर
एक पल जीवन मृत-चादर ओढ़े
एक क्षण जीवन हर्षोत्कर्ष भूमि पर
पर जीवनत्व सार तो वही कहाए
जो हर्ष दुःख के क्षणों में काम आये
यही सत्य है, यही ज्ञान है
राम-रहीम सब एक सार है
ये जीवन सेवा-श्रम का भार है
फिर काहे जो जग दुराचार है
क्यों जीवन में भेद-भाव है
क्यों सपनों में भी दरार है
उठो जागो, अब तो हे मनुष्य
क्यों भूले अपना प्रेम-अस्तित्व
ओजस्विता की अंजली भर कर
हर दिशा में डालों प्रेम का बीज
बन सार्थक सत्य तुम ईश्वर के
कर दो पावन धरती पुलकित ।



● अंजली ओजस्विता

आत्म कथ्य: सामाजिक धरातल पर पल्वित, हृदय आकांक्षाओं व पीड़ाओं से प्रेरित सत्यता एवं मर्मता जड़ित भावनात्मक दर्पण का प्रतिबिंब है 'कविता'।

पताः के. पी.-४२ मौरिया एनक्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-३४



चाहत

गगन चूमता पर्वत का शिखर
शिखर चूमने को जी चाहता है
पेड़ों की डाली जो पवन से झूमे
उसे देख झूमने को जी चाहता है
सागर में है अथाह जल भरा
मछली बन उतरने को जी चाहता है
आसमां में बिखरा सतरंगी इंद्रधनुष
इन सात रंगों में मिल जाने को जी चाहता है
मुक्त गगन में विचरते पक्षी अनेक
पक्षी बन विचरने की जी चाहता है
बगिया में हैं इतने फूल खिले
भौंरा बन रस पीने को जी चाहता है
प्रकृति की इन रचनाओं को देख
खुद कुछ नया रचने को जी चाहता है
मैं एक उच्छृंखल मानव हूं पर
एक इनसान बनने को जी चाहता है



● चंद्रशेखर 'चंद्र'

आत्म कथ्य: उद्वेलित मन की शांति हेतु जब मैं प्रकृति की रचनाओं की गहराइयों में उतरने का प्रयत्न करती हूं तो प्रकृति की प्रत्येक खूबसूरत रचनाएं मुझे कविता रचने को प्रेरित करने लगते हैं ।

पताः नवभारत कॉमर्शियल इंस्टीट्यूट मोती चौक, खगौल (पटना)

लोकगीतों में सौतिया डाह

● डॉ. जगदीश व्योम

साहित्य समाज का दर्पण है । समाज की सहज अभिव्यक्ति साहित्य में होती है । ठीक इसी प्रकार जनमानस की आंतरिक भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति के साक्षात्कार लोक-साहित्य में होते हैं । भारतीय जन-जीवन का समस्त मनोविज्ञान यदि कहीं संग्रहीत है, तो वह लोकगीतों में ही है ।

भारत के विविध अंचलों के लोकगीतों में, नारी मन की अभिव्यक्ति की प्रधानता देखने को मिलती है । इसका कारण यह भी हो सकता है कि लोकगीतों का गायन प्रायः नारी कंठ द्वारा ही अधिक होता है ।

सौत चून की भी बुरी

नारी समर्पण की प्रतिमूर्ति है । वह चाहती है कि वह जिसके प्रति पूर्णरूपेण समर्पित हो, उस पर सिर्फ उसी का अधिकार रहे । जब कोई, उसके द्वारा निर्मित, इस भावनात्मक परिधि के अंदर प्रवेश करना चाहता है, तो वह उसे सह नहीं पाती । कन्नौजी लोक समाज में एक कहावत है कि— ***"सौति चूनहु की बुरी होति"*** अर्थात चून (आटा) की भी सौत अच्छी नहीं होती फिर वास्तविक सौत का तो कहना ही क्या ?

भारतीय नारी अपने पति को हर प्रकार से संतुष्ट करना अपना धर्म मानती है । इसके लिए वह प्रयास करती है । परंतु, यदि नारी में कोई कमी है, तो वह उसे अपना दुर्भाग्य समझकर या ईश्वर प्रदत्त अभिशाप मानकर, सौत को भी सहन कर लेती है और अपनी हार मानकर विवशता के आंसू पी लेती है । बांझ होने, लूली-लंगड़ी होने या अन्य कोई खोट होने की स्थिति में कभी-कभी पत्नी स्वयं अपने पति से दूसरी शादी का प्रस्ताव रखती हुई दिखायी पड़ जाती है । यह उसका अपने पति के प्रति पूज्य भाव का ही प्रस्फुटन है । इसके विपरीत वह सौत का उलाहना पति को देती ही रहती है—

जो मैं होती लूली-लंगड़ी,
तौ लउते सौतनियां
मेरी हिरनी-जैसी चाल,
बलमा क्यों लाये सौतनियां
जो मैं होती बांझ-बंझनियां
तौ लउते सौतनियां
मेरे खेलें दुइ-दुइ लाल
बलमा क्यों लाये सौतनियां ।

सौतिया डाह की एक विशेषता यह है कि नारी का पति किसी अन्य स्त्री के प्रति आकृष्ट

होकर उससे पत्नीवत व्यवहार रखता है, तो पत्नी को पति के प्रति उदासीन हो जाना चाहिए तथा पति से संबंध विच्छेद कर लेना चाहिए, परंतु ऐसा नहीं होता । पत्नी पति से तो व्यंग्य बाण चलाकर ही अपने मन की भड़ास निकाल लेती है, परंतु जिस नारी ने उसके पति को अपने प्रेम पाश में आबद्ध किया है, वही उसकी असली दुश्मन होती है । उस नारी को यदि पत्नी का वश चले, तो जीवित कदापि न छोड़े । लोक समाज में और कभी-कभी शिष्ट समाज में भी नारियों के झगड़ों के मूल में सौतिया डाह जनित कारण ही अधिक होते हैं ।

नारी के अचेतन मानस में सौत का ऐसा डर बैठा हुआ है कि वह सोते-जागते, चलते-फिरते, हर समय उसी भय से सशंकित रहती है । उसके प्रिय को उससे विलग करनेवाली प्रत्येक जड़-चेतन वस्तु, उसकी सौत बन जाती है । ऐसी प्रत्येक सौतजन्य बाधा के लिए वह उसके अनिष्ट की कामना करती है ।

एकाधिकार की भावना

नारी अपने प्रियतम को अपने तक ही सीमित बनाकर रखना चाहती है और चाहती है पूर्ण समर्पण—

'नैना भीतर आउ तू, पलक बंद कर लेउं ।
ना हौं देखौं और को, ना तोहि देखन देंहु ।।'

पति के प्रति समर्पित पत्नी जब यह जान पाती है कि उसका पति किसी अन्य स्त्री के साथ रात बिताकर आया है, तो उसकी कोमल भावनात्मक दृष्टि में पति का चेहरा कुम्हलाया-सा लगता है । ऐसी सूक्ष्म और नारी मनोविज्ञान की झलक लोकगीतों में ही मिल सकती है—

हरे-हरे सैयां अनार के फूल
देखत निक लागे ए हरी ।
हरे-हरे सोये सौति के संग
बलमु कुम्हलाए ए हरी ।।

इसी तथ्य को लोक कवि ईसुरी ने एक भौंरे के माध्यम से कितनी सहजता से स्पष्ट किया है तथा उसे उपेक्षा से देखते हुए जूठी पत्तल चाटनेवाला कौवा या कुत्ता तक कह डाला है ।

भौंरा जात पराए बागै तनिक लाज नहिंआवै
घर की कली कौन कम फूली काहे न लेत परागै
जूठी-जाठी पातर ईश्वर भावै कूकर कागै ।।

सौतों का विपरीत भाव

एकाधिक पत्नियों के पति की स्थिति कभी-कभी देखने लायक हो जाती है । यौवन के जोश में व्यक्ति होश खो देता है और जब यौवन का ज्वार उतरता है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है । ऐसे व्यक्ति दोनों पत्नियों के बीच का मोहरा मात्र बनकर रह जाते हैं । लोक में इस तरह के अनेक उदाहरण सहज ही देखने को मिल जाते हैं । बेचारी दोनों पत्नियां सेज पर सोने के लिए अपनी-अपनी ओसरी (निश्चित

दिन) तय कर लेती हैं । इस पर भी कभी-कभी लड़ाई हो जाती है । कितना मार्मिक चित्रण है इस प्रसंग का । उस व्यक्ति का सुख चैन भला कैसे बना रह सकता है, जिसके घर में दो पत्नियां हों । भगवान ही मालिक है उसकी कुशलता का—

कैसे जिअंइ जिनके दुइ-दुइ नारी
बड़की कहै हम गंगा नहइवे छुटकी कहै जमुना की तैयारी
बड़की कहै हम सिजिया पड़ सोइबे छुटकी कहै ओसरी है हमारी ।

सौतें आपस में खूब गाली-गलौज करती हैं । जब उनके अंदर का सौतिया डाह भड़क उठता है, तो वे अक्सर हाथापाई पर भी उतर आती हैं । लोकगीतों में सौत की हत्या कराने के लिए कभी भाई का, कभी देवर आदि का सहारा लेने का वर्णन मिलता है । कभी-कभी नायिका स्वयं ही सौत की हत्या के लिए तत्पर दिखायी पड़ती है—

देउ न सासु मेरी छुरिया कटरिया
कोई डारै सौति कउं मा..रि..रे.. ।

सौतिया डाह का डर नारी हृदय में इस प्रकार घर कर बैठा है कि उसकी मानसिक चेतना हर पल, हर क्षण आशंकित होती रहती है । पति जब तक बाहर से घर नहीं आ जाता, उसका मन शंकाकुल बना रहता है । बरसात की अंधेरी रातों में विरहिणी नारी की बेचैनी और अधिक बढ़ जाती है । ऐसे में उसे डर सिर्फ इस बात का रहता है कि हो न हो, उसके पति को किसी नारी ने अपने रूप पाश में फांस लिया है—

बादरु गरजै बिजुरी तड़पइ बैरिन ब्यारि चलै पुरवैया ।
काहू सौतिन नइं भरमाये ननदी फेरि तुम्हारे भइया ।।

रेलगाड़ी भी सौत

नारी के अचेतन मानस में सौत का ऐसा डर बैठा हुआ है कि वह सोते-जागते, चलते-फिरते, हर समय उसी भय से सशंकित रहती है । उसके प्रिय को उससे विलग करनेवाली प्रत्येक जड़-चेतन वस्तु, उसकी सौत बन जाती है । ऐसी प्रत्येक सौतजन्य बाधा के लिए वह उसके अनिष्ट की कामना करती है । दूसरों के खेतों में या कारखानों में काम करने के लिए जानेवाले ग्रामीण मजदूर जब अपनी पत्नियों को छोड़कर दूर देश के लिए रवाना होते हैं, तो उन्हें ले जानेवाली रेलगाड़ी, बस, नाव आदि सब में विरहिणी पत्नियां अपनी सौत की छवि ही देखतीं हैं, क्योंकि उनके पति को उनसे विलग करने में उनका भी सहयोग रहा है ।

भोली-भाली नारी रेलगाड़ी को ही अपनी सौत के रूप में देखती है ।

रेलिया बैरिन पिया को लिये जाइ रे... ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अपने पति के लिए यमराज तक से जूझनेवाली भारतीय नारी, पति के पथ में आनेवाले अंधकार को देदीप्यमान नक्षत्र बनकर दूर भगाती है । परंतु जब-जब उसके पथ में 'सौत' रूपी 'राहु' पड़ जाता है, तो उसके जीवन में ग्रहण लग जाता है । कभी तो यह ग्रहण अल्पकालिक होता है, परंतु कभी-कभी यह ग्रहण इतना दीर्घकालिक होता है कि बेचारी नारी रूपी नक्षत्र को समूचा ही निगल जाता है ।

—बी-४, केंद्रीय विद्यालय परिसर,
मथुरा कैंट—२८०००१

ग्रह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिव प्रसाद पाठक

मेष : नवीन स्थान की यात्रा होगी । लाभदायी स्थितियों का उदय होगा । उच्चाधिकारी के सहयोग से नवीन योजनाओं की पूर्ति होगी । कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा । शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर प्रतिष्ठा को प्रभावित करेगा । संपत्ति कार्यों में विलंब होगा । आकस्मिक धन लाभ होगा । नवीन मित्रों का समागम होगा ।

वृषभ : आत्मविश्वास तथा साहस से जोखिमपूर्ण कार्यों से लाभ होगा । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों की अधिकता होगी । नवीन संपर्कों से प्रतिष्ठा वृद्धि होगी । आध्यात्मिक सत्संग अथवा प्रवास से सुखानुभूति होगी । प्रियजन की अस्वस्थता चिंतनीय होगी । पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी ।

मिथुन : नवीन आर्थिक संसाधनों का उदय होगा । उच्चाधिकारियों के सहयोग से नवीन दायित्व मिलेगा । कार्यों की अधिकता होगी । शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता बढ़ेगी किंतु शत्रु पक्ष के प्रयास विफल होंगे । प्रवास में अकारण पीड़ा का सामना करना होगा । साझेदारी अथवा परोपकारी कार्यों में सावधानी रखें ।

कर्क : राजकीय कार्यों में अनपेक्षित उपलब्धि होगी । उच्च पद अथवा वांछित परिवर्तन से प्रसन्नता होगी । नवीन स्थान की यात्रा धनदायी होगी । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी । पारिवारिक कार्यों में व्ययों की अधिकता रहेगी । व्यर्थ खिन्नता से भावनात्मक पीड़ा होगी । उदर अथवा रक्तपीड़ा का सामना करना होगा । शत्रु पक्ष से सतर्कता हितकर होगी ।

सिंह : मास में भाग्यदायी सफलता मिलेगी । नवीन कार्यों की पूर्ति होगी । पारिवारिक उन्नति के अनुकूल अवसरों का उदय होगा । गृहोपयोगी अथवा विलासितादायी वस्तु पर व्यय होगा । साझेदारी अथवा जोखिमपूर्ण कार्यों से लाभ मिलेगा । रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में व्यर्थ विरोधाभास बढ़ेगा । गुप्त शत्रुओं से सावधानी हितकर होगी ।

कन्या : पारिवारिक सामंजस्य से संपत्ति कार्य की पूर्ति होगी । लगन, परिश्रम तथा पुरुषार्थ से उच्चाधिकारियों की प्रसन्नता मिलेगी । उच्च पद अथवा वांछित स्थान परिवर्तन से प्रसन्नता होगी । शत्रु पक्ष कार्यों में व्यर्थ अवरोध उपस्थित करेगा । आत्मविश्वास तथा साहस से दुष्कर कार्यों में सफलता मिलेगी ।

तुला : आत्मविश्वास में वृद्धि होगी । निकटजनों के सहयोग से आर्थिक संसाधन में वृद्धि होगी । चातुर्यपूर्ण निर्णय से अनपेक्षित

ग्रह स्थिति :सूर्य १४ मई से वृषभ में, मंगल सिंह में, बुध मेष में, गुरु मकर में, शुक्र ५ से वृषभ में, ३० से मिथुन में, शनि मीन में, राहु कन्या में, केतु मीन में, हर्षल नेप्च्यून मकर में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

धन लाभ होगा । आकस्मिक प्रवास आनंददायी होगा । शत्रु पक्ष का पराभव होगा । प्रियजन की अस्वस्थता चिंतनीय होगी । आमोद-प्रमोद की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा । संपत्ति कार्यों में वांछित सफलता मिलेगी ।

वृश्चिक : मास संघर्षपूर्ण होगा । परिश्रम एवं पुरुषार्थ से लंबित कार्यों में सफलता मिलेगी । स्वजनों के सहयोग से न्यायालयीन समस्या का समाधान होगा । पारिवारिक वातावरण खिन्नतापूर्ण रहेगा । भावुकता की अपेक्षा विवेक से कार्य करें । उच्चाधिकारियों के सहयोग से लंबित योजनाओं की पूर्ति होगी । शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर छवि प्रभावित करेगा । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी ।

धनु : मासारंभ में विद्यमान समस्याओं का समाधान होगा । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से विशिष्ट लाभ मिलेगा । जीवनसाथी के सहयोग से धार्मिक कार्य की पूर्ति होगी । पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी । आजीविका की दिशा में व्यर्थ विरोधाभास होंगे । संभाषण में संतुलन हितकर होगा । स्वजनों के सहयोग से न्यायालयीन समस्या का समाधान होगा । निकटजन की अस्वस्थता चिंतनीय होगी ।

मकर : मास में उत्साहवर्धक परिवर्तन होगा । संपत्ति कार्यों में धन व्यय होगा । नवीन आर्थिक संसाधन से आत्मविश्वास बढ़ेगा । राजकीय कार्यों की अधिकता रहेगी । रक्त अथवा उदर विकारों से पीड़ा होगी । प्रवास में सावधानी रखें । अपरिचितों पर विश्वास पीड़ादायी होगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी । पारिवारिक कार्यों में व्ययों की अधिकता होगी । शत्रु पक्ष से व्यर्थ पीड़ा होगी । संभाषण में संतुलन हितकर होगा ।

कुंभ : मास में कार्यों की अधिकता होगी । परोपकारी अथवा सामाजिक कार्यों से यश वृद्धि होगी । नवीन योजनाओं में तीव्र गति से प्रगति होगी । राजकीय पक्ष का सहयोग मिलेगा । विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय होगा ।

सामाजिक अथवा धार्मिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी । जोखिमपूर्ण कार्यों में सावधानी रखें । प्रियजन अथवा निकटजन के कारण भावनात्मक पीड़ा होगी । संपत्ति संबंधी कार्य में विरोधाभास बढ़ेंगे । विलंब हितकर होगा ।

मीन : नवीन व्यवसाय में सफलता मिलेगी । आजीविका की दिशा में वांछित परिवर्तन से प्रसन्नता होगी । स्वजनों अथवा मित्रों के सहयोग से मांगलिक कार्य की पूर्ति होगी । संपत्ति अथवा वाहनादि पर व्यय भार बढ़ेगा । शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से व्यर्थ चिंता होगी । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता विद्यमान रहेगी ।

पर्व और त्यौहार

१- मई चंडिका नवमी, मई दिवस, ३- वरुथिनी एकादशी, ४- प्रदोष व्रत, ७- कविन्द्र रविन्द्र जयंती, ९- अक्षय तृतीया श्री परशुराम जयंती, १०- वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, ११- आद्य शंकराचार्य जयंती, सूरदास जयंती, १२- रामानुजाचार्य जयंती, १४- श्री बगलामुखी जयंती, १८- मोहनी एकादशी, १९- सोमप्रदोष, २२- वैशाखी पूर्णिमा, बुद्धपूर्णिमा, छिन्नमस्ता जयंती, २५- संकष्टी गणेश चतुर्थी, २९- शीतलाष्टमी ।

सवाल खासा टेढ़ा है कि सोना खरा है या खोटा ? सर्राफों के शो-केसों में चमचमाते खरे-खोटे सोने का अंदाजा लगाना वाकई बेहद मुश्किल काम है । हालांकि निर्यात और ब्रांड गहनों पर हाल मार्किंग पद्धति लागू है । अब इसे घरेलू सर्राफा बाजार में भी लागू करने की तैयारियां चल रही हैं । दरअसल, सोने की शुद्धता को प्रमाणित करने के चिह्न को 'हाल मार्क' कहते हैं । तेरहवीं शताब्दी में, ब्रिटेन के लंदन स्थित 'गोल्डस्मिथ हाल' से शुरू 'हाल मार्क' आज दुनिया के कई देशों में, सोने के गहनों के साथ-साथ सोने की छड़ों, सिक्कों और मेडलों तक पर लग रहा है ।

सोने की शुद्धता

गहनों के खरे-खोटे की पहचान के सिलसिले में, सोने से जुड़े, कुछ बुनियादी तथ्यों की जानकारी जरूरी है । सोने की शुद्धता 'कैरेट' में मापी जाती है । २४ कैरेट सोना १००० भाग शुद्ध होता है । लेकिन २४ कैरेट शुद्धतावाले सोने से जेवर नहीं बन सकते ।

सोने और सोने के गहनों की ख़रीदारी में, भारत पिछले तीन सालों से, दुनिया में सबसे आगे है । सर्राफों के शोरूमों में, चमचमाते खरे-खोटे सोने का अंदाजा लगाना वाकई टेढ़ा काम है । चूंकि सोने के गहनों की ऊपरी सुनहरी चमक और भीतरी वास्तविक शुद्धता में फर्क हो सकता है । तो फिर, आखिर कैसे परखें कि सोना खरा है या खोटा ?

सोना खरा है या खोटा

● अमिताभ स.





कारण ? यह अत्यंत कोमल होता है । अत: ११ भाग सोने में एक भाग चांदी-तांबा के मिश्रण से बने २२ कैरेट से गहने बनाये जाते हैं । वैसे, पिछले दिनों 'हाऊस ऑव सॉलिड गोल्ड' ने अपने 'गोल्ड मास्टर' ब्रांड से २४ कैरेट शुद्ध सोने के गहने लेकर भारतीय बाजार में उतरा है । चूंकि १९९० में, स्वर्ण नियंत्रण कानून की समाप्ति के साथ ही २४ कैरेट शुद्ध सोना खरीदने और बेचने की छूट है । इसी के अंतर्गत सोने के बिस्कुट, बिठूर, गिन्नियां और सिक्के खरीद और रख सकते हैं ।

अखबारों में, प्रतिदिन सोना बिस्कुट, सोना स्टैंडर्ड, २२ कैरेट जेवरात और गिन्नी का ताजा भाव छपता है । सरकारी मोहरवाले २४ कैरेट सोने को स्टैंडर्ड कहते हैं । तस्करी द्वारा देश में आये सोने को बिस्कुट की श्रेणी में रखा जाता है । बिस्कुट की शुद्धता २४ कैरेट होती है । आयात शुल्क अदा करके भारत आये सोने के बिस्कुटों को भी स्टैंडर्ड ही कहते हैं । इन पर ९९९ या ९९९.९ भाग शुद्धा अंकित होती है । इन्हें 'फाइन गोल्ड' कहा जाता है । आठ ग्राम वजन की गिन्नी की शुद्धता २२ कैरेट होती है ।

बताया जाता है कि २२ कैरेट सोना९१.६ प्रतिशत शुद्ध, २१ कैरेट सोना ८७.५ प्रतिशत शुद्ध, १८ कैरेट सोना ७५ प्रतिशत शुद्ध और १४ कैरेट सोना ५८.५ प्रतिशत शुद्ध होता है । इस प्रकार सोने की प्रमाणित शुद्धता तक पहुंचने के लिए गहनों या सोने के 'टच' निकाले जाते हैं । कैसे ? सोने के गहनों के वजन के बराबर चांदी मिलाकर 'गुठाली' में डालकर गलाते हैं । फिर इसे स्टील के बरतन में डालकर शोरे के तेजाब में उबालते हैं । दो-तीन बार उबाला जाता है । अंतिम बार तेजाब पूर्णतः उड़ जाता है, तो बरतन में सोने का सुनहरा चूर्ण शेष रह जाता है । चूर्ण हू-ब-हू मिट्टी की भ्रांति होता है । फिर चूर्ण को सुहागे में मिलाकर, 'गुठाली' में गलाते हैं । भली-भांति गलने के बाद, २४ कैरेट शुद्ध सोना हासिल होता है । समूची स्वर्ण शोधक प्रक्रिया में करीब एक घंटे का समय लगता है । करीब-करीब हर सर्राफा बाजार से, एक-दो निजी स्वर्ण-शोधक कारखाने जुड़े होते हैं । इन्हीं स्वर्ण-शोधक कारखानों में खोटे सोने को शुद्ध किया जाता है । सुनार स्वयं भी सोना शुद्ध करने की तकनीक जानते हैं ।

खरे-खोटे की पहचान

दूसरे शब्दों में, सोने की सही शुद्धता जांच के लिए समूचे गहने को गलाना जरूरी है । गहने से तो हाथ धोना पड़ेगा । ऐसी परख का फायदा क्या ? आमतौर पर सर्राफ सोने और सोने के गहनों को 'कसौटी' नामक काले पत्थर पर रगड़-रगड़कर खरे-खोटे सोने की पहचान

करते हैं । 'कसौटी' पर सोने को कस के हलके, पीले, लाल, गहरे पीले आदि रंगों से ही शुद्धता का पैमाना जांचा जाता है । परख की इस प्राचीन प्रक्रिया में खासी निपुणता चाहिए । अगर 'कसौटी' पर कसने से गहने सफेद रंग छोड़ें, तो समझो सोना है ही नहीं । 'कसौटी' इस हद तक सच बताती है कि पीले पीतल की कस भी सफेद आती है । लेकिन कभी-कभी पीतल-तांबा के मिश्रण से बनी धातु के अतिरिक्त कुछ अन्य पीली धातुएं भी 'कसौटी' पर पीली कस छोड़ती हैं । ऐसी परिस्थिति में, कस पर एक बूंद शोरे का तेजाब डालने पर, सोने का रंग ज्यों-का-त्यों बरकरार रहता है । जबकि महज पांच सेकेंड में सोने के अलावा अन्य हरेक धातु की कस का पीलापन फौरन उड़ जाता है । कहते हैं कि 'कसौटी पर खरा उतरना' कहावत सर्राफा कारोबार की इसी जांच प्रक्रिया से बनी है ।

यूं तो, आजकल सोना केवल पारंपरिक पीला या सुनहरी नहीं रहा । सोने के गहने गुलाबी, सफेद, स्लेटी और लाल विविध रंगों में आ रहे हैं । रंग-बिरंगे गहनों की शुद्धता खरी ही होती है । 'कसौटी' पर कसने पर रंगीन सोने के गहने भी पीली कस ही छोड़ते हैं । रंगों से आंखें धोखा खा सकती हैं, 'कसौटी' कतई नहीं ।



खरे-खोटे सोने की पहचान का राज एक पुरानी कहावत में छिपा है । शायद कहावत सुनी हो— अग्नि परीक्षा में कुंदन की तरह खरा उतरना । दूसरे शब्दों में, आग सोने की सबसे सरल पहचान है । कैसे ? सोने या सोने के गहने को करीब २-३ मिनट सीधे आग पर रखें । अगर सोना काला पड़ जाए, तो समझो सोना २४ कैरेट शुद्ध नहीं है । सोने में खोट है । हमेशा २२ कैरेट या कम शुद्धता का सोना और गहने काले पड़ जाएंगे । उधर अगर सोने की पीली आभा बरकरार रहे तो, निःसंदेह सोना २३ कैरेट या २४ कैरेट शुद्ध है । लेकिन ध्यान रहे कि पहचान का यह तरीका मीनाकारी, जड़ाऊ और कुंदन के गहनों के लिए नहीं है ।

मीना जल जाएगा, कुंदन की लाख पिघलकर निकल जाएगी और रत्न जलकर स्वाहा हो जाएंगे । इसलिए केवल सोने के सादे-प्लेन गहनों पर ही यह प्रयोग किया जा सकता है । काले पड़े सादे गहनों पर भी सर्राफ या सुनार के पास जाकर पुनः पॉलिश करवानी पड़ेगी ।

उल्लेखनीय है कि शुद्धता की कसौटी पर खरा उतरने के उद्देश्य से अस्सी के दशक से टांके की बजाय 'केडियम' से सोने के गहने बनाने का दौर चला । लेकिन बनवायी महंगी होने की वजह से 'केडियम' सर्राफा बाजार में

अधिक लोकप्रिय नहीं हो सका । गहनों का साधारण टांका सोना, चांदी, तांबा और जस्त के मिश्रण से बनाया जाता है । उधर १ ग्राम सोने में ०.१०० मिलीग्राम 'केडियम' मिलाकर जोड़ लगाये जाते हैं । 'केडियम' से जुड़े सोने के गहनों के चलन के पीछे प्रमुख कारण है शुद्धता । यूं भी, मशीनी चूड़ियां और ढलाई के गहनों में टांका की मात्रा एकदम कम होती है ।

जाहिर है कि सोने के गहनों की ऊपरी सुनहरी चमक और अंदरुनी वास्तविक शुद्धता में फर्क होता है । वास्तव में, गहनों की ऊपरी चमक-दमक रासायनिक प्रक्रिया के जरिए चढ़ा दी जाती है । कैसे ? सबसे पहले गहनों को गंधक के तेजाब और पानी में साफ करते हैं । फिर रंगने के लिए फिटकरी-युक्त उबलते पानी में साफ करते हैं । आंच पर तपाते हैं । पुनः गंधक के तेजाब में सफाई की जाती है । रीठे से गहनों को धोते हैं । विद्युत चालित मोटर पर कपड़े से बने 'बफ' पर लस्टर नामक रनक मसाला लगाकर गहनों को पॉलिश करते हैं ।कहीं-कहीं लोहे की नली से गहनों को 'मशकला' भी करते हैं । आखिर में, सोने को रंगवाले तरल में उबालकर गहनों को रंग दिया जाता है । सोने को रंग गंधक के तेजाब में सोना, शोरा, नमक और पानी के मिश्रण से बनाया जाता है । यही स्वर्ण रंग खोटे सोने को भी, नजरों को धोखा देने के लिए, खरा बनाने का दमखम रखता है । कुछ खोटे गहनों का रंग लंबे समय तक बरकरार रखने के लिए इलैक्ट्रोप्लेटिंग पद्धति का सहारा भी लिया जाता है ।

— ५१, राजपुर रोड,
दिल्ली-११००५४

मतभेद

कुछ चीजों से
मेरा गंभीर मतभेद है
ऊपर आकाश में
आलस्य मान मानकर
घूम रहे चंद्रमा से
मेरी बात नहीं मिलती है
मैं रात से सहमत नहीं हूं
कसाई की छुरी
कालाबाजारियों के तराजू
पुलिस डिपार्टमेंट की मूंछें
गणिकाओं के शृंगार प्रसाधन
और मंत्रियों के दस्तखत से
मैं अपना अलग विचार जाहिर करता हूं
यद्यपि सत्ता के पास
कुछ सुंदर शब्द हैं
जो वजनदार भी लगते हैं
लेकिन उसके कुरूप भाव को
मैं पसंद नहीं करता हूं
उसके प्रति मेरा विरोध है
जरूरी नहीं है
सांसदों का भत्ता
नकली फूलों की सुगंध
गलत समाचार
जासूसों की सूचना से
मैं सहमत होऊं
देशद्रोहियों द्वारा प्रयोग की गयी
चालाकी के प्रति
मैं गहरा मतभेद प्रकट करता हूं ।

● विमल निभा

अनु.— डॉ. रामदयाल राकेश

पो.ऑ. बॉक्स नं. १४३,
काठमांडू, नेपाल ।

ज्योतिष : समस्या और समाधान

● अजय भाम्बी

हेमन्त मिश्र, रायपुर (म. प्र

प्रश्न : विभागीय एवं दांडिक कार्यवाही में न्यायालयीन निर्णय मेरे पक्ष में या विपक्ष में ?

उत्तर : निर्णय आपके पक्ष में रहेगा ।

वन्दना गुप्ता, गोरखपुर

प्रश्न :क्या मेरा एम. एड. में प्रवेश होगा ?

उत्तर : पूर्ण संभावना है ।

ज्योति, जयपुर

प्रश्न : अप्रैल अंतिम सप्ताह में संतान अपेक्षित-पुत्र अथवा पुत्री ? (प्रथम गर्भ है) ।

उत्तर : पुत्र का जन्म होगा ।

रामस्वरूप चौहान, नैनीताल

प्रश्न : विदेश यात्रा एवं पदोन्नति कब तक ?

उत्तर : अगले वर्ष ।

मानव अग्रवाल, मुम्बई

प्रश्न : नौकरी कब लगेगी ?

उत्तर : नौकरी इसी वर्ष प्राप्त हो जाएगी ।

कनिका, दिल्ली

प्रश्न : मेरे शरीर पर सफेद दाग हैं, ये ठीक होंगे या नहीं ? ठीक होंगे तो कब तक ?

उत्तर : ठीक हो जाएंगे, योग्य चिकित्सक को दिखाएं ।

प्रदीप चौधरी, बिजनौर

प्रश्न : ८ जून १९९७ को होनेवाली सिविल सेवा परीक्षा में क्या सफलता मिलेगी ?

उत्तर : सफल होने की संभावना अधिक है ।

नंदिनी पंजवानी, अजमेर

प्रश्न : पति से सुलह होगी अथवा विवाह विच्छेदन की संभावना है ?

उत्तर : येन-केन-प्रकारेण सुलह हो जाएगी ।

अनिलचन्द्र ठाकुर, समेली (कटिहार)

प्रश्न : साहित्य की सर्वोत्कृष्ट सफलता कब तक ?

उत्तर : अभी कम-से-कम तीन साल और लगेंगे ।

संगीता कुमारी, अलीगढ़

प्रश्न : आर्थिक आत्मनिर्भरता कब व किस क्षेत्र में ?

उत्तर : इसी वर्ष और नौकरी में ।

कल्पना शर्मा, हाथरस

प्रश्न : विवाह कब होगा ?

उत्तर : विवाह १९९८ में होगा ।

अश्विनी कुमार, दिल्ली

प्रश्न : आध्यात्मिक उन्नति के लिए रत्न सुझायें ?

उत्तर : ठीक से जान लें कि आध्यात्मिक उन्नति रत्नों से नहीं होती । यदि कुंडली में आध्यात्मिक क्षेत्र की ओर ग्रह सहायक बनें तभी आदमी उन्नति कर पाता है । रत्न स्वयं में क्रिया नहीं करते बल्कि उत्प्रेरक का कार्य करते हैं । फिर भी नीलम धारण करें, सहायक रहेगा ।

अमरनाथ सिंह, सुल्तानपुर (उ. प्र.)

प्रश्न : पत्नी की बीमारी कब ठीक होगी ?

उत्तर : आपकी कुंडली से पत्नी के स्वास्थ्य

का समुचित हल बताना बहुत ही कठिन कार्य है । कृपया उन्हीं की कुंडली भेजें, ताकि ठीक से बताया जा सके ।

शशिकान्त शर्मा, मुजफ्फरनगर

प्रश्न : वर्तमान व्यवसाय उचित है अथवा नहीं ?

उत्तर : बदलाव अपेक्षित है ।

योगेश कुमार धीर, दिल्ली

प्रश्न : अपना मकान कब और कहां पर ?

उत्तर : इस वर्ष के बाद जहां आप रहते हैं वहीं मकान बनेगा ।

सत्कर्ष शर्मा, औरैया

प्रश्न : जातक पूर्णतः स्वस्थ कब हो पाएगा ? इलाज जारी है ।

उत्तर : सूर्य की दशा में ही जातक को पूर्ण स्वास्थ्य लाभ होगा ।

नम्रता अहलूवालिया, इंदौर

प्रश्न : प्रेम विवाह की संभावना कितनी ? विवाह कब ?

उत्तर : प्रेम विवाह होने में कठिनाई पेश आएंगी । विवाह इसी वर्ष संभव है ।

विमी रस्तोगी, मेरठ

प्रश्न : संतान सुख कब तक और क्या ?

उत्तर : अगले डेढ़ वर्ष में और पुत्र होगा ।

समीर कान्त, नयी दिल्ली

प्रश्न : विदेश में स्थायी प्रवास कब से होगा ?

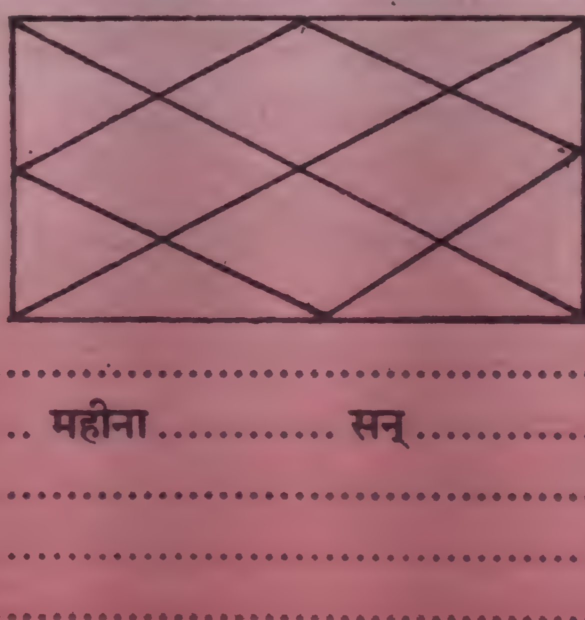
उत्तर : अगले वर्ष से संभावना है ।

देव आनन्द, सीकर

प्रश्न : अच्छा समय कब आएगा ?

उत्तर : शनि की अंतर्दशा के बाद समय में बेहतरी आएगी ।

प्रविष्टि—१८०



नाम..

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) .... महीना .... सन् ....

जन्म-स्थान...

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण ....

पता..

आपका एक प्रश्न ....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें ....

संपादक (ज्योतिष विभाग)—प्रविष्टि—१८० 'कादम्बिनी'

हिंदुस्तान टाइम्स भवन,

१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० मई, १९९७

१० मई १८५७ की क्रांति की स्मृति में



बहादुरशाह जफर के सहयोगी जो फांसी पर लटकाए गये !

• शिवकुमार गोयल

१० मई १८५७ को मेरठ से अंगरेजी शासन के विरुद्ध शुरू हुई प्रथम सशस्त्र क्रांति की परिणति दिल्ली की गद्दी पर पुनः बहादुरशाह जफर को सत्तारूढ़ करने के रूप में हुई थी। अंगरेज भारतीय सैनिकों द्वारा दी गयी इस चुनौती को सहन नहीं कर पाये थे तथा उन्होंने अपनी सेना तथा तोपों आदि को इकट्ठा कर दिल्ली का घेरा कसना शुरू कर दिया था। साथ-साथ मेरठ तथा हरियाणा के जिन-जिन इलाकों में ग्रामीणों ने इस सैनिक क्रांति में भाग लिया था, उन्हें भी वे 'राजद्रोह' का मजा चखाने के लिए तत्पर हो उठे थे। कुछ ही दिनों में अंगरेजों के दिल्ली के घेरे तथा अन्य तैयारियों ने बहादुरशाह जफर को विशेषकर आर्थिक संकट से त्रस्त कर डाला था। एक समय ऐसा भी आया जब बादशाह का खजाना खाली हो गया तथा उनके पास हिंदुस्तानी सैनिकों का वेतन देने के लिए भी रुपया नहीं बच पाया।

मित्रों द्वारा सहायता

बहादुरशाह जफर के नजदीकी लोगों में दो वैश्य परिवार के व्यक्ति भी थे। इनमें से एक थे हिसार (हरियाणा) की हांसी रियासत के ला. हुकमचंद जैन कानूनगो तथा दूसरे थे डासना (गाजियाबाद) के धनाढ्य लाला मटोलचंद अग्रवाल।

अंगरेजों द्वारा दिल्ली पर पुनः कब्जा किये जाने के षड्यंत्र को असफल करने के लिए जब बहादुरशाह जफर के विश्वस्त लोगों की दिल्ली में बैठक हुई तो लाला हुकमचंद भी हांसी से

दिल्ली पहुंचकर इस बैठक में शामिल हुए थे । उन्होंने संकटग्रस्त बादशाह को अपने क्षेत्र से केवल धन ही भिजवाने का आश्वासन नहीं दिया था अपितु समय पड़ने पर राष्ट्रभक्त ग्रामीणों की सेना बनाकर अंगरेजों की सेना से टक्कर लेने का दृढ़ संकल्प भी वहीं ले लिया था ।

गया । बादशाह बहादुरशाह जफर को लिखे पत्र के आधार पर दोनों को मजिस्ट्रेट ने फांसी की सजा सुना दी ।

अगले ही दिन १९ जनवरी १८५८ को हांसी में सरेआम लाला हुकमचंद तथा मिर्जा मुनीर बेग को फांसी पर लटका दिया गया ।

बहादुरशाह जफर के नजदीकी लोगों में दो वैश्य परिवार के व्यक्ति थे । इनमें से एक थे हिसार (हरियाणा) की हांसी रियासत के ला. हुकमचंद जैन कानूनगो तथा दूसरे थे डासना (गाजियाबाद) के धनाढ्य लाला मटोलचंद अग्रवाल ।

दिल्ली पर पुनः कब्जा

कुछ ही समय में जब अंगरेज दिल्ली पर पुनः कब्जा जमाने में सफल हो गये तो उन लोगों की सूची बनायी गयी जिन्होंने 'राजद्रोह' कर बादशाह का साथ दिया था । लाला हुकमचंद का मिर्जा मुनीर बेग के हाथों भेजा गया पत्र भी बादशाह की निजी फाइल से अंगरेजों के हाथ लग गया । दिल्ली के अंगरेज कमिश्नर सी. एस. सांडर्स ने उस पत्र को हिसार के कमिश्नर मि. कार्टलैण्ड को भेज कर ला. श्यामलाल तथा मिर्जा बेग को 'राजद्रोह' का मजा चखाने का आदेश दिया । अंगरेज सैनिकों की टुकड़ी ने हांसी में लाला श्यामलाल तथा मिर्जा बेग के मकानों को घेर लिया । लालाजी तथा उनके भतीजे फकीरचंद को गिरफ़ार कर लिया गया । मिर्जा बेग भी पकड़ लिए गये । १८ जनवरी १८५८ को को उन्हें हिसार के मजिस्ट्रेट जान आकिन्सन के सामने पेश किया

दोनों के शवों को उनके परिवारजनों को न सौंप कर उन्हें मनमाने ढंग से जलवा दिया गया ।

देश की आजादी के बाद २२ जनवरी १९६२ को हांसी में अमर शहीद हुकमचंद पार्क की स्थापना की गयी । आज भी यह पार्क लाला हुकमचंद के बलिदान का मूक साक्षी बना हुआ है ।

एक और भामाशाह

लाला मटोलचंद की कहानी मेवाड़ के राष्ट्रभक्त दानवीर भामाशाह की कहानी की पुनरावृति भी है ।

लाला मटोलचंद पूरी मेरठ कमिश्नरी के अग्रणी धनाढ्यों में माने जाते थे । दिल्ली से मात्र ४० मील दूरी पर स्थित डासना (गाजियाबाद) नामक छोटे से गांव के वे जमींदार थे । बादशाह बहादुरशाह जफर के वे अनन्य अंतरंग मित्रों में से थे ।

जब अंगरेजों के आतंक के कारण

बहादुरशाह जफर के राज्य के तमाम आर्थिक स्रोत बंद हो गये तथा शाही खजाना खाली हो गया तो बादशाह ने अपने इने-गिने धनाढ्य मित्रों को पैगाम भिजवाकर दिल्ली बुलाया । एक हरकारा डासना ला. मटोलचंद अग्रवाल के पास भी भेजा गया ।

ला. मटोलचंद दूसरे ही दिन सवेरे अपने रथ में सवार होकर दिल्ली जा पहुंचे । बहादुरशाह जफर ने उनसे कहा, 'लालाजी, हमें कुछ धन कर्जे के रूप में चाहिए जिससे हम कम-से-कम अपने सैनिकों का वेतन तो अदा कर सकें । संकट दूर हो जाने पर आपका रुपया आपको वापस कर दिया जाएगा ।'

लाला मटोलचंद ने जवाब दिया, 'आप रुपया वापस करने की चिंता न करें । आखिर इस देश के प्रति मेरा भी तो कुछ कर्त्तव्य है । कल सवेरे सोने की अशर्फियां तथा रुपया आपकी सेवा में पहुंचा दिया जाएगा ।'

और अगले ही दिन कई रथों व बैलगाड़ियों में अशर्फियों से भरे छकड़े लाद कर डासना से दिल्ली के लिए रवाना कर दिये गये । सबसे पीछे के रथ में लाला मटोलचंद खुद दिल्ली दरबार जा पहुंचे ।

जब लाला मटोलचंद ने बादशाह के दरबार में अपने जीवन भर की कमायी सोने की अशर्फियों से भरे छकड़े पेश किये तो तमाम दरबार उनकी राष्ट्रभक्ति तथा दरियादिली देखता ही रह गया था । बहादुरशाह जफर ने उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा था, 'भामाशाह द्वारा महाराणा प्रताप को अपना तमाम धन अर्पित कर देने की घटना हमने इतिहास में पढ़ी थी किंतु आज तो आपने भामाशाह की तरह हमें तमाम धन देकर उसे दोहराया है । ये शब्द कहते-कहते बादशाह की आंखें कृतज्ञता के रूप में नम हो उठी थीं ।

करोड़पति से खाकपति

लाला मटोलचंद के करोड़पति से खाकपति होने की घटना भी लोकगीतों में मिलती है । कहा जाता है कि लाला मटोलचंद की पुत्र-वधू ने बेटे को जन्म दिया तो उसने हठ किया कि वह कुंआ पूजने सोने की अशर्फियों पर पैर रखकर जाएगी । हवेली से लेकर कुएं तक अशर्फियां बिछवाई जाएं । लाला मटोलचंद अत्यंत धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति थे । वे जानते थे कि धर्मशास्त्रों में सोने को इतना पवित्र कहा गया है कि सोने के आभूषण कमर से नीचे पहनना भी निषिद्ध बताया गया है । सोने को पैर लगाना भी घोर अनिष्टकारी बताया गया है । अतः उन्होंने बहू को समझाया कि सोने को पैरों तले नहीं रखा जा सकता ।

बहू अपनी जिद पर अड़ी रही । परिणामस्वरूप सोने की अशर्फियों से गुजरते हुए वह कुआं पूजने गयी और उसी दिन से लाला मटोलचंद को दुर्भाग्य ने आ घेरा । कुछ ही दिनों में उनका परिवार एक-एक करके काल ग्रस्त होने लगा । विशाल हवेली को उल्लुओं और चगमादड़ों ने अपना बसेरा बनाना शुरू कर दिया । डासना की लखौरी ईंटों से बनी ५२ चौखटों की वह हवेली आज भी खंडहर के रूप में लाला मटोलचंद अग्रवाल के उत्थान और पतन की जीवंत साक्षी है ।

—धर्म धवन
पिलखुवा-२४५३०४,
जिला (गाजियाबाद)

नयी कृतियां

गंगा के मौन किनारे : डॉ. हरगुलाल गुप्त का पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जनपद से संबद्ध तीसरा आंचलिक उपन्यास है। 'गंगा के मौन किनारे' का क्षेत्र कर्णवास, राजघाट और नरौरा का वह गंगातट है जो अतीत में तीर्थों की भव्यता और उनके किनारे लगनेवाले मेले-टेलों के शोर तथा वहां के खानपान, रीति-रिवाज, रहन-सहन, मूढ़ाग्रहों, प्रथाओं आदि की अभिव्यक्ति में लोक संस्कृति के जाज्वल्यमान सभी रूपों को प्रकट करता हुआ वर्तमान में सत्ता के लोलुप व्यक्तियों द्वारा चुनाव के दिनों में वोट की राजनीति करने के कारण वहां की उदात्त संस्कृति को दरकता हुआ दिखलाता है।

डॉ. गुप्त को सर्वहारा वर्ग के चरित्रों के उत्थान में विशेष सफलता मिली है। उपन्यास की नायिका कालरथी माई के मरने पर अकेली अपनी जीवन-यात्रा प्रारंभ करती है, बीच में सहयोगी के रूप में मिल जाते हैं सर्वहारा वर्ग के प्रतिनिधि अंधे मंगलू दादा, किसना, खचेरा, शंकर और कुत्तेवाले बाबा जो उसका अनमेल विवाह अधबूढ़े तोताराम से रुकवाकर उसे हैजे से ग्रसित मां-बाप की मृत्यु पर अनाथ बच्चों को 'बालघर' और स्कूल खुलवाने में लगाते हैं। डॉ. ब्रज के पिता और भाई रेलवे की चोरी करने से लेकर अनेक कुकर्मों में संलग्न अंत में परास्त होते हैं और ब्रज भी कालरथी को सहयोग देकर उसे सफलमना बनाता है। लेखक ने पुराने मूल्यों में नये संदर्भों की सार्थकता हर स्थान पर व्यक्त की है और वही उसकी सफलता का मूलाधार है। तभी तो मनोविश्लेषक डॉ. शीतला प्रसाद वैलोन जैसे ग्राम में मनोविकारों को भूत-प्रेतों की छाया न मानकर सदियों का जमा कुहासा छांटते हैं और इनकी विधिवत् चिकित्सा का सभी को परामर्श देते हैं।

प्रकाशक : सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-७; मूल्य : १०० रुपये।

● डॉ. रघुवर दयाल वार्ष्णेय

अनाम रिश्ते : भारत का विभाजन विश्व के इतिहास की इतनी बड़ी दुखद घटना है, जिसकी मिसाल किसी देश के इतिहास में नहीं मिलेगी। लाखों-करोड़ों इनसान, जिनमें महिलाएं, बच्चे और वृद्ध सब शामिल हैं, मौत के घाट उतर गये। अरबों रुपयों की संपत्ति लुट गयी या आग की भेंट चढ़ा दी गयी। इन शर्मनाक और अमानवीय घटनाओं पर हिंदुस्तान और पाकिस्तान के साहित्यकारों ने अपने-अपने तरीके से कलम चलायी है और पुस्तकें भी लिखी हैं।

डॉ. गांधी की पुस्तक अनाम रिश्ते' प्रत्येक दृष्टि से इन कृतियों से अलग है। कहानी के बयान का जो ढंग उन्होंने अपनाया है, कथानक को दिलचस्प बनाने के लिए सत्य और कल्पना का मिश्रण करके जिन पात्रों का उन्होंने सृजन





किया है, उससे प्रायद्वीप के विभाजन का केवल षड्यंत्र ही बेनकाब नहीं होता, अपितु हर संप्रदाय के माननेवालों की करतूतों और कहनेभर की, धार्मिकता और राष्ट्रवादिता भी बेपर्दा हो जाती है । धर्म और संप्रदाय की रक्षा के नारों का खोखलापन और इनकी प्रवंचना पाठक के सामने नग्न हो जाती है । डॉ. गांधी ने जिस प्रकार शब्दों और मुहावरों का स्थान के औचित्य के अनुसार प्रयोग करके, कथा को प्रभावशाली बनाने का प्रयास किया है, वह प्रशंसनीय है ।

लेखन-शैली, भाषा की स्वाभाविकता और प्रवाह के बारे में मैं किसी प्रतिवाद के भय के बिना कह सकता हूं कि 'अनाम रिश्ते' में जितनी सहज, बोलचाल की और मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया है, उससे उन्होंने एक अनुभवी साहित्यकार होने का हक अदा किया है ।

मुझे आशा है कि डॉ. गांधी अपने अनुभव को पाठकों के सामने लाने में कंजूसी से काम नहीं लेंगे और हिंदी तथा उर्दू जबानों को अपनी साहित्यिक खोजों से वंचित नहीं रखेंगे ।

● जनाब महम्मद यूनस सलीम
(पूर्व राज्यपाल, बिहार)

दीवार में तरेड़ : राजकुमार सैनी के इस उपन्यास में आजादी के बाद वयस्क हुए एक युवक की बहिरंग और अंतरंग कहानी है । परिस्थितियों की जकड़न से उपजे मानसिक विक्षेप से ग्रस्त नायक का मानसिक चित्रण करने में सैनी को काफी सफलता मिली है । उस पात्र के माध्यम से कलात्मक चित्रण करने का भी भरपूर अवसर उन्हें मिला है । सामंती व्यवस्था में संयुक्त परिवार के बिखरने और उसके परिणामस्वरूप नारी-पुरुष के संबंधों में आये तनाव का चित्रण भी हुआ है । इसमें उनकी अपनी कविताएं भी आ गयी हैं । लेकिन यह चम्पू नहीं कहा जा सकता, गद्य-पद्य का इतना मिश्रण इसमें नहीं है । भाषा साहित्यिक है । उपन्यासकार का दृष्टिकोण नये आयामों की ओर संकेत करता है ।

प्रकाशक : सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली; मूल्य : १५० रुपये ।

नाश्ता मंत्री का गरीब के घर : तीस शीर्षकों में विभिन्न विषयों पर और उन विषयों की विषमताओं, विसंगतियों और विद्रूपों पर प्रहार करती यह व्यंग्य रचना लेखक की लेखनी का तेवर दिखा सकने में समर्थ है । समाज, व्यवस्था, राजनीति, शिक्षा, विज्ञान, अर्थशास्त्र तथा दफ़्तरी जिंदगी की सही तसवीर प्रभाशंकर उपाध्यायजी के व्यंग्यकार मिजाज ने पाठकों के समक्ष अच्छी शैली में रखी है । पुस्तक रोचक और पठनीय है ।

लेखक : प्रभाशंकर उपाध्याय 'प्रभा'; प्रकाशक : जगतराम एंड संस, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली; मूल्य : ६० रुपये ।

द्रौपदी का चीरहरण और कृष्ण : महाभारत पर विद्यानंद सरस्वती ने इक्कीस अध्यायों में अपनी दृष्टि और खोज के आधार पर जो सामग्री इसमें प्रस्तुत की है वस्तुतः वह पठनीय है ।

पुरानी कथा का क्या रह गया और उसमें कितना प्रक्षेप जुड़ गया इस पर भी विचार किया गया है । भाषा सहज है और पुस्तक ज्ञानवर्धक है ।

प्रकाशक : आर्य प्रकाशन मंडल; मूल्य : ४० रुपये ।

रामायण भ्रांतियां और समाधान : रामायण की कथा में प्रक्षेप के कारण तथा लोक की गतानुतिकता के कारण अनेक भ्रांतियां आ गयी हैं जो तथ्य के विपरीत हैं तथा निराधार भी। रामायण के पात्रों, विशेषतः राम को कलंकित करने के लिए सीता परित्याग, शम्बूक वध आदि की कथा प्रक्षिप्त मानकर विद्यानंदजी ने समाधान करने की कोशिश की है जो सराहनीय है। उन्नीस अध्यायों में उन्नीस प्रसंगों की भ्रांतियों का समाधान प्रस्तुत किया गया है।

लेखक : स्वामी विद्यानंद सरस्वती; प्रकाशक : आर्य प्रकाशन मंडल; मूल्य : ७५ रुपये।

चरित्र निर्माण : शीर्षक से शुष्क निबंध का बोध होता है लेकिन अट्ठाइस शीर्षकवाले इस निबंध संग्रह की शैली श्लाध्य है। 'एकला चलो रे', 'तुम जीते मैं हारी', 'जैसा अन्न वैसा मन', 'झूठ कब बोलें', सारे निबंध कहानी का आनंद देते हैं और बहुत सहज ढंग से जीवन की सच्चाई और चरित्र की सफाई की ओर इंगित करते हैं। उनके परिपक्व लेखन और मस्तिष्क की छाया है— यह रचना।

लेखक : धर्मपाल शास्त्री; प्रकाशक : जगतराम एंड संस; मूल्य : ६० रुपये।

कोकिला : गुजरात के तीन समकालीन कथा शिल्पियों में देसाई का स्थान श्रेष्ठ है, जिनके उपन्यासों में जीवन की विविधता का चित्रण हुआ है।

मध्यमवर्गीय जीवन की समस्याओं को लेकर लिखा गया उपन्यास आदर्शवाद से भी प्रेरित है। सरल शब्दों में इस उपन्यास में एक आदर्श नारी कोकिला का चित्रण है। उपन्यास का अनुवाद भी बहुत अच्छा है और मूल उपन्यास का आनंद प्रदान करने में सक्षम है।

लेखक : रमणलाल बसंतलाल देसाई; हिंदी अनुवाद : गौरीशंकर वसंतराम पंड्या; प्रकाशक : जगतराम एंड संस; अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली; मूल्य : ५० रुपये।

सीढ़ियां तथा अन्य कहानियां : आठ कहानियों का यह संग्रह संतोष गोयल का तीसरा कहानी संग्रह है। मानव मन का मार्मिक विश्लेषण करनेवाली कहानियां लेखिका की पैनी दृष्टि की परिचायक हैं। मन के भीतर झांककर नारी हृदय की अंतःव्यथा का चित्रण करने में लेखिका को सफलता मिली है, कहानियां रोचक हैं। भाषा सहज है, पाठकों के मन का स्पर्श करने में समर्थ हैं।

प्रकाशक : जगतराम एंड संस; नयी दिल्ली; मूल्य : ६० रुपये।

• मंजु ज्योत्सना

तुमने देखा तो होगा : आलोक सक्सेना व्यंग्य के क्षेत्र में एक उभरते हस्ताक्षर हैं। उनका व्यंग्य संग्रह 'समांतर हो गये रिश्ते' काफी चर्चित हुआ था। उसके बाद उनका और काव्य संग्रह 'नारी' शीर्षक से भी आया। 'तुमने देखा तो होगा' तीसरा काव्य संग्रह है। हिंदी अकादमी दिल्ली के सहयोग से प्रकाशित इस संग्रह में उनकी कविताएं आधुनिक हिंदी कविता में मील का पत्थर साबित होंगी।

प्रकाशक : सार्थक प्रकाशन, गौतम नगर, नयी दिल्ली; मूल्य : ८० रुपये।

भारतीय जीवन दर्शन : भारतीय जीवन दर्शन किसी एक देश या जाति या समाज के लिए नहीं, विश्व मानवता के लिए जीवन का कल्याणकारी पथ प्रशस्त करता है, इस पुस्तक में भारतीय धर्मग्रंथों, वेदों, उपनिषदों तथा पुराणों के माध्यम से यह संदेश दिया गया है।

पुस्तक में आस्तिकता, मानवता, धार्मिकता, पुरुषार्थ तथा योग साधना के अतिरिक्त समाज और संस्कृति की भी वृहद व्याख्या की गयी है। गुप्त बंधु एवं डॉ. स्वर्णप्रभा अग्रहरि द्वारा लिखित यह पुस्तक भारतीय जीवन दर्शन को जानने-समझनेवालों के लिए निःसंदेह उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रकाशक : सर्व सुलभ साहित्य सदन, लोक विहार, दिल्ली; मूल्य : ४३ रुपये।

चर्चित कहानियां : हिंदी साहित्य की श्रेष्ठ कहानियों तथा कहानीकारों को पाठकों से सीधे जोड़ने के क्रम में सामयिक प्रकाशन ने हाल ही में प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, शशिप्रभा शास्त्री, यादवेन्द्र शर्मा चंद्र, पंकज बिष्ट तथा चंद्रकांता की चुनिंदा कहानियों के अलग-अलग संग्रह निकाले हैं।

प्रेमचंद की कहानियों में, बड़े घर की बेटी, पंच परमेश्वर, ईदगाह, नमक का दरोगा, दो बैलों की कथा, मंत्र, बड़े भाई साहब, पूस की रात, सुजान भगत, सवा सेर गेहूं, सद्‌गति, गुल्ली डंडा, बूढ़ी काकी, कफन, राम लीला, ठाकुर का कुंआ, शतरंज के खिलाड़ी तथा नशा को इस संग्रह में रखा गया है। प्रेमचंद की ये सारी कहानियां उत्कृष्ट कहानियां हैं।

इसी तरह जयशंकर प्रसाद की कहानियों में मदन मृणालिनी, चंदा, ग्राम, शरणागत, दुखिया, आकाश दीप, ममता, स्वर्ग के खंडहर में, सुनहला सांप, चूड़ीवाली, बिसाती, देवदासी, आंधी, कला, महुवा, घीसू, पुरस्कार, तथा गुंडा को शामिल कर एक बेहतरीन कहानी संग्रह बनाया गया है।

शशिप्रभा शास्त्री नयी कहानियों में एक परिचित नाम है। उनकी कहानियों में, उभरकर फिर वही, आहिस्ता बोलिए, सितारों से आगे का जहां, बिस्तर, छतरी, माध्यम, एक टुकड़ा शांति रथ, ठहराव, रीढ़, काबुक, अर्थ, सवालों की जमीन, शक्ति परीक्षण, काफूर, चोट के नीचे, पैबंद तथा एक और एक को शामिल किया गया है। इसी तरह यादवेन्द्र शर्मा चंद्र की कहानियों में, हालीवा, एक और जटायु, चकवे-चकवी की बात, मिनखखोरी, पागी, वह रात, सारा और सिपाही, आत्मबोध, सांवली बेबी, लुगाई जात, पत्थर में पानी, अजीब दास, रेत का दर्द, भंजक, जारिणी, राम की हत्या, मेंहदी के फूल तथा महापुरुष-जैसी उत्कृष्ट कहानियों का संग्रह प्रकाशित किया है।

पंकज बिष्ट की कई कहानियां चर्चा में रही हैं। इस संकलन में उनकी चर्चित कहानियों में, पंद्रह जमा पच्चीस, शबरी शर्मा बीमार हैं, हल, खून, खिड़की, आवेदन करो, बच्चे गवाह नहीं हो सकते, बेल, होमवर्क, आखिरी पहर, ऐसा तो नहीं होगा, कुंजरों वा तथा मुकाम-जैसी कहानियां शामिल की गयी हैं, जबकि इसी क्रम में चर्चित लेखिका चंद्रकांता की कहानियों के संकलन में, पोशनूल की वापसी, पहाड़ पर वर्षा, वितस्ता का जहर, पत्थरों के राग, नूराबाई, चक्रव्यूह, मुक्ति प्रसंग, बेगाने देश में बनवास, साउथ एल्म की सीता, काली बर्फ तथा दहलीज पर न्याय कहानियों को



शामिल किया गया है ।

प्रकाशक : सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली; मूल्य : (प्रत्येक कहानी संग्रह का) : १०० रुपये ।

विक्टोरिया : कनूत हामसुन नारवेजियन भाषा के महान लेखक थे । उन्हें साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार भी मिल चुका है । विक्टोरिया उनकी एक कालजयी कृति है । इसमें कहानी है एक चक्कीवाली के बेटे की जो कवि हृदय रखता है तथा महल की राजकुमारी विक्टोरिया से प्रेम करता है । विक्टोरिया चक्कीवाली के बेटे से प्रेम तो करती है किंतु लोक-लाज के भय एवं महल की मर्यादा को रखने के कारण अपने प्रेमी को प्राप्त नहीं कर पाती । कनूत हामसुन की इस कृति का नारवेजियन भाषा से अनुवाद किया है पूर्णिमा चावला तथा हरचरन चावला ने । अनुवादक कई वर्षों से नारवे में रह रहे हैं तथा कई पुस्तकों का अनुवाद हिंदी पाठकों के सम्मुख रखा है ।

प्रकाशक : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नयी दिल्ली; मूल्य : ५० रुपये ।

कभी कभी लगता है : पूर्णिमा चावला ने आधुनिक हिंदी कविता को नया आयाम देने में उल्लेखनीय कार्य किया है । कई विदेशी कवियों की कविताओं तथा उनके कथासंसार से हिंदी पाठकों को परिचित कराया है । उनके इस काव्य संग्रह में कई ऐसी कविताएं हैं जो दूसरी भाषाओं से अनुवाद की गयी हैं । पूर्णिमा चावला काफी वर्षों से नारवे में थीं जहां से उन्होंने हिंदी जगत के लिए सराहनीय कार्य किया । उनके इस काव्य संकलन का संपादन उनके पति हरचरन चावला ने किया है जो खुद नारवे में रहकर हिंदी की सेवा कर रहे हैं । इस संकलन में अंगरेजी, नारवेजियन तथा पंजाबी भाषाओं में लिखी उनकी कविताओं को भी शामिल किया गया है ।

प्रकाशक : ज्ञान भारती, रूपनगर, दिल्ली; मूल्य : ७५ रुपये ।

● सुजीत वाजपेयी

प्राप्ति-स्वीकार

धाराएं (काव्य-संग्रह)
संपादक : उमेश मोहन गुप्ता; प्रकाशक : अयन प्रकाशन, १/२०, महरौली, नयी दिल्ली; मूल्य : ५० रुपये ।

●

खौलती खामोशियां (काव्य-संग्रह)
लेखक : प्रभुनारायण पटेल; प्रकाशक : पाथेय प्रकाशन, ११२ सराफा वार्ड, जबलपुर; मूल्य : २० रुपये ।

●

मांडवी (काव्य-संग्रह)
लेखिका : प्रभा भटनागर; मुद्रक : लियो प्रिंटर्स, दिल्ली; मूल्य : २० रुपये ।

आग पर कंदील (गजल-संग्रह)
लेखक : डॉ. कुंअर बेचैन; प्रकाशक : अयन प्रकाशन, १/२०, महरौली, नयी दिल्ली; मूल्य : ६० रुपये ।

●

तलाश एक पल की (काव्य-संग्रह)
लेखिका : नीना दीप; प्रकाशक : अयन प्रकाशन, १/२०, महरौली, नयी दिल्ली; मूल्य : ४० रुपये ।

●

कहीं अंत नहीं (काव्य-संग्रह)
लेखक : डॉ राहुल; प्रकाशक : लेखक, ३ ए/१, हिन्दुस्तान टाइम्स अपार्टमेंट्स, मयूर विहार, फेज-१, दिल्ली; मूल्य : ७५ रुपये ।

कादम्बिनी क्लब समाचार

देशभर में स्थापित कादम्बिनी क्लबों द्वारा गत माह की गयी साहित्यिक गोष्ठियों एवं कार्यक्रमों का लेखा-जोखा :

लोहरदगा, कादम्बिनी क्लब एवं प्रगति केंद्र के संयुक्त तत्त्वावधान में एक हास्य कवि गोष्ठी एवं होली मिलन कार्यक्रम पावरगंज स्थित सीताराम मिश्र के निवास पर आयोजित किया गया । कार्यक्रम की शुरुआत पं. लक्ष्मी नारायण मिश्र वैद्य ने की । कार्यक्रम में श्री भगवान मिश्र, रामध्यान सरस, बी. एन. झा, शशिकांत निशंक, आनन्दीता साध्वी सुरेखा, गीता देवी, डॉ. एन.मिश्र एवं श्री राधाकृष्ण मिश्र कलाकार ने भाग लिया ।

पिपरिया. कादम्बिनी क्लब ने एक हास्य कवि गोष्ठी का आयोजन किया । मुख्य न्यायाधीश श्री के. पी. सिंह मुख्य अतिथि तथा खूबचंद मंडलोई की अध्यक्षता में आयोजित इस कवि-गोष्ठी में विशिष्ट अतिथि राजेन्द्र हरदेनिया थे । कवि-गोष्ठी में श्री देवेन्द्र रावत, के. पी. सिंह, डॉ. रसिक लाल पांडे, प्रभा देवी जैसवाल, अनंत साहू, आर. एस. शर्मा शैलानी, बद्री प्रसाद परसाई, शोभाराम शास्त्री, पवन पांडे, किशन व्यास, ओम भार्गव, महेश शर्मा, राजन गोदानी, आर. डी. साहू, राजेन्द्र ताम्रकार, रामकृष्ण पांडे तथा बालकृष्ण प्रसून ने अपनी-अपनी कविताएं सुनायीं । कार्यक्रम का संचालन आर. एस. शर्मा शैलानी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन एस. आर. श्रीनिवास ने किया । कार्यक्रम में हेमलता साहू, शिवानी शर्मा, कमल नारायण अग्रवाल, पी. सी. पुरिया, महेश कुमार पठारिया तथा राकेश श्रीवास्तव की उपस्थिति भी उल्लेखनीय रही ।

सीतामढ़ी कादम्बिनी क्लब ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर एक परिचर्चा का आयोजन शिवनारायण धर्मशाला में श्री कुंज बिहारी जालान की अध्यक्षता में किया । परिचर्चा में क्लब की संयोजिका आशा प्रभात, किरण भगत, मीरा सिन्हा, पूनम हर्षबर्द्धन, नीलम गुप्ता, विनीता, जूली, तनु, काशीनाथ वर्मा, पंकज कुमार, डॉ. जे.पी. गंभीर, अजय विद्रोही, राकेश कुमार तिवारी, शिवनाथ प्रसाद, सोहन प्रसाद, सुरेश लाल कर्ण, उमाशंकर लोहिया, दिवाकर झा, अवध बिहारी,शरण हितेन्द्र के अतिरिक्त अन्य वक्ताओं ने महिलाओं को आरक्षण के मुद्दे पर हो रहे विलंब पर चिंता जतायी ।

पूर्णियां कादम्बिनी क्लब ने बसंतोत्सव पर कवि गोष्ठी का आयोजन किया । अध्यक्षता डॉ. सत्येंद्र निगम ने की । मुख्य अतिथि श्री चंद्रानन सीतेश थे । संचालन श्री संजय सिन्हा ने किया । कवि गोष्ठी में कुमकुम चौधरी, चंद्रानन सीतेश, अरुण कुमार सिंह, महेश विद्रोही, डॉ. सत्येंद्र निगम,कौशल किशोर राय, नंद किशोर राय, संजय सिन्हा, बबीता किशोरी, मंजुला उपाध्याय मंजुल तथा बाल कवि केशव कुमार एवं रंजीत कुमार ने काव्य पाठ किया । धन्यवाद ज्ञापन क्लब की संयोजिका मंजुला उपाध्याय मंजुल ने किया ।

कोलारस कादम्बिनी क्लब की गोष्ठी प्रो. एस.के. श्रीवास्तव प्राचार्य शासकीय महाविद्यालय कोलारस के मुख्य आतिथ्य एवं प्रकाश व्यास, संयोजक कादम्बिनी क्लब की अध्यक्षता में संपन्न हुई । अखिल भारतीय बुंदेलखंड साहित्य एवं संस्कृति परिषद की स्थानीय इकाई द्वारा प्रकाशित काव्य संकलन 'प्रतिभा प्रकाश' का विमोचन मुख्य अतिथि द्वारा किया गया । उत्कृष्ट साहित्य सेवा हेतु डॉ. जी.एल. जैन (तहसीलदार) को क्लब द्वारा शाल, श्रीफल एवं प्रशस्ति-पत्र द्वारा सम्मानित किया गय । इस अवसर पर आयोजित कवि गोष्ठी में डॉ. जी.एल. जैन, डॉ. आर.एस. ठाकुर, प्रो. लखनलाल खरे, हरिवल्लभ श्रीवास्तव, बुंदेल सिंह जाट, सुरेश श्रीवास्तव,

संजय श्रीवास्तव, डॉ. योगेन्द्र शुक्ल, इन्द्रजीत सिंह लोधी आदि ने काव्य पाठ किया । गोष्ठी में चिंतामणि जैन, पी.के. जैन, डॉ. पी.के. गोयल, यू. फालके, आर.एस. भार्गव, एल.पी. शर्मा तथा संतोष गौड़ ने भी भाग लिया ।

कटनी कादम्बिनी क्लब द्वारा वसंतोत्सव के अवसर पर छात्र-छात्राओं के लिए वसंत गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस अवसर पर श्रीमती कमला शेनूडये की अध्यक्षता में वासंती गीत शीर्षकांतर्गत काव्य चर्चा भी आयोजित की गयी जिसमें श्री प्रकाश नेमा प्रलय, श्री चंद्रकिशोर श्रीवास्तव, श्रीनिवास गोयनका, कु. नीति, श्री आर.सी. शर्मा, श्रीमती रानाडे, श्रीमती बनोधा, कु. कविता, कु. वर्षा, कु. अर्चना खरे,



श्री निखिलेश श्रीवास्तव, श्री अनिल शर्मा, श्री हर्ष एवं श्री चंद्रकांत जैन ने भाग लिया । क्लब संयोजिका सुश्री मंजुला खरे ने आभार व्यक्त किया ।

पटना कादम्बिनी क्लब के तत्त्वावधान में बुद्ध मार्ग स्थित शांति आश्रम में 'वसंत काव्योत्सव' का आयोजन किया गया । अध्यक्षता श्री हलधर भारती ने की एवं संचालन कवयित्री रूबी भूषण ने किया । क्लब के संयोजक डॉ. शिवनारायण ने स्वागत भाषण दिया । मुख्य अतिथि श्री विंध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी थे । काव्योत्सव का उद्घाटन उपन्यासकार डॉ. भगवतीशरण मिश्र ने किया । श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी, सुभद्रा वीरेन्द्र, सिद्धेश्वर, सुदेश कुमार लाल, कमलेश कुमार (कलकत्ता), विंध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी, राजकुमार प्रेमी, डॉ. शिवनारायण, रूबी भूषण, रामलखन सिंह मयंक, विशुद्धानंद, कुमार वीरेन्द्र, कृष्णानंद कृष्ण, मृत्युंजय मिश्र करुणेश, सिद्धेश्वर प्रसाद, अरुण कुमार गौतम, विंदेश्वर प्रसाद गुप्त, अजब लाल जाह्नवी ने काव्य पाठ किया । प्राचार्य प्रो. अरुण कुमार प्रसाद सिन्हा ने धन्यवाद ज्ञापन किया ।

सिंगरौली वैढ़न कादम्बिनी क्लब द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण समारोह क्लब कार्यालय में आयोजित किया गया । पुरस्कार वितरण क्लब के अध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक संजय सिंह परिहार ने किया । ५०० रु. का प्रथम पुरस्कार श्री ब्रह्मानंद द्विवेदी, ३०० रु. का द्वितीय पुरस्कार श्री अरुण कुमार मिश्र एवं २०० रु. का तृतीय पुरस्कार श्री प्रदीप चंद गुप्ता ने प्राप्त किया ।

जबलपुर कादम्बिनी क्लब की मासिक विचार एवं काव्य गोष्ठी श्री देशपति नीखरा की अध्यक्षता, कवि श्री शिव कुमार वर्मा (नरसिंहपुर) के मुख्य आतिथ्य, श्री एस.सी.जोशी उपमहाप्रबंधक दूरसंचार के विशिष्ट आतिथ्य तथा श्री रवि प्रधान के संयोजन में संपन्न हुई । गोष्ठी के प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत श्री रमंत श्रीवास्तव, आनंद कृष्ण, आशुतोष 'असर', अविनाश भटकर एवं संयोजक रवि प्रधान ने किया । तत्पश्चात एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें श्री सूरज राय 'सूरज', जयप्रकाश 'जलज', नारायण नामदेव, मो. मोइउद्दीन 'अतहर', अविनाश मशरूर, आनंद कृष्ण, रवि प्रधान, शिव कुमार वर्मा, देशपति नीखरा एवं आशुतोष 'असर' ने काव्य पाठ किया । काव्य गोष्ठी का संचालन वरिष्ठ शायर श्री मोइउद्दीन 'अतहर' ने किया । आभार प्रदर्शन श्री रमन श्रीवास्तव ने किया ।

'गंगा के मौन किनारे' उपन्यास का लोकार्पण

नयी दिल्ली। पिछले दिनों पी. जी. डी. ए. वी. कॉलेज, नेहरू नगर, नयी दिल्ली में छात्रों की परिचय सत्र गोष्ठी में डॉ. हरगुलाब गुप्त के तीसरे आंचलिक उपन्यास 'गंगा के मौन किनारे' का लोकार्पण समाजसेवी डॉ. रामलाल वर्मा ने किया और इसकी अध्यक्षता कादम्बिनी के संपादक और



प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यासकार श्री राजेन्द्र अवस्थी ने की। श्री अवस्थी ने दुनिया में भारत की संस्कृति को उजागर करने के लिए आंचलिक उपन्यासों का महत्त्व उजागर करते हुए प्रस्तुत उपन्यास को जनपदीय जीवन का इतिहास बताया। समारोह में कॉलेज प्राचार्य एवं अन्य साहित्यकारों ने भाग लिया।

सोहनलाल द्विवेदी की जयंती मनायी गयी

फतेहपुर। आर्य समाज भवन, फतेहपुर में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ एवं लोक मंगल साहित्य परिषद, फतेहपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में पंडित सोहनलाल द्विवेदी की जयंती मनायी गयी। इस समारोह के प्रथम चरण में विचार-गोष्ठी आयोजित की गयी, जिसमें द्विवेदीजी के रचना संसार एवं काव्य यात्रा पर विशद व्याख्या डॉ. ओम प्रकाश अवस्थी ने प्रस्तुत की। आकाशवाणी लखनऊ के सुभाष लेखाड़ी तथा डॉ. गायत्री सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किये। विशिष्ट अतिथि पं. बद्री नारायण तिवारी, संयोजक मानस संगम, शिवाला, कानपुर ने द्विवेदीजी के साहित्य से जुड़ने और उसके अध्ययन की आवश्यकता के प्रति लोगों की चेतना को झकझोरा। दूसरे चक्र में काव्य-गोष्ठी के शुभारंभ के पूर्व साहित्य परिषद के सचिव सुधाकर अवस्थी ने अध्यक्ष डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव, मुख्य अतिथि विनोद चंद्र पाण्डेय, निदेशक, उत्तर प्रदेश लखनऊ, डॉ. ओम प्रकाश अवस्थी, पं. बद्री नारायण तिवारी एवं डॉ. गायत्री सिंह, अर्मापुर डिग्री कॉलेज, कानपुर को अंग वस्त्रम् तथा श्रीफल से सम्मानित किया।

उक्त अवसर पर राष्ट्रीय काव्य-गोष्ठी में डॉ. प्रतीक मिश्रा, बद्री प्रसाद गुप्त आर्य, सरस, धनंजय अवस्थी, अध्यक्ष, लोक मंगल साहित्य परिषद, श्री राम शुक्ल, विष्णु शुक्ल, अंजुम, इरफान, शशि भूषण अवस्थी, शैलेन्द्र द्विवेदी, महेश त्रिपाठी तथा अनुरागी ने काव्य पाठ किया। संचालन डॉ. चंद्र कुमार पाण्डेय ने किया।

नौ साहित्यकारों को पुरस्कार

रांची। भारतीय साहित्य विकास न्यास ने जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं के नौ साहित्यकारों को पुरस्कृत करने की घोषणा की है। इनमें प्रमुख हैं— श्री रामचंद्र टुडु (संथाली), भैया राम मुंडा (मुंडारी), धनुर सिंह पुरती, डॉ. रोज केरकेट्टा (खड़िया), अहलाद तिर्कि (कुड़ुख), मृत्युंजय नाथ शर्मा (नागपुरी), खुदीराम महतो (कुरमाली), महेश गोलवार (खोरठा) तथा ज्योतिलाल महादानी (पंच परगनिया)।

निराला जन्मशती समारोह

कलकत्ता। श्री बड़ा बाजार कुमार सभा पुस्तकालय के तत्त्वावधान में गठित निराला जन्मशती समारोह समिति की ओर से वर्षव्यापी कार्यक्रमों की कड़ी में समापन समारोह स्थानीय

महाजाति सदन में आयोजित किया गया । इस अवसर पर एक स्मारिका का विमोचन भी किया गया । संयोजक श्री प्रेम शंकर त्रिपाठी के अनुसार समारोह की अध्यक्षता सांसद आचार्य विष्णु कांत शास्त्री ने की तथा प्रधान वक्ता विश्व भारती, शांतिनिकेतन के हिंदी भवन के अध्यक्ष डॉ. हरिश्चन्द्र मिश्र थे । इस अवसर पर निराला के विरचित गीतों की संगीतात्मक प्रस्तुति भी की गयी ।

हरिशंकर परसाई स्मृति पुरस्कार

हरदा । सतपुड़ा लोक संस्कृति परिषद ने हरिशंकर परसाई की स्मृति में ११००० रुपये का पुरस्कार नयी दिल्ली के साहित्यकार श्री प्रेम जनमेजय को प्रदान करने की घोषणा की है । परिषद के संयोजक नरेन्द्र मौर्य के अनुसार चयन समिति के सदस्यों में श्री गंगा प्रसाद विमल, विनोद निगम, सूर्यकांत नागर, नर्मदा प्रसाद उपाध्याय ने उनके नाम का अनुमोदन किया ।

अखिल भारतीय काव्य समारोह

मनकापुर—गोंडा (उ.प्र.) । आर.पी. आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मनकापुर—गोंडा की रजत जयंती समारोह का आयोजन किया गया ।

समारोह में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया । कवि सम्मेलन में सर्वश्री राधेश्याम 'बंधु' (दिल्ली), दिनेश 'तापस' (गुआहाटी), गणेश शर्मा (बड़ोदरा), काका बैसवारी (बैसवाड़ा), कैलाश गौतम, प्रदीप मालवीय (इलाहाबाद), रामचन्द्र नेगी (कानपुर), पवन सुलतानपुरी, रसबोध (रायबरेली) और बुद्धिसेन शर्मा ने भाग लिया । अध्यक्षता बुद्धिसेन शर्मा की और संचालन कवि सतीश आर्य ने किया । यह आयोजन राजभवन मनकापुर की ओर से किया गया ।



काव्य पाठ करते हुए 'मनोरमा' के सह-सम्पादक श्री बुद्धिसेन शर्मा



बृज मोहन पांडेय को शंकर पुरस्कार

के. के. बिड़ला फाउंडेशन का प्रतिष्ठित शंकर पुरस्कार इस वर्ष श्री बृज मोहन पांडेय को उनकी कृति 'पुरातत्त्व प्रसंग' के लिए दिये जाने की घोषणा की गयी है । पहली बार यह पुरस्कार किसी पुरातत्त्ववेत्ता को दिया जा रहा है । पुरस्कार की राशि डेढ़ लाख रुपये कर दी गयी है ।



समस्या-पूर्ति—२१२

प्यासा पानी

प्रथम पुरस्कार

पीठ पर बचपन लिये
नाक पर बुढ़ापे की नकेल
निकला है निहारने, समय का ऊंट
वर्तमान के पेड़, अतीत के ठूंठ
और झेलता है सब-कुछ
पारदर्शी प्यासा पानी

• **डॉ. वासंती रामचंद्रन**
२६४, सी-४-बी, जनकपुरी
नयी दिल्ली-११००५८

द हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से
राकेश शर्मा द्वारा
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस,
१८/२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१ से
मुद्रित तथा प्रकाशित ।

द्वितीय पुरस्कार

बड़ी पुरानी एक कहानी, कहती आयीं दादी-नानी
हरा समुंदर गोपी चंदर,
बोल मेरी मछली कितना पानी
पानी की क्या बात बताऊं, ऊपर पानी, नीचे पानी
आगे-पीछे पानी-पानी,
लेकिन फिर भी प्यासा पानी

• **विजय कुमार**
१११, मोती बाजार
देहरादून (उ.प्र.)-२४८००१

तृतीय पुरस्कार

जाने कब से भटक रहा है,
जीवन के मरुथल में प्राणी
तृष्णा तृप्त नहीं होती है, ये ही है संतों की वाणी
झरने सरिता से मिलते हैं,
सरिता सागर से मिल जाती
फिर भी तो ऐसा लगता है,
युगों-युगों से प्यासा पानी

• **मीनी माथुर**
द्वारा— श्री गिरीश प्रसाद माथुर
रामनिवास बिल्डिंग, टैक्सी स्टैंड रोड,
रामपुर-२४४९०१ (उ.प्र.)



छीनेगा कौन

समस्या-पूर्ति— २१४

समस्या-पूर्ति साहित्य की पुरानी विधा है । हमने उसे फिर से जीवित किया है । यहां प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उपर्युक्त शीर्षक पढ़िए, इसे लेकर आपको सिर्फ छंदबद्ध ही नहीं, अतुकांत कविता भी हो सकती है, लिखनी है, उसमें भावों का गांभीर्य आवश्यक है । रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की हो । समस्या-पूर्ति के परंपरागत नियमों के अनुसार चित्र के नीचे दिये शब्द कविता के अंत में ही आने चाहिए ।

१. समस्या-पूर्ति केवल पोस्टकार्ड पर ही भेजें ।
२. समस्या-पूर्ति संपादक के व्यक्तिगत नाम से नहीं भेजें ।
३. एक बार पुरस्कृत व्यक्ति की रचना छह माह तक दोबारा पुरस्कृत नहीं की जाएगी ।

पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है—

प्रथम— २५० रु., द्वितीय— २०० रु. और तृतीय— १५०रु.

अंतिम तिथि : २५ मई, १९९७

पारदर्शी : प्रेम कपूर



Montage LK 1 96